आदर्श-विवाह

केवल बारह घंटे में तमाम वैवाहिक
विधियों कि परिपूर्णता।

लेखक
गोपीनाथ शास्त्री चुलैट

आदर्श--विवाह ।
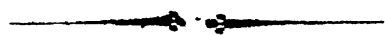
ग्रंथकर्ता व प्रकाशक
सत्-युग प्रतिष्ठापना चार्य ज्योतिर्भूषण
गोपीनाथ शास्त्री चुलैट.

मुद्रक:---
टी. एम्. पटेल,
'सरस्वती' पावर प्रेस, अमरावती.

मूल्य -।।-) आठ आना.

पुस्तक मिलनेका पत्ताः--

१ तत्व-ज्ञान संचारक मंडल, एलिचपूर पो. सरमसपुरा।

२ ज्योतिष कार्यालय घ. नं. ५ छीपा बाखल इंदोर।

विषय सूची ।

छप रहे हैं।

स्मार्त प्रभाकर—गणपति पूजन, कलश पूजन, पुण्याह वाचन। मातृका स्थापन, नांदिमुख श्राद्ध, ग्रह पूजन, सर्वतो भद्र के दैवत्य सहित पूजन द्वादश लिंगतो भद्रांतर गत सर्वतो भद्र भद्र—लिंगतो भद्र पूजन, वास्तु पुजन प्रकार, देवता स्थापन, आदि कई स्मार्त विधिसे ओतः प्रोत यह स्वतंत्र ऐसा अमौलिक ग्रंथ छपरहा है। इस ग्रंथ के जरिये सर्व साधारण विद्यार्थी भी प्रतिष्ठा वास्तु आदि महत् कार्य कुशलतासे करा सकता है। मूल्य २ रु.

गोत्र प्रवर मिमांसा—ऋषि, प्रवर, गौत्र, शाखा, आदि इस ग्रंथमें गौड़ जाति के १४४४ गोत्र, प्रवर, ऋषि इत्यादि अति प्रयत्न करके संग्रह किये है यह पुस्तक प्रत्येक गौड़ बंधूको अवश्य ही संग्रह में रखने योग्य है। प्राचीन पुस्तक के आधार पर इसको सर्वांगसुंदर बनाया है। मूल्य ।᠎।)

यज्ञ विज्ञान—यज्ञ क्यों किया जाते हैं। यज्ञ कितने प्रकारके हैं। वह देवों के पास कैसे और किस स्वरुप मे जाकर प्राप्त होते हैं। उसकी वैज्ञानिक रीति के अनुसार इस ग्रथ में गहरी छान बीन की है। और वैज्ञानिक पद्धति से सिद्ध कर दिखाया की यज्ञ का सच्चा स्वरूप क्या है।

वेदो में क्या है—वेदों का कोई मंत्र जब दृष्टि संम्मुख आता है; तब उन ऋचा ओंका अर्थ करना अत्यंत गहन और जटिल हो जाता है जह पारिभाषिक शब्दों का परिचय न हो। इस ग्रंथ में इस बातपर विशेष प्रकाश डाला गया है कि वेदो में देवता किन को कहा है उन का रहने का ठिकाना क्या है, उसका मूल सिद्धान्त क्या है; और दृष्टान्त क्या है इन बातों का यहां इस किताब के जरिए पृथक् पृथक् निर्णय कर सकता है। और परिभाषा शीघ्र समझमें आती है। साथ में वेद का अर्थ करनेका अद्भुत तरीका दिखाया हैं।

आदर्श विवाह ।

केवल बारह घंटेमें तमाम वैवाहिक विधियोंकि परिपूर्णता ।

१. अन्यान्य मनुष्य समाजोंके (पतिपत्नि संबंध की) भाँति हिन्दुओंका विवाह केवल एक विषयोपभोग प्रद साधारण कार्य नहीं है। इसका सामाजिक उन्नति एवं धर्मार्थकाम साधन में पूरा पूरा संबंध होनेसे वेदकालीन ऋषिगणोंने मानव जीवन को व्यवस्थित सुखमय करने का मुख्यसाधन जो गृहस्थाश्रम है; उसका आरंभ इसीके अधीन माना है। इसलिये उन्होंने अपनी अलौकिक दूरदर्शिता और निजके अनेक वर्षोंके अनुभवोंसे इस विषयके ऊपर अनेकानेक वैदिक मंत्र, सूत्र और कथानक बनाए हैं। इसीके आधारपर आगे शास्त्रोंकी रचना होकर इसकी कई व्यवस्थाएं स्थिर कीगई हैं। इसलिये अन्यान्य विवाहोंकी अपेक्षा यह अतुलनीय होगया है। इससे हम कहसकते हैं कि हिन्दुओंका विवाह ही **आदर्श विवाह** है। केवल विचार करने की बात इतनी ही है कि—

२. वर्तमानमें बहुतसी जगह जो शास्त्रविधिसे विवाह होते हैं और जिन्हें लोग आदर्श मानकर करते चलेजा रहे हैं; उनकी तथा स्त्रियोंके अन्यान्य अधिकारों की तुलना जब हम प्राचीन वैदिक जमाने से करने लगते हैं तब हमें इनकी आदर्शतामें बहुतही अंतर नजर आता है।

३. प्राचीन ऋषिमुनि और आचार्योंनें कई वर्षोंके प्रत्यक्ष अनुभवद्वारा गृह्यसूत्रों में विधी विधान स्थिर किये हैं। और तदनुसार उसके संबंधसे शास्त्रोंमें उनके अधिकार व दायभागादिमें जो व्यवस्था निश्चित की गई है, वह सनातन कालसे समाजकी सर्वांगपूर्ण उन्नति करनेवाली होनेसे, यह आदर्शरूप मानी जाती है। किंतु उनमें स्थिरकिये हुए विधानोंमें आधुनिक कलियुगी-

न आपत्तियोंके कारणोंसे (संवत् ७८१ शाके ६४६) * के बादके टीकाकार एवं निबंध कारोंने जो कई बातें धर्मकी बाधक होते हुएभी उन्हें देशकाल परिस्थिति के अनुसार धर्मकी साधक समझी है। ऐसे कृत्रिमप्राक्षिप्त स्मृति पुराणादिके अंदर (मिला) कर देने के कारण आजकल उन प्राचीन बातोंकी एवं वैवाहिक पृथाकी आदर्शिता लुप्तप्राय होरही है।

४. जिसके फलस्वरूप देशाचार व कुलाचार का परिवर्तन होते होते कपोल कल्पित और मनघडंत बातें जिधर उधर प्रचलित होरही हैं। और वेद-संहिता, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रंथ श्रौतसूत्र व गृह्यसूत्रादिकोंमें कहे हुए विधि विधान और निश्चित की हुई व्यवस्थाएं विस्मृत होते हुए रसातलको चली जा रही है।

५. इसलिये अब हमें स्पष्ट करके बाता देना है कि वास्तव में श्रुति सम्मत हमारे धर्माचार क्या थे; जो कि हजारों ही नहीं बरन लाखों वर्षोंसे चले आरहेथे; और आज भी बने हुए गृह्यसूत्रादिकों के ही आधारपर संपूर्ण संस्कारादि के विधि विधान एवं धर्माचार करते आरहे हैं। अतएव यही एक अविच्छिन्न श्रुति सम्मत धर्म है।

६. कर्कोपाध्याय ने इसी बात को स्पष्ट करके बताया है कि—

" प्रत्यक्षाहि श्रुतयः श्रौतेषु, स्मार्तेषुच पुनः कर्तृसामान्या दनुमेयाः श्रुतयः॥ वैदिक स्मरणादेव स्मृतीनां प्रामाण्यम्। अव्यवच्छिन्नंहि स्मरण मष्टकादीनामष्टकाः कर्तव्या इति। "

अर्थात्—" वैदिक ग्रंथों की श्रुतियां प्रत्यक्ष बातके तात्पर्यार्थ को बतानेके उद्देश्यसे कही गई हैं। और गृह्यसूत्रादि स्मार्त ग्रंथों की श्रुतियां उन्हीं वैदिक बातों की स्मरण दिलाने वाली अनुमानरूप हैं। इसीलिये श्रुति संमत स्मृतियाँ धर्म की प्रमाण मानी जाती हैं। जैसा कि पौष, माघादि की अष्टमी

* हमारे युगपरिवर्तन नामक ग्रंथमें अनेकानेक प्रमाण देकर सिद्ध किया गया है कि कलियुगका प्रमाण सिर्फ १२०० वर्षका है। २८ वें युगके कलिका आरंभ शाके ६४६ में होकर शाके १८४६ से कृतयुगका आरंभ होगया है।

में जो अष्टका के मंत्र कहे गए हैं वह संवत्सरारंभकी द्योतक होनेसे प्राचीन कालमें उस समय संवत्सर का आरंभ होता था यह अविच्छिन्न [अखंडित] स्मरण अष्टका प्रयोग से अनुमित होता है । *

७. इससे यह बात स्पष्ट होती है कि जो जो बातें श्रुति सम्मत हैं वही हमारे धर्म की प्रमाण मूलक हैं । और जो बातें श्रुति सम्मत नहीं हैं वे केवल आपत्तिके समय कुछ कालतक उनका आचारण किये गया है तो भी वे धर्म प्रमाण मूलक नहीं हो सकती ? इसी प्रकार की गतकलियुगीन कुछ बाते हैं । जो कि अब कलियुग के बीत जानेपर हमारे धर्म प्रमाण मेसे वह सब निरर्थक होगई है । और श्रुतिस्मृति सम्मत बातें धर्म मूलक होने से हमारी अनुष्ठेय धर्मरूप है । और सदा रहेंगी ।

८. इस पुस्तक में वे सब बातें हम बता नहीं सकते । यहाँ तो केवल विवाह के संबंध की आदि से अंत तक यच्च यावत् कुल बातें दिखा देनी है । ताकि इसके पढनेसे पाठकों को मालूम हो जायगा कि आदर्श विवाह की आदर्शिता यही है कि जो इस पुस्तक में गृह्यसूत्र एवं श्रुति स्मृति पुराणादि कों के आधारसे स्पष्ट करके पृथक पृथक बतलादी गई हैं । और साथमें यह भी बताया गया है कि कलि युगीन पंडितोंने इस में कहां २ कैसी २ गडबड करदी है.

विवाहके योग्य कन्याकी अवस्था.

९. गृह्यसूत्र और स्मृति ग्रंथोंमें विवाह के योग्य कन्या की अवस्था बतलाई है किंतु उस अवस्था को श्रुति सम्मत बतलाने के लिये विहाह प्रयोगमें जो यह मंत्र वरके द्वारा कहला ये जाते हैं—

---

* श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनु तिष्ठन्हिमानवः ॥ इहकीर्तिमवाप्नोति प्रेत्यचानुत्तमं सुखम् ॥ श्रुति प्रामाण्यतो विद्वान् स्वधर्मे निविशेत वै ॥ ८ ॥ मनुस्मृति [अ. २]

" सोमः प्रथमो विविदे गंधर्वो विविद उत्तरः ॥ तृतीयेऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥१॥ सोमो ददद्गंधर्वाय गंधर्वो ददद्ये ॥ रयिंच पुत्रां श्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥ २ ॥ ऋ. सं. ८-३-२७

१०. इनका तथा निम्न लिखित स्मृति ग्रंथोक्त प्रमाणोंका

" व्यंजनेषुच जातेषु सोमो भुंक्ते च कन्यकाम् ॥
पयोधरेषु गंधर्वा रजस्यग्निः प्रतिष्ठितः ॥ १ ॥ "

अत्रिस्मृति [अ. ५ श्लो. ९]

तुलनात्मक पद्धतिसे मिलाकर अर्थ किया जाता है कि–" व्यंजन यानें केशरूएं आजांय यह कन्याके लिये सोमकी उपभोगिता दिखाती है। पयोधर याने कुच दिखाई देने लग जांय वह गंधर्व की और रजोवती ऋतुस्नाता हो जाय वह अग्नि (शुद्धता) की प्राप्ति बतलाती है। अर्थात् रोम, कुच, पुष्पसंभव हुए बादकी चौथी अवस्थामें उसका मनुष्य पति हो सकता है। क्यौंकि उक्त श्रुति [मंत्र] में सोम= रोम की अवस्थासे गंधर्व= पयोधर अवस्था आगे इससे अग्नि= अग्रिम ऋतु की अवस्था आगे इससे मनुष्यज पतिकी उपभोग्य अवस्था क्रमसे बतलाए गई हैं। इससे सिद्ध होता है कि उक्त तीनं अवस्थाके कालके उपभोगके बाद मनुष्य पतिका उपभोग्य काल प्राप्त हो सकता है; यही कन्या का विवाह काल है।

११. इन्हीं बातोंको अन्यान्य स्मृतिकारोंने स्पष्ट करके बता दिया है कि—

सोमः शौचं ददौ तासां। गंधर्वाश्च तथांगिरः ॥
पावकः सर्व मेध्यंच। मेध्यं वै योषितः सदा ॥ १ ॥

अत्रिसंहिता (श्लो. १४०)

सोमः शौचं ददौ स्त्रीणां गंधर्वश्च शुभांगिरम् ॥
पावकः सर्वमेध्यत्वं मेध्या वै योषितो ह्यतः ॥ २१ ॥

(याज्ञवल्क्य स्मृति आचाराध्याये संस्कार प्रकरणम्)

**सोमः शौचं ददो तासां । गंधर्वश्च शुभांगिरम् ॥
पावकः सर्व मेध्यत्वं । तस्मान्निष्कल्मशास्त्रियः ॥ २ ॥**

दक्षस्मृति (श्लो. ३६

**सोमस्तासा मदाच्छौचं । गंधर्वः शिक्षितांगिरम् ॥
अग्निश्च कार्य दक्षत्वं । तस्मात्त्न समास्त्रियः ॥ ३ ॥**

बृहत्संहिता (अ. १३)

अर्थात्–" सोमकालमें स्त्रियोंको पवित्राचार एवं शुद्धता के ज्ञानका लाभ, गंधर्व कालमें सुंदर भाषण का लाभ और पावक (अग्नि) कालमें सुखरूपताका लाभ प्राप्त होना है । इसप्रकार तीनूं अवस्था कालको भोगे बाद मनुष्य पतिके साथ सुखोपभोगका काल प्राप्त होता है । अर्थात् इस अवस्था के पहिले वह काल ही प्राप्त नहीं होता कि उसका पति उपभोग लेसके । इसलिये जयराम व गदाधर का बताया हुआ अर्थ गलत है । ऐसा सिद्ध होता है ।

१२. यहां और ऐसा दूसरा प्रश्न हो सकता है कि यह बातें तो गर्भाधान के समय की हो सकती है । क्यों कि संवर्त स्मृति (श्लोक६४–६७ में नीचे लिखे प्रकार दो तरहके दो प्रमाण लिखे हैं ।

**रोमकालेतु संप्राप्ते सोमो भुंक्तेऽथ कन्यकाम् ॥
रजो दृष्ट्वातु गंधर्वाः कुचौ दृष्ट्वातु पावकः ॥ १ ॥
" अष्ट वर्षा भवेद्गौरी नव वर्षातु रोहिणी ॥
दश वर्षा भवेत्कन्या अतऊर्ध्वं रजस्वला ॥ २ ॥
माता चैव पिता चैव ज्येष्ठोभ्राता तथैवच ॥
त्रयस्ते नरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलां ॥ ३ ॥
तस्माद्विवाहयेत्कन्यां यावन्नर्तुमती भवेत् ॥
विवाहे ह्यष्टवर्षायाः कन्यायास्तु प्रशस्यते ॥ ४ ॥**

१३. उसमें पहिला इस प्रकारके सवर्तस्मृतिमेंके श्लोकोंमेंसे पहिले श्लोकमें उक्त (कलम १२ देखो) अत्रिस्मृतिके कथनानुसार ही इसका अर्थ

है जैसाकी (१) रोम कालमें कन्या का वर उपभोग कर नही सकता क्यौंकि उसका सोम देवता उपभोग ले रहा है (२) रजो दर्शन के कालमें भी कर नहीं सकता क्यौंकि इस समय गंधर्व देवता और (३) कुचदर्शनके कालमें भी कर नहीं सकता क्यौंकि इस समय अग्निदेवता उसका उपभोग लेते हैं। अतएव इन तीन अवस्थाओंके उपरांत चौथी अवस्थामें उसका पति उपभोग ले सकता है इतनाही इस में लिखा होनेसे प्रश्नकर्ता के मतसे यह पहिला प्रमाण गर्भाधान कालका निदर्शक है क्यौंकि उसीसमय उसका उपभोग पति ले सकता है विवाह समय में नहीं।

१४. और आगे के तीन श्लोक विवाह कालके अन्वर्थक हैं। क्यौंकि उनमें ८ वर्षकी गौरी, नववर्ष की रोहिणी, दश वर्षकी कन्या इस तरह कन्याके वर्षोंके अनुसार गौर्यादि कन्यान्त नाम कहकर दश वर्षके ऊपर उसकी रजस्वाला संज्ञा कही है और इस रजस्वाला का दान करनेसे माता, पिता व जेष्ठ भ्राता यह तीनूं नरकमें जाते हैं इसलिये जहांतक कन्या ऋतुमती यानी दशवर्षकी नहीं होने पावे वहांतक उसका दान कर देना चाहिये वस्तुत: आठ वर्षकी कन्या का दान करना श्रेष्ठ है।

१५. इस प्रश्न का उत्तर थोडे ही शब्दों में येहै कि नीचे के तीन श्लोक संवर्त स्मृतिकार के कहे हुए नहीं है। किंतु कलियुग लगेबाद यवनों के अत्याचार के भय से उपताकर यह पीछे से डाले गये याने प्रक्षिप्त हैं। क्योंकि (१) सोम,(२) गंधर्व,(३)अग्नि इन तीनो देवता की दी हुई कन्या के साथ में मै (४) मनुष्य पति अब इसका स्विकार करता हूं। ऐसा वैदिक मंत्र विवाहके समय वर पढ़ता है। जबकि कन्या की रोम कुच और रज स्मृतिके कथनसे रोम कुच और यह कन्या की रज तीनो अवस्था उन के तीनो देवताओं के भुक्ति को दर्शाते हैं;तो इससे स्वयं सिद्ध होता है कि कुच इन तीनों अवस्थाके बाद ही उसका मनुष्य पति होसकता है अन्यथा नहीं। और गर्भाधान संस्कार अलग बात है उसके मंत्र भी अलग हैं। इस लिये उससे इस मंत्रका संबंधही नहीं है।

१६. गृह्यसूत्रोंमें कन्या का विवाह काल ऋतुस्नाता हुए बादका बताया है। इसी से विवाह प्रयोगमें सप्तपदी हुए बाद लिखा गया है। कि त्रिरात्रमक्षा

रालवणशिनौ स्याताम् " " अधःशयी याता संवत्सरं " " **न मिथुन मुपेयातां द्वादशरात्र ँ षड्रात्रं त्रिरात्रमन्ततः "**

अर्थात्—" [१] बरबधूने तीन दिनतक खारा खट्टा खाना नहीं चाहिये, [२] एक वर्ष तक पलंगपर नहीं सोना (३) और १२।६ या निदान ३ दिन तक मैथुन नहीं करना चाहिये "

१७. इस प्रकार के मैथुन के निषेधसे स्पष्ट सिद्ध हो जाता हैं कि यदि आठ वर्षकी कन्याका विवाह विवक्षित होता तो उक्त निषेध करने की आवश्यकता ही क्या थी ? क्यौंकि " प्राप्तौ सत्यां निषेधः " जहां मैथुन की प्राप्ति होती हो तो ही यह निषेध युक्ति युक्त होता है अन्यथा नहीं । यही न्याय शास्त्र का अटल सिद्धान्त है ।

१८. यदि मंत्रकार की विवक्षा [इच्छा] आठ वर्ष की विवाहिं हुई से मैथुन न करले इस के लिये होती तो विवाह हुए बाद पांच सात वर्षोंका वह निषेध कर सकते थे । किंतु जबकि उन्हीं ने सोम गंधर्व और अग्नि की ऊढा का अर्थात् प्रौढा का विवाह स्पष्ट तया लिखा है तभी उनको उक्त दिनों तक मैथुन नहीं करे ऐसाही कहना पडा है । बर्सोंका नहीं ।

१९. स्मृति ग्रंथों में भी जहां तहां कन्या का विवाह काल बताया है वहां वहां सोमगंधर्व व अग्नि की भुक्त यानी प्रौढा का ही विवाह कहा हं । इसलिये उपरोक्त हारीत स्मृति के प्रथम श्लोक मे रोम काल में सोमसे ऊढा, रजोवती होनेपर गंधर्व से ऊढा और कुंचवती होनेपर अग्नि से ऊढा कहते हुए उसकी प्रौढावस्थाको स्पष्ट कर दिया है । और स्मृति ग्रंथों में ' **कन्या विंदेत नग्निकां** ' ' **अनग्निकां कन्यामुद्वहेत्.** ' (अग्नि कां कन्यां न विंदेत नग्निकां = अनग्नि कां विन्देत । अनग्नि कां कन्या मुद्वहेत्) ऐसा जहां जहां लिखा है वहां तीनूं देवताओंके अंतिम देवता अग्नि के उपलक्ष्यमें कहा है अर्थात् जहांतक कुच पुष्प संभव उसके न हो जांय वहांतक उन देवतां एवं गंधर्व अग्निकी उपभुक्त वह नहीं हुई तो ऐसी के साथ विवाह करना निषेध है ।

२०. मनुस्मृति मे तो इस बात को और भी स्पष्ट करके कह दिया है की—

" देव दत्तां पतिर्भार्यां विन्दते नेच्छयात्मनः ॥
तां साध्वीं बिभृयान्नित्यं देवानां प्रियमाचरन् ॥ ९५ ॥

[मानव धर्म शास्त्र अ. ९]

" सोमो ददिदित्यादि मंत्रार्थ वादेभ्यो देवतानां दतृत्वं प्रतीयते। अथवा विवाहे देवता भार्या भवत्यत उच्यते देवदत्तामिति विन्देत नात्मन इच्छया । यथान्यद्गो हिरण्याद्यापण भूमौ लभ्यते नेयं भार्या। अत उच्यते नेच्छयात्मन इति। " [मेधातिथिः]

'देवदत्तां देवनाग्निना दत्ताम् । रयिंच पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमामिति मंत्र लिंगात्. " (सर्वज्ञनारायणः)

" देवैर्दत्ता भार्या तां पतिर्लभते। नतु स्वेच्छया "

(कुल्लूकः)

" मंत्रलिंगात् भार्याया देवदत्तात्वं स्थापयन् उपस्थितायां श्रद्धातिशयं विधत्ते देवदत्तामिति । विवाहो जन्ममरणं यदा यत्रच येन चेति स्मारयन्नाह नेच्छयेति. '

(राघवानंदः)

" देवदत्तां सोम गंधर्वाग्निभिर्दत्ताम्

(नंदनः)

" देवदत्तां सोमादि भोग काले दत्तां अथवा
विवाहे देवदत्ता भार्या भवेति वा ' सोमो दद
द्गंधर्वाय गंधर्वो ददग्नय इति श्रुतेः "

(रामचंद्रः)

२१. इस प्रकार मनुस्मृति के एवं " **तुरियस्ते मनुष्यजः** " इस विवाह कालिक मंत्रसे स्पष्ट तया सिद्ध होता है कि तीन देवतों की

ऊढा = प्रौढा * कन्या का ही (चतुर्थ) मनुष्यज पति होसकता है अन्यथा नहीं । इसप्रकारकी प्रौढ अवस्था आनेके बिनाही यदि कोई वर अपनी इच्छासे विवाह करलेवेतो उसका " **नेच्छयात्मनः** " † इसतरह मनुने निषेध कर दिया है। और मेधातिथिने अपनी टीकामें इसके अर्थ को स्पष्ट करके बता दिया है कि " बाजारमें जिस प्रकार गौ या सुवर्ण आदि वस्तु को कोई मनुष्य अपनी इच्छासे चाहे जब मोल लेकर प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार प्रौढा अवस्था के पहिले कन्या का पाणिगृहणादि विवाह विधि कर लेनेपर भी उसे भार्यात्व को प्राप्त नहीं कर सकता । क्यौंकि ऐसा करनेसे " सोमीददद्गधर्वाय ० " यह विवाह का मुख्य मंत्र निरर्थक अतएव विधिभी निरर्थक हो जाति है। तब उसका भर्ताके साथ भार्यात्व अथवा मुख्य कालीन यज्ञ संयोगके बिना पति के साथ पत्नीत्व प्राप्त नहीं हो सकता ।

२२. इस प्रकार के मानव धर्म शास्त्र के कथनसे निश्चित होता है कि कन्या को भार्यात्व प्राप्त होने के लिये कालही मुख्य माना है। और वह काल उसकी प्रौढावस्था अर्थात् मैथुन के लायक उसकी अवस्था है। शातातप ऋषिने इसी बातको स्पष्ट करते हुए कहा है कि—

" उद्वाहिताच या कन्या न संप्राप्ता च मैथुनम् ॥
भर्तारं पुनरभ्येति यथा कन्या तथैवसा ॥ ४४ ॥ "

शातातपस्मृति

अर्थात्— " विवाह की हुई कन्या मैथुन को प्राप्त न होती हुई योग्य कालमें भर्ता को पुनः प्राप्त करे। क्यों कि वह पहिले कन्या थी वैसी वह अब भी है। अतः सारांश ये है कि प्रौढा

* " रोम, रज, कुच दर्शन कालेभ्यः सोम, गंधर्व वान्हिभिरूहिता प्रौढा । [वह प्रापणे (भ्वा० उ० अ०) क्तः] वैवाह कालिक प्राप्त वयस्के त्यर्थः ।

† " पाणि गृहादि विधिना स्वीकृतामपि कन्यां पतिः उक्ताभिर्देवताभिरदत्तासद्भावात् भार्यां न विन्दतेत्यर्थः

वस्थाके बिना विवाह काल; काल के बिना मैथुन, मैथुन के बिना अकाल में किया हुआ विवाह अपूर्ण है। अतएव शातातप ऋषिने उसे रद्द मानकर प्रौढावस्था होने से गृह्यसूत्रोक्त मंत्रों (सोमो ददद्गंधर्वाय.) का एवं (न मिथुन मुपेयातां त्रिरात्र.... मंतत:) विधिका सार्थकत्व समझते हुए मैथुन काल प्राप्त होनेपर ही विवाह को पूर्णमाना गया है ।

२४. जब इस प्रकार गृह्यसूत्रों के मंत्रों के यानी श्रुति प्रामाण्यसे और अत्रि, दक्ष, मनु आदि स्मृति के यानी धर्मशास्त्रके आधारसे उपयुक्त (कलम १४) संवर्त स्मृति के चार श्लोकोंमे से " रोम कालेत संप्राप्ते० " यह श्लोक जैसे स्वयंही श्रुति स्मृति सम्मत योग्य धर्म निदर्शक सिद्ध होता है। वैसे " अष्ट वर्षा भवे द्गौरी " आदि तीन श्लोक श्रुति स्मृति के अन्वर्थक नहीं ।

इससे यह बात स्पष्ट होगई है कि सोम-गंधर्व-अग्नि के प्राप्त होने ही के पश्चात् मनुष्य पति हो सकता है ! अन्यथा नहीं !! क्यों कि सब स्मृतिकार इस बातको बार बार समझा रहे हैं।

सोम

१ स्त्रीमें जब व्यंजन इत्यादि बनाने और टापटीप से रहने का गुण हासिल हो जाय; तब निश्चय है कि, वह कन्या **सोमोपभोगी** होगई ।

गंधर्व

२ प्रपंचमें आवश्यक ऐसा कुल शिक्षण-भाषामें माधुर्य-चतुराई प्राप्त होजाय तब निःसन्देह है कि वह कन्या **गंधर्वोपभोगी** होगई।

अग्नि

३ गृहस्थी के कुल कामों में दक्ष-गर्भधारण करनेके योग्य पूर्ण अवस्थामें परिपक्व होजाय तब स्पष्ट सिद्ध है कि वह कन्या **अग्निकी उपभोगिता** होगई ।

ऐसी उपरोक्त तीनो अवस्था प्राप्त हुई कन्या ही को वर के सुपुर्द करने का कन्या पिताको अधिकार है; अन्यथा नहीं। अज्ञान, अनजान और अनाथ बालिका का अज्ञान पन का फायदा लेकर उसकी इच्छा विरुद्ध; अपने ही मर्जीपर जबाबदारी लेकर विवाह करना मानो जान बूझकर गुन्हा और अपराध करना है।

२५. यहां वाचक शंका कर सकते हैं कि सोम गंधर्व-अग्निने इसका उपभोग लिया या नहीं आदि बातों का ठीक ठीक पता लगाने में समय भी बहोत लग जाय गा तिसपर भी निश्चयात्मक निर्णय लगाना बड़ी दिक्कत और उलझन का काम है। इतनाही नहीं तो असंभव सरीखा मालूम होता है। हाँ इस बातको हम तब मान सकते हैं, कि इसकी प्रत्यक्ष में विज्ञान शास्त्र के दृष्टिसे शारीरिक परिणाम स्त्रीके प्रकृति पर कोई प्रभाव या प्रत्यक्ष स्थित्यंतर दिख जाय; जिससे बिना किसी दिक्कत; हमारे को सोम-गंधर्व-अग्नि के लक्षण तुर्त समझमें आजाँय! तो तो इसका फैसला शीघ्र हो सकता है, अन्यथा नहीं।

२६. इस प्रश्नका उत्तर प्रथम ही आपको संवर्त ऋषि ने दे रखा है। वही ऊपर में आपको स्पष्ट करके दिखा दी है; जिसके सहारे सोम-गंधर्व-अग्नि आदि देवों के उपभोग होने की पूरी पूरी जाँच शारीरिक नियमों एवं प्राकृतिक लक्षणों से जाँचने पर आसानीसे प्राप्त होती है। जिसके सहारे मिनिटोंहीमें निर्णय लग सकता है।

"रोमकाल की प्राप्ति कन्या के लिए सोम का उपभोग दिखाती है। रजोवती होना गंधर्व का एवं कुच प्राप्ति अग्निका उपभोग दिखाती है" इससे तो वह बातें बिलकुल स्पष्ट होगई। स्त्री को जब रोमकाल (बगलमें और गुह्य स्थलपर केश) आजाँय, तब वह निश्चय ही सोम देवके उपभोग का साक्षात् नमूना है। वैसेही स्त्री जब रजोवती (ऋतु मति-ऋतु स्नाता) हो जाय, तब निश्चय ही वह गंधर्व के उपभोग की स्पष्ट तथा रसीद है। ठीक

अष्ट वर्षा भवेत् गौरी ... आदि श्लोक पीछेके प्रक्षिप्त हैं यह हमारे युगपरिवर्तन की पुस्तकमें सिद्ध किया है।

इसी तरह जब स्त्री को कुच प्राप्ती (सीना जोबन भरा उभर पड़ा) हो तब निश्चय ही वह (पावक) अग्नी के उपभोग की प्रत्यक्ष प्रतिमा है ।

२७. इस प्रकार प्राकृति परके परिवर्तनीय नियमों से सोम- गंधर्व- अग्नि इन तीनों देवता ओंका प्रत्यक्ष में निर्णय लगानेका वैज्ञानिक प्रकार ऋषि संवर्त ने अपनी स्मृतिमें दिखाया है । इससे बिलकुल स्पष्ट होगया कि ' कुच पुष्प संभवके पश्चात् ' लगभग १६ वर्ष के ऊपर कन्याका विवाहकाल सर्वत्र ऋषिने ठीक़ ठीक़ समझा दिया है ।

२८. यहां इस शंका को करनेका स्थल है कि संवर्त ऋषि उपरोक्त कथनमें केवल अवस्था विशेष दिखा रहे हैं, नकि विवाह काल ? किंतु यहां ऐसा नहीं है, इसका संबंध विधि विधान से है ।

२९. देखो जब विवाह प्रयोगमें वर वधूका परस्पर समीक्षण होता है। और जिन मंत्रों से विवाह प्रयोग सिद्ध होता है । उन मंत्रोंहीमें लिखा है कि:—

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः।
तृतीयोऽग्निष्टे पति स्तुरीयस्ते मनुष्यजः ।

अर्थात्:- प्रथम सोम [पवित्राचार] की प्राप्ति हो चुकी ? दूसरे में गंधर्व [शीक्षित मधुर वाणी] की प्राप्ति होगई ? तिसरेमें अग्नि रुप तेजस्विता [कार्यदक्षता] को क्या आपने प्राप्त कर लिया है ? जो चौथेमें अब मनुष्यज [मानव विज्ञान की कुल अवस्था प्राप्त होनेपर मनुष्य] पति को प्राप्त करने योग्य होगई हो ? *

उत्तरमें कन्या कहती है । हाँ- हाँ ! ! मुझे.

सोमो ददद् गंधर्वाय गन्धर्वो ददत् अग्नये ।
रयींच पुत्राश्चादादग्नि र्मह्यमथो इमाम् ।

* हमारा किया वेदार्थका दिग्दर्शन पुस्तक देखो.

अर्थात्:— सोमने गंधर्व के लिए सुपुर्द किया। वैसेही गंधर्वने अग्निके लिये सौंपा। उसी प्रकार परिपक्क हुई पुत्रोत्पादन करने के योग्य मै यह हुँ ?

फिर वर कहता है; ठीक है ! !

सानः पूषा शिवतमामैरय सान उरु उषति विहर। यस्या मुशन्तः प्रहराम शेपं यस्यामु कामा बहवो निविष्टया इति "

[पारस्कर गृ. सू. १६।४]

" जबकि आप इतने गुणशील की पोषण करने वाली और विहार करने योग्य हो ! तो मुझमें अनुरक्त होकर आनन्द भोगो। और काम की तृप्तिके लिए मेरे पास निवास करो

३०. कितना ओज भरा मंत्र, कितनी वैज्ञानिक प्रगल्भता;अक्षर अक्षर मे भरी हुई है ! हमारे कुल संस्कारों के मंत्र गंभीर भावसे ओत:प्रोत रहते हैं। ऐसा गंभीर वैज्ञानिक भावपूर्ण विस्तृत और प्रगल्भ सनातन धर्म का विस्तृत क्षेत्र; अरे रे कलियुगीन तत्वज्ञान रहित विद्वानों द्वारा कितना बुरी तरह सुकड़ाया गया ! ओह ? यह देख कर शोक और संताप दोनो होते हैं।

३१. सोचो ! समझो ! प्रयोगों में केवल तोता रटंत भाष या स्तुति स्तोत्र ही हैं; यों न समझो। कृपाकर उसके खास खास भावों पर, मंत्रों के गांभीर्य पर, खियाल रखते रहो तो स्वयं आपको समझ जायगा कि इसका असली तत्व क्या है।

३२ क्योंकि यहां यह बात निर्विवाद सिद्ध होती है कि वैदिक परंपरागत कन्याका पितृगृह निवास; वेदों तथा कुल स्मृतियों से सोलह वर्षके लग-भग सिद्ध होता है। क्यों कि सोम- गंधर्व- अग्नि आदि के प्रयोग- मंत्र- विधि प्रमाण- आदिके देखने से इतना काल पितृगृह निवासमें परिमित है. और वह कन्या मंत्रोच्चार भी ठीक कर सकती है।

वैदिक जमानेसे चली आई हुई विवाह काल मर्यादा

आदर्श विवाह काल

सोलह वर्ष की कन्या — तीस वर्षका वर.

मध्यम विवाह काल

चौदह वर्ष की कन्या — चौवीस वर्षका वर.

कनिष्ट विवाह काल

बारह वर्ष की कन्या — अठारह वर्षका वर.
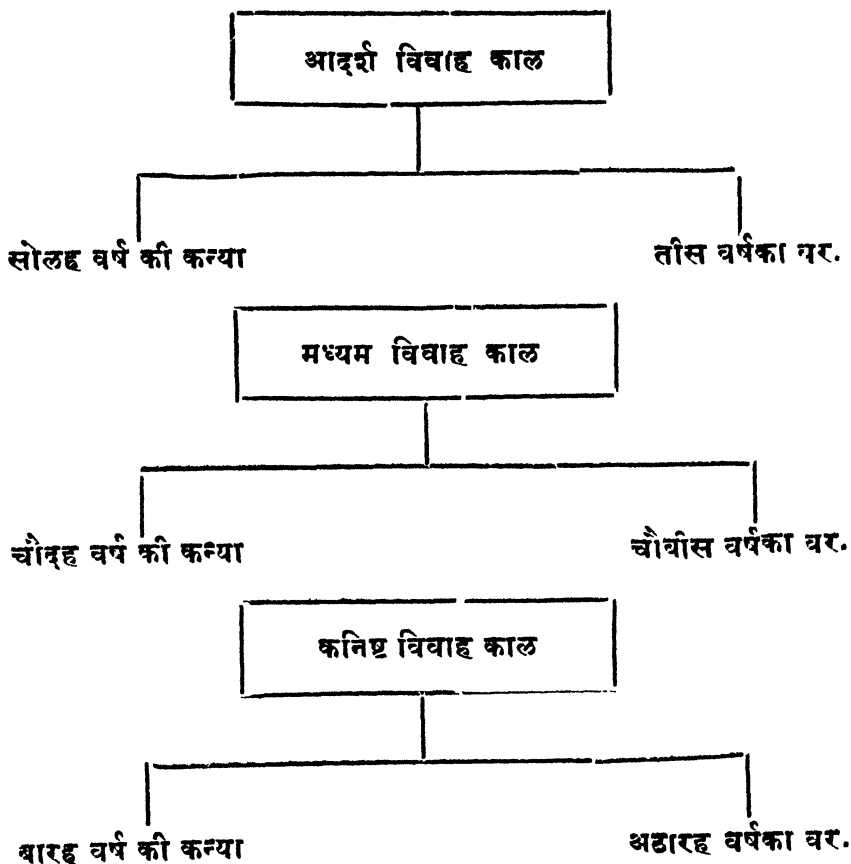
३३. इसमें सोलह वर्ष वाली कन्याही विवाह काल के लिये आदर्श मानी है। अन्यथा छोटी उमर वाली कन्या का; कन्या पिताको वैदिक सनातन धर्म और शास्त्र के मानसे कोई आधार या अधिकार नहीं है कि उसका विवाह करदे. *

---

* त्रिंशत् वर्षोद्वहेत कन्यां हृद्यां षोडष वार्षिकीं
(मनु ९.९४)

त्रिंशद्वर्षः षोडषाब्दां भार्यां विंदेत नग्निकाम्
भारत.

हमारा बनाया ' विवाह मीमांसा ' पुस्तक देखो।

कन्या पिताका कर्तव्य

कन्या पिताका कर्तव्य.

३४. जब यह बात हम निर्विवाद समझ चुके कि प्राचीन कालमें प्रौढ़ विवाह की प्रथा थी। तो अब हमें यह देखना भी परमावश्यक होगया है कि कन्या के प्रति पिता का क्या कर्तव्य था ? इस और जब हम हमारा ध्यान पहुँचाते हैं तब पता चलता हैं कि स्वयं कन्या को अपने लिये पतिका चुनाव करने का अधिकार था। देखो देवहुतीनें-कर्दमको, सावित्रीने सत्यावानको, दमयंतीनें नलको, द्रौपदीनें अर्जुनको, कुन्तीनें पाण्डुको, रुक्मिणीनें कृष्णको, सीतानें रामको कहां तक कहुं इसीका कही बड़ा पोथा न होजाय इसभय से अधिक नहीं बढ़ाता किंतु यहां इतनाही कहना पर्याप्त है कि जिसका संबंध जिस पतिसे होने वाला है वह मनुष्य योग्य-अयोग्य-मूर्ख-बुद्धिमान, विचारवान, चतुर, सुशील, दयवान, निर्दई, कठोर, कपटी, छल, चोर, ठग, दुराचारी-सदाचारी आदि कौन से गुणों में निष्णात है यह पहचान ने का सुयोग उस कन्याको दिया जाताथा यह वेदोंके प्रमाणोंसे सिद्ध होता है।

उपवर कन्याकी वर चुनाव-चेष्टा।

३५ जब कन्याकी अवस्था अपना लाभ, हानी, यश अपयश, सुख, दुःख पूर्ण तरह से समझने लगे अर्थात् जब उसकी पूरी पूरी सज्ञानावस्था प्राप्त हो जाय तब माता पिताओंका पवित्र फर्ज है कि कन्या कहे उस प्रकार उचित व्यवस्था सौलत आदि जो कन्या मांगे उसे उसकी इच्छानुकूल देना चाहिये। देखो अथर्वण वेदकी आज्ञा है कि—

इह प्रियं प्रजियै ते समृध्यता मस्मिं गृहे
गार्हपत्याय जागृही। एना पत्या तन्वं,
सं स्पृशस्वाथ जीर्विर्विदथमा वदासि

(अथर्वण वेद १४ कां १. १. ३०)

भावार्थः—यह (कन्या) अति प्रिय ता से इस घरमें पाली हुई है उसकी हर प्रकार से समृद्धि करने के लिये हर समय घर वालों को सचेत रहना चाहिये। और जिसको शारीरिक प्रक्रिया से और अन्य भाषणसे जीवन आधार रूप कहती हो........उसेही कन्या देना चाहिये।

३६. यहां कोई शंका कर सकता है कि वर–वधू आदिका तो कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है; फिर हम कैसे मानें। ठीक है। अब इससे भी स्पष्ट तया अथर्वण वेदकी आज्ञा दिखाते हैं।

सोमो वधू युरभव दश्विना स्तामुभा वरा
सूर्यां यत पत्ये शंसंतीं मनसा सवितादददात् ॥ ९ ॥

(अथर्वण. कां. १४. १. १. पृ. २९३.)

३७. जब वधूमें सुशिक्षिता पन (सोम) आता है वही उसका वर है। फिर वह जिस पति के लिये सलाह देता है; फिर ऐसे मनःपूर्वक पति को सविता देव प्राप्त कराते हैं

३८. इससे स्पष्ट होता है की अपनी कन्या किससे पति की इच्छा करती है; इसको पूर्ण तया समझ लेते थे। और ऐसेही पुरुष के सुपुर्द; कन्या के करनेमें, कन्या की इच्छा तृप्त करने के पुण्यके भागीदार होतेथे यही उनका पवित्र कर्तव्य था।

वधुकी वरप्रति सन्देश चेष्ठा।

३९. एकाएकी किसी से भी कहना सुनना बहुत कठिन साहस करना है। तो भी वह किस तरहकी बातें करते थे यह अथर्वण वेदमें कहे हुए एक प्रसंग को देखने से पता चलता है।

संभल नामक व्यक्ति से कुछ सन्देश अपने प्रिय वर का पूँछाती है:—

युवं भगं सं भरतं समृद्धमृतं वदन्ता वृतोद्येषु।
ब्रह्मण स्पते पतिमस्यै रोचय चारु संभलो वदतु वाच मेताम्॥

(अथर्वण १४ कांड १. १. ३१.)

" क्या ? आपके योग्य कोई सुभगा प्राप्त करने का आपका कोई उद्देश है ? मेरी अंत:करण से आपहीमें अभिरुचि है । हे विचार वान संभल यह मेरी वाक् यांचा कहोतो सही "

४०. इसमें कितनी मार्मिकता है । इस सन्देशको लेकर जब वह आशा जनक पत्युत्तर को प्राप्त होता हुआ लौटता है । तब उसके आशातीत उत्तर को प्राप्त होते ही अपने सौभाग्य को धन्य समझती है । क्यों कि पति उसकी इच्छासे अनुव्रत जो हुआ है; इस स्वादके सामने अमृत का स्वाद भी क्या चीज है । "

" जैसा सिन्धु नदी का साम्राज्य सूख नहीं सकता ठीक उसी तरह तुम अखंड सम्राज्य प्राप्त करोगी " यह उसे विश्वास हो जाता है ।

४१. जब गुप्त सन्देश वर वधु का पोंच गया कि पश्चात् श्वसुर और देवर आदि कों से, राय ली जाती थी । और वह जाने वाला व्यक्ति प्राय: बुद्धिमान ही भेजा जाता था । क्यों कि उंचसे उंचा श्वसुर और नीचेसे नीचा देवर इन सबोंको बुद्धिमानी से समझाने के; लिये बुद्धिमान आदमी की जरूर लगती थी इसीसे चतुरके द्वारा राय बुलाई जाती थी । या अन्य जातिका विद्वान पुरुष भी जा सकता था उनके जरियेसे जब समुचित राय प्राप्त हो जातीथी । साथमें पहिले पति कि सम्मति होनेसे वह बात पूर्ण सबल हो जाती थी । अर्थात् पतिकी, श्वसुर की, जेष्ठ की, देवर की सबों की सम्मति प्राप्त होती थी । पश्चात् अन्य कार्य होते थे

वधुद्वारा श्वसुर और देवर इत्यादि की राय.

आशा साना सामनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम् ।
पत्यु रनुव्रता भूत्वा सं नह्यस्वामृताय कम् ॥ ४२ ॥
यथा सिंधुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा ।
एवात्वं साम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य ॥ ४३ ॥

(अथर्वण. कां. १४. अ. १ सूत्र)

आस्यै ब्राह्मणाः स्नपनी र्हरंत्ववीरघ्नी रुदजन्त्वापः ॥
अर्यम्णो अग्निं पर्येतु पूषन् प्रतीक्षते श्वसुरो देवरश्च ॥ ३९ ॥

(अथर्वण. कां. १४ अ. १ सू १)

४२. "जब यह बात तय होजाय की वधुवर का प्रेम संलग्न होता है।

विवाह पूर्व वधु वर का मार्मिक संभाषण।

तब वधु पिता और वर पिता या पितृ तुल्य अधिकारी इन का पवित्र कर्तव्य है कि इन दोनों वधु– वर के सम्भाषणादि होने में समुचित सुविधा प्रदान करे। क्यों कि वधु वर के संभाषण में. प्रश्न क्रीडा का खासा आनंद आता है। उलझन भरे पेंचीले प्रश्न और उनके उत्तर इससे उनकी आत्माको विश्वास हो जाता है. कि यह मनुष्य किस पातात्र का है।"

४३. और सचमें देखा जाय तो यह बातभी सच है कि विवाह वर वधू का है। न वर पिता या वधु पिताका। क्यों कि जिससे जिस की प्राप्ति होगीं उसका विचार उसको खुद को करना चाहिये।

४४. देखो अथर्व संहिता की आज्ञा में साफ लिखा है कि* "जिस

वधुने सखी सहित रुपकुल की देख भाल करना

स्त्री की जिज्ञासा जिस पति की भार्या बनने की होती है; उसको उसी की इच्छाऽनुसार पति चुनाव के लिये विचरने देवो। साथमें आवश्यकता होने पर सखियाँ भी लेजाने देवो। इस को किसी भी विद्वानने रोकना नहीं चाहिए। क्यों कि वह अपने तुल्य रुप और कुलको खुद खोज लेगी." इस लिये उसके उद्योग में उसे मदत देना यह तुमारा आद्य कर्तव्य है।

* पूर्वा परं चरतो माय येतौ शिशू क्रीडन्तौ परि यातोर्णवम्।
विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतु रन्यो विदधज्जायसे नवः ॥ २३ ॥

तेनेमामश्विना नारीं पत्ये सं शोभया मसि ॥ ५५ ॥

इदं तद्रूपं यदवस्त योषा जायां जिज्ञासे मनसा चरंतीम्
तामन्वर्तिष्ये सखिभि र्नवग्वैः क इमान् विद्वान् विचर्त पाशान् ॥५६॥

अहं विष्यामि मयि रुपमस्या वेददित् पश्यन् मनसः कुलायम् ॥ ५७ ॥
(अथर्व संहिता कां. १४ अ. १ सू. १५५-५६)

४५. जब इस बात को वधु स्थिर करलेती थी कि * अमुक पति के प्रति मेरी पूर्ण जिज्ञासा है; तब उसके पालक उस बातको पूरी समझ लेते थे। पश्चात् ज्ञाति के लोग इस आसक्त हुई हुइ कन्या को सर्व श्रेष्ठ ऐसे प्रियतम वरके सुपुर्द करने को अपनी सम्मति पूर्ण तया देते थे। ऐसा वर्णन अथर्वण संहितामें मिलता है।

ज्ञाति गणों की ओरसे वधुको पति बंधन

ऋषि, गण और गोत्र

१ मुख्य ऋषि सात हैं क्यों कि हमारे यहां प्राचीन वैदिक संकृति से सप्तऋषि यह मुख्य ऋषि माने गये हैं। और आजतक वही माने जारहे हैं।

ऋषि

विश्वामित्रो जमदग्नि र्भरद्वाजोथ गौतमः।
अत्रि र्वसिष्टः कश्यप इत्यैते सप्त ऋषयः

१ विश्वामित्र, २ जमदग्नि ३ भरद्वाज ४ गौतम ५ अत्रि ६ वसिष्ठ ७ कश्यप यह सप्त ऋषि हैं। और आठवा अगस्य ऋषि इनकी ऋषि संज्ञा है यह सप्तऋषि कहलाते हैं।

२ ऋषि के पिता, पितामह, प्रपितामह यही प्रवर हैं। क्यों कि प्रवर वरण के समय* भी प्रथम पिता आता है पश्चात् पुत्र तदनंतर पौत्र आता है। यों शतपथ ब्राह्मण में लिखा है। इसे त्रि प्रवर भी कहते हैं।

प्रवर

---

* नील लोहितं भवति कृत्या सक्ति र्व्यज्यते।
एधन्ते अस्या ज्ञातयः पति बंधेषु बध्यते
अथर्व संहिता १४ कां १. १.

* गोत्र भूतस्य पितृ पितामह प्रपितामहाः एव प्रवराः पितै वाग्रेथ पुत्रोऽथ पौत्र इति [शतपथ ब्रा.]

३ प्रवर भेद कुल में ४९ कहे हैं। उनका खुलासा निम्नलिखित

प्रवर भेद अर्थात गण।

प्रकारसे है—**भृगुगण ७, आंगिरस गण १७, अत्रिगण ४, विश्वामित्र गण १०, कश्यप गण ३, वशिष्ट गण ४, अगस्ति गण ४, यह कुल गण मिलानेपर ठीक ४९ गण होते हैं।** इन एक एक गणों के अन्दर अर्थात् उपरोक्त गणों के अंतर्गतमें गोत्र बहुतसे भरे हैं। किंतु उनके प्रवर एक होनेसे वह गोत्रगण समझा जाता है। इस प्रकार ४९ गोत्रगण हैं। और वही ४९ गोत्रगण बौधायन ने ठीक समझा दिये हैं। यानी इन ४९ गोत्र गणों मे तमाम गोत्र बंधे हुए हैं।

४ विश्वामित्र, जगदग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वसिष्ट, कश्यप यह

गोत्र यानी क्या ?

सात ऋषि और आठवाँ अगस्त्य इन ऋषियों से उत्पन्न हुए जो पुत्र पौत्रादि, स्वजातीय गण अर्थात वंशका जन समूह में (क्यों कि उक्त सप्त ऋषि से उत्पन्न हुए पुत्र पौत्रादि) हजारों ऋषि उत्पन्न हुए; उन उत्पन्न हुए ऋषियोंने जो अपना अपना नाम ऋपिकी आद्य संतानों द्वारा जो व्यक्त किया है; वही गोत्र हैं।

५ अगस्त्य सहित ऊपर दिखाए हुए × सप्त ऋषि उनसे जो उत्पन्न

गोत्र किसे कहते है।

हुए वंश वे पुरुष निज निजके जो जो नाम से प्रसिद्ध हुए हैं; वे सब गोत्र कहलाते हैं।

६ गौत्रों की संख्या हजारों लाखों * अर्बोतक है। किन्तु

गोत्र कितने हैं।

इतने अर्बोतक के गोत्र है तो भी उन गोत्रोंका बंधन प्रवर गणों में कुल ४९ गणों में आता है। और वैसेही गणों का बंधन सप्त ऋषियों से हो जाता है। सारांश में इनका अनुक्रम से विस्तार यही है †

× **सप्तानां ऋषिणां अगस्त्याष्टमानां यत दंपत्यं तद् गोत्रम्।**
प्रवर मंजर्यां बौधायनः।

* **गोत्राणांतु सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानिच**
ऊन पंचाशदेवैषां प्रवरा ऋषि दर्शनात्
प्रवर मंजर्यां बौधायनः।

† विशेष खुलासा हमारी बनाई ' गोत्र प्रवर मीमांसा ' में मिलेगा।

विवाहमें गण और गोत्र विचार.

असपिंडाच या मातुः असगोत्राच या पितुः ॥
सा विवाह्या द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने ॥ ३७ ॥

(लघु शातातप - ३७)

अर्थात्:—" जिस कन्या को ब्याहनी है उस की माता यदि निजके सापिंडय सें अड़ती नहीं है; और जिसका पिता निजके गोत्र से भिन्न है;तो वह गृह कृत्य एवं दार कर्म – मैथुन में द्विजातियों से विवाहमे योग्य है "

७ अब जब यह हमने दिखा दिये की गोत्र लाखो और अरबों हैं तब उसमें हमे देखने योग्य बात सिर्फ इतनी ही है कि जिस वर वधू का प्रेम परिक्षण करना है वह सगोत्रा तो नहीं है; अत: यहां ऊपरोक्त प्रकार से उसकी जांच करके कार्य करना चाहिये।

८ क्यों कि यह अबाधित सिद्धान्त है कि सगोत्रा से विवाह न करे अत: यह सर्व थैव त्याज्य है। क्यों कि श्रुति और स्मृति वचनों से यह त्यागनेके लिये जगे जगे कहा गया है। इसके लिये सब से प्रथम गोत्र इत्यादिका विचार कर; पश्चात् वैवाहिक प्रेम परिक्षण आदिकी सुसंधि दी जाती थी। ठीक इसी प्रकार अबभी प्रत्येक दम्पति का आद्य कर्तव्य है कि गोत्रकी समुचित छान बीन प्रथम ही कर लेना चाहिये; पश्चात वैवाहिक समस्याकी बात।

वधुवर मेलन.

९ वधु और वरका प्रेम (Love) जीवन भरमें किस प्रकार रहेगा । यह एक प्रश्न बड़ा आवश्यक है । क्यों कि हम प्रथम कह आये हैं कि विवाह संबंध में वधुवर के आपस में प्रेम परिक्षण होजाता है । किंतु उसमें यह प्रश्न भी आवश्यक है कि जीवन भर इनकी परस्पर में मैत्री कैसी रहेगी ?

१० क्योंकि परस्पर की मैत्री का प्रश्न आज युरोप में भी खड़ा हो रहा है । और उन लोगोंने इसका निर्णय लगाने के लिये कई संस्था और सोसायटियाँ स्थापित करी हैं । * कोई बालों (केशों) की चिकित्सा करता हुवा प्रेम मैत्री का निर्णय देता है, तो कोई वधु-वर के शरीरसे रक्त की बून्द निकाल कर उनके अन्यान्य वैज्ञानिक प्रकारों से कणों का आकर्षण प्रत्यक्ष देखकर मैत्री निर्णय कर, अपना मत मेलन संबंध में देता है । इसींसे वहां के लोग सैकडों ही नहीं किंतु हजारों और लाखों रुपये इस बातके लिये चूरा कर रहे हैं कि मेलन मैत्री जाँचने का खास प्रत्यक्ष नमूना हमारे हात लगे । फिर वह किसी तरीकेका हो ।

११ किंतु हमारे भारत वर्ष में ऐसे जटिल प्रश्नको तत्व ज्ञानी ऋषियोंनें प्रथम ही हलकरनेका अद्भुत तरीका निकाल रखा है । जिसके बलपर झट्से शीघ्र ही मालूम होसकता है; कि इन दंपति का प्रेम अखंडित कायम रहेगा या नहीं ? इसकी जाँच नक्षत्र से की जाती है और इसे ' घटित मेलन ' कहते हैं

वधु-वर का घटित मेलन ।

१२ आज जिस तरह हम लोग काल ज्ञानमें घंटा मिनिट सटसे जान जाते हैं ठीक् इसी प्रकार प्राचीन कालमें काल गणना का प्रकार (सूक्ष्म) घटि-पल विपल प्रति विपल आदि से होताथा । अत: जन्म समय की घटि से वधु का जन्म नक्षत्र एवं वर

* चित्रमयजगत ' हिन्दी ' सन १९१६ मार्चका अंक देखो

की ओर की घटि पलों से वर का नक्षत्र और उनके चरण इत्यादि जान जाते थे। इन वधुवर के दोनोंके परस्पर नक्षत्र जानने पर इनकी मैत्री कैसी अखंडित कायम रहेगी इसका निर्णय निकालनेका तरीका ज्योतिष शास्त्र में जगे जगे बताया है। ×

१३ आधुनिक पाश्चिमात्य विद्या से चका चौंध हुए कुछ विद्वान् **सट** से यह शंका कर बैठते हैं कि, घटित मेलन का प्रकार केवल **थोतांड** है! इसमें क्या जान है? क्या पंडितों के यहां विवाह पश्चात् विधवा यें नहीं होती? फिर व्यर्थ की चिकलुस क्यों?

१४ ठीक है। यहां शंका करना कोई दोष नहीं। क्यों कि बिना शंका किये समाधान हो भी कैसे सकता है। अतः उपरोक्त बात को हल करने के लिये निम्न लिखित मुद्दे खड़े होते हैं।

१ नक्षत्रों से और मनुष्यों से ऐसा कौनसा संबंध है?

२ वह किस काममे लाया जाता है?

३ उसका प्रकृतिपर क्या परिणाम होता है? और वह प्रत्यक्ष दिखाता है क्या?

४ उसे हम क्यों मानें उससे हमें क्या लाभ?

१५ नक्षात्रों और मनुष्यों से हमारा इतना निकट संबंध है कि प्रतिक्षण में प्रत्येक बात बिना नक्षत्र के नहीं होती। जैसे बीजकी बुआई किसी भी किसान को मनमाने नक्षत्र में करते नहीं आती। और यदि किया भी तो फलद्रूप नहीं होती, यह प्रत्यक्ष है उसी प्रकार धान्य की कटाई आदि कुल किसानी काम नक्षत्रही के महत्व को लेकर हैं।+

१६ यह हमने सिद्ध कर दिया है कि जिस प्रकार हम आज सत्ताईस नक्षत्र आकाश में मोजते हैं ठीक उसी प्रकार वैदिक जमाने में यही नक्षत्र

+ इस विषयकी आज्ञा–गर्ग–च्यवन–नारद – वसिष्ठ आदि कुल ऋषियों ने दी है।

देवता नामसे संबोधित होते थे; और इनकी गिनती देवता के नामों से होती थी । × अश्विनौ=अश्विनी, यम=भरणी, अग्नि=कृत्तिका, प्रजापति=रोहिणी........ आदि दैवत्य क्रम* वैदिक समय में था वही अव्याहत अभीतक चला आरहा है ।

१७ चला आरहा है यह कहने का मतलब यह है कि वैदिक प्रयोगों में जगह जगह इन्हीं देवताओं का आवाहन—पूजा—और हवन इत्यादि बार बार लिखा और समझाया है । और वही आजतक चला आरहा है, इतना ही नहीं थोड़ेमें हमारा इतना ही कहना पर्याप्त है कि विवाह प्रयोग में जो हवन आव्हाहन—पूजन इत्यादि होता है सो देवता यही हैं । और मंत्रों में भी इन्हीं का नाम बार बार आया है । अतः इन्ही देवता ओं की प्रेरणासे हमारे में बुद्धि, सामर्थ्य, बल, शक्ति, आदि प्राप्त होती हैं ।

नक्षत्रों का मनुष्योंकी विचार शक्तींपर कबजा ।

१८ अब जब इस प्रकार उक्त दैवत् का महात्म्य जो समस्त जगत् को बंधन कारक है । तब मनुष्यों को है कि नहीं यह शंका ही नहीं रहती । क्यों कि जगत में पैदा होने वाले ऋतु—अयन समुद्रकी भरती ओहटी, वनस्पतीकी प्ररोहता—धान्यकी उपज—कहां तक कहें खान – पान - जल, वायू इनका आगम निर्गम सब इन्ही के बल पर निर्भर है ।

१९ इसलिये पहिले दिखाये मुद्दे हल किए जाते हैं कि: —

१. नक्षत्रों एवं दैवत्यों से केवल मुनुष्यों ही का नहीं किंतु समस्त जगत् के सृष्ट पदार्थ और सब प्राणी मात्र से घनिष्ट संबंध है ।

+ 'नक्षत्र विज्ञान' और ग्रहों के प्रत्यक्ष चमत्कार' नामक हमारी बनाई पुस्तकों में गहरा खुलासा मिलेगा ।

× देखो हमारा बनाया 'वेदार्थ का दिग्दर्शन' नामक पुस्तक ।

* दैवतक्रम का अधिक खुलासा आगे विवाह प्रयोग में देखो ।

२. और वह प्राणी मात्र के विचार–बुद्धि सामर्थ्य आदिके काम में आता है। और उन्ही के प्रभाव से उनमें रद बदली हुवा करती है!

३. उसका जैसे समष्टि और व्यष्टि रूप समस्त जगत पर परिणाम निश्चित है; और वह ऋतुओंके प्राकृतिक लक्षणों में प्रत्यक्ष दिखता है?

४. तब ऐसे दैवत क्रम से कहे जाने वाली बातका लाभ नहीं लेना तो फिर किसका लेना। इस लिये इसकी बातें अवश्य देखनी चाहिये।

२० अब जब हम उक्त बातोंसे नक्षत्रों के महत्व को जान गये तब उस उपरोक्त शंकाका समाधान ठीक सिर होजाता है, कि **घटित– मेलन** यह एक थोतांड नही है। अतःयह तो वेद कालीन प्राचीन महर्षियों का अतीन्द्रिय ज्ञान से संग्रहित किया हुवा अमौलिक वधु वर के परस्पर मैत्री समझने का अद्भुत तरीका है। और इसीसे गर्ग– च्यवन– वासिष्ट नारद आदि कई महर्षियों की इसको आज्ञा है।

२१ उक्त घटित मेलन में आठ बातों की जाँच की जाती है। जिसका ब्योरा इस प्रकार है। वर्ण– वश्य– तारा– योनी– ग्रह– गण कूट– नाडी। इसके उन लोगों ने अनुक्रमसे अङ्कदेने का भी कहा है। अर्थात् वर्णका एक, वश्य के दो, तारा के तीन योनी के चार ग्रह मैत्री के पांच, गणके छे, कूट के सात और नाडी के आठ अंक मिलते हैं। इस प्रकार कुल गणोंका ३६ जोड होता है।

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रह मैत्रिकम्।
गण मैत्र भकूटंच नाडी चैते गुणा धिकाः॥

(मुहूर्त चिंतामणि विवाह प्र. २१)

नाडी भेदे गुणा अष्टौ सप्त सद्राशि कूटके। षट्गुणा गण मैत्र्योच सौहार्दे पंच खेटयो। योनिमैत्र्यांच चत्वारः स्त्र्ययः तारा बले गुणः। वश्यत्वे द्वौ गुणौ प्रोक्तौ वर्ण एक प्रकीर्तितः॥

(दैवज्ञ मनोहर)

२२ व्यवहार में वर्ण उत्पत्ति सिद्ध माना है। तोभी स्वभाव गुण से उसमें भिन्नता दिखती है। जैसे ब्राह्मण कुलमें उत्पन्न हुवा है; सही किंतु उसमें गुण क्षात्र वृत्तिके रहना। या वैश्य वृत्तिके व्यवसाई रहना अथवा नौकरी दास्यत्व आदि शूद्र वृत्ति के रहना सहज है। इसी प्रकार वधुवर के वर्णात्मक गुण जाँचने का यह पहिला प्रकार है और यह अपना एक अंक प्रदान करता है।

वर्ण

२३ जगत् के प्रत्येक प्राणी एक के अनुकूल और दुसरे के प्रतिकूल रहा करते हैं। जैसे पानीकी मछली, मनुष्य के वश में है। किंतु मछली के वश मनुष्य नहीं। वैसेही जितना सिंह मनुष्य को पूरा घातक है उतना मनुष्य सिंह को नहीं आदि कई तत्वों की उत्पत्ति सिद्ध जाँच करने का यह दुसरा प्रकार है। इसमें वधुवर के अनुकूल वशता रही तो यह दो अंक प्रदान करता है।

वश्य

२४ वधु नक्षत्र से वर नक्षत्र तकके अंक और वर नक्षत्र से वधु नक्षत्र तकके अंक नवसे विभागित करते हुए मोजनेपर इसके गुण प्राप्त होते हैं। तारा नक्षत्र को कहते हैं। इसका संबंध ज्योतिष से पूर्ण तया है। क्योंकि ज्योतिष के प्रकार दो हैं, पहिला स्थिर और दूसरा चल।

तारा

२५ आकाशमें जो अनंत तारा गण दिखते हैं, वे स्थिर और भौम चन्द्रादि ग्रह चल हैं। तारा गणों को यद्यपि निज गती है। तो भी वह बहुत कम है। अर्थात् लाखों वर्षों में किंचित फरक पड़ता है। किंतु आकाश में इनका स्थल परिवर्तन नहीं होता।

२६ वेदों में आकाशको समुद्र कहा है * और इतने बड़े अफाट सागरमें × पार कराने वाली अर्थात् तराने वाली तारू (नौका) रूप कोई सहारा है तो यही एक तार का के अन्दर का तारकत्व है। इस लिये जो कोई भी इसका यजन करते हैं * वह उसी पद पर प्राप्त होते हैं। अर्थात् पक्के

* द्यौः समुद्र समं सरः (यजुर्वेद २३-४८)

× सलिलं वा इदमन्तरासीत् यत् अतरन् तत् तारकाणाम् तारकत्वम्। (तै ब्रा. १-५-२)

होते हैं। इलते नहीं यही नक्षत्र का नक्षत्रत्व है। इसीसे वधुवर के गुण प्राप्ति में तारा को महत्व दिया गया यह तिसरा प्रकार है। यह अपने गुणके तीन अंक प्रदान करता है।

योनी

२७ किसी भी रुप को संग्राहित कर घटक रुपमें लाने की प्रक्रिया को योनी कहा है। अत: संग्रह करने की प्रक्रिया किसकी श्वानवत् किसीकी हस्तिवत व किसी की गौवत् है या कैसी है। यों समझने का तरीका नक्षत्रों ही से रखा है। इसीसे वधुवरकी गुण प्राप्ति में इसको महत्व दिया है यह चौथा प्रकार है। यह अपने गुणके चार अङ्क प्रदान करता है।

ग्रह मैत्री

२८ वधुका नक्षत्र जिस राशिमेंका है उस राशीका जो स्वामी उसकी परस्पर में मैत्री वरकी राशि स्वामीसे कैसी रहेगी; यह राशि स्वामी सेही जाँचा जाता है। यह पांचवा प्रकार है यह भी अपने समतुल्यतामें गुणके पांच अंक प्रदान करता है।

गण

२९ गण वंशको कहते हैं। श्रेष्ठ पुरुषके वंशमें क्रूर प्रकृति गुणयुक्त बालक होना, क्रूर वालेके प्रकृति यहां सद्गुण युक्त बालक होना, ऐसा परिवर्तन रहता होता है। क्यों कि गुण के प्रकार तीन प्रशस्त है सत्व–रज–तम ऐसे तीन गुण जगत् मान्य है। उसमे ऋषियोंनें:–

---
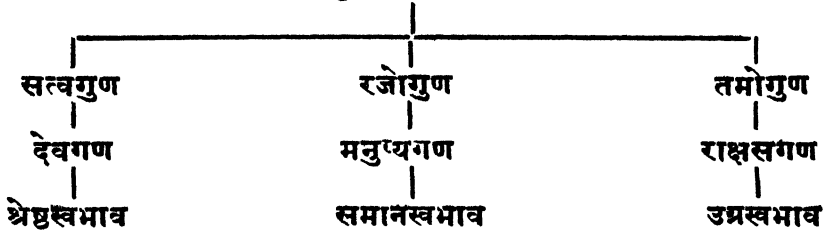
* यो वा इह यजते अमुं सलोकं नक्षते तत् नक्षत्राणाम् नक्षत्रत्वम्
(तै ब्रा. १-५-२)

संग्रही करण प्रकारः स योनिः (चुलेट कृत यज्ञविज्ञान)

देवगण=मनुष्यगण=राक्षसगण ऐसे तीन गण मुकर करके गणों के गुणों को देखने का तरीका खोजा है। यह अपने गुणों के छे अंक प्रदान करता है

भकूट

३० इसमें वधु राशी से वर राशीतक और वर राशि से वधु राशितक की कुल राशियां मोजी जाती है। इसमें राशियोंसे राशियां मोजी जाती है। इसमें भी सूक्ष्म ऐसा एक रज्जू कूट भी मोजा जाता है। यह राशि से राशि नापने का प्रकार ऋषियोंने कर रखा है इस को भकूट कहते हैं। यह सात गुण प्रदान करता हैं।

नाड़ी

३१ यह नाड़ी नक्षत्रोंसे मोजी जाती है। इसमें शारीरिक विज्ञान से दिव्य दृष्टि द्वारा ऋषियोने फल सिद्ध किए हैं। इसके आदि–मध्य–अंत्य ऐसे तीन भेद बनाए हैं सो यह आयुर्वेद से पूर्ण संबंध रखने वाली बात है। अत: यह भी एक अद्वितीय खोज है। इस में वधु वर के परस्पर के, नक्षत्र से नापा जाता है। यह असमान नाड़ी रहने पर आठ गुण प्रदान करती है। *

३२ उक्त आठ प्रकार के गुण शोधन करने का प्रकार दिखाया है। इन आठो प्रकार के गुण के अंकों का जोड़ ३६ होता है। इसमें भी वधु-वर के परस्पर में गुण बरोबर न मिलने से घटाये जाते हैं। किंतु कितने भी कम हो कममें कम आधे गुण अर्थात् अठारह गुण के ऊपर गुण के अंक मिल जाँय तो ज्योतिष शास्त्र में विवाह शुभ कारक बताया है।

मेलन प्रकार का दुरुपयोग.

३३ कइ लोग उक्त मेलन प्रकार में इस के सच्चे महत्व को न समझ कर इसमें कई प्रकार की गड़बड़ी पैदा कर देते हैं; क्यों कि व्यवसाई से व्यवसाई और धनिको से धनिक वधु-वर के पालकों का जहां सामना हो जाता है; वहां इस के नियमो में बड़ी खींच तान होती है। कोई एक मेक की पत्रिका

---

* गुण लानेकी पद्धति कुल ज्योतिष के ग्रंथोंमे कहे गई हैं,

शोध लगाने की खटपट करता है, तो कोई लड़का लड़की को छोटा बड़ा दिखाने के लिये पत्रिका की रदबदली करानेकी कोशीस करता है; तो कोई पत्रिका को उथल पुथल कर देता है। कोई पंडितों के पास जाकर १०।५ वर्ष आगे पीछे पत्रिका को सरकानेकी कोशीस करता है। कहने का तात्पर्य ये हैं कि पवित्र ऐसे कृत्यमें हात चालाखी का नतीजा; दुष्परिणाम रुप होता हुवा प्राप्त होता है अतः इसमें ऐसे जगह इसका सदुपयोग करना चाहिये। ताकि वर वधू का प्रेम अखंडित बना रहकर दंपति नाना आनंद भोगे। अतः दम्पति का उत्तम सुख और प्रीति बनी रहे ऐसी दृष्टि रखना यह उनके पालकों का पवित्र कर्तव्य है। केवल धन पर नहीं।

मंगल विचार

मंगल

३४ ग्रह सात हैं, सूर्य- चंद्र-मंगळ बुध गुरू, शुक्र, शनि इन सबोंके फल, फलित ज्योतिष शास्त्र में कहे हैं। इसमें मंगल के भी फल की कुंडली से जाँच कही है ठीक उसी तरह सब ग्रहोंके उच्च बल इत्यादि देखे जाते हैं।

३५ किंतु अफ़सोस है कि कई लोगों को अन्य ग्रहों की जाँच करने को तो परिश्रम और सब ग्रहोंके बलों का फल सीखनेमें सिर खर्च करना पड़ता है। यह कठिन कार्य में तो घुसना जड़ मालूम होता है। किंतु पत्रिका समक्ष आते ही मंगल पर कमर कस ने लगते हैं। और इसका एक श्लोक भी बना रखा है। ×

× लग्नेव्ययेच पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे ॥
कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्ता कन्या विनाशदः ॥
अन्यदपि श्लोकं पठंति।

३६ यह श्लोक मुहूर्त चिंतामणि या मुहूर्त भार्तण मुहूर्त तत्व, आदि कोई मुहूर्त ग्रंथों मे नहीं है। सिर्फ मुहूर्त चिंतामणि की टीका के बीचमें–किसी एक जगह श्लोक पढ़ा जाता है यों कह कर बीचही में यह श्लोक धर दिया है। न इसको कौई आधार है और न प्रमाण।

३७ हाँ यह बात जरूर है कि जैसा ग्रहों का फल देश देखा जाता है। उसी प्रकार इसका फल देश मात्र देखना जरुर है। इसका मतलब यह नहीं कि मंगल को मंगलीक लड़का या लड़की ही होना। क्यों कि यदि ऐसा होता तो क्या मुहूर्त ग्रंथों मे इसका मूल में कहुँ उल्लेख तो होना। किंतु ऐसा कहीं पर भी नहीं है। इसी से स्पष्ट होता है कि जितना यह लोग मंगल को महत्व देते हैं; उतना कोई महत्व नहीं है।

३८ कन्याका वैधव्य और वर की विधुरता दिखानेमें केवल मंगल ही दिखता है ऐसा नहीं है। सब ग्रह ऐसी बातको दिखा सकते हैं। यानी कुल ग्रहों के बला बल से इसकी जांच होती है × अर्थात् सप्तम स्थानमें कोई भी क्रूर ग्रह आजाय तो वैधव्य या विधुर योगायोग का विचार करे यों लिखा है।

३९ और ऐसा सौभाग्य भंग कारक योग वधु–वर मेसे किसी को हो तो वधु का पिप्पलसे; और वर का आक के वृक्षसे विवाह करनेका कहा है। पश्चात् इनका विवाह चिरजीवी वर वधु के साथ करने की आज्ञा दी है।

४० क्यों कि वैधव्य या विधुर योग सब क्रूर ग्रहों से जाना जाता है। सारांश थोड़े से में कहने का तात्पर्य यह है; कि क्रूर ग्रह जैसे– " रवि सहित बुध – शनि मंगल – रवि यह ग्रह क्रूर प्रकृति के " हैं वैसाही उसका फल जाँचा जाता है। अकेले मंगल पर ही इसका विचार होता है यों कहना गलती है।

४१ अतः अब जब हम समझ गये कि मंगल यह अन्य क्रूर ग्रहों की तरह क्रूर ग्रह है। और ग्रहों के अनुसार इसका भी फल जांचा जाता है। ज्योतिष के अन्यान्य जगह प्रत्येक ग्रह का तुल्य बल विचार कर के वधु वर

× **वैधव्य क्रूरखेटे मदन गृह गतै मिश्रितैः स्यात्पुनर्भूः**

के सौभाग्य का मान तपासना चाहिये । अन्यथा अकेले मंगल पर ही इसका निर्णय लगाना सर्वथैव निराधार है ।

४२ क्यों कि मंगल यह ग्रह कभी स्वक्षेत्री कभी वर्गोत्तमी, कभी उच्चका, कभी नीचका कभी मित्रक्षेत्री तो कभी शत्रुक्षेत्री आदि कई बातें ऐसी हैं जो मंगल लग्नमें चतुर्थमें. सप्तममें, अष्टममें, और द्वादश भावमें स्थित होते हुएभी शुभ होता है । अतः अब इस विषय को * अधिक न बढा कर यहां इतना ही कथन पर्याप्त है कि वधुवर की जन्म कुण्डली में अकेले मंगल हीसे निर्णय लगाना गलती और निराधार है । अतः अन्य सब ग्रहों के फल तुल्य बलाऽबलादि तोल कर निर्णय लगाना यह ज्योतिष शास्त्र संम्मत और प्रशसंनीय है ।

४३ अब जब वधु ने इस प्रकार संभाषणादि से स्वतः आत्मा की खात्री कर चुकी कि जिसके साथ मै विवाह करुंगी वह सत्पात्र और मेरे अनुकूल स्वभावका है । और वह मेरा सगोत्री नहीं है । उसके मैत्री गुण आधेसे भी ऊपर मिलनेसे यह मैत्री अखेरतक टिकाऊ रहेगी आदि कुल बातों की जाँच उसने कर ली तब उसके पालक माता पिता भ्राता आदि कौटुंबिक बान्धु बन्धवोंने मानसिक भावना से पसंत किए पति के प्रति इसका विवाह करने की सर्वांग परिपूर्ण संम्मति प्रदान करना यही पालक माता पिता आदिका निर्मल एवं पवित्र कर्तव्य है ।

४४ क्यों कि जरासी जड़ वस्तू या कोई पदार्थ मनुष्य खरीदी करता है तब उसकी जाँच करने के लिये सैकड़ों प्रकार की चेष्टा करता है । फिर क्या मनुष्य को अधिकार है कि वह; जो अपनी तमाम जिंदगीभर जिस पुरुष के संह जीवन व्यतीत करने वाली है; वह उस जीव धारी प्राणी के पसंती से न दे ! अर्थात् जड़ से चैतन्य में अधिक तया पसंती की चेष्टा करनी पड़ती है न ! फिर ऐसी हालत में जिसका उसने अपने मन पसंतीका विवाह किया, तो उसको सच्चा आनंद प्राप्त होता है। उसके आनन्द के सन्मुख स्वर्ग सुख भी तुच्छ है । इसी के स्तंभ १३-२० तक में दिखा दिया है येही प्रथा वेदोमें थी.

* ज्योतिष के ग्रंथों में सब खुलासा मिलेगा ।

सगाई की प्रथा वैदिक नहीं !

सगाई की प्रथा वैदिक या गृह्यसूत्रोक्त नहीं है ।

४५ वर और वधूके परस्पर सम्भाषण आदि स्वयं अपना पात्र अपने योग्य ढुँढ़ लेना (एक स्वयंवर की तरह) यह प्राचीन पवित्र एवं उज्वल ऐसी प्रथा को तोड़ मरोड़ कर; यह वाग्दान वाला नया **कोटिक्रम** खड़ा किआ है । क्यों कि विवाह संस्कार की तरह यह कोई संस्कार होता, तो वैदिक समय में जरूर यह चाल मिलती । किंतु वहाँ कहीं भी इसका नामो निशान तक नहीं है । इससे यह बात स्वयं सिद्ध होती है कि यह प्रथा पुरानी नहीं । और न यह किसी गृह्य सूत्र में दिखाई है ।

४६ मुहूर्त ग्रंथोंमें केशांत समा वर्तन आदि सबके मुहूर्त अनुक्रमसे बता कर आगे विवाह के प्रकार× और भेद भी दिखाए हैं । किंतु मूल में वाक्दान मुहूर्त कहुं भी नहीं कहा है । अर्थात् इससे यह स्पष्ट तया सिद्ध होता है कि, वाक् दान मुहूर्त खास कर ज्योतिष ग्रंथों में जबकि नहीं मिलते. तब यह निश्चय ही सिद्ध होता है कि यह पुरानी प्रथा नहीं अर्थात् आधुनिक विद्वानों की बनाई है । इस लिए स्वयं वर वधू के परस्पर संभाषण से जो वेद काल में स्वयंवर प्रथा चलती थी उसको नाम नामेट करने के लिए यह नया कोटिक्रम खड़ा किया है । क्यों कि ' न स्त्री स्वातंत्र्य मर्हति ' के भक्त लोगों का बनाया यह विधान है । कहने का सारांश यह है कि सगाई की प्रथा अवैदिक है । इस लिए सगाई के कृत्यों में पैसा खर्च करना फजूल है ।

× ब्राह्मो, दैवं, स्तथा चार्षः प्राजा पत्य, स्तथाऽसुरः
गांधर्वो, राक्षस, श्चैव पैशाचा चाष्टमोधमाः ॥ २१ ॥
षडाऽनु पूर्व्या विप्रस्य क्षत्रस्य चतुरो वरान् ।
विद् शूद्रयोस्तु ता नेव विद्याद्धर्म्यान राक्षसान् ॥ २३ ॥
(मनु. अ. ३. २१-२३)

४७ अब जब कन्या के गहने [शृंगार] की तरफ़ नजर फेरकर देखते हैं, तब पता चलता है कि विवाह संस्कार में गहने के संबंधमें न तो कहीं मंत्र हैं और न कोई विधि। हा इतना जरूर अथर्व संहितामें * ' कन्याके

कन्या के लिये गहना !

कन्याया ललाट प्रदेशे हिरण्य बन्धनम्।

ललाट प्रदेश में सुवर्ण को बांधे इस मथितार्थ की वहाँ आज्ञा पाई जाती है। अत: सोने का कोई तोभी पदार्थ [फूल- इत्यादि] बांधना चाहिए " इस आज्ञा के मुताबिक ललाट प्रदेश में पुष्प इत्यादि चिन्ह युक्त सोने की एक वस्तु होना शास्त्राधार है।

४८ बाकी आजकाल की भांति, तरह तरह की सैकड़ों प्रकार की चीजें [गहना] बनवा बनवा के पैसे की खराबी करना कोई आदर्शताको पात्र नहीं होता। वास्ते विवाहमें सिर्फ एक आभूषण स्त्री के लिये वैदिक संस्कृति से योग्य है।

४९ आजकाल प्राय: बहुत सी जगह यह भी देखने में आता है कि कन्या के लिए चाहे जितना गहना आजावे किंतु विवाह समय में वे सब आभूषण कन्या को नहीं पैराये जाते। अर्थात् हवन और सप्त पदी के समय वह अलंकार रहित रहती है। सो यह देख कर संतोष होता है कि अव्याहत यह प्रथा थोड़ेभी रूपमें क्यों न हो किंतु अभीतक हमारे में जागृत है।

५० कन्याके लिए वस्त्रके संबंधमें आजकल बहुतसा जंजाल फैल गया है कपड़े बनाते बनाते तब्यत तंग हो जाती है। यह सब व्यर्थ के ढकोसले हैं। सच तो यह है कि विवाह प्रसंग में हवन और सप्तपदी के समय वर की और से वस्त्र दिया जाता है वह बिलकुल साधा और सफेद रंगका होना चाहिये।

कन्याके लिए वस्त्र

अहतं यंत्र निर्मुक्तं वास: प्रोक्तं स्वयं भुवा।
शस्तं तं मांगलिक्येषु तावत्कालं न सर्वदा॥

(कश्यप स्मृति)

५१ मंगलिक कृत्यमें सफेद रंग का नवीन कोरा जो कि यंत्र से ताजा बाहर निकला हुआ है, ऐसा कपड़ा लाकर उसीदम धोकर; सूखाया हुवा नवीन सफेप– दशा जिसकी निकली हुई हैं; ऐसा कपड़ा वापरना चाहिए " अतः ऐसा कपड़ा कन्याको देना अवश्य है । सिवाय इसके अन्य जरीके अगर बेलबूटे या रेशमी रंग– बिरंगे आदि नहीं होना क्योंकि प्रयोगमें कोइ आवश्यकता नहीं. '

५२ यह सौभाग्यकी बात है कि विवाह के समय मारवाड़ी समाजमें प्रायः बहुत सी जगह कन्या को सफेद शुभ्र वस्त्र (कोरा भाता) ही पहराया जाता है । यह उस पुरानी वैदिक प्रथाका खासा चिन्ह है । और यही प्राचीन प्रथाके दिखानेकी एक स्मृति है ।

५३ सारांश में कहने का तात्पर्य यह है कि वैदिक आदर्शता युक्त विवाह करने वालों को केवल एक ही वस्त्र और एक ही अलंकार जो उपर हम कह आए हैं सोई विवाह पसंगके समय पर बस है। इसके सिवा सगाईके बहाने वस्त्रालंकारों में हजारों रूपयों का जो चूरा करते हैं, वह सर्वथा अयोग्य है । क्यौं कि उसकी हद दिखावे तक पहुँचती है । और फिर ग्राममें डिम डिमी बजाने, गीत गाने, बाजे बजाने लाइन बाटने, कमीन कारु को लुटाने रिश्तेदारों को मनाने । ओर केवल मानाने ही नहीं तो मनाते मनाते नाकों दम लाने आदि बातों का फाटक खुल जाता है । ओर इसके कितने कटुफल लगते हैं, यह आज काल सब जानने लग गए हैं । इसमें विशेष कथन की कोई जरुरत नहीं समझता । किंतु सारांश में इतना ही कथन बस है कि सगाई भी प्रथा प्राचीन नहीं है । केवल एक वस्त्र और सिर्फ एक अलंकार वहभी विवाह प्रसंग पर देना वेदशास्त्र संम्मत है ।

इशश्चौतं नवं श्वेतं सदशं यन्नमहत संज्ञं ।

कन्यानेही वरका चुनाव करना ।

५४ जब इस बातका " वधु- वर की प्रेम संलग्नता पूर्ण संतोष जनक होवेगी ऐसा " विश्वास होजाय कि इनका प्रेम जीवन जिन्दगी घनिष्ठता से रहेगा या नहीं इन बातों का स्वयं स्त्रीही चुनाव कर लेतीथी यह हम प्रथम ही बता चुके हैं। और सत्य भी है कि घर वालों के दबाव या मुस्तैदी से कन्या वैवाहिक वरके वरणका कार्य नहीं किया करती थी ।

अर्थात् अनुकूल हो या प्रतिकूल किंतु वह अपने कुलशील- गुणवान एवं तुल्यबल जो मन में जँच जाय और उनका आत्मा [ब्रह्म] गाही देवे की अमुकही की सेवा सुश्रुषा मैं करुंगी । बस उसी के साथ उसका विवाह करा दिया जाता था ।

५५ अपने तुल्य वर कौनसा है । इसका स्वयं वह अपने आप चुनाव कर लिया करती थी । क्यों कि चुनाव के लिए यह बात स्पष्ट है कि कन्या की सज्ञान अवस्था होना जरूरी है ।

वरका वरण-

आज काल की तरह गूड़ा गूड़ी वाला तमाशा नहीं होताथा; जिस के की कटु फल आजकाल लोग अनुभव कर रहे हैं। प्राचीन इतिहास भी इस बातकी सत्यता दिखा रहा है । द्रौपदीनें अर्जुनके- दमयंतीने नलके ! सीताने राम के ! उत्तराने- अभिमन्यूके- लक्ष्मणाने साम्बके आदि सैकड़ो प्रमाण याद दिलाते हैं कि यह प्रथा पुरातन काल से होती आरही है । वरण=का अर्थही मुकरर करना या कायम करना अथवा निश्चित ठहराना आदि होता है।

५६ याज्ञिक प्रयोगोमें- आचार्य त्वेन त्वामहं वृणे- ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे आदि वचन कहे जाते है । यहां वृणे= वरण का अर्थ कायम किया मुकरर किया यही होता है । ठीक उसी प्रकार- वरण= वर्यो= वर आदि शद्व हैं । इसका मथितार्थ से भी यही स्पष्ट होता है कि वधुका नियुक्त किया हुवा ही वर संज्ञक होता है । संबंधी यों या आप्त वर्गों से नियुक्त किया नहीं । क्यों

दुर्योधनादि लक्ष्मणाके माता पिता विरुद्ध होते हुए भी लक्ष्मणाने अनिरुद्ध के गलेमें वर माला डालना । द्रुपद राजा के मर्जी विरुद्ध द्रौपदीने अर्जुन के गलेमें वर माला दालना यही स्त्री के स्वतंत्रताके खासे प्रमाण हैं ।

५७ बस अब इस विषय को अधिक न बढ़ाकर इतना ही कहना पर्याप्त समझता हुं की वधु की वर के संबंध में पूर्ण सम्मती ही नहीं बल्कि उसके आभ्यंतरिक एवं आत्मिक= मनोभावना से और कई चेष्टाओंसे निश्चित किए वर के साथ जो विवाह की संलग्नता की इच्छा करती हो; उसको पूर्ण करना ही पालको का पवित्र एव समुज्वल कर्तव्य है । और उसीका पुण्य है अर्थात यही वर प्राप्ती की निष्पाप मय आदर्शता है । अन्यथा आठ वर्ष की बालिका को अप्रिय पुरुष के साथ विवाह बंधनमें बांध देनेसे उसकी खाख हुई जीवन जिंदगी, दोष युक्त होनेसे पिता पापका भागीदार होता हैं ।

विवाह की तयारि ।

१ अब जब यह बात तय होगई कि अमुक व्यक्ति के साथ विवाह करनेका वधुका सत्य मानसिक विचार होगया है। और उसका संकेत भी उसी व्यक्तिके लिये यांचात्मक है। तब उस के लिये पाल कों का परम धर्म है कि उसकी इच्छा पूर्ण करने के लिये वैवाहिक समस्त सुविधाएँ प्राप्त करे ।

२ वधुवर के नाम से उत्तम तिथि का निश्चय करालेना चाहिए । जिस

विवाह का दिन निश्चय.

दिन दोनों को साऽनुकूल चन्द्रमा नक्षत्र– और ग्रहबल उत्तम हों ऐसे पवित्र दिन को देख खोजकर विवाह का दिन नक्की कर लेना चाहिए । क्यों कि **गृह्य सूत्र** में कहा है पुण्याहे........ इसका अर्थ ही यह होता है कि पुण्य=पुण्ययुक्त पवित्र; आहे=यानी दिनमें:—इसका मतलब यही होता है कि शुद्ध अच्छे दिन में कुमारी वर का हात पकड़े ।

३ इस उत्तम दिनके शोधनेका विधान बताने के लिये 'ज्योतिष शास्त्र' है। किसी भी उत्तम ज्योतिषी के पास जाकर वधू-वर के नामसे विवाह का तिथि निश्चय कर लेवे। क्यों कि उत्तम पवित्र दिनमें किया कार्य फल स्वरूपमें उत्तम ही होता है। इसलिये जहां तक हो वहां तक श्रेष्ठ मुहूर्त देखकर ही कार्य करना उत्तम है।

तिथि निश्चयमें सावधानी।

४ अकेले तिथि निश्चय से ही काम नहीं चलता तो वहां वर वधूके नाम से दस दोश[*] रहित शुद्ध दिन ही देखकर कई ज्योतिषी केवल तिथि मात्र लिख देते हैं। किंतु अकेले तिथि मात्र ही दे देनेसे उसमें आगे बहुत सी जगह लग्न भावकी अड़चण आकर खड़ी होती है। इसलिये वधुवर के नाम राशी से लग्न शुद्धि और इसके पश्चात् लग्नांश शुद्धि भी देखना अवश्य है। लग्न-होरा द्रेष्काण-नवांश-द्वादशांश-त्रिंशांश आदि कुल बातोंसे शुद्ध ऐसा दिन देखना और ऐसा दिन देखकर फिर ज्योतिषी ने मुहूर्त पत्र अपने हस्ताक्षर सहित लिखकर लेखी देना चाहिये।

५ यहां कई महानुभाव यह शंका कर सकते हैं कि यह तिथि और मुहूर्त इत्यादि देखने की दिक्कत हमारे पिछे क्यों ? लग्न वग्न से हमे क्या मतलब !! लग्न टल गया तो क्या लड़का लड़की भग जाती हैं। होता क्या है। जिस दिन बातचीत का योगा योग और मन इच्छा हुई बस उसी दिन विवाह कर लिया ! और काम निपटा। यह क्या कि हम मुहूर्त आने तक की राह जोते रहें। अस्त हो या फस्त हो हमारे किए काममें कौन आड़ा आता है ? फिर यह व्यर्थ की दिक्कत हमारे पिछे क्यों ?

६ इसके उत्तर में इतना ही कथन पर्याप्त है; कि आकाशीय ज्योतिर्गोलोंकी प्रेरणा से समस्त जगत् बाध्य है। अणु रेणु परमाणु से लेकर एक दिन

---

१ लत्ता २ पात ३ युति ४ वेध ५ यामित्र ६ बुध पंचक ७ एकार्गल ८ उपग्रह ९ क्रांति साम्य १० दग्धातिथि

समुद्र–पर्वत–नदी–समस्त जगत् जलमय होगा। जल को अग्नी उड़ा लेगी। अग्नि को वायू खाजायगा और वायु को आकाश हड़प कर लेगा। किंतु आकाश में स्थित ज्योतिर्गोलों की प्रेरणा परिवर्तित भलेही होजाय किंतु समूल नष्ट नहीं हो सकती। यह अच्छेद्य आदाह्य और अविनाशी है। अतः आप हम सब इन ज्योतिर्गोलों की प्रेरणा प्रसाद से सौ पचास वर्ष की यात्रा करने आये हैं। किंतु अखिर अपने निवास का अखंड मंदिर आकाश के स्थित ज्योतिर्गोल ही हैं।

७ इसीमें सूर्य चन्द्रादि सप्त ग्रह भ्रमण करते हैं। व्यवहार में हर जगह कहांतक कहुं क्षण क्षण में सेकन मिनिट, घंटा दिन, वार, मास इत्यादि जो भी हम मुखसे उच्चारण करते हैं वह सब ज्योतिषही है। ऐसी ज्योतिष के प्रत्यक्ष तत्वों के अनुभवों को प्राचीन ऋषि मुनियोंने अतींद्रिय ज्ञान चक्षुसे जो ज्योतिष के विधि विधान स्थिर किये हैं। वह बहुत ही गंभीर एवं उपादे-यता युक्त हैं। इसीसे वैवाहिक विधी में जगे जगे इनकी महिमा दिखाते हुये विवाह विधि होती है। क्यों कि विवाह तो होता जमीन पर है। किंतु आका-शीय ज्योतिर्गोलों की महिमा उन मंत्रों में ओतःप्रोत भरी हुई हैं। अतः यहां इतना ही कहना बस है कि शुद्ध पवित्र दिन है; या नहीं ? इसको स्पष्ट तया दिखाने में संसार भरमें अपने एक अकेला ज्योतिष शास्त्र ही है; और दूसरा नहीं।

८ क्यों कि इस शंकाको करने का मूल कारण; ज्योतिष शास्त्र की अन भिज्ञता के सिवाय अन्य कोई नहीं। जब आप इस बातको ठीक तौरसे उत्पत्ति सहित समझ लेंगे की—

कुण्डली= आकाश की ग्रह स्थिति दर्शक नकसा

तिथि= सूर्य चन्द्रका परस्परांतर

(चंद्र) नक्षत्र= चन्द्रमा को आकाशमें देखनेका स्थल

योग= सूर्य चन्द्रका अंतरात्मक जोड़

करण= सूर्यचन्द्रान्तरसे पृथ्वीतक खींची रेखा

लग्न= उदित भगोल विभाग

कुंडली- लग्न- इत्यादि क्या चीज हैं, तब आपके झट से समझ में आजायगा की यह ज्योतिष शास्त्र, अबाधित प्रत्यक्ष देदिप्यमान ज्योतिर्गोल की स्थिति- स्थापकता- गति- और फल खानेवाला शास्त्र है। अस्तु कहने का तात्पर्य यह है कि वधु- वर का पिंड ही जिस योगों से बना है; वहां ज्योतिष का विचार पूर्ण रूपसे होना और वही अपने द्वारा होना यही योग्य है। अन्यथा बिना ब्रेक की गाड़ी की तरह धोकेका करना है। अतः उत्तम मुहूर्त देखनाही आदर्शता है।

लग्न शुद्धि और सुलग्न साधान

९. जिस प्रकार लग्न की शुद्धि देखते हैं उसी प्रकार अंश शुद्धि देखी जाती है अर्थात् लग्न लग भग दो घंटेका होता है। और एक लग्नके ३० अंश होते है। यानी ४ मिनिट तक एक अंश रहता है। यह उच्चांश कहलाता है *। इस श्रेष्ठ उच्चांश में वर- वधु का पाणिग्रहण और परस्पर समीक्षण होना चाहिये। क्यों कि उक्त सिर्फ चार मिनिट बड़े महत्व के और अमौलिक रहते हैं। इसमें कौनसा कार्य किया जाय ? इसका उत्तर सहसा बहुतों के समझमें नहीं आतां यह बड़े दुःख की बात है।

सुलग्न साधन में होनेवाली भूल !

१० मारवाड़ी समाज में विवाह आदि प्रसंगोंमे मुझे प्रायः बहुतसी जगह यह स्वतः देखनेका मौका आया है कि कोई पंडित कहते हैं; सुलग्नमे खुंटी गाड़दो बस लग्न सध गया। कई महाशय अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हैं की नहीं ! उस वेदी पर गाड़ी हुई खुंटियोंमे कच्चा तागालपेट दो सुलग्न सधगया। कई कहते हैं नहीं साब सुलग्न तो तब सधेगा जब कार्यारंभ होगा। कई कहते है वधुवर के गण जोड़ा (ओढ़णा दुपट्टाकी ग्रंथी) बांधदो बस सद गया सुलग्न।

---

* लग्ने चतुर्दशो भागो वृषभस्य मकरस्यच। कन्या कर्कट मीनानां······

११ जिसमें स्त्रियों के लंबे चौड़े कृत्य जल्दी सरते नहीं। अभी यह होना है अभी यह होना है। उनकी यह दलीले घर वालों के नाकों दम ले आती है फिर वहां सुलग्न का विचारे का क्या ठिकाना? डुकरिया पुराण समाप्त हो तब कहीं सुलग्न के लिये, घर वाले को सांस निकालनेका बिचारे को मौका मिले न। वहां तो गीतों की पानीके बरसात की तरह झड़ लगी रहनेमें कहीं क्षति न होजाय इधर पूर्ण दृष्टि रहती है। ऐसी हालतमें सुलग्न भी बिचारा घबरा कर लोटकर चला जाता है।

औरतोंकी ओर से सुलग्नमें लापरवाही

१२ विवाह विधान में वधुवरका पाणिग्रहण और परस्पर समीक्षण यह श्रेष्ठ समयमें होना चाहिये। क्यों कि विवाह विधानमें मुख्य प्रधान विधि यही है। और इसीके लिये विवाह मुहूर्त लेते समय (सुलग्न की घडी को अर्थात् आज की भाषामें) स्टँडर्ड टाइम को नक्की करा लेना है।

पाणिग्रहण और परस्पर समीक्षण सुलग्नमें

१३ अर्थात् कितने बजकर कितने मिनिट पर पाणिग्रहण करना इसकी पूर्ण सावधानी रखना जरूर है क्यों कि बहुत सी जगह यह देखनेमें आता है कि, पंडितों से विवाह की तिथि मात्र पूछलेते हैं किंतु स्टँडर्ड टाइम में यानी कितने बजकर कितने मिनिट पर पाणिग्रहण (हतलेवा) और परस्पर समीक्षण (वरने वधूकी ओर, और वधुने वरकी ओर देखना) करना इसका ठीक ठीक घंटा– मिनिट– सेकंड– आदि विवाह मुहूर्त के साथ साथ निकलवा लेना चाहिये।

१४ पुराने कालमें विवाह के दिन सूर्योदय से पानीकी गंगाल में घटिपात्र छोड़ दिया जाता था। और लग्न समय तक उस गंगाल के घटि पात्र के पास अहर्निष दो चार आदमी सावधानी के साथ सचेत रहने वाले अदल बदल कर रखे जाते थे। और ऐसे कठिन प्रायास से घटि पल बिपल आदिका

सुलग्नकी सावधानी की पुरानी चेष्टा

' मुहूर्त में सुलग्न सावधान ' नामक हमारी पुस्तक में लग्न साधन की और ज्योतिष की [illegible] है।

नाप करके उस से सुलग्न का साधन किया कर ते थे। किंतु उससे भी सुगम काल गणना का नाप दिखाने वाली घड़ी वाच है। सो इसका उपयोग करना जरुरी है।*

सुलग्न साधन का आजका तरीका

अर्थात् सुलग्न के घटि पलात्मक समय को स्टॅंडर्ड टाईम अवर मिनिट का सूक्ष्म समय निकालना यह ज्योतिषी का काम है। विवाह मुहूर्त पत्र देते समय ही देदेना चाहिए। और उसी तरह यजमान नें ठीक ठीक उसी घंटा-मिनिट-सेकन पर पाणिग्रहण और वर वधू का परस्पर समीक्षण कराना जरूरी ही नहीं किंतु अत्यंत महत्व की बात है। यानी विवाह दिन सुबह के समय सूर्योदय होतेही घड़ी (वाच) को तार आफिस या पोस्ट ऑफिस से मिला रखना चाहिए ऐसी दो घड़ी अवश्यही मिलाना चाहिए। कदाचित कोइ घड़ी बंद होजाय या और कुछ गड़ बड़ हों भी जाय तो दुसरी घड़ी ठीक रहती है।

विवाह मुहूर्त लेते समय में टाइम का खुलासा।

विवाह मुहूर्त लिखवाते समय, समय का खुलासा यानी स्टॅंडर्ड टाइम् भी यजमानने पंडितसे लिखवा लेना चाहिये। ताकि विवाह समय पर खास टाइम में कोई गड़ बड़ी पैदा नहो। यजमान ने घरमें स्त्रियों और पुरोहितको यह बातकी प्रथम ही ताकीद कर देना चाहिये की हमारे यहां के बिवाह में ठीक इतने बजकर इतने मिनिट पर पाणिग्रहण होगा (हतलेवा) और परस्पर समीक्षण यह प्रधान कार्य करें। अन्य कार्य इस के पहिले उरका लेवें.

दिवालग्न की प्रथा वेद का लीन है।

वैदिक जमानेमें प्राय: दिनमें विवाह करनें की प्रथा चालू थी। क्यों कि पारस्कर गृह्य सूत्रमें वधुको- वर सूर्य दिखाता है। इससे स्पष्ट होता है कि दिन में विवाह करने की प्रथा आदर्ष मानी गई और वही

---

* विवाह मुहूर्त का फिक्स टॉइम् हमारे यहांसे निकाल देते हैं

चाल दक्षिण महाराष्ट्र और कुछ गुजराथ में भी है। किंतु मारवाड़ी लोगों में प्रायः रात्री लग्न की प्रथा अधिक चालू हो गई है।

रात्री की प्रथा है, इतना ही नहीं तो सायंकाल समय में भी कन्या पक्षके जितने होते हैं; वे सब अपने ऐश आराम - हात मू धोने- सैल सपट्टा करने- साबू तेल लगाने-ठंडाई घोटने- भांग पीने- तास खेलने- आदि कामों मे ग्रस्त रहेते हैं। वधुवर का जहां विवाह होता है, वहा वधुवर के कल्याणार्थ उनके आनेका खाँसा ऊपर का उपकारी उदाहरण ही बस है।

यदि आधी रातके या पिछली रात के फैरों का लग्न हुवा तो फिर देखना ही क्या है। इधर लड़की उँगती है; तो उधर लड़का उँगता है। जैसे तैसे इनमे हुशारी का जोश भरा तो भी लड़कीकी मा- उसका पिता- नाई नायन पुरोहितजी और दोचार छोकरा छोकरी के अलावा मजाल क्या है कि और अधिकों का वहां दर्शन भी हो जाय ? क्या यही वधु-वर के कल्याण चिंतन वालों का परम कर्तव्य है। जो नींदो के घ-राटे लेते पड़े रहतें हैं। फिर पुरोहित ही बिचारा कुछ दौड़ धूप करता चिल्लाता हल्ला गुल्ला करता है ये लावो वो लावो करता करता वह भी थक जाता है ऐसे समय में बिचारे सुलग्न का क्या गुजारा आपही बताइये ?

इसमें किसका दोष किसी का नहीं। क्यों कि रात्री का समय ही निद्रा प्रिय रहता है। सो तो प्रकृती अपना असर करे बिना थोड़ी छोड देगी। सच तो यह है कि मोंगल लोगों के उत्पात प्रायः मारवाड में अधिक रहे हैं। अतः इस रात्री की प्रथा को जोर आनेका प्रायः यही कारण पाया जाता है कि मोंगलों के अत्या चारों से उकता कर रात्री को फेरे कराने की प्रथा का अधिक जोर होने लग गया। और वह आज रुढ़ी बन बैठी है।

कोई कहे की गृह्य सूत्रों में सूर्यमुदीक्षे रन् के पश्चात् ध्रुवं दर्शयति भी लिखा है किंतु वह-सायंकाल के पूर्व पाणि ग्रहण होकर यज्ञ-होम इत्यादि

होनेमें रात्र होजाती थी तब ध्रुवं दर्शयति लिखा है। उसका मतलब यह नहीं की रात्री की प्रथा थी। अतः दिनमें विवाह सूर्योदय पश्चात् प्रातः काल में गोरज मुहूर्त में, या सूर्यास्त के पूर्व गोधूली समय के पहिले होना ही सब बातों से श्रेष्ठ तथा आदर्शता युक्त है। सिवा इसके रात्री की आसुरी वेला में विवाह का करना समुचित नहीं। अतः दिवा लग्न की प्रथा आदर्श युक्त है।

दिवा लग्नसे लाभ

प्रातःकालकी पहिली प्रहर, यह समय सम्पूर्ण दिनमें विशेष महत्व का है। जो कुछ भी विशेष कृत्य जो हुवा करते है; उनमें प्रायः यही समय काममें लिया जाता है। जैसे— मौंजि-बंधन शिलान्यास, व्रतोद्यापन, वास्तूपूजा, कलश प्रवेश, वामार्क देखना, अन्न प्राशन, दोलारोहण कर्णवेध, आदि तमाम कार्य प्रायः दिनके पहिली प्रहर में होते हैं।

क्यों कि यह समय ही ऐसा है कि इस समयमें सब लोग अपने नियमित विचारों में संलग्न रहने की तयारी में रहते हैं। कोई प्रातःकालिक पूजा पाठ से निवृत्त होता है तो कोई भोजनादिक विधिसे निपट ने की चेष्टामें रहता है। कोई ऑफिस जाने की गड़बड़ रहने से कामों मे व्यग्र रहाता है। कहनेका मतलब गड़बड़ कुछभी हो? किंतु उपस्थिति मात्र सब-लोगोकी प्रायःघर मे ही रहती है। अतः ऐसे सुन्दर समय में यदि विवाहो-त्सव हुवा तो समय पर उपस्थिति समस्त बंधु–बांधवों की सहर्षता और बिना दिक्कत होसकती है। न कोई सोता न कोई उँगता बस मजे में शांती से विवाह के समय आबाल वृद्धों की उपस्थिति रह सकती है। इतना गांभीर्य रात्रीके विवाह में नहीं ? मेरा कहने का मतलब यह नहीं कि मै कोई रात्री के विवाहकी मनाई करता हुँ। किंतु इसके कहने की गरज यही है कि रात्री में लग्न (विवाह) करने की अपेक्षा दिनमें विवाह करना आदर्षयुक्त है। तभी गृह्य सूत्रों में इसका विधान प्रथम (सूर्यमुदीक्षेरन्) सूर्य को दिखाना चाहिये। ठीक यही प्रकार मौंजी बंधन का भी है। उसमें भी सूर्य ही दिखाया जाता है अतः दिवा लग्न ही रहना आदर्श युक्त एवं सर्व श्रेष्ठ है।

विवाह की सुलग्न कुंकुम पत्रिका।

जो लग्न (समय) वधु-वर के विवाह के लिए खास कर मुकरर किया है। उस नियत समय की घोषणा करने का यह अर्वाचीन साधन है। पुराने जमाने में जब प्रेस और सुन्दर छपाई, उत्तम कागद, सोनेरी अक्षर नहीं थे तब गावों गांव मनुष्य भेजकर विवाह के समय की पत्र इत्यादि से घोषणा की जाती थी इस लिए पत्रिका छपाना ही जरुर है ऐसा कुछ नहीं। अर्थात् खास कर छपाई होना ही चाहिये; ऐसा कुछ सक्ती का मामला नहीं है। किंतु किसी की इच्छा इसी द्वारा घोषणा करने की हो तो कर सकता है। क्यों कि यह भी एक घोषणा करनेका आज काल का तरीका है। इसलिये उसका नमूना देखा देते हैं कि पत्रिका के लिखनेका ढंक किस प्रकार का होना चाहिये।

आज कल पत्रिका लिखने की सैकड़ों तरह की रूची होगई है। कोई कैसी लिखता है, तो कोई कैसी; सचमें पत्रिका में अत्यावश्यक समाचार क्या है ? इस ओर बहुतोंका ध्यान कमी रहता है। इतना ही नहीं तो कई दुर्लक्ष कर जाते हैं। जो आवश्यक नहीं है; ऐसा लंबा, चौड़ा, रंग- बिरंगा पचड़ा छपा देते हैं। उसमें खास अवश्यक बात की क्षति रह जाती है। इस लिए उसका नमूना दिये देते है।

पत्रिका का नमूना नं. १.

श्रीहरिः

विवाहोत्सव का आमन्त्रण ।

श्रीमान् **योग्य**

सहर्ष सूचित किया जाता है कि सौभाग्याकांक्षिणी बाई **वसन्त सेना** मिती पौष शुक्ल १४ गुरुवार तारीख ५ जनवरी १९२८ इ. स्टँडर्ड टाइम् प्रातः ७ बजकर ४४ मिनिट पर नागपुर निवासी बाबू ब्रज मोहन पाण्डे के पुत्र बाबू **शैलेन्द्र कुंवर का पाणि-ग्रहण करेगी** । उक्त समय पर आप हार्दिक आशिर्वाद प्रदान करने के लिए अवश्य पधारें ।

आपका

रायपुर **विष्णुशर्मा वाजपेय.**

श्रीहरिः

पत्रिका का नमूना नं. २.

विवाहोत्सव का आमन्त्रण ।

श्रीमान् **योग्य**

सहर्ष सूचित किया जाता है कि चिरंजीव बाबू **शैलेन्द्र कुंवर का** रायपुर निवासी विष्णुशर्मा वाजपेय की कन्या सौभाग्याकांक्षिणी **बाई वसन्त सेना**– मिती पौष शुक्ल १४ गुरुवार तारिख ५ जनवरी १९२८ इ. स्टँडर्ड टाइम् प्रातः ७ बजकर ४४ मिनिट पर **पाणी-ग्रहण करेगी** । सो उक्त समय पर हार्दिक आशिर्वाद प्रदान करने के लिए अवश्य पधारें ।

आपका

नागपुर सी. पी. **ब्रज मोहन पाण्डे**

कन्या पक्षके कार्य ।

विवाह वधु के घरपर किया जाता है। तब वहां मंडप और मंडपके बीचमें वेदी बनाना आवश्यक है। क्यों कि वेदी पर बैठके वर वधू और वरको हवन करना ऐसी ऋषि आज्ञा है—

मंडप विधि

वधू के हातकी कनिष्ट अंगुली पर्यन्त की गिनती हात कहलाती है। + ऐसे सोलाह हात का औरस चौरस मण्डप करे। ×और वह चारों द्वारों से सुशोभित करके तोरण इत्यादि बांधे। * पश्चात् उसमें वाम भाग पर एक हात उंची चार हात लंबी और चारही हात चौड़ी ऐसी चौकोनी वेदी पायरीयुक्त करके चार केलीके खम्ब, तोरण, पुष्पमाला आदिसे सुशोभित (रम्य) बनानेके पश्चात् अग्नि सहित वधू–वरने उसमें प्रवेश करे ऐसी ऋषि आज्ञा है। अतः यह मण्डप होनाभी आदर्शता है।

+ हस्तो वध्वा सोपानं पश्चिमतः। (कन्या हस्तेनैव वेदि प्रमाणं)
(सप्तर्षि मते)

× षोडशारत्निकं कुर्यात् चतुर्द्वारोप शोभितम्।
मण्डपं तोरणैर्युक्तं तत्र वेदिं प्रकल्प येत्॥
अष्ट हस्तं तु रचयेत्मंडपं वा द्विपद् करम्।
(वशिष्ठः)

* हस्तोच्छ्रितां चतुर्हस्तै श्चतुरस्रां समंततः।
स्तंभैश्चतुर्भिः सुश्लक्ष्णां वामभागेतु सद्मनि॥
समां तथा चतुर्दिक्षु सोपानै रति शोभितां।
प्रागुदक् प्रवणा रंभां स्तंभैर्हंसशुकादिभिः॥
(नारदः)

विवाह के दिन, या एक दिन पहिले का कृत्य

विवाह जिस दिन का मुकरर किया हो उसके एक दिन पूर्व कन्या को अभ्यंग स्नान [तेल–उबटना आदि] कराके उत्तम पीत वस्त्रादि धारण कराकर माता–पितासह कन्याने इनके अभावमें स्वतः कन्याने गणपति पूजन स्वस्ति पुण्याह वाचनादि कृत्यों से निपट कर पश्चात् कुल देवी मातृका का स्थापन पूजन कर उनका आशिर्वाद मांगे ।

क्यों कि अभ्यंग स्नान यह एक शरीर की शुद्धि है अतः बात आदर्श युक्त है । साथमें मण्डप जो बनाया जाता है उसकी शुद्धिके लिये मण्डप पूज– कंकण बंधन– गौरी– हर पूजन यह सब बातें शास्त्र संम्मत होने से आदर्ष पात्र है ।

इन मुख्य विषयों के अलावा अन्य कर्म निराधार एवं फजूल खर्ची के हैं । जैसे लड़की का [छोटी बिंदोरी बड़ी बिंदोरी] जुलूस निकालना उसमें अपरिमित जिद्दा जिद्दी से पैसा खर्च करना । चाक– भात– घरवा पूजन आदि प्रथा सब अवैदिक है । इसमें स्त्रियों की स्वच्छंद ताका हेतू ही मुख्य कारण है । अतः यह बाते निराधार होनेसे सर्व थैव त्याज्य हैं । इसलिये यह किसी प्रकार उपयोगमें नहीं लेना ही ठीक है ।

× तदंग विहितं निर्विघ्नार्थं गणपति पूजनं– स्वस्तिपुण्याह वाचनं - अविघ्न पूजनं– मण्डप स्थापनम् । मातृका पूंजनम् आयुष्य मंत्र जपम् । वसोर्द्धारा । नांदिश्राद्धं चाद्यं करिष्ये । ग्रहा ऽ नु कूलता सिद्धयर्थम् ग्रहमखं करिष्ये ...... ।

वरकी ओरके कुछ प्रधान कर्तव्य।

विवाहके सिर्फ एक दिन पहिलेका कृत्य

जिस दिन विवाह निश्चित किया हो उसके केवल एक दिन पहिले वरको वरके माता पिताओं ने अभ्यंग स्नान (उबटना- चिकसा- तेल इत्यादि से स्नान) करा कर उसके हात से गणपति पूजन स्वस्ति पुण्याह वाचन मातृका पूजन नांदि श्राद्धान्त तक कृत्य करा कर 'कुल देवी' की स्थापना और पूजन करा देना चाहिए। क्यों कि यह बातें शास्त्राधार युक्त होने से आदर्श है।

इसके सिवाय वरके घर पर मण्डप बनाना-वर का छोटी बिंदोरी बडी बिंदोरी जुलूस निकालना, उछाल बाग बाड़ी आदिकी लूट करना, चाक पूजने कुम्हार के यहां जाना, भात के बहाने उस पुत्रके मामा नाना को व्यर्थ में तंग करना, बिल्ली- बांदरे- छत्र चंवर आदिका डील डौल दिखाना, हत्ती इत्यादि पर बैठ के व्यर्थ का क्षणिक कृत्रिम गौरव दिखाना, गांव के चूकते बालक से लेकर बूढ़ेतक जाति वालोंको लड्डू-गुल गुले-गुलाबजांमून घेवर, रसगुल्ला आदि रसीली चीजों कि जिमनार गांव वालों को देना और गांव के पंचोंनें विवाह कर्ता पर सख्ती से गांव वालों को जिमाने के लिए बाध्य और लाचार करना, आदि तमाम कृत्य अवैदिक और सर्वथा त्यागने योग्य है।

बरात की तयारी

बरात ऐसे समय में घरसे खाना हो जाना जाहिये जो कि विवाह घर विवाह के समम से ४ चार घंटा पूर्व में पहुँच सके। इस अंदाज पर बरात वहां पहुँच जाना चाहिये। फिर दोनों गावें का अंतर कितना भी हो मार्ग मे खर्च होने वाला समय जाकर ४। ६ घंटा विवाह समय के पेस्तर पहुंच जाना ही सबसे उत्तम मार्ग है।

---

* हमारा बनाया हुवा 'स्मार्त-प्रभाकर १ नामक पुस्तक देखो सब पूजन विधि विस्तृत वेदोक्त रीतिसे बताई है।

बराती यानी क्या ?

सचमें देखा जाय तो बराती यह शब्द या बरातकी प्रथा वैदिक पुराने जमानेमें नहीं थी। क्यों कि यह शब्द ही अभीका बना द्योतक है। पुराण कालमें कहीं कहीं सखा और निजके भाई बान्धवों (कुटुंबियों) का वर्णन मिलता है। इससे यह अर्थ निष्पन्न निकलता है कि वर के निजके कुटुंबी मात्र विवाह में जाते थे। ओभी अतिथि रुपमें उनका जाना होता था अर्थात् (विवाह विधि पूर्ण होते ही झट्से लौट आने वाले) इससे वरके साथ के अतिथि= बराती शब्द बना है वर- अतिथि का अपभ्रंश बराती है।

बराती कैसे और कितने हों।

घर के कुटुंब के होते हुए विवेकी, ज्ञानवान, वयोवृद्ध, और पूज्य पाद ऐसे पुरुष ही आवश्यक हैं। जिनके एकत्रित होनेसे ज्ञान-वृद्धि होवे ऐसों को अकसर साथ लेजाना चाहिये। यह आदर्शताका नमूना है। सिवाय ज्यादा पुरुषों को लेजाना केवल कृत्रिम गौरव दिखाना है। अर्थात् कममें कम १५ और उंचेमें उँचे २५ आदमी हद हैं। सिवा इसके जो बराती दुसरे पर भार रखने, छिद्रान्वेषण करने, तोता मैना की किस्सा गाने, पुरणमल का ख्याल रटने, नाचने, गाने, ठिठोली उड़ाने, जराजरासी चीजों के लिए घर वाले को तंग करने, नाको दम लाने, खुशामत करवाने, मानलेने, भांग गांजा उड़ाने, नाच चौसर के खेलमें समय बरबाद करने, आदि जिनसे घर वाले को नाकों दम आजाय ऐसे बराती यों को बरात में चलनेके लिए कष्ट देना ही व्यर्थ है। सारांश में कहनेका मतलब यह है कि सदाचारी, सत्यविचारी, ज्ञानी पुज्यपाद, वयोवृद्ध सारासार विचार को तौल कर चलने वाले व्यक्तियों को लेजाना ही आदर्शताका नमूना है।

वधु पिताके औरसे सीमान्त पूजन

जिसको अपनी भाषामें सँयाला कहते हैं। यह जहां वर के उतर ने की व्यवस्था जिस जगह (मकान में) करी जाती है, वहां कन्या पिता एक कलश नारियल- गंध अक्षता- वस्त्र पुष्प- सुगंधित तैल- आदि वस्तु एक थाली में लाकर वर की पूजन करे। और घर आनेके लिए वरको आमंत्रित करे। यह

प्रथा अभीतक चालु है। किंतु इसमें एक ‘ मिलणी ’ नामक नई प्रथा घुस गई है। वहां सब सगों को रुपये भेट करना पड़ता है। यह प्रथा निराधार है। इस को कोइ आधार नहीं। अतः सिर्फ यहांपर पूजा मात्र आदर्श है।

वरका मंडप में प्रवेश।

षडर्घ्या भवंति—

यह मधुपर्क पूजा अकेले विवाह मे हीं होती है; यों नहीं; तो पारस्कर गृह्यसूत्र में छः जगह ऐसी पूजा करने का विधान है। एकतो अपना गुरु या आचार्य आवे वहां। दुसरे में ऋत्विग् आदि वरण में। तिसरे जामातको विवाहमें। चौथे राजाके लिए। पांचवे प्रिय यानी अत्यंत प्रेमी आजाय वहां और छटवें में वेदाध्ययन के पश्चात् स्नातक को। इस प्रकार उक्त छे जगह अर्घ्याधिकार कहा है। इसलिये विवाहमें जँवाइ के प्रति अर्घ्य पूजन कहा है इसी से अर्घ्य पूजन करना चाहिये। अर्थात्—

बाहर से घरमें वरके प्रवेश होतेही आसन— पाद्य— पादार्थमुदक— अर्घ्य, आचमनी— और मधुपर्क की पूजा कही है

इस समय पुण्यावाचन या ग्रहपूजन नहीं है।

कई जगह देखने में आता है कि प्रायः वर की पूजा तो एकतरफ धरी रहती है। और यहां फिर शांतिसूक्त गणपति पूजन— कलशपूजन— मातृका पूजन आदि शुरु कर देते हैं। कहांतक कहें ग्रह पूजन भी कराते हैं। इसमें अमौलिक समय की व्यर्थही में खराबी करते हैं। क्यों कि संस्कार भास्कर— या गृह्य सूत्र इत्यादिमें मधुपर्क समयमें ग्रहपूजनादि नहीं कहा है। चतुर्थीलाल की विवाह पद्धति में— **विवाह दिने तत्पूर्व दिने वा** विवाह के दिन दिनमें या उसके पहिले दिनमें ग्रह पूजनादि करे यों

ष्ट लिखा हुवा है। तो भी उसको पूरा न समझकर '**विवाह-समय में**' स पोथी को लेकर पारायण करना आरंभ कर देते हैं। किंतु उसके यथार्थ त्व को नहीं समझते, की कौनसा कार्य कहां करना चाहिये। हाँ जो विद्वान् शास्त्री लोग हैं वे तो-**साधुभवानास्तां** से यानी वर पूजन के कृत्यसे आरंभ करते हैं। दक्षिणी लोगों में भी ग्रह पूजनादि पहिले ही दिन उरका लेते हैं। किंतु वर मंडप में आते ही वरका पूजन-सत्कार करते हैं।

अतः विद्वान् पंडित लोगों को यह बात स्मरण रखना चाहिये की वर का मण्डप में प्रवेश होतेही **साधुभवानास्तां** से वर पूजन आरंभ करें। क्यों कि पुण्याह वाचनादि कृत्य तथा ग्रहपूजन वगैरे सुबहमें या एक दिन पहिले हो जाता है। फिर पुनः पुनः नहीं होता। इस लिये वर पूजन वर के प्रवेश होतेही कन्या पिताके हात से कराना ठीक है। और यही आदर्श है।

वधू का पूजन और वस्त्र देना।

इसी प्रकार वधु को गंध अक्षतादिसे वर पिताने पूजन कर के दो वस्त्र सफेद रंगके कोरे-इषद्धौत-उसीदम धोये हुए या यंत्र से निकले कोरे ऐसे दो वस्त्र देना ऐसा कहा है+। सो विवाह में कोरा भाता नाम से दिया जाता है। और झोलीभी भरते हैं। वह बहुत सी जगह सुवासणाके जरिये कराते है; किंतु वर पिताके ही हातसे गंध* अक्षत से पूजा वास्तव में होनी चाहिये।

+ ईषद्धौतं नवं श्वेतं सदशं। परेणाधृतं वस्त्र युगलं परिधाय स्वेष्ट देवता पित्रादिभी नमस्कृत्य ·····।

*** शिष्टाचारात् वर पिता एवं विधिना वस्त्र कुंकुम पुष्प फलैः वधुं पूजयेत्।** - संस्कार. भा.

विवाह प्रयोग ।

केवल एक घंटेमें समग्र विवाह विधि ।

संकल्प

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः । श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्त मानस्य अद्यब्रह्मणो द्वितिये परार्धे विष्णुपदे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे एकोन त्रिशंति तमे कृत युगे कृत प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे दण्डकारण्ये देशे गोदवर्या उत्तरे तीरे परशुराम क्षेत्रे कल्कयवतारे शालिवाहन शके

संवत्सरे……मासे……पक्षे……तिथौ वासरे एवं गुण विशेषेण विसिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुगोत्र उत्पनोहं अमुशर्माहं मम श्रुति स्मृति प्रोक्त फल प्राप्तर्थं अनेन वरेण अस्यां कन्यायां उत्पादइष्यमाण संतत्या द्वादशा वरान् द्वादशा परान् पुरुषान् पवित्री कर्तुम् आत्मनश्च श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतये कन्या विवाहांगत्वेन आगताय स्नातकाय वराय मधुपर्केणार्चयिष्ये ।

प्रयोग प्रारंभ ।

मधुपर्क पूजामें आव

वरको देनें को वहां इतनी वस्तुएँ आवश्यक होती हैं । एक दर्भका आसन । एक पच्चीस दर्भका विष्टर । पांव धोने के लिये एक (गिलास) जलभरा पात्र । एक अर्घ्य पात्र । आचमनी को पात्र । कांसी की दो कटोरी जिसमें एक कटोरीमें शुद्ध

घीसे दुगुना सहत और सहत से चौगुना दधि मिलाकर मधुपर्क तयार करके दूसरी कटोरी ढ़क कर इतनी वस्तु तय्यार रखना चाहिये:—

आर्थात्

१ दर्भ का आसन

२ पच्चीस दर्भका विष्टर

३ पाव धोनें के जलका पात्र.

४ अर्घ्यका (—गंध—पुष्प अक्षत—दुर्वायुक्त) पात्र

५ आचमनी पात्र

६ मधुपर्क का (दो कांसेकी कटोरी) पात्र

उपरोक्त कुल वस्तू बिलकुल तयार रहनी चाहिये । पश्चात् कन्या पिता खड़ा होकर

आसनमहार्याह

कन्या पिताः—साधु भवानास्ताम् अर्चयिष्यामो भवन्तम् ॥४॥

वरः—अर्चय

आहरन्ति विष्टरम् । पाद्यं पादार्थ मुदकम् । अर्घम् । आचमनीयम् । मधुपर्कम् दधि—मधु—घृतमपिहितं कांस्ये कांस्येन ॥ ५ ॥ अन्य स्त्रिस्त्रिः प्राह विष्टरादीनि ॥ ६ ॥ पा. गृ. सू.

कन्या पिता—विष्टरो विष्टरो विष्टरः प्रति गृह्यतां ।

वरः—विष्टरम् प्रति गृह्णामि

वर आसन पर बैठ, विष्टर को सीधे हातसे स्वीकार कर के नीचे लिखा **मंत्र** कहते हुए ।

वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः । इमंतमभि तिष्ठामि यो मा कश्चा भिदा सति इत्येनम् अभ्युपविशति ॥ ८ ॥ पा. गृ. सू.

उक्त मंत्रको कह उस विष्टर को नीचे रख वरने उसके उपर आसन की तरह बैठ जाना चाहिये । पश्चात् वधुपिता पांव धोनेको

वधु पिताः—पादार्थ मुदकम् । पादार्थ मुदकम् । पादार्थ मुदकम् प्रति गृह्यताम्

वरः—पाद्यं प्रतिगृह्णामि

कुछ थोड़े गरम जलका * जल पात्र लेकर ब्राह्मण होतो दक्षिण (दहिने) चरण को अन्यथा वाम चरण को प्रथम धोवे; पश्चात् दुसेर पैर को । उस समय निम्न लिखित मंत्र को कहे:—

विराजोदोहोऽसि विराजोदोहमशीयमयि पाद्यायै विरोजो दोहः ॥ १२ ॥

इस प्रकार मंत्र कहते हुए दोनों भी पैरों को धोवे । पश्चात् पूर्व वत फिर एक विष्टर और देवे उसपर वर पाँव को रखे ×। फिर पहिले की तरह अर्घ पात्र उठा कर—

वधु पिताः—अर्घोऽर्घोऽर्घः प्रति गृह्यताम्

वरः—प्रति गृह्णामि

वर को दे । वर उस अर्घ पात्र को लेकर शिरसे अभिवन्दन करता हुवा मंत्र कहे—

आपःस्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवान् ॥ १३ ॥

इस मंत्रसे अर्घ के जलका शिरसे अभिवादन (नमन) करे । पश्चात् उस अर्घ का जल जमीन में प्रवाहित करता हुआ निम्न लिखित मंत्र कहता जाय:—

समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत । अरिष्टास्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः ॥ १४ ॥

---

* पादप्रक्षालनार्थं सुखोष्णोदकं ताम्रादि पात्रस्थ मिति सर्वे सं. भा.

× पादयोः अन्यं विष्टरम् ददातीति वाक्य शेषः । एतस्मिन्नेव विष्टरे आसीनस्य पाद प्रक्षालनं ततो द्वितीय विष्टर !

और अर्घ पात्रका तमाम जल जमीन मे छोड़ता जाय । पश्चात् पूर्व वत **कन्यापिता** आचमन का पात्र लेकर—

वधु पिताः— आचमनीयमुदकम् । आचमनीयमुदकम् । आचमनीय मुदकम् । प्रति गृह्यताम् ।

वरः—प्रति गृह्णामि—

वर को देवे । वर उस पात्र को दोनो हातकी अंजुली से स्वीकार कर डावें हातमें ले नीचे लिखा मंत्र कहे:—

आमागन्यशसा स ँ सृज वर्चसा । तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् ॥ १५ ॥ पा गृ सू.

उपरोक्त मंत्र कहने के पश्चात दो आचमन करे । पुनः **वधु पिता** मधुपर्क का पात्र लेकर—

वधु पिताः—मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः प्रति गृह्यतां ।

ऐसा कह कर दोनों काँसे की कटोरी से ढका हुआ मधुपर्क को डावे हातमें रखकर सीधे हातसे उपर की कटोरी अलग हटाकर वधू पिता निम्न लिखित मंत्र को कहे

वधु पिताः—मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रतिक्षे

उसे वह मधुपर्क का पात्र दिखा कर पुनः उसकी एक कटोरी अलग करके वरको देवे वर उसको दोनों हातकी अंजुली करके निम्न लिखित मंत्रको कहता हुआ स्वीकार करे ।

देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥१७॥

दोनों हात की अंजुली करके वर मधुपर्क को लेकर (वाम) बायें हातमे कटोरी रखकर—

इत्यंजलिना वरो मधुपर्कम् गृहित्वा वाम हस्ते कृत्वा-अनामिकां गुष्ठाभ्यां त्रिप्रदक्षिण-मालोढ्य भूमौ किंचित् निक्षिप्य एवं त्रिवारं कृत्वा

अनामिका नामक दुसरी अंगुली और अंगुठेको प्रदक्षिणा क्रमसे तीन वक्त गुलाई से घुमाकर जमीन में अंगुली को तीन बार छिटक कर पश्चात् निम्न लिखित मंत्र को कहता हुआ——

यन्मधुनो मधव्यं परम ँ रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसान् ॥ २० ॥

उक्त मंत्रसे सिद्ध हुए मधुपर्क को वर ने किंचित या सबका सब प्राशन करना चाहिए, और बचाहुआ— क्या तो अन्य

पुत्रायान्ते वासिने वोत्तरत आसीनायोच्छिष्टम् दद्यात् ॥ २२ ॥ सर्वंवा प्राश्नीयात् ॥ २३ ॥ प्राग्वाऽसंचरे निनयेत् ॥ २४ ॥

कोई बालक बचे खावें। या असचर (जहां आवागमन नहो ऐसी) जगह लेजाकर दाल देवे।

इस प्रकार मधुपर्क प्राशन करने के पश्चात् आचमन करके प्राणायाम करे।

आचाम्य प्राणानायम्य। वाङ् मे आस्येस्तु। नसोर्मे प्राणोस्तु। अक्षोर्मे चक्षुरस्तु। कर्णयोर्मे श्रोत्र मस्तु। बाव्होर्मे बलमस्तु। ऊर्वोर्मे ओजोस्तु अरिष्टानि मेंगानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु। इत्यनेन सर्व गात्राणि संस्पृश्य। कृतःस्यास्यं कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं गोदानंच कुर्यात्। गौर्गोगौः इत्येना भिहिते

वरः—माता रुद्राणां दुहिता वसूनां ँ स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ठ। ममचामुष्यच पाप्मोहतः। उत्सृजत तृणानत्त्विति ब्रूयात्। गोदानंच कूर्यात् इति मधुपर्क पूजनम्.

पाणि ग्रहण विधि !

अब उस मंडप में जो १ हात उंची ४ चार हात चौड़ी वेदी बनाई गई; जिसे केलीके खंब आम्र पत्ते और पुष्प माला आदिसे सुसाजित किया है; उस वेदीपर प्रादेश मात्र हवनार्थ वेदी बनाई जाय। उस हवनं निमित्त——

परिसमुह्य, उपलिप्य, उल्लिख्य, उधृत्य अभ्युक्ष्य- अग्निमुप समाधाय

उपरोक्त विधि से अग्नि स्थापन करे। पश्चात् पिता की आज्ञा लेकर वधु–वर दोनोंने भी वेदी पीठ पर आरूढ़ होना चाहिये। पश्चात् उस अग्नि साक्षिसे–

उदगयन आपूर्य माणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्

श्रेष्ठ और पवित्र समयमें एवं उत्तम दिनमें कुमारीने वर के हातका हस्तान्दोलन करना यानी हातको पकड़ लेना। बस यही (**पाणि** नाम हात का **ग्रहण** नाम स्वीकारना) **पाणिग्रहण** कहाता है। सो यह ठीक उसी समय में होना जो [स्टँडर्ड टाइम] प्रथम निकाल कर दिया गया हो। इनके वधुवरके खडे रहनेकी पद्धति सन्मुख रहना चाहिये। यानि पूर्व मुख वधु--पश्चिम मुख वर सुलग्नमें होकर परस्पर समीक्षण करते हुए दोदो तीन (वाच्) तीन घड़ियाल से ठीक ठीक उतरे हुए सुलग्न युक्त समयपर पाणि ग्रहण कुमारीने करना चाहिये।

कन्यादान की प्रथा वैदिक कालमें नहीं थी और न गृह्य सूत्रके समय थी। इसीसे पारस्करादि गृह्य सूत्रके मूलमे कन्या दान लिखा नहीं है। जैसे मौंजिबंधन मे बटु– आचार्य के बीचमें कोई बटु दान नहीं करता है। ठीक वही प्रकार कन्याका है। वि-नाम विधान युक्त 'वह प्रापणे' इस धातुसे वाह बनकर **विवाह** शब्द बना है। यहां दानका कोई संबंध नहीं है।

इसी से पारस्कर गृह्य सूत्र के भाष्यकार कर्काचार्य + एवं जयरामाचार्य ने अपने भाष्य में कन्यादान नहीं लिखा है। हाँ इनके पश्चात् के हरिहर —गदाधर—विश्वनाथ आदि आचार्योंने अपने भाष्यों में कन्यादान विधि कही है उसी प्रकार अभी के बने संस्कार भास्कर आदि आधुनिक ग्रंथों में तो सबही जगह यह विधि पाई जाती है। इससे तो वही बात स्पष्ट सिद्ध होती है कि कन्यादान वाली प्रथा वास्तव में वैदिक नहीं। इतना होने परभी जिनका कन्यादान विधि करने ही से प्रेम हो वे भलेही करें किंतु यह निःसंन्देह है कि **परस्पर समीक्षण** और **पाणि ग्रहण** विधि वैदिक होने से आदर्शता युक्त विवाह होनेमें बस है।

× × × ×

जिन्हे कन्यादान करना आवश्यक प्रतीत होता हो
उनके लिये
कन्यादान संकल्प

यजमान सपत्नीक वर के सन्मुख बैठकरः — **आचम्य प्राणानायम्य देश कालौ संकीर्त्य·······अस्मि न्पुण्याहे अस्याः कन्यायाः अनेन वरेण धर्म प्रजया उभयोः वंशयोः वंशवृद्धयर्थं तथाच मम समस्त पितृणां निरति शयसानन्द ब्रह्म लोकावाप्त्यादि कन्यादान कल्पोक्त फलावाप्तये अनेन वरेण अस्यां कन्यायां उत्पादयिष्यमाण संतत्या दशपूर्वान्दशपरान् मांच एक विंशति पुरुषानुद्धर्तुं ब्राह्म विवाह विधिना श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतये कन्यादानमहं करिष्ये. ततो वर हस्ते सुप्रोक्षणादि करणम्**

+ कर्काचार्य को हुए १५ हजार वर्ष होगये। देखो हमारा **'वेदकाल निर्णय'**

(उपरोक्त संकल्प करके वर पूजन करे)

यजमानः—शिवापःसन्तु । सन्तुशिवा आपः। सौमनस्य मस्तु । अस्तु सौ मनस्यं । अक्षतंचारिष्टंचास्तु । अस्त्वक्षतमरिष्टंच । गंधा पांतु । सौमगल्यं चास्तु अक्षताः पांतु । आयुष्य मस्तु । पुष्पाणि पांतु । सौ श्रियमस्तु यत् पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रति हतमस्तु

कन्यादानम्.

········अमुक गोत्रस्यामुक················शर्मणे प्रप्रौत्राय
········अमुक गोत्रस्यामुक················शर्मणे पौत्राय
········अमुक गोत्रस्यामुक················शर्मणे पुत्राय
········अमुक गोत्रस्यामुक················शर्मणे प्रपौत्रीम्
········अमुक गोत्रस्यामुक················शर्मणे पौत्रीम्
········अमुक गोत्रस्यामुक················शर्मणे पुत्रीम्

(एवं त्रिरावृत्य) अमुक गोत्रोत्पन्नाय अमुक शर्मणे वराय श्रीधर रुपिणे कन्यार्थिने वराय अमुक गोत्रोत्पन्नां अमुक नाम्नि मिमां कन्यां श्रीरूपिणीं वरार्थिनीम् यथा शक्त्यलंकृतां सोपस्कारां प्रजापति दैवत्यां प्रजोत्पादनार्थं भार्यात्वेण तुभ्यमहं संप्रददे । इति पठित्वा कुशयव युतं जलं कन्या हस्तेच वर हस्ते दद्यात् वरः स्वस्तीति वचनम् दत्वा

वरः—द्यौ स्त्वा ददातु पृथिवी त्वा त्वा प्रति गृह्णातु इति प्रति गृह्य

कोदात् कस्मादात् कामो अदात् कामायादात् कामोदाता कामःप्रति गृहीता कामैतत्ते ॥

दाताः—गोरी कन्यां इमां विप्र यथा शक्ति विभूषितां। गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय ॥ कन्ये ममाग्रतो भूयाःकन्ये मे देवि पार्श्वयोः कन्ये मे पृष्टतो भूयात् तद्दानां मोक्ष माप्नुयात् ममश्रेष्ठ कुले जाता चतुर्दश वर्ष पालिता तुभ्यं विप्र मया दत्ता पुत्र पौत्र प्रवर्धनी ॥

ततः कृतैतत् कन्यादान प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं स्वर्ण गो मिथुनंच दक्षिणां दद्यात्। ततो वरः स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो वेदि दक्षिणस्यां दिशि वारि पूर्ण कलशं ऊर्ध्वं तिष्ठितो मौनिनो दृढ़ पुरुषस्य स्कन्धे अभिशेक पर्यन्तम् धारयेत। अथैनौ समीक्षयती।

परस्पर समीक्षण।

पहले पहल जिस क्षणमें वर अपने हृदयेश्वरी— प्राणप्रिया-- पत्नी को स्नेह भरा दृष्टि से उसके मुख कमल सहित नव यौवन अवस्था एवं सुन्दरता को अव लोकन कर अपने नयनों की तृष्णा शान्त करना चाहता है। वधु भी उधर प्रेम से गद्‌गद् हो अपनी स्नेह भरी दृष्टि से अपने प्राणनाथ एवं स्वामी के दर्शन प्राप्त कर नेत्रोंकी तृष्णा तृप्त करने को जिस क्षणके लिए अनु-कंपित रहती है। इन दोनो वधु—वर की परस्पर में देखने की तृष्णा तृप्त करने का अमौलिक ऐसा क्षण यही है। यही क्षण ज्योतिष शास्त्र के कई प्रकारों से छाना जाता है। वरने वधु की और तथा वधु ने वरकी और आंखों से स्पष्ट स्पष्ट देखनेही का नाम **परस्पर समीक्षण** है। क्यों कि शरीर में के सब इंद्रियों मेसे **नेत्र** ही एक देखने के लिए ईश्वर प्रणीत, रूप तन्मात्रा से ओतःप्रोत अद्‌भुत एक शक्ति है। इसीसे संसार का कार्य देखना, भालना, आदि होता है; यह सब कोई जानते हैं। इस नेत्र के अन्दर रूपतन्मात्रा नामकी की गजब शक्ती भरी है। यह विद्युतसे भी बढ़कर है। इसके बलपर शत्रूका मित्र और मित्र का शत्रु होजाता है नेत्र की ताकत जिसकी बलवान रहती है; उसके सामने अध कचरे आदमीकी देखने तक की हिम्मत नहीं होती। कहनेका तात्पर्य यह है कि देखनेका कार्य नेत्र के ही जरिये होता है। हर्ष शोक—दुःख भय— हानी— सन्ताप— अनुताप चिंता— निश्चिंतता आदि बाते बिना बोले पैछान ने का मुख्य साधन नेत्र ही है। इस लिए वधु—और वरके सम्भाषण में नेत्रमय वैदिक वैज्ञानिक रहस्य क्या है सो आपको दिखाताहुं। **परस्पर समीक्षण** विधी जब होती है, तब वर वधू के परस्पर में सम्भाषण रहस्य इस प्रकार है।

परस्पर समीक्षणमें संभाषण रहस्य ।

वधुः—हम दोनोंके नेत्रोंमें रहनेवाली अपतन्मात्रा मय विचित्र शक्ति; जो कि यज्ञ भुक् देवों द्वारा प्राप्त होती है; जिसके फल स्वरूप शुद्ध मन और वर्चस्व उँचा रहता है ऐसी देवता द्वारा प्राप्त होनेवाली प्रेरणा शक्ति; हम काम चाहने वालों के प्रति सुख शांति मय हो। अर्थात् दुगनी और चौगुनी उन्नत होतीहुई सुखकर हो । अघोरता दूर हो ।

वरः— क्या ? तुझे प्रथम (पवित्राचार) सोमकी प्राप्ति होगई । पश्चात् गंधर्व (सौक्षितामधुरवाणी) की भी प्राप्ति करली । तीसरे में अग्निरूप तेजस्विता (कार्य दक्षता) को भि प्राप्त कर लिया ? जो तुम अब मनुष्यज मानव विज्ञान की कुल अवस्थासे परिपक्व होनेपर मनुष्य पति को प्राप्त करने योग्य होगई हो ?

वधुः— हाँ सोमने गंधर्व के सुपुर्द किया। गंधर्वने अग्नि को सौंपा। अब संसान प्राप्त करनेके लिए अग्निद्वारा आपके सुपुर्द होनेके योग्य यह मै हुँ।

वरः— जबकि तुम इतने गुण शील करके युक्त एवं विहार करनेके योग्य होगई हो; तो तो मुझमें अनुरक्त होकर आनन्द को भोगो । मेरेमें रहने से सब तरह की तुमारी कामना तृप्त होंगी । *

(पारस्कर. गृ. सू. १६.४)

इस प्रकार वर– वधू के परस्पर समीक्षणके आपसमें देखनेके मंत्र हैं । जिससे की परस्पर समीक्षण विधि सिद्ध और पूर्ण होती है ।

---

* यहां सिर्फ मंत्रार्थ मात्र किया है हमारा निजका भाष्य अलग छप रहा है.

\+ रोम कालेतु सम्प्राप्ते सामो भुंक्तेतु कन्यका ।
रजोदृष्ट्वातुगंधर्वा कुचौदृष्वातुपालकः ॥

संवर्त—

ऐसे पवित्र और उज्वल प्रथा का मारवाड़ी समाजमें विद्वानों और रुढ़ी भक्त लोगोंनें क्या दुर्दशा करके विधिका सत्यानाश कर दिया देखते रोमांच होता है। कहां तो वेदकालील पुरानी आपसमें देखनेकी आदर्शयुक्त प्रथा और कहां आजकी घुंघट के अन्दर आंख मींदकर होनेवाली आधुनिक लठ्ठबाजी की प्रथा उँफ ! अफसोस !! दुःख- महादुःख !!!

क्या मंत्र केवल पुरोहित को रटने और पारायण करने के ही रहते हैं। कि कुछ विधि करनेके। विवाह की कुल पुस्तकों में अर्थात् भारत वर्ष भरके कोने कोने तक की छपी हजारों विवाह पद्धति हैं. किंतु **परस्पर समीक्षणम्** परस्पर समीक्षण के विधि बिना कोई पुस्तक नहीं है। किंतु अपसोस है कि आज काल के रूढ़ि भक्तों ने इसे मटियामेट कर दिया आदमी रीति रिवाज में कम ज्यादा कर सकता है किंतु; विधि को हटाने का हक्क मनुष्यको नहीं है। फिर इस विधि की मट्टी पलीत क्यों ?

मोगलों के भयसे, मुसलमानों के उत्पातों से, यवनों के अत्याचारोंसे केवल हमारी जन्देऊ ही नहीं तोड़ी गई; वरना वेद कालीन विधि विधान भी तोड़ मरोड़ कर ख़ाक़ कर दिए ? कहांतक कहें; मुसलमानों के देखा देखी यह पड़दावाली कु प्रथा हमारे में घुसगई।

मोगलों के राज्यमें अविवाहित नव यौवना खुब सुरत कोई लड़की दिखी कि वे लोग उड़ाकर लेजातेथे। और कोई विवाहित हुई तो उसको छोड़ दिया करते थे। यही शीघ्र विवाह और पड़दा प्रथा का पुंछड़ा लगानेवाली ऐतिहासिक गरज प्रत्यक्ष ही दिख रही है। इसीसे उस समय के ज्ञानवान पंडितों को उस जमानेके अनुसार व्यवस्था स्थिर करनी पड़ी। उस समय के लिए उन व्यवस्था करने वाले विद्वानों की हम भूरि भूरि प्रशंसा करते हैं। और करना हमारा कर्तव्य है। क्यों कि वे यदि उक्त समयोचित व्यवस्था नहीं करते तो आज हमारी बड़ी दुर्दशा होती।

किंतु अब जमाना वह नहीं है। कृतीका युग आगया है। अतः अब मोगलों के भयसे बीचमें बनी हुई नवीन व्यवस्था को हटाकर, वैदिक पुराने

विधि विधान के सुमार्ग ही पर चलना श्रेष्ठ है । अतः अब इस विषयको ज्यादे न बढ़ाकर इतना ही कथन बस है कि **परस्पर समीक्षण** विधि वधु–वर के पड़दा न रखकर करना ही आदर्शता एवं विधिका साक्षात् नमूना है । अन्यथा घूंघट के ओटमें दुर्लक्ष्य ता से मंत्रों के पारायण से परस्पर समीक्षण कराना अविधितो है ही; किंतु इससे वह मनुष्य वेदाज्ञा न मानने का पातकी होता है । *

परस्पर समीक्षण विधि ।

अत्रावसरे वधु–वर करालंभे वधूः कर धृत पुष्प ग्रथित वरण मालां वर कंठे समर्पयेत् । तद् : वरोपि कर धृत पुष्प ग्रथित माला वधु कंठे समर्पयेत् ॥ सं. भा. २४७

इस प्रकार वधू वर के हस्तांदोलन के पश्चात् गांवके–बाहरके सब लोग (पुष्प) अक्षता आदि इनके अंग पर वर्षाव कर हार्दिक आशिर्वाद प्रदान करते हैं-दीर्घायु हो ! उत्तम वैभवशाली हो ! ! दम्पती की अखण्ड प्रीति बढ़ो ! ! !

प्रतिष्ठासु प्रतिष्ठितमस्तु । दम्पत्योरविच्छिन्ना प्रीतिरस्तु ।

आदि आशिर्वाद प्रेम में गद् गद् होकर प्रदान करे । ×

---

* अधिक पड़दें के भक्त जिनसे पड़देका मोह छूटताही नहीं । वे लोग वधू–वर का चोरो ओर से कपड़ा आड़ा करके पड़दमें तोभी समिक्षण करावे । ऐसी हमारी सूचना है ।
ग्रंथकर्ता.

× इस कृत्य के होजाने पर कन्या पिता विवाहोत्सव में आये अतिथि मेहमानों का तांबुल आदिसे सत्कार स्वागत करे । जो पूज्य और प्रतिष्ठित हों उनोको आशिर्वाद वधूवर को प्रदान करने के हेतू जरूर आना होता है । उनका भी पूरा सत्कार करे ।

इसके अनंतर वर, वधू को वस्त्र द्वय प्रदान करता है—जिसमे पहिले साड़ी इत्यादि नीचेके पहरने का वस्त्र इस मंत्र को पढ़कर.

जरांगच्छ परिधत्स्व वासोभवा कृष्टीनामभि शस्तिपावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननु संव्ययस्वा युष्मतीदं परिधत्स्व वासः।

वस्त्र प्रदान करता है। उसका वह शिरसा वंदन करके स्वीकार करती है। पश्चात् पुनः दुसरा उपर का वस्त्र वर वधू को प्रदान करता है—तब यह मंत्र कहकर देता है किः—

या अकृन्तन्नवयं या अतन्वत। याश्च देवीस्तन्तू नाभितो ततन्थ। तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः।

इस मंत्र को कह दुसरा ऊपर का वस्त्र (कंचुकी— कबजा— पोलका आदि) देवे। अनंतर वधुवर को भौजाई आदि कज्जल आंख मे लगावे उसका मंत्र यहः—

अथैनौ समञ्जयति। समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ। संमा तरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ।

कहकर अञ्जन आंखमे लगावे। पश्चात् वधु पिता इन दोनों को आपस मे यानी परस्पर में देखने की आज्ञा करे। तब यह दोनो परस्पर में यह मंत्र कहते हुए देखें।

परस्पर समीक्षणं। अथैनौ समीक्षयति।

वधुः—अघोर चक्षुर पतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्देव कामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।

वरः—सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः। तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः।

वधुः—सोमोऽददद्गंधर्वाय गन्धर्वोददद्ग्नये। रयिं च पुत्राश्चादाद-
ग्निर्मह्यमथो इमाम् ।

वरः—सानः पूषा शिवतमामैरय सा न ऊरू उशती विहर।
यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपं यस्यामु कामा बहवो निविष्ट्या।

इसके पश्चात् वर जल लेकर संकल्प करे—

अद्य पूर्वोच्चरित गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ (आदि देश कालौ संकीर्त्य) पाणिम् पतिगृहीतायाम् अस्यां वध्वां भार्यात्व सिद्ध्ये विवाहे होमं करिष्ये - इति संकल्प्य ।

ततोऽग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनंदत्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशान् आस्तीर्य । ब्रह्मणोग्नि पर्यन्तं नैर्ऋत्यात् वायव्यंतं— वायव्यादीशानांतं । अग्नितः प्रणिता पर्यन्तम् । अग्नि ऋतरतः प्रणितापात्रे उदकं पुरतःकृता प्रोक्षणी पात्रे निधाय यथा सादित वस्तु सेचनं । श्रुवः प्रतपनं । ततः- दक्षिणतोनिदधात् । अग्नःउत्तरोत्तर क्रमेण आज्यस्थाली । सम्मार्जन कुशा । उपयमन कुशा । समिधस्तिस्त्रः । आज्यमः । पूर्णपात्रम् । आज- स्याग्न अवतारणम । निरसनम् । ततोघृताक्ता समिधस्तिस्त्रःधृत्वा उत्तिष्टन् मनसा प्रजापते ध्यायन् घृताक्ता समिधः तिस्त्रः क्षिपेत ।

ॐ.मनसा प्रजापते स्वाहा इदं प्रजा पतये नमम । ॐ.इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय नमम। ॐ-अग्नये स्वाहा। इदमग्नये नमम ॐ-सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय नमम । ॐ भूस्वाहा इद मग्नये नमम । ॐ भुवः स्वाह इदं वाये नमम । ॐ स्वःस्वाहा इदं सूर्याय नमम ।

त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ५ सि प्रमुमुग्धस्म त्स्वाहा ॥ ४ ॥ इदमग्नि वरुणाभ्यां नमम ।

वेद मंत्रों का अर्थ करनेकी जो हमने पद्धति खोज निकाली है; उसके अनुसार सब विवाह विधिके मंत्रों का अर्थ शीघ्रही प्रकाशित करने वाले हैं ।

सत्वन्नोऽअग्ने वमोभवो तीनेदिष्ठो अस्या उष मो व्युष्टौ। अवं यक्ष्वनो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवोन एधि स्वाहा ॥ ५ ॥ इदमग्नि वरुणाभ्यां नमम।

अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्तिपाश्च सत्यमित्व मयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहिभेषज ँ स्वाहा ॥६॥ इद मग्नये अयसे नमम।

येते शतं वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा ॥ ७ ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम।

उदुत्तमं वरूण पाश मस्म दवा धमं विमध्यम ँ श्रथाय ॥ अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा ॥ ८ ॥ इदं वरणायादित्यादितये च नमम ॥

अथ राष्ट्र भृत होमः

---

१ ऋताषाड्रत धामाग्नि गंधर्वः सनः इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदमृतसाहे ऋतधाम्ने अग्नये गंधर्वाय नमम ॥ १ ॥

ऋताषाड् ढृत धामाग्नि गंधर्वे स्तस्यौपधयोप्सरसो मुदोनाम ताभ्यः स्वाहा। इदमोपधिभ्योप्पसरोभ्यो मुद्भयो नमम ॥ २ ॥

स ँ हितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वः सन इदम् ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट। इदं स ँ हिताय विश्व साम्ने सूर्याय गन्धर्वाय नमम ॥ ३ ॥

स ँ हितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वस्त तस्य मरीचयोप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं मरीचिभ्योप्सरोभ्य आयुभ्यो नमम ॥ ४ ॥

सुषुम्णः सूर्य राश्मि श्चंद्रमा गन्धर्वः सन इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं सुषुम्णाय सूर्य रश्मये चन्द्रमसे गधर्वाय नमम ॥ ५ ॥

सुष्मुम्णा सूर्य रश्मिश्चंद्रमा गंधर्व स्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भे कुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं नक्षत्रेभ्योप्सरोभ्यो भे कुरिभ्यो नमम ॥ ६ ॥

इषिरो विश्व व्यचा वातो गंधर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गंधर्वाय नमम ॥ ७ ॥

इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्व स्तस्या पोप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदमद्भयोप्सरोभ्य उग्भर्यो नमम ॥ ८ ॥

भुज्यु सुपर्णो यज्ञो गंधर्वः सन इदम् ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गंधर्वाय नमम ॥ ९ ॥

भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्व स्तस्य दाक्षिणा अप्सरस स्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा । इदं दक्षिणाभ्योप्सरोभ्य स्तावाभ्यो नमम ॥ १० ॥

प्रजापति र्विश्वकर्मा मनो गंधर्वः सन इदम् ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं प्रजा पतये विश्व कर्मणे मनसे गन्धर्वाय नमम ॥११॥
पजापतिर्विश्वकर्मा मनो गंधर्व स्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्य-स्वाहा । इद मृक्सामेभ्योप्सरोभ्य एष्टियो नमम ॥ १२ ॥

अथ जया होमः ।

चित्तंच स्वाहा इदं चिताय ॥१॥ चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्यै॥२॥ आकूतंच स्वाहा इदमाकूताय ॥३॥ आकूतिश्च स्वाहा इदमाकूत्यै ॥४॥ विज्ञातंच स्वाहा इदं विज्ञाताय ॥५॥ विज्ञातिश्च स्वाहा इदं विज्ञात्यै॥६॥ मनश्च स्वाहा इदं मनसे ॥७॥ शक्कर्यश्च स्वाहा इदं शक्करीभ्यो ॥८॥ दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय ॥९॥ पौर्ण मासंच स्वाहा इदं पौर्ण मसाय॥१०॥ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते ॥११॥ रथं तरंच स्वाहा इदं रथं तराय ॥१२॥

प्रजापति र्जयानिंद्राय वृष्णे प्रयच्छ दुग्रः पृतना जयेषु ॥ तस्मै विशः समन मंतः सर्वाः स उग्रः सऽइहव्यो बभूव स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये जयानिंद्राय नमम: ॥१३॥

अथाभ्यातान होमः ।

१ अग्निर्भूताना मधिपति समावत्वास्मिन्ब्रह्म ण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामा शिष्यस्याम् पुरोधायाम स्मिन्कर्मण्यस्यां देव हूत्यांऽ स्वाहा । इदमग्नये भूतानां अधिपतये नमम ॥ १ ॥

२ इन्द्रो ज्येष्ठानाम् अधिपति —

प्रत्येक मंत्रमें निम्नलिखित पाठ की पुनः आवृत्ती करना.

“ समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे स्यामा शिष्यस्यापुरो धाया मास्मिन्कर्मण्यस्यां देव हूत्यां ऽ स्वाहा ”

इदमिंद्राय ज्येष्ठानामधिपतये नमम ॥ २ ॥

३ यमः पृथिव्या अधिपतिः" समा " इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये नमम ॥ ३ ॥ (दक्षिण पात्रांतरे त्यागः) प्रणितो दकोपस्पर्शः

४ वायुरंतरिक्षस्याधिपतिः " समा " इदं वायवेन्तरिक्षस्याधि पतये नमम ।

५ सूर्यो दिवोधि पतिः " समा " इदं सूर्याय दिवोधिपतये नमम ।

६ चन्द्रमा नक्षत्राणामधि पतिः " समा " इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये नमम ।

७ बृहस्पति र्ब्रह्मणोधिपतिः " समा " इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोधि पतये नमम ।

८ मित्रः सत्याना मधिपतिः " समा " इदं मित्राय सत्याना मधिपतये नमम ।

९ वरुणोपामाधिपतिः " समा " इदं वरुणायापामधिपतये नमम ।

१० समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः " समा " इंद समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये नमम ।

११ अन्नं ँ साम्राज्यानामाधिपतिः " समा " इदं अन्नाय साम्राज्याना मधिपतये नमम ।

१२ सोमऽऔषधीनामधिपतिः —" समा " इदं सोमाय औषधीनां अधिपतये नमम ।

१३ सविता प्रसवानामधिपतिः " समा " इदं सवित्रे प्रसवाना मधिपतये नमम ।

१४ रुद्रः पशूनां अधिपतिः " समा " इदं रुद्राय पशूनामधिपतये नमम । (इशान्यां त्यागः) उदकोप स्पर्शः

१५ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः " समा " इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये नमम ।

१६ विष्णुः पवर्तानां अधिपतिः " समा " इदं विष्णवे पर्वताना माधिपतये नमम ।

१७ मरुतो गणानां अधिपतिः " समा " इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो नमम ।

१८ पितरः पितामहाः परेवरे ततास्तता महाः " समा " इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योवरेभ्यः ततेभ्यः तता महेभ्यश्च नमम । दक्षिणाग्न्योर्मध्ये त्यागः उदकोपस्पर्श ॥

अग्निरित्यादि पंचकं ।

अग्निरैतु प्रथमो देवता ना ९ सौस्यै प्रजां मुंचतु मृत्यु पाशात् । तदय ९ राजा वरुणोनुमन्यतां यथेय ९ स्त्री पौत्र मघंन रोदा त्स्वाहा ॥ इद मग्नये नमम ॥१॥

इमामग्निस्त्रायतां गार्ह पत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्यो पस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानंद मभि प्रबुध्यतामिय ९ स्वाहा ॥ इद मग्नये नमम ॥२॥

स्वस्तिनो अग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथाय जत्र ॥ यदस्यां मयि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्र ९ स्वाहा ॥ इद मग्नये नमम ॥३॥

सुगन्तुपन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न आयुः ॥ अपैतु मृत्यु रमृतंम आगाद्वैवस्वतोनोऽभयं कृणोतु स्वाहा ॥ इदम् वैवस्वताय नमम ॥ ४ ॥
(दक्षिण पात्रे त्यागः) (वध्वक्ष्णोर्वस्त्रपटं प्रक्षिप्य तूष्णीम् ॥

परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते अन्य इतरो देव यानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजा ऽ रीरिषो मोत वीरान्स्वाहा ॥ इद मृत्यवे नममेति अग्नौ त्यागः ॥५॥ उदकोप स्पर्शः (यहां वर का हवन कृत्य पूर्ण हुआ) (अब कन्या लाजा हवन करती है ।)

लाजो होम विधिः

यहां लड़कीका भ्राता, शमी और पलाशके मिश्रित पत्तोमें लाजा मिला- वह सब एक सूपडे़में लेकर कन्या और वर के पीछे भागमें खड़ा होजाय और सूपड़ेमें उसके चार विभाग करे । उसमें का एक विभाग अंजली से कुमारीके अंजुलीमें देवे—

कुमार्या भ्राता शमी- पलाशमिश्राँ- लाजानञ्जलिनाञ्जलावाव- पति ॥ १ ॥ ताञ्जुहोतिस ऽ हतेन तिष्टती ॥

कुमारी अंजुली करके उस लाजाको अपने भ्राताके पाससे अपने अंजुलीमें लेकर उसमेंसे उसके तीन विभाग अंजुलीहीमें करके; एक एक मंत्रके साथ एक एक भाग हवन करती जाय । ऐसे तीन मंत्रोकी तीन आहुती में अञ्जली के तीन भागों को दाल देवे । जैसे—

१ **अर्यमणं देवं कन्याऽऽग्निमयक्षत । सनो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा ।** (एक हिस्सा होमे दो २ हिस्से रखे.)

२ **इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्ताम् ज्ञातयो मम स्वाहा ।** (आधा हिस्सा होम देवे आधा रखे)

३ **इमाँ ल्लाजाना वपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव । मम तुभ्यंच संव- ननं तदग्निरनुमन्यतामिय ऽ स्वाहा ॥** (अंजली मेका कुल हिस्सा होमे)

इन तीनों मंत्रों के साथ तीनोंभी हिस्से हवन करे। पश्चात् वर कुमारी का सीधा हात अपने सीधे हात से अंगुठे सहित पगड़ कर अग्निको नीचे लिखा मंत्र कहते हुए प्रदक्षिणा करे

वरः—गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मयापत्या जरदष्टिर्यथा सः। भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः। अमोह मस्मि सा त्वऽठ. सात्वमस्यमोऽअहम्। सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्योरहं पृथिवी त्वं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां पजनया वहै पुत्रान्विदावहै बहून् ते सन्तु जर दष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतऽठ श्रृणुयाम शरदः शतम् ।३।६।

जिस समय वर, वधूका अंगुठे सहित हात पकड़ कर खडा होता है उस समय वर अपने गंभीर वाणीसे स्त्रीका गौरव करता है सो प्रसंग बहुत रहस्य भरा होनेसे उसका सारभूत अर्थ पाठकों को दिखाताहुँ। अंगुठे सहित हात पकड़ कर वर स्त्रीके प्रति कहता है।

वरः— हे सुभगे तुमारे इस हातके ग्रहणसे तुमारे और मेरे पर; आकाश में स्थित भग— अर्यमा— सविता देव की कृपा ही तुमको मुझसे और मुझको तुमसे मिला रही है। अपने दोंनो का मिलन सौभाग्य योग इनी देवों की कृपासे प्राप्त हुआ है। इस लिए मेरा जो कुछ भी है सो सर्वस्व तूं है। इसी तरह तेरा सर्वस्व मै हुँ। तेरा मेरा इतना घनिष्ट संबंध है; कि वह कभी हट नहीं सकता। यानी वह इतना घनिष्ठ है, कि मै साम वेद हुँ; तो तूं ऋग्वेद है। मै आकाश हुँ तो तूँ पृथ्वी है।क्यों कि इसी लिए तुमारी हमारी प्राप्ति हुई है।अतः तुम मेरे सहित रेतको धारण करने वाली होगी; उससे प्रजा उत्पन्न होंगी। फिर पुत्रादिकों के विवाह करने होंगें। कहाँतक कहुं बहुतसे कार्य करने होगें। अतः हे प्रिये अपुन प्रसन्न मन से युक्त हो के (नेत्रोंसे) सौ शरद् देखें। सौ शरद् तक जीवें। और वैसेही सौ शरद् तक (कर्णेंद्रियसे) सुनें। ऐसा अभय उक्त देवों सेही प्राप्त होगा।

यो कह कर वर उसको अग्नीके उत्तर तरफ एक सिला रखकर नीचे लिखे मंत्र से—

अथैनामश्मानमारोहयति उत्तरतो अग्नेः दक्षिण पादेन ।

स्त्री को खड़ी कराता है । और नीचे का मंत्र कहता है:—

आरोहे ममश्मान मश्मेव त्व ँ स्थिरा भव । अभितिष्ट प्रतन्यतो वबाधस्व पृत नायत । इति ।

इस मंत्रसे खड़ी करनेके पश्चात् फिर गाथा गान करता है । उस समय स्त्री की तारीफ़ करता हुवा नीचे का मंत्र कहता है ।

अथ गाथां गायति सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनी वती । यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः यस्यां भत ँ समभवद्यस्यां विश्व मिदं जगत् । तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणा मुत्तमं यशः ॥२।७॥

पश्चात् अग्नीके चारो तरफ़ परिक्रमा अग्रेवधु पश्चात वरः इस क्रमसे करता है प्रदक्षिणा का मंत्र नीचे कहा है ।

तुभ्यमग्रे पर्यवहन्सूर्या वहतु ना सह । पुनः पतिभ्यो जायां दाग्ने प्रजया सह ।

इस मंत्रसे वधु ओर वरने अग्नीकी प्रदक्षिणा करना । ठीक इसी तरह दो बार ओर फिर कन्या के हात से पूर्वोक्त क्रम के मुताबिक लाजा होमको आरंभ कर अग्निकी प्रदक्षिणा तक सब विधि करना । अर्थात् तीन बार ऐस करके चौथी बारः—

चतुर्थं ँ शूर्प कुष्ठया सर्वां ल्लाजानावपति भगाय स्वाहेति ॥

सिर्फ़ भगाय स्वाहा इतना कह कर कुमारी अग्निमें शूर्प मेकी सब लाजा शूर्प कोणसे डाल देवे । आगे वरको कर पीछे वधू इस क्रमसे चौथी प्रदक्षिणा दे । पश्चात् वर वधू पूर्व वत आसन पर बैठ जाँय ।

सप्तपदी विधि.

अग्नि प्रदक्षिणा होजाने के पश्चात् वर जब वधू को उत्तर की और से घुमाकर वाम भाग में लेता है। तब वह अपनें पग पग पर ऐसे सात ठहराव यानी [कौल] शर्तें पेश करती है। जिन शर्तों को वर अग्नि के और विष्णु के साक्षिसे कबूल करता है।

अथैनामुदीची * सप्त पदानि प्रक्रामयतिः—

जिन शर्तों को कन्या कबूल कराती है वेशर्तें ये है

एकमिषे। द्वे ऊर्जे। त्रीणि रायस्पोषाय। चत्वारी मायो भवाय। पञ्च पशुभ्यः। षड् ऋतुभ्यः। सखे सप्तपदा भव सा मामनु व्रता भव॥ १॥

स्वामिन् पहिली शर्त तो यह है, कि मेरा तुमरा साथ सहवास नहीं टूटे

एकमिषे अर्थात् सदैव आपहम ईश्वरका भय रखते हुए रहें। खावें। पीवें। वास करे। जिस प्रकार शरद् ऋतु के दो मासमें; पृथ्वी को शस्य शालिनी बनाने को अप्रतिम गुण है; उसी प्रकार मुझको सब तरह से सुखवती करनेमें तुम गुण को धारण करे रहो इस प्रणको पालन करोगे! **वरः—विष्णुस्त्वा नयतु।** विष्णु साक्षी से कहता हूँ पालन करुंगा।

दुसरी शर्त यह है कि मेरी ऐसी दशा नहो जो अन्नान्न दशा होजाय।

द्वे ऊर्जे अर्थात् अन्न वस्त्र—सम्पत्ति, पैसा, टका आदि सब पर मेरी मालकी न हटाई जाय। सादा ऊर्जित अवस्थामे मैं रहुँ। जिस प्रकार हेमंत आतेही किसान की वह ऊर्जित अवस्था लाता है। ठीक उसी

---

* इषः और ऊर्जः यह आश्विन और कार्तिक महिनेके नाम है। वेदोंमें इष= पिन्वमानः और ऊर्ज= अन्नवान् कहा है। सहस्वान और ओजस्वान एवं सहीयान और सहमान भी इनोका नाम है। (देखो युगपरिवर्तन पेज ४४.)

प्रकार मेरी ऊर्जित अवस्थाके ऊपर ध्यान रख कर दृढ़ व्रती रहो इस दुसरे प्रण का पालन करोगे ! **वरः—विष्णु स्त्वानयतु** विष्णु साक्षीसे कहता हूँ दुसरा प्रण भी तेरे लिये पालन करुंगा ।

त्रीणि रायस्पोषाय। तीसरी शर्त यह है कि आपने आज तक पैसा चाहे जहाँ कमाया या, चाहे जहां रखा; चाहे जो किया किंतु अब कमाकर जो भी कुछ लावोगे उसपर मेरा पूर्ण हक रहे। जो कुछ भी खर्च इत्यादिका कार्य हो सो बिना मेरी सलाह के न किया जाय। इस तीसरे प्रण का पालन करोगे ! **वरः—विष्णु स्त्वानयतु** । विष्णू साक्षी से कहता हुं तीसरा प्रणभी तेरे लिये पालन करुंगा ।

चत्वारि मायो भवाय चवथी शर्त यह है कि मेरे से उत्पन्न हुई कुल सन्तति फिर पुत्र हो या पुत्री सब समान हक को सम्पत्तीके दायभाग के मालिक होंगे । अर्थात् मेरी संतति आप की सम्पत्ति की दाय भागकी मालिक हों । इस चौथी शर्त का पालन करोगे ! **वरः-विष्णु स्त्वानयतु** । विष्णु साक्षी से कहता हुँ चौथी प्रण भी तर लिये पालन करुंगा !

पंच पशुभ्यः— पांचवी शर्त यह है कि धार्मिक कार्य तप- तीर्थयात्रा- होम- यज्ञ धर्मशाला- कूवा- बावडी- व्रत- उद्यापन आदि जोभी धार्मिक कृत्य करो सो बिना मेरे उपस्थिति के न किए जाँय । अर्थात् इन कामों मे मेरी उपस्थिति या मंजूरी ली जाय । इस पांचवी शर्त का पालन करोगे ! **वरः—विष्णु स्त्वानयतु** । ईश्वर साक्षीसे कहता हुं तेरे लिये निबाहूंगा ।

षड् ऋतुभ्यः छट्टी शर्त यह है कि व्यापार के निमित्त या अन्य कार्य के निमित्त परदेश भलेहां जाँय । किंतु मेरा ऋतु कालमें तो भी स्वीकार होना । अर्थात् मुझे ऐसा त्याग कर, न चले जाँय जो मै बरसों ही तड़फती रहुँ । और आप अपना दुसरे के स्नेह पाशमें फँस जाँय । इस लिए एक ऋतु भी आपके बिना मै सूनी न रहुँ इतना; मेरे याद गिरीका स्थल आपके हृदयसे सूना न किया जाय । इस छटी शर्तको निबाहोगे ? **वरः—विष्णु स्त्वानयतु** । विष्णु साक्षी से कहता हुं तेरे लिये निबाहुँगा ।

सातवीं शर्त यह है कि मुझसे आपका जितना भी वर्ताव रहे वह सब मित्रत्व की तरह होना चाहिए। जैसा मित्रके लिए मित्र परस्पर में घनिष्ठ मित्रता का व्यवहार रखते हैं। वही प्रकार आपके मेरे बीचमें होना चाहिए। अर्थात् चार लोगों मे अनादर करना-मारना या ताड़ना करना आदि दुष्ट कृत्यों के प्रति हृदय में स्थल न दिया जाय यह सातवीं शर्त निबाहोगे? **मामनु व्रता भव। वरः-विष्णु स्त्वानयतु।** विष्णु साक्षी से कहता हूं की तुह्मारे लिये निबाहूंगा !

सखे सप्तपदा भव।

आदि उपर कही हुई सात शर्तों का सदैव पालन मेर अनुकूल आपकी ओर से हो! उत्तर में वर प्रत्येक शर्त के पिछे कहता है:—

विष्णुस्त्वा नयतु। "विष्णु की साक्षीसे कहता हुं कि तुह्मारी इन शर्तोंको पूर्णतया तुह्मारे लिऐ पालन करुंगा। अर्थात् निबाहूंगा। तोडूँगा नहीं।"

इत्यादि सात शर्तो की कबूली विष्णु साक्षीसे वर करता है। इस पश्चात् पानी के कलश को कांधेपर लेकर एक पुरुष दक्षिण की और खड़ा रहता है। और एक उत्तर की और। ऐसे दोनो के कलशों का जल लेकर वर वधूके अंगपर व वधू वर के अंगपर ऐसा परस्पर में अभि षिंचन करते हैं।

"निष्क्रमण प्रभृत्युद कुम्भं स्कंधे कृत्वा दक्षिण तोऽग्रे वाग्यतः स्थितो भवति॥ ३॥ उत्तरतः एकेषां॥ ४॥ तत एनां मूर्द्धन्य भिषिञ्चति।"

अभि षिंचन आम्र पल्लव से करे—और नीचा लिख मंत्र कहता जाय:—

आपः शिवाः शिवतमाः शांताः शांततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

आपोहिष्टा मयोभुवः। तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥

योवः शिव तमोरसतस्यभाजयतेह नः उशतीरिव मातरः॥

तस्माअरंगमामवो। यस्यक्षाय जिन्वथ। आपोजन यथाचनः॥

इस अग्नि शिञ्चन के पश्चात् नीचे लिखे मंत्रको कहकर सूर्य दिखावे

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात् शुक्र मुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रुणुयाम शरदः शतं प्रब्रावाम शरदः शतमदीनः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।

इस मंत्रको कह वर–वधु दोनों को सूर्य दिखावे और सूर्य को नमस्कार करें। अनंतर वर वधुका सीधा हात लेकर अपने हृदय पर लगावे और नीचे लिखा मंत्र कहे।

मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापति ष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।

वरः—प्रिये! मेरे उद्देशों को तेरे हृदयमें धारण कर। मेर चित्तकी तरह निर्मल तेरा चित्त हो। मेरी वाणी को केवल एक सच्चेमन से पालन कर इसी लिये प्राजापतिने तुझको मेरे लिये नियुक्त किया है। ऐसा कह कर आदर पूर्वक नव वधु को वर सुन्दर आसनपर बैठाता है। और इसकी पूजा करता है।

अर्थात् इसके बालों की मांगमे [सेंदूर आदि] कुछ रंगीली वस्तु से केश शुशोभित सुंदर करता है। और फिर नीचे लिखा मंत्र कहता है।

सुमंगलीरियं वधूरिमा ँ समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं विपरेतन ॥ ९ ॥

इस मंत्रसे वरने वधुके केश सँवार ना और सिन्दूर लगाना कहा है। * अब यह विधि समाप्त हुई। आगे गांवके लोग जो सूचना करे उस [**ग्राम वचनंच कुर्युः**] मुताबिक उपस्थित पूज्यपाद आदि लोगों को प्रणाम करना आदि कहा है।

---

* यहां भी पड़दा प्रथा का ऋषि लोगों को स्वप्न तक नहीं था। नहीं तो घुंघट के ओटमें कैसा वर सेन्दूर लगा सकता। इसको पड़दा प्रथाके भक्त अवश्य सोचें।

हाँ एक बात रह गई । यहां तो उपर सूर्य दिखानेका कहा है । किंतु दिनके चौथी प्रवहर में विवाह हो और किसी कारण वशात् सूर्य का अस्त होगया हो तो–ध्रुव को देखे ऐसा कहा है । **अस्त भिते ध्रुवं दर्शयति**– यहां गृह्य सूत्रकार ने रात्र शद्ब नहीं कहा । बड़ा अच्छा हुवा नहीं तो रात्री के विवाह करने वाले कुछ आधार पासकते थे अत: यहां उनकी बात बिलकुल निराधार होगई । क्यों कि–यदि अस्त होजाय, तो ध्रुव दिखाना कहा है । इसीसे नीचे ध्रुवका मंत्र दिया है ।

ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधिपोष्ये मयि मह्यं त्वादाद बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरद: शतम् ॥ १९ ॥ सा यदि न पश्येत् पश्यामित्येव ब्रूयात् ॥ २० ॥

विवाह विधिके पश्चात का कार्य

उपरोक्त कही हुई कुल विवाह का विधि विधान परिपूर्ण होनेके पश्चात् वधु–वर ने अपने से पूज्य और बड़ोका आशिर्वाद ग्रहण करना । पश्चात् वधु पिता ने भोजनकी तयारीमे लगना ।

वधु पिता की ओर से भोजन की सब व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए

सह भोज तथा ब्याणा भात ऊर्फ बढ़ार ।

जिसमे सब रसोई नित्यके भोजन की हो । बिशेष नहीं । जैसेकी–लड्डू–जलेबी, घेवर, गुलाब जामून, रसगुल्ला, फेणी प्रभृति रसीली और जीभको ललचानेवाली चीजों की कोई आवश्यकता नहीं । क्यों कि इसके बीचमें आडंबर का वास है । इस लिये यह बात वास्तव में आदर्श युक्त नहीं है । यहां तो आदर्श युक्त वहीं होंगी, जो गरीब सेभी गरीब नित्य प्रति जिन चीजों को अहर्निष काम में लाता हो । जैसे—

दाल—चावल—कढ़ी—फलका (रोटी) एक दो *साग बस इतनाही* सामान बस है । क्यों कि ब्याणा भात ही का मतलब है । कि विवाह के पश्चात् का चावल का भोजन । फिर व्यर्थ ही रसभरी चीजों के उलझन में और खर्च में डालकर किसी को दिक करना; कभी आदर्श हो सक्ता है ? नहीं।

इसमें दो बात का निष्पन्न निकला है । एक तो यह कि, भात (चांवल) काममे आनेसे वहां उतने लोग ही विवाहमें जाते हैं। जितने सह भोजी है । और दुसरा घर वाले को अधिक तंग नहीं होना पड़ता । अतः ऐसा नित्यके भोजन वस्तु ओंको ही व्यवहार में लेना ही आदर्श ताके पात्र है।

भोजके पश्चात् बरातियोंका प्रयाण ।

भोजन विधि उरक जाने के पश्चात् कन्या को जो जो वस्तु (समर्पण) देना हो सो देकर वर वधू का पूजन सत्कार करे । और वधु पिता इन दम्पती को अपने घर जाने की परवानगी देवे । बस अबतक जितनी आदर्ष बातें विवाह के लिये जो अत्यावश्यक थी सो दिखादी ।

इसके अलवा विवाह के लिये आई बरात को तीन—चार—पांच कहुं कहुं तो आठ आठ नौ नौ दिन बरात का रखना—जूवा जूई—कंवर कलेवा—रंग बरी—यानी वर के और वधु पक्षके और से होने वाले परस्पर के प्रशंसा स्तोत्र—आदि बाते वेद तथा गृह्य सूत्र आदि में न होनेसे अवैदिक हैं। इसलिये उक्त बाते सर्व थैव निराधार होने से त्याज्य है ।

थोड़े से में कहने का सारांश यह है कि जिसको वैदिक आदर्श विवाह करना हो; वह हमारी बताई आदर्श बातों को न भूले । कई लागों को जिनको की आजतक कालिमें पैदा हुई कुप्रथा ओंने घेर रखा है, उन को तो यह नई दिखेगी सहीं । किंतु यह बताई हुई आदर्ष प्रथा नई नहीं है; तो वेद कालीन आदर्ष युक्त प्राचीन शुद्ध एवं पवित्र परिपाटी जो कुछ भी आदर्श मानी गई है सो यही है । अतः ऐसे सत्य वेदकालीन उत्तम सिधान्तों को अपना कर आशा है विवेकी विद्वान आदर्श कार्य करनेमें अवश्य ही अग्रसर होंगे ।

कन्या पक्षकी ओर से

केवल बारह घंटेमें परिपूर्ण होनेवाले विवाह के तमाम कृत्य।

समय की सूचना.	संक्षिप्त विवरण
विवाह काल के छे घंटापूर्व	गणपति पूजनसे नांदिमुख पूजा तक के तमाम पूजन विधि।
विवाह काल के पांच घंटा पूर्व	मण्डप पूजन–स्तंभ पूजन दिग् रक्षणादि कुल कार्य।
विवाव काल के चार घंटा पूर्व	बरातियों का आगमन, नगर प्रवेश समय में स्वागत।
,, ,, तीन घंटा पूर्व	सुभीतेकी जगह पर बारतियों का उतारना जलपानादि।
,, ,, दो घंटा पूर्व	सीमान्त पूजन ऊर्फ सँयाला, घर आनेके लिए वरको आमंत्रण।
,, ,, एक घंटा पूर्व	तोरण पूजा–वर पूजन वर पिता द्वारा वधु पूजन अभ्यंग स्नान।
मुख्य विवाह काल	**परस्पर–समीक्षण। पाणि गृहण वधु–वरके हात से हवन।**
विवाह काल के एक घंटा पश्चात्	सभ्य पुरषों से वधु–वर को आसीस. आमंत्रितों का स्वागत।
,, ,, दो घंटा पश्चात्	पान–सुपारी–फूलमाला आदि वधु–वर को और आमंत्रितों को देना.
,, ,, तीन घंटा पश्चात्	सुधार विषय पर किसी अच्छे विद्वान का व्याख्यान.
,, ,, चार घंटा पश्चात्	भोजन–जलपान–आदि कार्य बरातियों के प्रति करना.
,, ,, पांच घंटा पश्चात्	आराम करने के लिए निश्चित किया समय.
,, ,, छे घंटा पश्चात्	वधु–वर का गृह पर प्रस्थान–बरातियों आमंत्रितों की बिदाई.

वर पक्षकी ओर से

केवल बारह घंटों में परिपूर्ण होनेवाले विवाह के तमाम कृत्य।

समय की सूचना	संक्षिप्त विवरण
विवाह काल के छे घंटा पूर्व	गणपति पूजन—सांकड़ी राखी—बान इत्यादि कृत्य.
,, ,, पांच ,,	कौटुंबिकों का सह भोज— पान सुपारी आदि देना.
,, ,, चार ,,	वधु गृह पर जानेका प्रस्थान (उर्फ निकासी)
,, ,, तीन ,,	प्रवास का समय······· जाकर वधु के ग्राम में प्रवेश.
,, ,, दो ,,	वधु के ग्राममें प्रवेश—द्वारपूजा—तोरण पूजा आदि.
,, ,, एक ,,	वधु पिता के आमंत्रण पर जाना और उनकी मधुपर्क पूजा स्वीकार
,, ,, **मुख्य विवाह काल**	**परस्पर समीक्षण। पाणि—गृहण। वर-वधु के हातसे हवन।**
,, ,, एक घंटा पश्चात्	आमंत्रित सभ्य पुरुषों से वधु वरने शुभाशिर्वाद लेना.
,, ,, दो ,, ,,	आगत सज्जनों का स्वागत पान—सुपारि आदि सत्कार
,, ,, तीन ,, ,,	किसी अच्छे विद्वान् व्यक्ति द्वारा सुधार विषय पर प्रवचन व्याख्यान
,, ,, चार ,, ,,	भोजन— जलपान—आमंत्रितों का स्वागत पूर्ण भोजन.
,, ,, पांच ,, ,,	आराम करने के लिए निश्चित किया समय.
,, ,, छै: ,, ,,	वधु—वर का गृह पर प्रस्थान। शुभागमन.

Area of Learning difficulty : Writing Skill

Objectives :

i Ability to write English with accuracy and clarity.

ii. Ability to write English for communication in real life situations.

iii. Ability to select vocabulary appropriate to the kind of writing task

iv. Writing sentences in proper sequence.

v. Transforming ideas or thoughts into language

Teaching – learning problems :

i Unable to select the right topic / context for writing.

ii Inability in generating adequate ideas.

iii. Inability in maintaining sequence in logical order.

iv. Lack of vocabulary to present the ideas.

Strategy : **Chart – Use of Chart**

Look at the following Flow Chart. Discuss this diagram with two of your friends. Your teacher will help you.
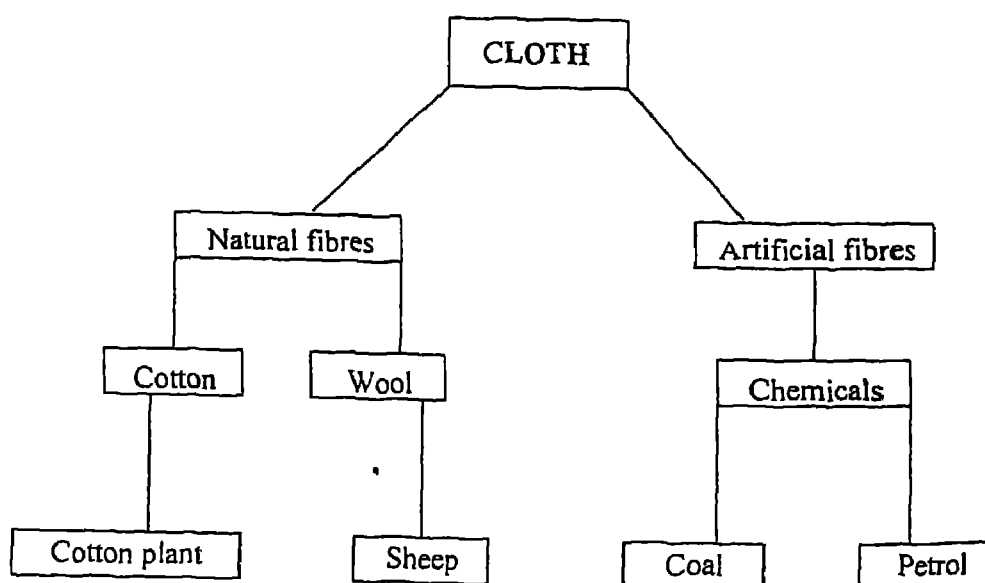
Look at the key words. Write 5 sentences of your own. The first one has been done for you.

1. We can make cloth from natural and artificial fibres
2. .. ..
3. ....
4. ... .
5. ....

During the 5 day workshop the following members of the group were assigned the task of listing out 'hard spots' for Class VII text book (Learning English) prescribed by the Govt. of West Bengal and to prepare innovative instructional strategies to enable the practicing teachers of West Bengal for promoting effective teaching and joyful learning in the classroom.

Members

1. Arindam Sengupta
   Assistant Master in English
   Bankura Zilla School, Bankura (WB)

2. Bichitra Sur Roy
   Principal
   Vidyasagar Bani Bhaban PTTI,
   Kolkota

3. Dr. Pramathesh Das
   Reader,
   Radhanath Institute of Advanced Studies in Education, Cuttack

4. Mrs. Shatarupa Palit
   Lecturer (S G.) in English
   RIE, Bhubaneswar

Listing out the 'Hard Spots'

1. a Reading comprehension
   - i. Prose
   - ii. Poetry

   b. Writing Skills - Different types of composition
   - i Story writing
   - ii. Paragraph writing

   c. Vocabulary

   d Pronunciation

INSTRUCTIONAL STRATEGIES IN ENGLISH

CLASS VII

Book : Learning English

Members

Arindam Sengupta

Bichitra Sur Roy

Resource Persons

Mrs. Shatarupa Palit

Dr. Pramathesh Das

Programme Coordinator

Prof. V.K. Sunwani

Area of Learning Difficulty : Poetry

Title of the Poem : **A Fairy Went a - Marketing**

Name of the Poet : **Rose Fyleman**

Students are exposed to rhymes and action songs to enjoy the sounds of the English language. When they sing with action, they develop love and interest towards the language. Gradually the students make a transition from action songs/ rhymes to the world of poetry. In fact, action songs/ rhymes develop a taste for poetry introduced at the higher class.

Poetry is a piece of literature which help pupils to enjoy reading. It develops the aesthetic sense in the students, so that they can express themselves beautifully in English. It is poetry that cultivates the faculty of imagination and develops the sense of appreciation It is through poetry, the students appreciate rhymes and rhythm of language. At the end of the poem under study every student acquires the virtues dealt with in the poem. Thus the poetry lesson has implications for value education

Objectives : To help pupils improve the four language skills.

a) General Objectives

- help the pupils comprehend the poem.
- help the pupils appreciate the poet's thought and use of language
- help the pupils enjoy the poem through rhythm and diction.
- help them enhance their imagination.

b) *Specific Objectives*

- to help the pupils describe the activities of the fairy in the poem
- To help them express in their own words how the fairy changed her mind and attitude.
- To help students create an imaginary situation where a fairy goes shopping for things of her choice.
- To make the students point out the rhyming words used in the poem.
- To help the students recite the poem and enjoy its text and sound.

Teaching Learning Problems :

1. Teachers often do not understand the poem and fail to analyse it from different points of view.
2. Teachers often paraphrase the poem instead of helping pupils to enjoy and appreciate the poem.
3. Teachers fail to devise activities to involve pupils and make them actively participate in the process.
4. Teachers pay less attention to appreciation questions and thus cultivate the pupils' imagination.
5. Teachers fail to distinguish between the different types of questions such as :
    - comprehension questions
    - appreciative questions
    - teaching questions
    - testing questions
    - global and specific questions
    - probing questions.

6 Teachers often fail to recite the poem properly – a good recitation sets the mood and atmosphere of the class.

Strategy

Method

1. The poem will be divided into sense units.
2. Each sense unit shall be again divided into sub-sense units.
3. For each sub-sense unit different types of questions will be developed for comprehension, appreciation and imagination.
4. Activities for students for developing writing and value – inculcation.

The whole approach is mentioned in brief :

Steps :

i) ***Introduction*** : The teacher employs a specific technique to introduce the text

ii) ***Preparation*** : The teacher will ask specific questions which will enable students to guess the topic of the day's lesson to be taught

iii) ***Presentation*** : The teacher will present a model recitation of the poem Then he/she will divide the poem into units and recite them. This will be followed by the students who will recite the whole poem. Lastly, the teacher asks different types of questions thereby directly involving the pupils in development of the lesson.

Activity and Practice :

The teacher now begins teaching the text, concentrating on the first four lines of stanza one (i.e the first sub – unit). Again, the teacher recites the aforesaid unit and asks some comprehension questions :

a. Who went to the market ?

b. What did she buy there ?

c. Where did she put it ?

d. Where was the crystal bowl ?

Next the teacher asks some appreciative questions to the pupils :

a. What was the size of the fish ?

b. Which word suggests that the fish was small ?

Further, the teacher puts forward certain imaginative questions :

a. Where do we store fishes for pleasure ?

b. What things / objects are there in it ?

The teacher likewise, proceeds to the next sub – unit (i e. the next four l stanza one) following the same process.

Comprehension questions :

a Why did the fairy sit for an hour ?

b Why did she take the fish out of the bowl ?

c. Where did she release the fish ?

Appreciation Questions :

a Which word implies that the bowl was clear and made of glass ?

b Which word suggests that the fish was shining inside the bowl ?

Imaginative Questions :

a How does a fairy look like ?

b. At what time does the fairy get busy ?

c Where does a fairy live ?

The teacher now asks a specific question, not asked before, to establish the value inherent in stanza one and thereby involve them in activities to exemplify the value established.

Here the question is :

Why did the fairy release the fish ?

Here the teacher helps the pupils to arrive at the correct answer through a few questions, such as ·

a. Where does a fish prefer to live ?

b. Where do children like to play – in the classroom or in the playground ?

Through this process, the value will be established. Here the value that the pupils learn is –

> There is pleasure in giving one freedom than to confine it in captivity. There is also pleasure in sharing and giving what we possess to others.

Activity 1

Now, the teacher engages the pupils in activities to inculcate the values in the pupils. He/ she will draw a diagram on the blackboard. He/ she will make four columns giving a heading respectively to each.

Things you possess	*Things you prefer to share with friends*	*Things you don't like to share with friends*	*Why would you like to share ?*

Now the teacher supplies certain items in the first column :

For example. Tiffin, bat, ball, trousers, schoolbag, parents, grandfather, grandmother, brother, sister, pencil, happiness, sorrow, etc.

Activity 2

The students will now engage themselves in the activity, filling the three boxes choosing from the alternatives.

After the first activity, the teacher will proceed to the next activity. The teacher asks the students to name some great personalities of the world who dedicated their lives for the benefit of others. For example Mother Teresa, Sister Nivedita, Florence Nightingale, Sir Abraham Lincoln, Swami Vivekananda, Netaji Subhas Chandra Bose, Mahatma Gandhi.

Activity 3

The teacher asks the students to close their eyes and the teacher again presents the poem by reading. He/ she asks the students to form their own mental picture of the song. Then the teacher asks them to illustrate the poem by drawing, painting or any other method.

This approach may help students to cultivate their faculty of imagination and exhibit their skill of drawing by projecting their ideas into reality.

Area of Learning Difficulty - Reading (Prose)

General objectives of reading comprehension

Prose texts are usually used in English classes for several purpose

1. To develop reading comprehension.
2. Presenting new vocabulary items.
3. To use the prose piece as a basis for further language practice.
4. To use the prose text to introduce a new structure, grammatical item and its usage.
5. To develop the writing ability in the student which may be based on the lesson.
6. To develop the skill of listening by the student.
7. To help the students in deducing meaning from the context.
8. To help the students understand the writer's tone or intention (Class IX & X).
9. To help students locate information/ facts in the text and read between and beyond the lines.
10. To help students read the portion properly aloud with correct pronunciation, with stress and pause.

Specific Objective :

The prose piece which we have selected is entitled 'The House dog and the Wolf' from Class VII text book of West Bengal Board. The specific objectives of the lesson are listed below under two heads –

a. Thematic aspect.

b. Linguistic aspect

Thematic Aspects

i. To help the students narrate the encounter between the wolf and the dog in their own words.

ii. To help the students describe the wolf and the dog.

iii. To make the students explain the reason for the dog being healthy and the wolf, unhealthy.

iv. To enable the students to give reasons why the wolf ultimately disagrees to accompany the dog.

v. To help the students state the moral of the lesson.

vi. To help the students to get introduced to an unfamiliar person i.e. by greeting or wishing.

Linguistic aspects

i To help the students use the following vocabulary items in his or her own sentences – half started, plump, sleek, spy, lot etc.

ii. To help the students pronounce difficult words as starvation, irregular, curiosity, shamefacedly etc.

iii. To enable the students to turn the reporting speech into the reported speech.

Teaching Learning Problems

1. Teacher often himself / herself doesn't read properly.
2. Students are not sufficiently exposed to reading materials.
3. Inability to read a written passage with normal speed with proper rhythm, stress, and intonation.
4 Unable to scan the passage
5. Adequate time is not given for reading practice.

Strategy :

The teacher plays a pivotal role in promoting interaction with the text in the following ways :

1. Develop meaning of the text by eliciting a variety of answers from the students.
2. By encouraging silent reading, so that the students can mentally process the information much more rapidly than speech.
3. Linking the ideas of the preceding lessons with the present lesson to be read.
4. Encourage students to offer a variety of answers that involve a great deal of inferencing.
5. The teacher can also enact a drama in which a student plays the role of a master and the other of a servant. (thereby linking the dog, who is the servant of his master and does some specific duties for him in return for which he gets a prize).
6. The teacher can also take up drilling for pronunciation practice.
7. The teacher can also show picture cards highlighting the difficult words in the text.
8 The teacher employs role–play to teach the students how to deliver a speech, converse among friends and properly modulate their sentences.

Activity :

Teaching prose can be a very interesting and stimulating activity for the students. The learners are to play an active role and the teachers are to help them with their language.

For introducing the theme of the lesson the teacher can give them an idea as to what the topic is. A few guiding questions may be asked orally or written on the board Introduction of a lesson can be done using pictures and asking questions on them, linking the lesson with the previous one and finally relating it to the learners' experience.

After reading the text, the teacher asks different kinds of questions, global, local, inferential, factual etc. The questions should be short and simple. The students will provide brief answers.

A question which is an inferential one may be supplied with clues and students may be asked to re-read the text. The question should be used not merely to test but to lead them to an understanding of the text.

The teacher will write some describing word on the blackboard from the text and ask students to make sentences of their own describing their friends and acquaintances.

The teacher can show charts with the difficult words denoting their various meanings with their numerous applications

The teacher asks the students one by one to pick up cards denoting wild animals and domestic animals in order to differentiate them. For this activity the teacher needs to mix up the cards together, the students would put them in different boxes.

The teacher asks two boys to stand up and talk to each other about a simple incident which happened yesterday.

The students can be asked to choose from alternatives the moral they have learnt. This activity would inculcate values in the students. It would help them arrive at the value from three stand points

a. Value understanding

b. Value discrimination

c. Value judgement.

It would help the students to learn discussing and good behaviour.

Students also come to realize about the value of freedom, thereby distinguishing freedom and enslavement.

Reading Strategies

We should know why we are reading and vary the strategy accordingly. Having a reason for reading helps you to focus on what you need or want to understand.

Use the following strategies :

a. Skimming : reading a text quickly just to understand the main ideas.

b. Scanning : having a specific point in mind and looking for it quickly in a text.

c. Reading for detail : reading a whole text very carefully for specific information.

Activity

1. **Reading a menu :**

   Use the layout of a text to help understand what you are reading. What features of the layout helped you to read the menu ? On what basis did you order your dinner ?

2. **Testing reading speed and comprehension :**

   Read a short newspaper article, once, quickly to get the main idea. Then cover it up and try to write a brief summary of the main points – in English, and even in your own language, mother tongue Compare your summary with the main article to see how much you have grasped. Time your reading.

3. Try to read the same material in English that you would read in your own mother tongue. Use the same strategy for reading in English that you employed for reading in the mother tongue.

4. Read the questions before you read the text So you will know what you are looking for in the text.

- Be clear about your reason for reading. This will help you select your strategy.
- Prepare yourself for reading by
    a. Finding out the topic before you start.
    b. Looking at the layout.
- Don't choose anything too difficult from an unseen passage.
- Read a lot. It helps you pick up new language.
- Experiment with new strategies for practising your reading in order to find the strategies you prefer.

Predicting

When you are reading something you can usually predict what comes next. Cover the text with a sheet of paper. Uncover one line at a time and try to guess the next line before you uncover it.

Prediction can be helped by

- how much language you already know
- how much you know about the topic
- layout
- grammar
- punctuation
- connectors (and, but, although, however, etc.)
- sequencers (firstly, secondly, next, then, finally etc.)

Completing sentences

Try to finish these sentences

a. There was some good fruit at the market on Thursday, because ......

b. Weather Forecast : Hot and sunny in many places but ....

Guessing unknown words

Guess the meanings of words you don't know. Good readers depend more on themselves than an dictionaries.

Prefix, suffix, compound, how does the word look ?

The context

Eg. The topic of the text

The topic of the sentence

The position of the word in the sentence

Activity - Guessing out of context

What do you think the following words mean

a c

b d

Activity - Guessing in context

Now look at the above words again in context. What do you think they mean now.

Organise your reading practice

1. Organise a regular time for reading English
2. Collect things to read which interest you personally. Exchange with your friends.
3. Take out a subscription to an English language magazine or newspaper.

Area of Learning difficulty – Writing

General objectives of writing :

1. Students are able to write short, simple sentences on a given topic.
2. Help pupils to write with proper punctuation, spelling and sentence construction.
3. Students will be able to write in a logical sequence. Each sentence should be linked to the next.
4. Ability to write sentences with language accuracy and clarity.
5. Ability to write English for communication in real life situations.
6. Ability to select vocabulary corresponding to the kind of writing task.

Teaching Learning Problems :

1. Teachers sometimes fail in choosing a topic or providing a context for writing that is familiar to students.
2. Sufficient motivation is not given by the teacher to the students to generate ideas.
3. Sometime students fail to sequence the ideas in a particular order.
4. Teachers fail to provide the necessary feedback to the students.
5. Students have no proper knowledge in syntax i e. lack of knowledge in another teaching learning problem
6. Sometimes influence of the mother tongue in a writing task handicaps the children.

Strategy

The teacher can employ the following strategies in the classroom to overcome the hurdles faced by the students in writing -

1. Picture composition. (Using a powerful visual aid)
2. Brainstorming (This can be done orally by asking the students at random on the topic selected for the writing task. Ideas relevant to the topic can be included in the writing activity
3. Narrating orally and later on asking the students to write their own experiences.
4. Pre-writing activities should be taken up before the writing task. (discussion and interaction).
5. Students can be asked to write on any familiar topic or on a topic linked with the text. The students will know certain words from the text and write themselves.

Activity 1

The teacher can ask the students to write a paragraph using visuals (in sequence). The teacher shows the picture one by one and then puts a few questions on them i.e in the story of the 'Fox and the Crane" the teacher shows picture 1 to the students. He puts a few questions on the picture shown and initiates discussion through questions.

Now the teacher shows picture 2 and in chronological order and follows the same process

Lastly, when the story is completed the teacher hangs all the pictures and asks the students to write the story within 50 words or within a specific word limit. Next, the teacher initiates interaction among the students by asking them the lesson that they have learnt from the story and also to supply a suitable title.

Activity 2

Generating ideas through brainstorming.

The teacher will decide a familiar topic on the mental level of the students or linked with a particular lesson. First of all the teacher will divide the class in groups a, b, c, etc. and declare that he/ she would give credit to the group that would come up with new ideas. Every group leader, after discussion and interaction, will present the ideas.

The teacher may also ask the students to come and write the points on the black – board. The teacher himself/ herself can also supply questions, e.g. in describing a rainy day, he can mention like drizzle, water logging etc.

Through these activities, the students will be able to listen to each other and express their ideas orally In case of a particular topic, certain values may also be inculcated in children like hard work, team spirit, self help, etc

Area of Learning Difficulty – Vocabulary

In order to enable pupils use English language in spoken and written forms, they must be rich in their choice of words. Normally, vocabulary enrichment takes place through the prose lessons. In each prose lesson, there is enough scope for vocabulary extension A teacher may devote some time especially for vocabulary taking these from the text and immediate environment or pupil's world of experience. Vocabulary may be active or passive. The words that pupils use in day – to – day speech and writing are 'active'. The teacher has to take special care and use strategies to enrich the pupils' stock of vocabulary.

Objectives :

- Pupils learn new words by discovering these from their environment and the world of experience.
- Pupil makes new words by derivation, adding suffixes etc.
- Pupil uses words in sentences and speak as well as write.
- Pupil makes single word for a group of words / expression.

Teaching – Learning Problems

- Teachers don't have ideas how words can be analysed in their root form and the further word formation process.
- They do not exploit immediate environment and pupils' world of experience for vocabulary enrichment.
- The learners are not exposed to the various processes of word building.

- The teachers fail to get cues from the text and relate the same to the pupils' world of experience.

Strategy :

- Locating words in the text having scope for experience.
- Using techniques for oral and written composition.

Activity 1

Lesson – Banishing Mosquitoes and Flies

Class - VII *Line* – I'm also unhappy

The teacher draws two trees with leaves and flowers – (happy)

Next he cleans/ removes leaves and flowers of one tree. He uses the word 'unhappy'.

H
A
P
P
Y

ness – happiness
ly – happily
un +

synonymous
glad
joy
pleased

\+ ness = unhappiness
\+ ly = unhappily

h
a
p
p
y

unhappy

Synonym	Root word	Derivative	Affixes
Glad Joy Pleased	Happy	Antonym unhappy (suffix)	Happy (prefix) unhappy + ly happy + ness (prefix) unhappy + ness (suffix and prefix)

Activity II

Extension : Pupils are asked to find out words which can take the suffix 'un'. In the text the words 'clean' 'cover' : unclean, uncover.

Activity III

Object and Materials

Textual words in the above lesson	*Their function*	*where*
Broom	sweep	room, classroom Floor, street
Spade	dig	garden, earth
Bucket	carry, preserve	water, clothes
Bleaching powder	clean	bathroom, room garden

All these activities can be used to activate and involve pupils. These can be used for oral and written composition.

Enrichment of vocabulary

Strategy

Vocabulary review and enrichment through association.

Suggest an evocative word e.g. storm

Different students say words associated with it that occur to him/ her.

Eg. dark, cloud, night

Other words : Sea Fire Holiday Morning Family Home Angry Calm

Use those items of vocabulary students have recently learnt.

Strategy : Word flower

Take a word the class has recently learnt and ask the students to suggest all the words they associate with it. Write each suggestion on the board with a line joining it to the original word.

Erase everything on the board except for the central word Challenge the class to recall and write down as many of the brainstormed words they can.

Strategy : Write the names of all your friends.

Arrange them alphabetically.

Activity · Write on the board words students have recently learnt or they have difficulty in spelling them Put the letters in a jumbled form Give words associated with one given theme.

gdo, sumoe, owc, knymoe, tca, tnhpeeal, ıbdr

Activity : Opposites

Teaching and learning of Vocabulary

Activities such as mini lectures, ranking activities, split information tasks, role-plays and problem solving discussion are all a very useful means of vocabulary learning and enrichment Vocabulary learning goal can be effectively designed into many speaking activities. It is also possible to plan what vocabulary is likely to be learned in particular activities.

- The discussion of a particular word may involve the student in explaining the vocabulary to each other.
- 3 important issues to consider in learning from the written input
  i. Where do new vocabulary items and the information about them come from ?
  ii. How are they learnt ?
  iii. How can the activity and worksheet be designed to maximize the chances of the wanted vocabulary being learned ?

Area of learning difficulty - Pronunciation

Spelling and pronunciation in English language being very irregular poses a great threat to the L2 learners. This happens because in English language the sounds are more in number than the letters of alphabet. Even there are some sounds in English language for which these are no letters. As such this causes imbalance between spelling and pronunciation. The teacher of English language has to take special care to know the sounds of the English language, their mode of articulation and produce correct pronunciation to help pupils catch the sounds and pronunciation. Also, some letters are silent or not lettered in the word.

Objectives :

- Help teachers to know the letter / letters that have different sounds.
- Pupils differentiate the various sounds produced by some letters.
- Help the pupils produce the correct sounds imitating the mode of articulation from the teacher.
- Pupil identifies these sounds in words.
- Pupil practices these sounds in their speech.

Teaching Learning Problems :

- Sometimes teachers don't have knowledge of sounds in English language and so mispronounce the words.
- They fail to understand how one letter/ letters produce different sounds.
- The learners confuse the sounds and mispronounce the words.
- They carry the sounds of letters from one word to another.

Strategy :

- Identifying the letter/ letters that produce different sounds.
- Teacher can list the words with reference to such letters and sounds.
- Presenting the words for practice and distinguishing the sounds.

Activity

Letters	words with phonetics symbols of those letters
a	above/ ∂ wander/ last/ a : late / ei
i	alive / ai / give / i /
u	put / u / cut / Λ / cupid / ju /
ie	fiend / i : / friend / e / science / / ai/
ei	rein / ei / receive / i:

Whenever such words occur in the text, the teacher takes care for distinguishing the sound and give students practice.

ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ବୋର୍ଡର
ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରେ ଓଡ଼ିଆ ଶିକ୍ଷକ ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କ ପାଇଁ
ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି କର୍ମଶାଳାର ବିବରଣୀ

କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ସଂଯୋଜକ

ପ୍ରଫେସର ବିଜୟ କୁମାର ସୁନ୍‌ୱାନୀ

ଡ଼ଃ ବସନ୍ତ କୁମାର ପଣ୍ଡା

ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ସୂଚୀ

ଉପକ୍ରମ

ଭାରତ ଏକ ବହୁଭାଷୀ ଦେଶ । ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବହୁ ସମସ୍ୟା ପରି ଏଠାରେ ଭାଷା ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଭୂତ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବାକୁ ପଡ଼େ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ବ୍ୟକ୍ତିର ମାତୃଭାଷା, ପ୍ରଥମଭାଷା, ଦ୍ୱିତୀୟଭାଷାର ପରିଚୟ ନିର୍ଣ୍ଣୟ କରିବା ଅତି ଦୁରୂହ ଓ ଅପେକ୍ଷିକ ମନେହୁଏ । ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଭାଷା କୌଶଳର ଯେଉଁ ୪ଟି ଦିଗ (ଶୁଣିବା, କହିବା, ପଢ଼ିବା ଓ ଲେଖିବା) ପ୍ରତି ସର୍ବଦା ସଚେତନ ରହିବାକୁ ହୁଏ, ତାହା ଉଭୟ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ଓ ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ବିଭିନ୍ନ ସମସ୍ୟା ସୃଷ୍ଟିକରିଥାଏ । ଅନେକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ମାତୃଭାଷା ସାହିତ୍ୟ ସବୁଠାରୁ ଆଗ୍ରହାନ୍ୱିତ ଓ ଆକର୍ଷଣୀୟ ବିଷୟ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଏଥିପ୍ରତି ଚିରାଚରିତ ଉଦାସୀନତା ଓ ଅବହେଳା ଭାଷା ବ୍ୟବହାର ଦିଗରେ ସେମାନଙ୍କୁ ଦୁର୍ବଳ କରିଦେଇଥାଏ । ସାର୍ଥକ ଭାବରେ ଭାଷାବ୍ୟବହାର କରିବା ଦିଗରେ ସମର୍ଥ ନହେଲେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନେ କେବଳ ପଢ଼ା ଓ ପରୀକ୍ଷାରେ ଅସଫଳ ହୁଅନ୍ତି ତାହା ନୁହେଁ, ଭବିଷ୍ୟତରେ ସବୁକ୍ଷେତ୍ରରେ ନିଜର ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ବିକାଶ ଦିଗରେ ବିଭିନ୍ନ ବାଧାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୁଅନ୍ତି । ତେଣୁ ପ୍ରାଥମିକ ଓ ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରୁ ହିଁ ଭାଷାଶିକ୍ଷାକୁ ପ୍ରଧାନଭାବରେ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦେବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଉଭୟ ଭାବଆଦାନପ୍ରଦାନ ଓ ଭାଷାବ୍ୟବହାରର ଅଭିନବ କୌଶଳ ଶିକ୍ଷାଦେଇ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀମାନଙ୍କୁ ଏଦିଗରେ ସମୃଦ୍ଧ କରାଇବାକୁ ହେବ ।

ଏହି ଆଭିମୁଖ୍ୟକୁ ଦୃଷ୍ଟିରେ ରଖି ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ସରକାରଙ୍କ ପ୍ରାଥମିକ ଶିକ୍ଷା ବୋର୍ଡଦ୍ୱାରା ଅନୁରୋଧ କରାଯାଇଥିଲା ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରେ ଭାଷାଶିକ୍ଷକ ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷକ (ଓଡ଼ିଆ, ବଙ୍ଗଳା, ହିନ୍ଦୀ ଓ ଇଂରାଜୀ)ମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ପାଇଁ ଏକ କର୍ମଶାଳା ଆୟୋଜନ କରିବାକୁ । ବାରତବର୍ଷରେ ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ହିଁ ଏକମାତ୍ର ପ୍ରଦେଶ ଯେଉଁଠି ପ୍ରାଥମିକ ଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ବୋର୍ଡ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରାଯାଇଛି । ପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରେ ଭାଷା ବ୍ୟବହାରର ଚାରୋଟି କୌଶଳ ଜାଣିବାପରେ ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନେ ସଠିକ ଓ ସାର୍ଥକଭାବେ ସେଇ କୌଶଳର ପ୍ରୟୋଗରେ ନୈପୁଣ୍ୟଲାଭ

କରିପାରିଲେ ମାଧ୍ୟମିକସ୍ତରରେ ଭାଷାବ୍ୟବହାରର ବୌଦ୍ଧିକ ଦିଗରେ (ଯଥା ୧. ଜ୍ଞାନାତ୍ମକ ୨. ଆବେଗାତ୍ମକ ଓ ୩. କୌଶଳାତ୍ମକ) ସେମାନେ ପାରଦର୍ଶିତା ଲାଭ କରିପାରିବେ ।

ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗର ଆବଶ୍ୟକତା ଅନୁଯାୟୀ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ଦୁଇଟି ପ୍ରସ୍ତରେ ଭାଗକରି ନିର୍ବାହ କରିବାପାଇଁ ଯୋଜନା ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଇଥିଲା ।

ପ୍ରଥମଟିରେ ଏକ ଦ୍ୱିଦିବସୀୟ ବୈଠକରେ ଭାଷାବିଶେଷଜ୍ଞ ଓ ଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କ ସାହାଯ୍ୟରେ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟ ବସ୍ତୁ ମଧ୍ୟରୁ ୧) କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର ଓ ୨) ପ୍ରଧାନ କଠିନ ବିଷୟ ଚୟନ କରାଯାଇଥିଲା ଓ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ପାଇଁ ଏକ ଆଦର୍ଶ ରୂପରେଖ ମଧ୍ୟ ସ୍ଥିର ହୋଇଥିଲା ।

ଦ୍ୱିତୀୟ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା ୧୯ରୁ ୨୩ ଜାନିୟାରୀ ୨୦୦୪ ପଞ୍ଚଦିବସୀୟ କର୍ମଶାଳା ମାଧ୍ୟମରେ । ଏଥିରେ ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗରେ ଅବସ୍ଥିତ ଓଡ଼ିଶା ବିଦ୍ୟାଳୟ ଗୁଡିକରୁ ୭ଜଣ ଶିକ୍ଷକ ସରକାରଙ୍କଦ୍ୱାରା ମନୋନୀତ ହୋଇ ଯୋଗଦେଇଥିଲେ । ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ ଅନ୍ତର୍ଗତ ଡି.ଏମ୍. ସ୍କୁଲର ଓଡ଼ିଆ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ ଶ୍ରୀମତୀ ବାସନ୍ତୀ ଖୁଣ୍ଟିଆ ଓ ବିଷୟ ବିଶେଷଜ୍ଞ ଭାବେ ବିଶିଷ୍ଟ ଲେଖକ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ଡ଼ଃ. ହେମନ୍ତ ଦାସ ଓ ଓଡିଶା ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା ବର୍ଡର ଓଡ଼ିଆ ବିଶେଷଜ୍ଞ ଶ୍ରୀମତୀ ମିନାକ୍ଷୀ ଦାସ କର୍ମଶାଳାରେ ଉପସ୍ଥିତ ରହି ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ରକୁ ନେଇ ୧୬ଟି ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିଥିଲେ । କର୍ମଶାଳାରେ ଶିକ୍ଷଣ ନର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ ଅବସରରେ ଭାଷାଶିକ୍ଷାର ବହୁବିଧ କୌଶଳ ଓ ପଦ୍ଧତି ମଧ୍ୟ ସୁବିସ୍ତୃତ ଆଲୋଚିତ ହୋଇଥିଲା ।

ଭାଷାଶିକ୍ଷଣର ପ୍ରଧାନ ଆଭିମୁଖ୍ୟ ୧) ଭାଷା ବ୍ୟବହାର ପାଇଁ ଆଗ୍ରହ ଓ ସାମର୍ଥ୍ୟ ୨) ଶୁଦ୍ଧ ଉଚ୍ଚାରଣ, ବିରାମ ଚିହ୍ନପ୍ରତିଧ୍ୟାନ ଓ ଛନ୍ଦ ବୃତ୍ତଧାରଣା ସୃଷ୍ଟିକରିବା ୩) ଶବ୍ଦ ଓ ବାକ୍ୟାଂଶ ପ୍ରଭୃତିର ଅର୍ଥ ଠିକ୍ ଭାବେ ବୁଝିବା ୪) କଥା ଓ ଲେଖାରେ ସରଳ, ପରିଛନ୍ନ ଅଥଚ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କରିବା

୫) ସାହିତ୍ୟର ବିଭିନ୍ନ ବିଭାଗ ବିଷୟରେ ଜ୍ଞାନ ଲାଭ କରିବା ୬) ମୌଳିକ ସୃଜନାତ୍ମକତା ଓ ନାନ୍ଦନିକ ଅବବୋଧର ଅଭିବୃଦ୍ଧି ୭) ସାହିତ୍ୟକୃତି ପ୍ରତି ସଚେତନତା ବୃଦ୍ଧି ଆଦିକୁ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦେଇ ୧୬ଟି ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଇଛି । ପଞ୍ଚମ, ଷଷ୍ଠ ଓ ସପ୍ତମ ଶ୍ରେଣୀର ପାଠ୍ୟ ବିଷୟକୁ ବିଶ୍ଳେଷଣ କରି କଠିନ ଶିକ୍ଷଣକ୍ଷେତ୍ର (ଉଭୟ ଭାବଗତ ଓ ଭାଷାଗତ (ବ୍ୟାକରଣ) ନିର୍ଣ୍ଣୟ କରି ଉପରୋକ୍ତ ଆଭିମୁଖ୍ୟର ଆଧାରରେ ଶିକ୍ଷଣନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ ହୋଇଛି । ଶ୍ରେଣୀକ୍ରମରେ ସଂକଳିତ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀଗୁଡ଼ିକ ଶିକ୍ଷକ ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କୁ ଶ୍ରେଣୀଶିକ୍ଷାପାଇଁ ସମୁଚିତ ଭାବରେ ସହାୟକ ହୋଇପାରିଲେ ଆମର ଶ୍ରମ ସାର୍ଥକ ହେବ ।

ଡ଼ଃ ବସନ୍ତ କୁମାର ପଣ୍ଡା

ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରେ ଶିକ୍ଷକ ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି କର୍ମଶାଳା ପାଇଁ ରୂପରେଖ ନିର୍ଣ୍ଣୟ ବିଶେଷଜ୍ଞ ବୈଠକର ବିବରଣୀ :

ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ସରକାରଙ୍କଦ୍ୱାରା ଅନୁରୁଦ୍ଧ ଉପୋରକ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମର ସଂଯୋଜକ ପ୍ରଫେସର ବିଜୟ କୁମାର ସୁନ୍‌ୱାନୀଙ୍କ ଆହ୍ୱାନକ୍ରମେ ଅକ୍ଟୋବର ୧୫ ଓ ୧୬ ୨୦୦୩ ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନରେ ଏହି ପ୍ରସ୍ତୁତି ବୈଠକ ଆୟୋଜିତ ହୋଇ ଚାରୋଟିଭାଷାର ଗୋଷ୍ଠି ଗଠିତ ହୋଇଥିଲା । ଓଡ଼ିଆଭାଷାର ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି ନିମନ୍ତେ କଠିନ କ୍ଷେତ୍ର ଓ ମଞ୍ଜବିଷୟବସ୍ତୁ ଚୟନ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନୋକ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କୁ ନେଇ ଗୋଷ୍ଠୀ ଗଠିତ ହୋଇ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପରିଚାଳିତ ହୋଇଥିଲା ।

୧) ଡଃ (ଶ୍ରୀମତୀ) ବିଜୟଲକ୍ଷ୍ମୀ ମହାନ୍ତି
୨) ଡ଼ଃ ନାରାୟଣ ସାହୁ
୩) ଶ୍ରୀମତୀ ବାସନ୍ତି ଖୁଣ୍ଟିଆ
୪) ଡ଼ଃ ବସନ୍ତ କୁମାର ପଣ୍ଡା, ସଂଯୋଜକ

ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରତିବେଶୀ ରାଜ୍ୟ । ଓଡ଼ିଶା ଓ ବଙ୍ଗପ୍ରଦେଶର ସାମାଜିକ ଓ ସାଂସ୍କୃତିକ ସଂପର୍କ ନିବିଡ଼ ଓ ସୁଦୂରପ୍ରସାରୀ । ଉଭୟ ପ୍ରଦେଶରେ ଉଭୟଭାଷାର ପ୍ରଚଳନ ବହୁଳଭାବରେ ଦେଖିବାକୁ ମିଳେ । ବିଭିନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟାନୁରୋଧରେ ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗରେ ବିଶେଷକରି କଲିକତା ମହାନଗରୀରେ ଓଡ଼ିଆ ଅଧିବାସୀଙ୍କ ସଂଖ୍ୟା ବହୁତ, ଏପରିକି ଏକଦା କଲିକତାକୁ ବୃହତ୍ତମ ଓଡିଆ ନଗରୀ ବୋଲି ଅଭିହିତ କରାଯାଉଥିଲା । ଏହି ଦୃଷ୍ଟିରୁ କଲିକତା, ଖଡଗ୍‌ପୁର୍ ଓ ମେଦିନୀପୁର ପ୍ରଭୃତି ସ୍ଥାନରେ ଓଡିଆ ବିଦ୍ୟାଳୟ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରାଯାଇଛି । ଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କଠାରୁ ଓ ପ୍ରଶାସନ ସ୍ତରରୁ ସୂଚନା ସଂଗ୍ରହକରି ଜାଣିବାକୁ ମିଳିଛି ଯେ ସେହି ବିଦ୍ୟାଳୟଗୁଡ଼ିକରେ ଓଡିଶା ସରକାରଙ୍କଦ୍ୱାରା ପ୍ରସ୍ତୁତ ଓ ବୋର୍ଡ ଅନୁମୋଦିତ ବହି ହିଁ ପ୍ରାୟତଃ ସବୁ ଶ୍ରେଣୀଗୁଡ଼ିକରେ ପାଠ୍ୟ ଭାବେ ପ୍ରଚଳିତ । ବିଦ୍ୟାଳୟର ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମଧ୍ୟ ଅଧିକାଂଶ ଓଡିଆ କିନ୍ତୁ

ସେମାନଙ୍କର ପରିବେଶ ଭିନ୍ନ । ସାମାଜିକ ଓ ସାଂସ୍କୃତିକ ପରିପ୍ରେକ୍ଷୀ ଭିନ୍ନ । ବହୁଦିନରୁ ବଙ୍ଗବାସୀ ହେବା ଯୋଗୁଁ ସେମାନଙ୍କର ପାରିବାରିକ ଭାଷା ଓଡ଼ିଆ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ପରିବେଶର ଭାଷା ବଙ୍ଗଳା ହେବା ହେତୁ ଉଚ୍ଚାରଣ ଓ କଥନଭଙ୍ଗୀରେ ନିଷ୍ଚୟ ବଙ୍ଗଳାପ୍ରଭାବ ରହିବା ସ୍ୱାଭାବିକ । ଶବ୍ଦ ଗଠନ, ବନାନ ଓ ଲିଖନ ପ୍ରକ୍ରିୟାରେ ମଧ୍ୟ ବଙ୍ଗଳାର ପ୍ରଭାବ ଅସ୍ୱାଭାବିକ ନିହେଁ । ତେଣୁ ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ ଅର୍ଥାତ୍ ୫ମ, ୬ଷ୍ଠ ଓ ୭ମ ଶ୍ରେଣୀର ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟ ଓ ବ୍ୟାକରଣ ଶିକ୍ଷାଦାନ ବେଳେ ଯେଉଁ କେତେକ ପ୍ରଧାନ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବା ବୋଧ ହେଉଛି, ସେଗୁଡ଼ିକୁ ଦୂର କରିବା ପାଇଁ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯିବା ଉଚିତ ।

୧. *ପଠନ* — ଉଚ୍ଚପଠନ କରାଇ ଶୁଦ୍ଧ ଉଚ୍ଚାରଣ ପ୍ରତି ଧ୍ୟାନ ଓ ଆବୃତ୍ତି ମାଧ୍ୟମରେ କବିତାର ଛନ୍ଦ ଓ ରାଗପ୍ରତି ସଚେତନତା ଅଭିବୃଦ୍ଧି କରାଯିବ।

୨. *ଲିଖନ* — ଦୃଷ୍ଟ ଲିଖନ, ଶ୍ରୁତଲିଖନ ପ୍ରଭୃତି ମାଧ୍ୟମରେ ଲିଖନ ଅଭ୍ୟାସ କରାଇ ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧି ଦୂର କରାଯିବ ବର୍ଣ୍ଣାନାତ୍ମକ ଲେଖା ପାଇଁ ଉତ୍ସାହିତ କରି ଅନ୍ତର୍ନିହିତ ସୃଷ୍ଟିସାମର୍ଥ୍ୟର ଉଦ୍‌ବୋଧନ କରାଯିବ ।

୩. *କଥନ ଓ ଶ୍ରବଣ* — ମୌଖିକ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର ପ୍ରତି ଗୁରୁତ୍ୱ ଆରୋପ କରାଯିବ ଓ ବକ୍ତୃତା ଅଭ୍ୟାସ କରାଯିବ ।

୪. ସାହିତ୍ୟ ବହିର ବିଷୟକୁ ନେଇ ଓଡ଼ିଆ ଗଦ୍ୟ ଓ ପଦ୍ୟର ଐତିହାସିକ କ୍ରମ ବିଷୟରେ ବୁଝାଯିବ ।

୫. ବିଷୟ ବସ୍ତୁର ସମୁଚିତ ଧାରଣା ପ୍ରଦାନ କରାଯିବ ।

୬. ବ୍ୟାକରଣ — ଶବ୍ଦଭଣ୍ଡାର
ମାତ୍ରା, ଫଳା ଓ ଯୁକ୍ତବ୍ୟଞ୍ଜନ
ଶବ୍ଦଗଠନ – ସମାର୍ଥବୋଧକ ଓ ବିପରୀତାର୍ଥ ବୋଧକ ଶବ୍ଦ
ବାକ୍ୟ ଓ ବାକ୍ୟର ପ୍ରକାର ଭେଦ, ବାକ୍ୟର ରୂପାନ୍ତର
ସନ୍ଧି, ବାଚ୍ୟ
କାରକ ବିଭକ୍ତି
କୃଦନ୍ତ

୭. ପ୍ରବନ୍ଧ ଲିଖନ — ଲିଖନ ସମୟରେ ସଠିକଭାବେ ଚିନ୍ତା ଓ କଳ୍ପନାର ପ୍ରକାଶ ଓ ବର୍ଣ୍ଣନା ଶକ୍ତିର ଅଭିବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ପ୍ରୟାସ ।

ଏହିସବୁ ମଞ୍ଜ ବିଷୟ ଓ ଶିକ୍ଷଣ ସମସ୍ୟା ତଥା କଠିନତାଉପରେ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବାପାଇଁ ଏକ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ରୂପରେଖ ସ୍ଥିର କରାଯିବା ଉଚିତ୍ । ବୈଠକରେ ବିଚାର ବିମର୍ଶପରେ ନିମ୍ନପ୍ରଦତ୍ତ ରୂପରେଖ ସ୍ଥିରୀକୃତ ହେଲା - ଏହାଦୁଇ ପ୍ରକାର ହୋଇପାରେ - ୧) ମଡ୍ୟୁଲ୍ ଆକାରରେ ୨) ଟେବୁଲ ଆକାରରେ ।

ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀର ରୂପରେଖ

ମଡ୍ୟୁଲ୍ :

୧. ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟ ବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)

୨. ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ

୩. ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା

୪. ସମାଧାନର ସୂତ୍ର - କାର୍ଯ୍ୟ ପଦ୍ଧତି, କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ, ଅଭ୍ୟାସ

୫. ମୂଲ୍ୟାଙ୍କନ

ଟେବୁଲ :

କଠିନ ଶିକ୍ଷଣକ୍ଷେତ୍ର	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	ସମସ୍ୟା	ସମାଧାନ	ମୂଲ୍ୟାଙ୍କନ
				୧. କାର୍ଯ୍ୟପଦ୍ଧତି ୨. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ୩. ଅଭ୍ୟାସ

ପରବର୍ତ୍ତୀ କର୍ମଶାଳାରେ ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗର ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀମାନଙ୍କ ଉପସ୍ଥିତିରେ କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର ଓ ଶିକ୍ଷଣ ସମସ୍ୟା ଗୁଡ଼ିକକୁ ପରୀକ୍ଷା କରିନେଇ ସେଥିରେ ସଂଯୋଜନକରିବାପରେ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ବିଷୟ ଉପରେ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଇ ପାରିଲେ ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରେ ବିଦ୍ୟାଳୟଗୁଡ଼ିକରେ ଓଡ଼ିଆଭାଷା ଶିକ୍ଷାଦିଗରେ ପ୍ରଭୂତ ଉପକାର ହୋଇପାରିବ ବୋଲି ସମସ୍ତେ ଏକମତ ହୋଇଥିଲେ ।

ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ, ଭୁବନେଶ୍ୱର
ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତର ପାଇଁ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି କର୍ମଶାଳା

ତା - ୧୯ - ୨୩ ଜାନୁଆରୀ, ୨୦୦୪

ପ୍ରସ୍ତାବନା ପତ୍ର

ଭାଷା ମାନବର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ସମ୍ପଦ । ଏହା କେବଳ ଭାବ ପ୍ରକାଶର ମାଧ୍ୟମ ନୁହେଁ । ଭାବ ଉଦ୍ରେକ, ଚିନ୍ତାର ଉନ୍ମେଷ ଏପରିକି ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ଭୂୟୋବିକାଶର ଅନ୍ୟତମ ସୂତ୍ର । ତେଣୁ ପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରୁ ଭାଷା ବ୍ୟବହାରର ମୌଳିକ ଚାରୋଟି ଦିଗ (ଶ୍ରବଣ, କଥନ, ପଠନ ଓ ଲିଖନ) ପ୍ରତି ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ସଚେତନ କରାଇ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ଜ୍ଞାନାତ୍ମକ (cognitive), ଭାବାତ୍ମକ (affective), ଓ ପ୍ରୟୋଗାତ୍ମକ (conative) କ୍ଷେତ୍ରରେ ଯେପରି ସାର୍ଥକଭାବରେ ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କରିପାରିବେ, ସେହି ନୈପୁଣ୍ୟଅର୍ଜନ ସେମାନଙ୍କୁ ଶିକ୍ଷା ଦେବା ପ୍ରୟୋଜନ ।

ପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରୁ ବିଦ୍ୟାଳୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମରେ ଭାଷାର ଗୁରୁତ୍ୱ ଅବିସମ୍ବାଦିତ । ଭାଷା ଶିକ୍ଷାର ଅଧୁନାତନ ଅଭିନବ ପଦ୍ଧତିକୁ ପ୍ରୟୋଗକରି ପାଠଦାନର ସ୍ତରକୁ ଅଭିବୃଦ୍ଧି ସାଧିତ କରାଗଲେ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ସମୟରେ ଶିକ୍ଷକ ଓ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ଉଭୟେ ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଉଥିବା ସମସ୍ୟା କ୍ରମଶ ଦୂରୀଭୂତ ହେବ । ଏଥିପାଇଁ ଭାଷା ଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କୁ ଅଧିକ ସମର୍ଥ ଓ ଅଧ୍ୟବସାୟୀ ହେବାକୁ ପଡ଼ିବ । ପାଠ୍ୟଖସଡା ଅନୁସୃତି ନୂତନ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରି ତାହାରି ସାହାଯ୍ୟରେ ଶ୍ରେଣୀରେ ଭାଷାଶିକ୍ଷାକୁ ସମଧିକ ଆକର୍ଷଣୀୟ କରିବାକୁ ହେବ । ଗୋଟିଏ ଭାଷାକୁ ତାହାରି ସୀମା ଓ ପରିସର ଭିତରେ ସୀମିତ ନରଖି ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ପ୍ରଚଳିତ ଅନ୍ୟଭାଷାର ଗୁରୁତ୍ୱ ପରିପ୍ରେକ୍ଷୀରେ ନିଜର ଅଧିକ ବିଷୟକୁ କଳନା କରି ଗୃହ ଓ ପରିବେଶର ଭାଷା, ସମାଜର ଭାଷା ସହିତ ତାକୁ ସମାନୁପାତିକ ଭାବରେ ଗୁରୁତ୍ୱଦେଇ ତାର ଭୂମିକା ନିର୍ଦ୍ଧାରଣ କରିବାକୁ

ପଡିବ । କାରଣ ଭାଷା ଗୋଟିଏ ଶିଶୁର ସାମାଜିକ, ନୈତିକ ଓ ସାଂସ୍କୃତିକ ବିକାଶର ଏକ ଅବିଚ୍ଛେଦ୍ୟ ଅଙ୍ଗ। ତେଣୁ ପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରୁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସଚେତନ ହୋଇ ଭାଷା ଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କୁ ପାଠଦାନ ଦିଗରେ ନିପୁଣ ଭାବେ ନିଜର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ସମ୍ପାଦାନ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ।

ଏହି ପରିପ୍ରେକ୍ଷୀରେ ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ସରକାରଙ୍କଦ୍ୱାରା ଅନୁରୁଦ୍ଧ ହୋଇ ଉଚ୍ଚପ୍ରାଥମିକ (ପଞ୍ଚମ, ଷଷ୍ଠ ଓ ସପ୍ତମ ଶ୍ରେଣୀ) ସ୍ତରରେ ଶିକ୍ଷକ ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ ନିମନ୍ତେ ଏହି କର୍ମଶାଳା ଆୟୋଜିତ ହୋଇଛି । ଏହାର ପ୍ରଧାନ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ହେଲା -

୧. ଓଡିଆ ସାହିତ୍ୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମର ଆଧାରରେ ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ।

୨. ଏହାକୁ ଅଧିକ କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଓ ଅଭ୍ୟାସ ସମନ୍ୱିତ କରିବା ।

୩. ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷାକୁ ଆକର୍ଷଣୀୟ ଓ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କରିବା ଦିଗରେ ସହାୟକ ହେବା ଭଳି ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ।

ଏହି ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ଗୁଡ଼ିକୁ ଦୃଷ୍ଟିରେ ରଖି ଏହି ପାଞ୍ଚଦିନର କର୍ମଶାଳାରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା, ସାହିତ୍ୟ ଓ ବ୍ୟାକରଣ ଶିକ୍ଷାର ସର୍ବୋତ୍ତମ କୌଶଳକୁ ଉପଯୋଗ କରି ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ଗୁଡିକ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯିବ। ଏଥିପାଇଁ ନିମ୍ନ ସୂଚିତ ପଦ୍ଧତି ଅବଲମ୍ବନ କରାଯିବ ।

୧. ପଞ୍ଚମ, ଷଷ୍ଠ ଓ ସପ୍ତମ ଶ୍ରେଣୀର ସାହିତ୍ୟ ବହିର ସମୀକ୍ଷାତ୍ମକ ବିଶ୍ଳେଷଣ ।

୨. ଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କ ପାଇଁ କଷ୍ଟ ହେଉଥିବା ମନ୍ଦ ବିଷୟ ଗୁଡ଼ିକର ତାଲିକା କରିବା ।

୩. ଶିକ୍ଷଣ ସମସ୍ୟା ଓ କଠିନ ବିନ୍ଦୁଗୁଡିକୁ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ଗୁଡ଼ିକରୁ ଚିହ୍ନିତ କରିବା ।

୪. ଉପୋରୋକ୍ତ ବିଷୟର ଆଧାରରେ ପୂର୍ବରୁ ବିଷୟ ବିଶେଷଜ୍ଞ ମାନଙ୍କଦ୍ୱାରା ସ୍ଥିରକୃତ ରୂପରେଖ ଅନୁଯାୟୀ ଗୋଷ୍ଠୀ କର୍ମମାଧ୍ୟରେ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ।

ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗରେ ଅବସ୍ଥିତ ଓଡିଆ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଗୁଡ଼ିକରେ ଓଡ଼ିଶାରେ ପ୍ରଚଳିତ ସମାନ ଶ୍ରେଣୀର ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ପଢାଯାଉଥିଲେ ମଧ୍ୟ ସେଠାରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କର ଭାଷାଗତ କେତେକ ବିଶେଷ ସମସ୍ୟା ରହିବା ସ୍ୱାଭାବିକ । କାରଣ ସେମାନଙ୍କର ପାରିବାରିକ ଭାଷା ଓଡ଼ିଆ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ପରିବେଶର ଭାଷା ବଙ୍ଗଳା । ତେଣୁ ଉଚ୍ଚାରଣ, କଥନଭଙ୍ଗୀ, ପଠନ, ଶବ୍ଦଗଠନ, ବନାନ ଓ ଲିଖନ ପ୍ରକ୍ରିୟାରେ ବଙ୍ଗଳାର ପ୍ରଭାବ ଅସ୍ୱଭାବିକ ନୁହେଁ । ଏହିକଥାକୁ ଦୃଷ୍ଟିରେ ରଖି ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତ ହୋଇପାରିଲେ ଏହି କର୍ମଶାଳାର ଆୟୋଜନ ସାର୍ଥକ ହେବ ।

ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀର ରୂପରେଖ

ଆଦର୍ଶ ନମୁନା

୧ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର) — ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧି (ବନାନ ଭୁଲ୍)

୨ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ

୧ ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧିର କାରଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ।

୨ ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧିର ସ୍ୱରୂପ ଓ ପ୍ରକାର ବିଷୟରେ ବୁଝାଇବା ।

୩ ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧି ଦୂରକରିବା ପାଇଁ ବିଭିନ୍ନ ସୂତ୍ର ଓ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ବ୍ୟାଖ୍ୟା କରିବା ।

୩ ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା

୧ ି, ୀ, ୁ, ୂ, ର, ରୁ, ଜ, ଯ, ଶ, ଷ, ସ, ଳୁ, ଳୃ ଆଦି ଲେଖିବାରେ ଭୁଲ୍ ।

୨ ଉଚ୍ଚାରଣ ଅଶୁଦ୍ଧି ଯୋଗୁଁ ବନାନ ଅଶୁଦ୍ଧି ।

୩ ବ୍ୟାକରଣ ନିୟମର ଜ୍ଞାନ ଅଭାବରୁ ବନାନ ଭୁଲ୍ ।

୪ ସମାଧାନର ସୂତ୍ର

୧ *କାର୍ଯ୍ୟପଦ୍ଧତି* : ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧିର ନିରାକରଣ ପାଇଁ ତାହାର କାରଣ ଓ ପ୍ରକାର ବିଷୟରେ ଶିକ୍ଷକ ବୁଝାଇ କହିବେ । ଓଡିଆ ଭାଷାରେ ବର୍ଣ୍ଣର ଉଚ୍ଚାରଣ ଓ ବନାନ ପ୍ରାୟ ସମାନ । କିନ୍ତୁ ଭାଷାଗତଜ୍ଞାନର ଅଭାବ ଓ ଉଚ୍ଚାରଣ ତ୍ରୁଟିଯୋଗୁଁ ବର୍ଣ୍ଣାସୁଦ୍ଧି ହୁଏ । ଏଥିରେ ପରିବେଶ ଓ ମନସ୍ତତ୍ତ୍ୱର ପ୍ରଭାବ ମଧ୍ୟ ଅଛି ।

ଅକାରାନ୍ତ ସ୍ଥଳେ ଅଯଥା ହଳନ୍ତ (ଉଚିତ୍) ଅକାର ସ୍ଥଳେ ଆକାର (ମାହାତ୍ମା, ସମାସ୍ୟା) ଇ ସ୍ଥଳେ ଈ, ଊ ସ୍ଥଳେ ଉ ଓ ତାର ବିପରୀତ, ର ସ୍ଥଳେ ଋ, ସ, ଶ ଓ ଷ ସ୍ଥଳେ ଷ, ସ, ଶ, ଜ ସ୍ଥଳେ ଯ ଓ ଯ ସ୍ଥଳେ ଜ, ଣତ୍ୱ, ଷତ୍ୱବିଧି ନିୟମର ଅଭାବ, ଟ ସ୍ଥଳେ ଠ ଓ ସ୍ତ୍ରୀଲିଙ୍ଗ ଗତ ଭ୍ରମ ବିଷୟରେ ସଚେତନ କରାଇବେ ।

୨. *କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ*

ଶୁଦ୍ଧଲିଖନ - ନିମ୍ନ ଲିଖିତ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକୁ ଶୁଦ୍ଧକରି ଲେଖିବା ପାଇଁ ବନ୍ଧନୀ ମଧ୍ୟରୁ ଶୁଦ୍ଧରୂପ ବାଛିଲେଖ ।

ଭୁବନେଶ୍ୱର, ସମାସ୍ୟା, ପ୍ରତିଯୋଗୀତା, ସମିଚିନ, ସେଶ, କରଯ, ବିସାଦ, ଅପରାଣ୍ହ, ସଶି, ବୀନୀତ, ପୁରଷ୍କାର,

(ବିଷାଦ, ଭୁବନେଶ୍ୱର, ବିନୀତ, ପ୍ରତିଯୋଗିତା, ଶଶି, ଅପରାହ୍ଣ, ପୁରସ୍କାର, ସମସ୍ୟା, କରଜ, ଶେଷ, ସମୀଚୀନ)

ଶୂନ୍ୟସ୍ଥାନ ପୂରଣ ଦ୍ୱାରା ଶୁଦ୍ଧଲିଖନ -

ବନ୍ଧନୀମଧ୍ୟରୁ ଠିକ୍ ଅକ୍ଷର ବାଛି ଶୂନ୍ୟସ୍ଥାନ ପୂରଣ କର -

ମହା -ଗର (ସା, ଶା, ଷା)	-	ସା
ବୀ -- (ଜ, ଯ)	-	ଜ
ନିର -- (ଶ, ସ)	-	ସ
ଅ - ର (କୃ, କୂ)	-	କୂ
ଦୂର -- କ୍ଷଣ (ବି, ବୀ)	-	ବୀ

ଶ୍ରୁତଲିଖନ ମାଧ୍ୟମରେ ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧି ଦୂରୀକରଣ

ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ପାଠ୍ୟାଂଶ ଡ଼ାକି ଲେଖିବାକୁ କହିବେ । ପରେ ଲେଖା ଗୁଡ଼ିକୁ ଦେଖି ସେଥିରେ ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧି ଥିଲେ ବାରମ୍ବାର ଲେଖି ସଂଶୋଧନ କରିବାକୁ କହିବେ ।

୩. *ଅଭ୍ୟାସ* : ସାଧାରଣଭାବେ ଅଶୁଦ୍ଧ ଲେଖାଯାଉଥିବା ଶବ୍ଦର ଶୁଦ୍ଧରୂପ କଳାପଟାରେ ଲେଖି ପିଲାମାନଙ୍କୁ ତାହା ବାରମ୍ବାର ଲେଖିବାକୁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦିଆଯିବ ।

ଶ୍ରେଣୀପାଠ୍ୟରୁ କଠିନ ଶବ୍ଦ ବାଛି ତାହାକୁ ବାରମ୍ବାର ଲେଖିବା ପାଇଁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦେବେ ।

୫. ମୂଲ୍ୟାୟନ

କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଓ ଅଭ୍ୟାସ ଫଳରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କର ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧି କିପରି ନିରାକରଣ ହୋଇଛି, ତାହା ମୌଖିକ ଓ ଲିଖିତ ପରୀକ୍ଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଶିକ୍ଷକ ଜାଣିବେ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ଭାବ ଓ ଶବ୍ଦ ବିଶ୍ଳେଷଣରେ କଠିନତା ଦୂରୀକରଣ ପ୍ରସଙ୍ଗ - *ଦୁଃଖୋଧନ ନୀଳମଣିରେ ।* ଶ୍ରେଣୀ - ୫ମ
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	(କ) ଭାବ ଓ ଶବ୍ଦର ସହଜ ଅବବୋଧ ପାଇଁ ପ୍ରୟାସ କରିବା (ଖ) କବିତାଂଶରେ ବ୍ୟବହୃତ ବିଶେଷ ପ୍ରୟୋଗ ଓ କାବ୍ୟଶୈଳୀ ସଂପର୍କରେ ବୁଝାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	(କ) ଭାବ ଓ ଅବବୋଧ ଜଟିଳ ହେବା ହେତୁ ଶିକ୍ଷାଦାନ ଆକର୍ଷଣୀୟ ଓ ସହଜସାଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରୁନାହିଁ । (ଖ) ନୂଆ ଶବ୍ଦ ଗୁଡ଼ିକର ପ୍ରୟୋଗ ନ ବୁଝି ଖାଲି ମୁଖସ୍ତକରି ମନେରଖିବା ଦ୍ୱାରା ମୌଳିକ ରଚ଼ନାରେ ଅପାରଗତା । (ଗ) କଠିନ ଶବ୍ଦ - ଚଳି, ମୁହିଁବା, ଘେନି, କଇଁ କଇଁ କହେ ବୈଷ୍ଣବ ଇତ୍ୟାଦି । (ଘ) କଠିନ ଭାବ - ଯେବେବିକା ---- କାନିପଣତେ ?
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	ନିମ୍ନରେ କେତେକ ଉଦାହରଣ ଆଲୋଚନା କରାଗଲା ଉକ୍ତ ଉଦାହରଣକୁ ଆଧାରକରି ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କ ସାହାଯ୍ୟରେ କିମ୍ବା ଆବଶ୍ୟକସ୍ଥଳେ ନିଜେ ଆଦର୍ଶ ବାକ୍ୟ ଗଢ଼ି ଉଦାହରଣ ଦେଇବୁଝାଇବେ । ଚଳି - ଉକ୍ତ କବିତାରେ ଚଳିର ଅର୍ଥ ରାଗିବା । ମୁହିଁବା - ଏଠାରେ ମୁହିଁବାର ଅର୍ଥ ଦହି ମୁହାଁଇବା । ଅନ୍ୟ ଏକ ଅର୍ଥର ଉଦାହରଣ ଦିଆଯାଇପାରେ - ଗାଈମାନେ ଘର ମୁହାଁ ହେଲେଣି ।

ଘେନି - ଏଠାରେ ଏହାର ଅର୍ଥ ଧରିବା । ବାକ୍ୟଗଠନ କରାଯାଇପାରେ - ଆସନ୍ତାକାଲି ସମସ୍ତ ପିଲା ସାହିତ୍ୟ ଖାତା ଘେନି ବିଦ୍ୟାଳୟକୁ ଆସିବେ ବୋଲି ଶିକ୍ଷକ କହିଲେ ।

କଇଁ କଇଁ - ଏହି ଶବ୍ଦଟି ଧ୍ୱନ୍ୟାତ୍ମକ ଯୁଗ୍ମଶବ୍ଦ । ଏହାକୁ ନେଇ ବାକ୍ୟଗଠନ କରାଯାଇପାରେ - ପିଲାଟି କଇଁ କଇଁ ହୋଇ କାନ୍ଦୁଛି ।

ସେହିଭଳି ଅନେକ ଶବ୍ଦ ଓଡିଆ ଭାଷାରେ ଶୁଣିବାକୁ ମିଳେ ଯଥା - ସାଇଁ ସାଇଁ, ଫର୍ ଫର୍, ଘଡ଼ ଘଡ, ଫଟ୍ ଫଟ୍ ଇତ୍ୟାଦି ।

କହେବଇଷ୍ଣବ - ପୁରାତନ କାବ୍ୟକବିତାରେ ଉପସଂହାରରେ କବିମାନେ ନିଜରନାମ ଭଣିତା କରୁଥିଲେ । ଏହି କବିତାର କବି ଗଣକବି ବୈଷ୍ଣବପାଣୀ । ସେଇ ଧାରାରେ ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇ କବି ନିଜର ନାମକୁ ଏଠାରେ ସଂଯୋଜିତ କରିଛନ୍ତି ।

ଭାବ ବିଶ୍ଳେଷଣ

ଯେବେଜିବା --------------------

କାନିପଣତେ ।

କଂସଧନୁଯାତ୍ରାର ଆୟୋଜନକରି ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କୁ ମଧୁପୁର (ମଥୁରା)କୁ ଡ଼କାଇ ଥିଲେ । ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ମଧୁପୁର ଯିବା ସମୟରେ ମା ଯଶୋଦା ତାଙ୍କର ଗୁଣସ୍ମରଣ କରି କହିଛନ୍ତି ଯେ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ବଡ ଅଝଟିଆଥିଲେ । ଗୋପପୁରକୁ ଯେବେକୋଳି ବିକାଳି ଆସୁଥିଲେ ସେତେବେଳେ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ କୋଳିଖାଇବାପାଇଁ ମା'ଙ୍କ ପାଖରେ ଜିଦ୍ ବା ଅଳି କରୁଥିଲେ । ସାଧାରଣତଃ କୋଳିଖାଇଲେ ଦେହଖରାପ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଥିବାରୁ ସ୍ନେହମୟୀ ମା ଯଶୋଦା କୋଳି କିଣିବାପାଇଁ ମନାକରନ୍ତି । ଫଳରେ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ରାଗିଯାଇ ଧୂଳିରେ ଗଡ଼ନ୍ତି ଓ ମାଆଙ୍କର ପଣତ କାନି ଧରି ଟଣା ଓଟରା କରି ଦୋଳି ଖେଳିବା ପରି ଆଚ଼ରଣ କରନ୍ତି ।

୫.	କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ	୧. ବାକ୍ୟଗଠନ ମାଧ୍ୟମରେ ଅର୍ଥବୋଧ ଯଥା ଘେନି - ଗରିବ ପିଲାଟି କେବଳ ଲୁଣଘେନି ଭାତଖାଉଛି - ରାମଚନ୍ଦ୍ର ସୀତା ଓ ଲକ୍ଷ୍ମଣଙ୍କୁ ସାଙ୍ଗରେ ଘେନି ବନବାସ କରିଥିଲେ । ପଥ - ରାଜପଥରେ ବହୁ ଯାନବାହାନ ଚାଲେ । କୋଳି - (ଗଛରେ ଫଳୁଥିବା ଛୋଟ ଛୋଟ ଖାଇବା ଉପଯୋଗି ଫଳ) ଖଜୁରୀ କୋଳି ମିଠାଲାଗେ । ୨. ପଦ୍ୟରୂପକୁ ଗଦ୍ୟରୂପରେ ପ୍ରୟୋଗ ପଣତେ - ପଣତରେ ହାତେ - ହାତରେ ହୋଇଣ - ହୋଇ ୩. ଯେପରି ବୃଳି ଶବ୍ଦର ଶେଷରେ ଳି ରହିଛି ସେହିପରି ଏହି ବିଷୟରେ ପ୍ରୟୋଗକରାଯାଇଥିବା ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକ ହେଲା - କେଳି, ବୋଳି, ଧୂଳି, ଅଳି, ଦୋଳି, ଖେଳି, କଳି, ମାଳି, ଇତ୍ୟାଦି ।
୬.	ଅଭ୍ୟାସ	ଏହିପରି ବିଭିନ୍ନ ବାକ୍ୟଗଠନ, ଶବ୍ଦ ଚିହ୍ନଟ, ଗଦ୍ୟରୂପ, ଭାବସଂପ୍ରସାରଣ ଶବ୍ଦର ଅନେକ ଅର୍ଥ ଇତ୍ୟାଦି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ କରିବାକୁ ଦେଇ ବିଷୟଟିର ସହଜ ଉପସ୍ଥାପନ କରିପାରିବା ।
୭.	ମୂଲ୍ୟାୟନ	ଏହିକ୍ଷେତ୍ରରେ ବିଷୟବସ୍ତୁକୁ କିମ୍ବା ଶବ୍ଦକୁ ଭିତ୍ତିକରି ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କ ଲବ୍ଧଜ୍ଞାନ ପରୀକ୍ଷା କରିବେ । ଉଦାହରଣ ୧ ଦୁଃଖୀଧନ ନୀଳମଣି ବୋଲି କାହାକୁ କୁହାଯାଇଛି ? ୨ ଯଶୋଦା କାହିଁକି କାନ୍ଦୁଥିଲେ ? ୩ ଦହି କାହିଁକି ମୁହାଁନ୍ତୁଏ ? ୪ ଏହି କବିତାର କବିଙ୍କ ନାମ କଣ ?

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ଭାବ ଓ ଶବ୍ଦ ବିଶ୍ଳେଷଣରେ କଠିନତା ଦୂରୀକରଣ ପ୍ରସଙ୍ଗ - ଜାତୀୟ ପକ୍ଷୀ ସୁନୀଳ ଗ୍ରୀବାଟି ----- ଛବିଳ ଛାତି, ରୂପେ ସୁକୁମାର ------ ଭଙ୍ଗିମା ତାର ।
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	(କ) ଭାବ ଓ ଶବ୍ଦର ସହଜ ଅବବୋଧରେ ଶ୍ରେଣୀକକ୍ଷରେ ଉପୁଜୁଥିବା ଅସୁବିଧା ଦୂର କରିବା । (ଖ) ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କ ବୋଧଶକ୍ତି ଅନୁଯାୟୀ ଜଟିଳ ଭାବକୁ ସରଳଭାବେ ବୁଝାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	(କ) ଭାବ ଓ ଅବବୋଧ ଜଟିଳ ହେବା ହେତୁ ଶିକ୍ଷାଦାନ ଆକର୍ଷଣୀୟ ନ ହେବା । (ଖ) ନୂଆ ଶବ୍ଦ ଗୁଡିକର ପ୍ରୟୋଗ ନ ବୁଝି ଖାଲି ମୁଖସ୍ତକରି ମନେରଖିବା । (ଗ) ଶବ୍ଦ କାଠିନ୍ୟ - ଝଳି, ସୁମଞ୍ଜୁଳଚୂଳ, ମୈତ୍ରୀ
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	ସୁନୀଳ ----------- ଛବିଳ ଛାତି । ଏହିପଦରେ ସୁନୀଳ ଗ୍ରୀବା, ସୁମଞ୍ଜୁଳ ଚୂଳ, ସୁଢଳ ନୟନ, ଛଳଛଳମନ ଇତ୍ୟାଦି ପ୍ରୟୋଗ ଗୁଡ଼ିକର ଭାବକୁ ଛାତ୍ର ଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କ ହୃଦୟକୁ ଛୁଇଁଲାଭଳି ବୁଝାଇବା ପାଇଁ ହେବ, ଯେପରିକି ସେମାନେ ସରଳ ଭାଷାରେ ଲେଖିପାରିବେ । କେତେକ ଉଦାହରଣ ଆଲୋଚନାକରାଗଲା ଏହାକୁ ଆଧାର କରି ଶିକ୍ଷକ ପିଲାମାନଙ୍କ ସାହାଯ୍ୟରେ କିମ୍ବା ଆବଶ୍ୟକ

ବେଳେ ନିଜେ ଆଦର୍ଶ ବାକ୍ୟ ଗଢ଼ି କିମ୍ବା ନିଜପରିବେଶରୁ ଉଦାହରଣ ଦେଇ ବୁଝାଇବେ । ସୁମଞ୍ଜୁଳ - ସୁ ମଞ୍ଜୁଳ, ଅର୍ଥାତ୍ ଉତ୍ତମ ରୂପେ, ସୁନ୍ଦର ବା ଶୋଭିତ

ଚୂଳ - ଅଗ୍ରଭାଗ - ଚୂଳ କହିଲେ ଏଠାରେ ମୟୂର ମୁଣ୍ଡଉପରେ ଥିବା ମୁକୁଟକୁ ବୁଝାଏ,

ଝଳି - ଝଲସି ଉଠିବା, ଚିକ୍ ଚିକ୍ ଦେଖାଯିବା

ମୈତ୍ରୀ - ମିତ୍ରତା ଭାବ,

ବାକ୍ୟ - ଭାରତ ଓ ପାକିସ୍ଥାନ ମଧ୍ୟରେ ମୈତ୍ରୀ ଭାବ ସ୍ଥାପନ ପାଇଁ ଆମ ଦେଶର ପ୍ରଧାନ ମନ୍ତ୍ରୀ ନୂଆ ନୂଆ ପଦକ୍ଷେପ ନେଉଛନ୍ତି ।

ଭାବ ବିଶ୍ଳେଷଣ - ରୂପେ -------- ଭଙ୍ଗିମାତାର,

ମୟୂର ରୂପ ଓ ଗୁଣରେ ସୁନ୍ଦର ହୋଇଥିବାରୁ ମହତ୍ ଲୋକ ମୟୂରକୁ ଦେଖିଲେ ଆନନ୍ଦିତ ହୁଅନ୍ତି, କିନ୍ତୁ ସର୍ପ ପରି ଦୁଷ୍ଟ ବା ଖଳ ଜୀବମାନେ ମୟୂରକୁ ଦେଖି ଆନନ୍ଦ ପାଇବା ପରିବର୍ତ୍ତେ ଭୟକରନ୍ତି, ମୟୂର ମଧ୍ୟ ବିହଙ୍ଗ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ହୋଇଥିବାରୁ ତାର ରାଜକୀୟ ଭଙ୍ଗିରେ ସାଧୁଜନଙ୍କ ମନ ମୋହିନିଏ । କିନ୍ତୁ ଅସାଧୁଲୋକ ମାନଙ୍କ ଆଗରେ ନିଜର ବଡ଼ପଣ ଦେଖାଏ ।

୪ କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

୧. ସମୋଚ୍ଚାରିତ ଶବ୍ଦ - ଚୁଳ, ଚୂଳ

ଚୁଳ - ପିଲାଟିର ଚୁଳ ବଢିଯାଇଥିବାରୁ ବାପା ତାକୁ ସେଲୁନରୁ ଚୁଳ କଟାଇ ଆଣିଲେ ।

ଚୂଳ - ଘନମେଘ ଦେଖି ମୟୂର ଚୂଳ ଫୁଲାଇ ନାଚେ ।

ପଦ୍ୟ ବ୍ୟବହୃତ ଶବ୍ଦ, ଗଦ୍ୟ ରୂପେ - ଗରବ - ଗର୍ବ, ହରଷ - ହର୍ଷ, ନରତ୍ତନ - ନର୍ତ୍ତନ

୨. ଦୋଳିରୁ ହୁଏ ଦୋଳାଇ, ଢଳି - ଢଳାଇ, ରଚି - ରଚାଇ, ଶୁଣି - ଶୁଣାଇ

୬.	ଅଭ୍ୟାସ	ଏହିପରି ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରତି ଶବ୍ଦ ଗଠନ, ବାକ୍ୟ ରଚ଼ନା, ଭାବ ସଂପ୍ରସାରଣ, ଶବ୍ଦର ଦ୍ୱି ଅର୍ଥ ବୋଧକ ବାକ୍ୟରେ ବ୍ୟବହାର ଆଦି ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ କରିବାକୁ ଦେଇ ବିଷୟଟିର ସହଜ ଉପସ୍ଥାପନ କରିପାରିବେ ।
୭.	ମୂଲ୍ୟାୟନ	ଏହିକ୍ଷେତ୍ରରେ ବିଷୟକୁ ଭିତ୍ତିକରି କିମ୍ବା ଶବ୍ଦକୁ ଭିତ୍ତିକରି ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କ ଲବ୍ଧଜ୍ଞାନ ପରୀକ୍ଷା କରିବେ ।

ଉଦାହରଣ -

୧ ମୟୂରକୁ ଜାତୀୟପକ୍ଷୀର ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଦିଆଯାଇଛି କାହିଁକି ?

୨. ଖଳ ଜୀବମାନେ ମୟୂରକୁ ଭୟକରିବାର କାରଣ କଣ ?

୩. ଠିକ୍ ଶବ୍ଦଟି ଚିହ୍ନାଅ - ଜିମୂତ, ଜୀମୂତ, ଜୀମୃତ,
ସାହସ, ସାହାସ, ସହାସ

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ପ୍ରଚଳିତ ଲୋକଭାଷାର ବ୍ୟାଖ୍ୟା ପ୍ରସଙ୍ଗ - ମାଟି ଦେବତାର ପୂଜା ଶ୍ରେଣୀ - ପଞ୍ଚମ
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	(କ) ପଠିତ ବିଷୟ ମାଧ୍ୟମରେ ଲୋକଭାଷା ଓ ମାନକ ଭାଷାର ସ୍ୱରୂପ ବିଷୟରେ ପରୋକ୍ଷଭାବରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଅବଗତ କରାଇବା । (ଖ) ଓଡ଼ିଶାର ଜନ ଜୀବନରେ ବ୍ୟବହୃତ ଲୋକଭାଷାପ୍ରତି ପିଲାମାନଙ୍କ ଆଗ୍ରହ ବୃଦ୍ଧି କରିବା (ଗ) ଲୋକଭାଷା ସାହାଯ୍ୟରେ ମାନକ ଭାଷା ଶିକ୍ଷା ଦେବା । (ଘ) ପଠିତ ବିଷୟରେ ବ୍ୟବହୃତ ଭାଷାର ସରସ, ସୁନ୍ଦର ପ୍ରକାଶଭଙ୍ଗୀ ଦ୍ୱାରା ପରିବେଶର ସୁରକ୍ଷା ତଥା କୃଷି ସଂସ୍କୃତି ପ୍ରତି ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ମନରେ ଆଦର ଭାବ ଜନ୍ମାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	ଅପ୍ରଚଳିତ ଶବ୍ଦ ସହିତ ପିଲାମାନେ ଅଭ୍ୟସ୍ତ ନ ଥିବା ହେତୁ ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ ପିଲାମାନେ ବୁଝିବାକୁ ଅନାଗ୍ରହ ପ୍ରକାଶ କରିବା ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	୧. *କାର୍ଯ୍ୟ ପଦ୍ଧତି* ଆଲୋଚ୍ୟ ମାଟି ଦେବତାର ପୂଜା ବିଷୟଟିକୁ ଶିକ୍ଷକ ଆଦର୍ଶ ପଠନ କରୁଥିବା ସମୟରେ ଛାତ୍ରମାନେ ଅପରିଚିତ ଓ କଷ୍ଟ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକୁ ପେନ୍‌ସିଲ୍‌ରେ ରେଖାଙ୍କିତ କରିବାକୁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦେବେ ଓ କେତେଜଣ ପିଲାଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ସରବ ପଠନ କରାଇ ସେହି ଶବ୍ଦଗୁଡିକୁ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ପଚାରି କଳାପଟାରେ ଲେଖିବେ ଓ ଆବଶ୍ୟକ ସ୍ଥଳେ ନିଜେ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ କେତୋଟି ସଂଯୋଗ କରିବେ । ଉଚ୍ଚାରଣ ପ୍ରତି ଅବଶ୍ୟ ଧ୍ୟାନ ଦିଆଯିବ ।

ଅପ୍ରଚଳିତ ଶବ୍ଦଚୟ :
ସଜିଲ, ଅଡୁଆ, ଉଶ୍ୱାସ, ହକ୍, ତୁନି, ରିଷା, ଟାଙ୍ଗରା, ପଦା, ଖତରା, ଗଜା, କୁନ୍ଥୁ କୁନ୍ଥୁ, ଛନଛନ, ଉଠିଆ, କନ୍ଦା, ଅନ୍ଦିକନ୍ଦି, କୋଶ, ନିଗିଡ଼ିବା, ସୁଆଦ, ପରଖେଇ, ବେଡା, ଏସନ ।
ଶିକ୍ଷକ ଉପର ଲିଖିତ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକର ଅର୍ଥ (ମାନକ ଶବ୍ଦ) ସହିତ ସହଜ, ସରଳ, ବୋଧଗମ୍ୟ ବାକ୍ୟ କଳାପଟାରେ ଲେଖିବେ । ତାପରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ସେଗୁଡ଼ିକୁ ନେଇ ବାକ୍ୟଗଠନ କରିବାକୁ ଉତ୍ସାହିତ କରିବେ ।
ସଜିଲ (ପ୍ରସ୍ତୁତ) – ବାହାରକୁ ବୁଲି ଯିବା ପୂର୍ବରୁ ଆମେମାନେ ଜିନିଷପତ୍ର ସଜିଲ କରିଥାଉ ।
ଅଡୁଆ (ଗୋଳମାଳିଆ) – ଅଡୁଆ ସୂତାରୁ ଖିଅ କାଢିବା କଷ୍ଟକର ।
ଉଶ୍ୱାସ (ହାଲୁକା) – ପରୀକ୍ଷାପରେ ଛାତ୍ରମାନେ ଉଶ୍ୱାସ ବୋଧ କରନ୍ତି ।
ହକ୍ (ଅଧିକାର) – ମଣିଷ ନିଜର ହକ୍ ପାଇବାକୁ ଲଢେଇ କରେ ।
ତୁନି (ଚୁପ୍) – ଶିକ୍ଷକ ପ୍ରଶ୍ନ ପଚାରିବା ବେଳେ ଛାତ୍ରମାନେ ତୁନି ହୋଇ ନରହି ଉତ୍ତର ଦେବା ଉଚିତ୍ ।
ରିଷା (ରାଗ) – ପାଠ ପଢାଇଲାବେଳେ ଛାତ୍ରମାନେ ପାଟି କଲେ ଶିକ୍ଷକ ରିଷା ହୁଅନ୍ତି ।
ଟାଙ୍ଗର (ପଥୁରିଆ) – ଟାଙ୍ଗର ଭୂଇଁରେ ଘାସ କଅଁଳେ ନାହିଁ ।
ପଦା (ଖୋଲା, ମେଲା) – ବର୍ଷାବେଳେ ଆମେ ଘର ଭିତରେ ଶୁଖିଲା ରହୁ, ପଦାକୁ ଗଲେ ଓଦା ହେଉ ।
ଖତରା (ପୋରିହା) – ପ୍ରତ୍ୟେକ ଜିନିଷ ପୁରୁଣା ହେଲେ ଖତରା ହୁଏ ।
ଗଜା (ଅଙ୍କୁର, ନୂତନ) – ଗଜା ମୁଗ ଖାଇବା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟପାଇଁ ଭଲ । ଯୁଦ୍ଧ ବିଭାଗରେ ଗଜା ଟୋକାଙ୍କୁ ନିଆଯାଏ ।
କୁନ୍ଥୁ କୁନ୍ଥୁ (କୁଣ୍ଠିତ) – ଭଲ ଛାତ୍ରମାନେ ପାଠ ପଢିବାକୁ କୁନ୍ଥୁକୁନ୍ଥୁ ହୁଅନ୍ତି ନାହିଁ ।

ଛନ୍ନଛନ୍ନ (ଚଞ୍ଚଳ) – ଆଚାର ଖାଇବାକୁ ପିଲାଙ୍କ ମନ ଛନଛନ ହୁଏ ।

ଉଠିଆ (ଚାଷଯୋଗ୍ୟ) – ପଡ଼ିଆ ଜମିକୁ ଉଠିଆ କରିବା ଶ୍ରମସାପେକ୍ଷ ।

ଅନ୍ଧିକନ୍ଧି (ଅନ୍ଧାରୁଆ ସ୍ଥାନ) – ମଶା ଘରର ଅନ୍ଧିକନ୍ଧିରେ ଲୁଚିଛପି ରହିଯାଏ ।

କୋଶ (ପ୍ରାୟ ୩କିମି ଦୂରତା) – ଆଗେ ଦୂରତାକୁ କୋଶରେ ମପା ଯାଉଥିଲା ।

ନିଗିଡ଼ିବା (ଆସ୍ତେଆସ୍ତେ ଝରିବା) – ଖରାବେଳେ ବାଟ ଚାଲିଲେ ଦେହରୁ ଝାଳ ନିଗିଡି ପଡ଼େ ।

ପରଖଇ (ପରୀକ୍ଷା କରି) – ଭଲ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ପରଖେଇ ନିଏ ।

ବେତା (ବେତରେ ତିଆରି ବଡ଼ ଟୋକେଇ) - ବେତାଏ ପରିବାର ଦାମ୍ ବହୁତ ।

ଏ ସନ (ଏ ବର୍ଷ) – ଏ ସନ ଭଲ ବର୍ଷା ହୋଇଛି ।

୫. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

୧. ଶିକ୍ଷକ ମାନକ ଶବ୍ଦ ବ୍ୟବହାର କରି ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାକ୍ୟଗୁଡ଼ିକ କଳାପଟାରେ ଲେଖି ପିଲାମାନଙ୍କୁ ରେଖାଙ୍କିତ ଶବ୍ଦସ୍ଥାନରେ ଏହି ବିଷୟରେ ବ୍ୟବହୃତ ଲୋକଭାଷା ପ୍ରୟୋଗ କରିବାକୁ ଉତ୍ସାହିତ କରିବେ ।

କ) ଶିକ୍ଷକ ପଢାଇବା ବେଳେ ଛାତ୍ରମାନେ ଚୁପ୍ ରହି ଶୁଣିବା ଉଚିତ୍ ।

ଖ) ଆମେ ସଫାଲୁଗା ପିନ୍ଧି ବାହାରକୁ ଯାଉ ।

ଗ) ଯାତ୍ରା କରିବାପାଇଁ ଗାଡ଼ିକୁ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଏ ।

ଘ) ପାଠ ପଢ଼ିବା ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶିଶୁର ଅଧିକାର ଅଟେ ।

ଙ) ଘଣ୍ଟା ଦେଖି ଆମେ ସମୟ ଜାଣୁ ।

ଚ) ହିଂସାର ଉତ୍ତର ଅହିଂସାରେ ଦିଆଯିବା ଆବଶ୍ୟକ ।

୨. ଶିକ୍ଷକ ପାଞ୍ଚଜଣ ଛାତ୍ରଙ୍କୁ ବାଛି ସେମାନଙ୍କୁ କନ୍ଧବୁଢା, କୃଷି ଅଫିସର, କନ୍ଧପିଲା, କୁଶିଆ ପଧାନ

ଓ ତା ସ୍ତ୍ରୀ ଭୂମିକାରେ ଏ ବିଷୟଟିକୁ କଥୋପକଥନ ମାଧ୍ୟମରେ ଉପସ୍ଥାପନ କରିବାକୁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦେବେ । ଆବଶ୍ୟକ ସ୍ଥଳେ ଶିକ୍ଷକ ସେମାନଙ୍କୁ ସଂଳାପ ଯୋଗାଇ ଉତ୍ସାହିତ କରିବେ ।

୬. ଅଭ୍ୟାସ

ଶିକ୍ଷକ ସମୁଦାୟ ଛାତ୍ରଙ୍କୁ ଦୁଇଜଣିଆ ଦଳରେ ଗଢ଼ିବେ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଛାତ୍ରକୁ ଅତି କମରେ ଅନ୍ୟ ଛାତ୍ରଟିକୁ ତିନୋଟି ପ୍ରଶ୍ନ ପଚାରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ସେ ଛାତ୍ରଟି ଉତ୍ତର ଦେବା ପରେ ସେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଶ୍ନ ପଚାରିବ । ଆଲୋଚ୍ୟ ବିଷୟରୁ ଆରମ୍ଭରୁ ପ୍ରଶ୍ନ ପଚାରିବା ଆରମ୍ଭ ହେବ । ସେମାନେ ବହିର ସାହାଯ୍ୟ ନେଇ ପାରିବେ ।

୭. ମୂଲ୍ୟାୟନ

୧. କନ୍ଧ ବୁଢ଼ାଟି କେଉଁଠାରେ ବସିଥିଲା ?
୨. ସେ ହାତରେ କଣ ଧରିଥିଲା ?
୩. କେତେବେଳେ ସେ ସେଠାରେ ବସିଥିଲା ?
୪. ସେଠାରେ ସେ କାହିଁକି ବସିଥିଲା ?
୫. ବୁଢ଼ାକୁ ଦେଖି କିଏ ଅଟକିଗଲେ ?
୬. ସେ ବୁଢ଼ାକୁ କଣ ପଚ୍ଚରିଲେ ?
୭. ବୁଢ଼ା ତାଙ୍କୁ କି ଉତ୍ତର ଦେଲା ? ଇତ୍ୟାଦି ।

କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଓ ଅଭ୍ୟାସ ଫଳରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନେ କିପରି ନୂଆ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକୁ ଆୟତ୍ତ କରିଛନ୍ତି, ତାହା ଜାଣିବା ପାଇଁ ଶିକ୍ଷକ କେତୋଟି ଶବ୍ଦ ୧. ବିଷୟରୁ ଦେଇ ବାକ୍ୟ ଗଠନ କରାଇବେ ।, ୨. ପ୍ରସଙ୍ଗ ଭିତ୍ତିକ କେତୋଟି ପ୍ରଶ୍ନ ପଚାରିବେ ।

ନାଟ୍ୟରୂପ ଓ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର ମାଧ୍ୟମରେ ବିଷୟଟିର ଆନନ୍ଦମୟ ଶିକ୍ଷା ଦିଆଯାଇ ପାରିବ । ଗତାନୁଗତିକ ଧାରାରେ ପଢ଼ାଇବା ଦ୍ୱାରା ଯେଉଁ ସ୍ଥାଣୁତ୍ୱ ସୃଷ୍ଟିହୁଏ, ଏହା ଦ୍ୱାରା ତାହା ଦୂରୀଭୂତ ହେବ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ଭାବ ଓ ଶବ୍ଦ ବିଶ୍ଳେଷଣରେ କଠିନତା ଦୂରୀକରଣ ପ୍ରସଙ୍ଗ - ଗୁରୁଭକ୍ତି
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	(କ) ପ୍ରବନ୍ଧରେ ବ୍ୟବହୃତ ବିଶେଷ ଶବ୍ଦ ଓ ବାକ୍ୟର ସହଜ ଅବବୋଧ ପାଇଁ ପ୍ରୟାସ କରିବା । (ଖ) ପ୍ରବନ୍ଧରେ ପ୍ରଦତ୍ତ ଭାଷାର ଆଧାରରେ କେତେକ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଭାବର ବ୍ୟାଖ୍ୟା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	(କ) ଏହି ବିଷୟରେ କେତେକ ସ୍ଥାନରେ ଥିବା ବିଶେଷ ପ୍ରୟୋଗ ସଠିକ୍ ଭାବରେ ବୁଝିହୁଏ ନାହିଁ । (ଖ) ନୂଆ ଶବ୍ଦଗୁଡିକର ପ୍ରୟୋଗ ନବୁଝିବା ଫଳରେ ନିଜ ମୌଳିକ ଭାବେ ତାହା ବ୍ୟବହାର କରି ନ ପାରିବା । (ଗ) କଠିନ ଶବ୍ଦ - ଦଣ୍ଡାୟମାନ, କନ୍ଦା, ତତ୍ପର, ଆବୃତ୍ତି, ମହାତ୍ମା, ଶିଷ୍ୟତ୍ୱ, କୁଟୀର, ପଳାୟନ, ଆଗତ୍ୟା, ପଶ୍ଚାତ୍, ପ୍ରତ୍ୟୁଷ, ଉତ୍ଫୁଲ୍ଲ, ଦ୍ୱାରସ୍ଥ, ଅନତିଦୂର, ପ୍ରଣିପାତ, ଅନ୍ତରାଳ, ତତ୍କ୍ଷଣାତ୍, ଇତ୍ୟାଦି । (ଘ) କଠିନ ବାକ୍ୟ ଓ ଭାବ ୧. ଗ୍ରୀଷ୍ମଋତୁ -------- ଝୁଲୁଥାଏ ୨. ବ୍ୟାସଦେବ -------- ପ୍ରକାଶକଲେ । ୩. ବନବାସୀ କିଏ ? ୪. ବନବାସୀ ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ କଣ ? ୫. ଖଜୁରୀ ଗଛର ରସ କାହିଁକି ସଂଗ୍ରହ କରାଯାଏ ?

୪ ସମାଧାନର ସୂତ୍ର

ନିମ୍ନରେ କେତେକ ଉଦାହରଣ ଆଲୋଚନା କରାଗଲା । ଉକ୍ତ ଉଦାହରଣକୁ ଆଧାରକରି ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କ ସାମାଯ୍ୟରେ କିମ୍ବା ଆବଶ୍ୟକ ସ୍ଥଳେ ନିଜେ ଆଦର୍ଶ ବାକ୍ୟଗଢି ଉଦାହରଣ ଦେଇ ବୁଝାଇବେ ।

କଠିନଶବ୍ଦ ବିଶ୍ଳେଷଣ

ଦଣ୍ଡାୟମାନ – ଏହାର ଅର୍ଥ ଠିଆହେବା ।

ବାକ୍ୟ – ପର୍ବତଟି ଋଷି ପରି ଦଣ୍ଡାୟମାନ ।

କନ୍ଦା – ଖଜୁରି ଗଛର ଅଗରୁ ବାହାରୁଥିବା ଶସ ।

ଏହାର ଅନ୍ୟ ଅର୍ଥ ଗଛରମୂଳରୁ ବାହାରୁଥିବା ଖାଦ୍ୟ ଜାତୀୟ ପଦାର୍ଥ ଯଥା କନ୍ଦମୂଳ । କନ୍ଦମୂଳକୁ ସମ୍ବଲପୁରୀ ଭାଷାରେ କନ୍ଦା ବୋଲି ମଧ୍ୟ କୁହାଯାଏ । କିଆ, ସପୁରୀ, ତାଳ, ନଡ଼ିଆ ଇତ୍ୟାଦି ଗଛର ଅଗରୁ କନ୍ଦା ବାହାରେ ।

ମହାତ୍ମା – ମହାନ ଆତ୍ମା ଯାହାର ।

ବାକ୍ୟ – ମୋହନ ଦାସ କରମଚାନ୍ଦ ଗାନ୍ଧିଙ୍କ ଅନ୍ୟନାମ ମହାତ୍ମାଗାନ୍ଧି ।

ପଳାୟନ – ଏହାର ଅର୍ଥ ଭୟରେ ସ୍ଥାନଛାଡି ଚାଲିଯିବା, ବା ଲୁଚି ଚାଲିଯିବା ।

ବିରାଡିକୁ ଦେଖି ମୂଷା ପଳାୟନ କଲା ।

କଠିନ ବାକ୍ୟ ବିଶ୍ଳେଷଣ

୧. ଗ୍ରୀଷ୍ମଋତୁ ହୋଇଥିବାରୁ ସେଥିରେ ------- ହୋଇ ଝୁଲୁଥାଏ ।

ଖଜୁରି ଫଳର ରଙ୍ଗ ହଳଦିଆ, ସୁନାର ରଙ୍ଗ ହଳଦିଆ, ତେଣୁ ପ୍ରାବନ୍ଧିକ ଖଜୁରି ଫଳକୁ ସୁନା ସହିତ ତୁଳନା କରିଛନ୍ତି । ଖଜୁରି ଫଳ ଗ୍ରୀଷ୍ମଋତୁରେ ପାଚେ ଓ ଏହା ପେଛା ହୋଇ କାନ୍ଦିରେ ଝୁଲୁଥାଏ ।

୨. ବନବାସୀ କିଏ

ନୃସିଂହ ପୁରାଣରେ ବିପ୍ରପୀତାମ୍ବରଦାସ ଏକ ଆଖ୍ୟାୟିକା ପ୍ରଦାନ କରିଛନ୍ତି ଯେ, କୃପାଳୁ ନାମଧାରି ଜଣେ ବ୍ୟକ୍ତି ଯେକି ଜାତିରେ ଶିଅଳ ଅଟେ । ଶିଅଳ ମାନଙ୍କର

କାର୍ଯ୍ୟଖଜୁରି ଗଛରୁ ରସ ସଂଗ୍ରହକରିବା । ଏହି କୃପାକୁ ଶିଆଳକୁ ବନବାସୀ ବୋଲି ପ୍ରାବନ୍ଧିକ ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଛନ୍ତି । ବନବାସୀର ଅର୍ଥ ବଣରେ ଯେଉଁବ୍ୟକ୍ତି ବାସକରେ । ଉଦାହରଣ – ରାମଚନ୍ଦ୍ର ପିତୃସତ୍ୟ ପାଳନ କରି ଚଉଦବର୍ଷ ପାଇଁ ବନବାସୀ ରୂପେ ଜୀବନଯାପନ କରିଥିଲେ । ରାମଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ କେତେକ ସ୍ଥାନରେ ବନବାସୀ ବୋଲି ବର୍ଣ୍ଣନା କରାଯାଇଛି ।

୫. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

ବାକ୍ୟଗଠନ ମାଧ୍ୟମରେ ଅର୍ଥଜ୍ଞାନ

ପଶ୍ଚାତ୍ ଭାଗ (ପୃଷ୍ଠପଟ ବା ପଛପଟ) – ବାଘଟି ପଶ୍ଚାତ୍ ଭାଗରୁ ଶିକାରୀକୁ ଆକ୍ରମଣ କଲା ।

ପ୍ରଣିପାତ (ପ୍ରଣାମ ବା ପାଦନମସ୍କାର) – ମାତା ପିତାଙ୍କୁ ସନ୍ତାନମାନେ ପ୍ରତିଦିନ ପ୍ରଣିପାତ କରିବା ଉଚିତ୍ ।

ତତ୍କ୍ଷଣାତ୍ (ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ) – ମୋ ଟେଲିଫୋନ ଶୁଣି ରବୀନ୍ଦ୍ର ତତ୍କ୍ଷଣାତ୍ ଆସିଲା ।

ଅନତିଦୂର (ନିକଟ ବା ଯାହା ଅତିଦୂରନୁହେଁ) - ଆମଘରର ଅନତିଦୂରରେ ରେଳ ଷ୍ଟେସନ୍ ଅବସ୍ଥିତ ।

ବିପରୀତ ଶବ୍ଦ ପ୍ରୟୋଗ –

ନିଜ – ପର, ମହାନ୍ – କ୍ଷୁଦ୍ର, ପଣ୍ଡିତ – ମୂର୍ଖ, ଅପୂର୍ଣ୍ଣ - ପୂର୍ଣ୍ଣ, ଦୟା – ନିର୍ଦ୍ଦୟ, ଋଣୀ – ଅଋଣୀ, ଆନନ୍ଦ - ନିରାନନ୍ଦ ।

ବୋଧଜ୍ଞାନ ପ୍ରୟୋଗ –

ଗ୍ରୀଷ୍ମଋତୁରେ ଯେପରି ଖଜୁରିଗଛର ଫଳ ପାଚେ, ସେହିପରି ଗ୍ରୀଷ୍ମଋତୁରେ ପାଚୁଥିବା ଫଳ ଗୁଡିକ ହେଲା, ଆମ୍ବ, ପଣସ, ସପୁରୀ, ଲିଚୁ, ସପେଟା ଇତ୍ୟାଦି ।

ଖଜୁରିଗଛ ବିଷୟରେ କେତୋଟି ଜାଣିବା କଥା ।

କ) ଖଜୁରିରସ ସୂର୍ଯ୍ୟଉଦୟ ପୂର୍ବରୁ ପାନକଲେ ଏହା ଶରୀର ପାଇଁ ହିତକର । ଏହାର ସ୍ୱାଦ ମିଠା ।

ଖ) ଏହାକୁ ମଧ୍ୟାହ୍ନରେ ପାନକଲେ ମଦଭଳି ନିଶାଧରେ ।
ଏହାକୁ ତାଡ଼ି ବୋଲି କହନ୍ତି ଏହାର ସ୍ୱାଦଖଟା ।
ଗ) ଖଜୁରି ରସରୁ ଗୁଡ ତିଆରି କରାଯାଏ ।

୬. ଅଭ୍ୟାସ

ଏହିପରି ବିଭିନ୍ନ ବାକ୍ୟଗଠନ, ବିପରୀତ ଅର୍ଥ ବୋଧକ ଶବ୍ଦ ପ୍ରଭୃତି ଅନେକପ୍ରକାର ନୂତନପ୍ରୟୋଗ ଦ୍ୱାରା ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ବିଷୟଟିକୁ କରିବାକୁ ଦେଇ ସହଜ ଉପସ୍ଥାପନ କରିପାରିବେ ।

୭. ମୂଲ୍ୟାୟନ

ଏହି କ୍ଷେତ୍ରରେ ବିଷୟବସ୍ତୁ କିମ୍ବା ଶବ୍ଦକୁ ଭିତ୍ତିକରି ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କ ଲବ୍ଧଜ୍ଞାନ ପରୀକ୍ଷା କରିବେ ଉଦାହରଣ ସ୍ୱରୂପ -

୧. କେଉଁ ପରିସ୍ଥିତିରେ ବ୍ୟାସଦେବ ବନବାସୀପୁତ୍ରକୁ ଗୁରୁଭାବରେ ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ ।
୨. ବ୍ୟାସଦେବ କାହିଁକି ବାରମ୍ବାର ବନବାସୀର ଦ୍ୱାରସ୍ଥ ହୋଇଥିଲେ ।
୩. ଜଣେ ମହାନ୍ ପଣ୍ଡିତ ହୋଇମଧ୍ୟ ବ୍ୟାସଦେବ କିପରି ନିଜଗୁରୁଙ୍କୁ ଭକ୍ତି କରୁଥିଲେ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	**ଶବ୍ଦ କଠିନ ତଥା କଠିନ ଶବ୍ଦପୁଞ୍ଜର ଭାବଗତ ଅସ୍ପଷ୍ଟତା ଦୂରୀକରଣ** ପ୍ରସଙ୍ଗ - ଏହି ମୋ ଜନମଭୂଇଁ ଶ୍ରେଣୀ - ପଞ୍ଚମ
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ପଠିତ ପଦ୍ୟ ମାଧ୍ୟମରେ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ନୂତନ ଶବ୍ଦର ପ୍ରୟୋଗ ଶିଖାଇବା । ୨. ଶବ୍ଦପ୍ରୟୋଗର ଅଭିନବକୌଶଳ ପ୍ରତି ଛାତ୍ରମାନଙ୍କର ଦୃଷ୍ଟିଆର୍ଷଣ କରିବା । ୩. ପ୍ରତିଶବ୍ଦ ପ୍ରତି ସଚେତନ କରାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. କଠିନ ଶବ୍ଦ - ଜଠର, ଉତ୍କଳ, ଶୋଭା, କାରିଗରି, ଶିଳା, ଚୂଳ, ଭୋରୀ, ଭୀତ, ଲଳିତ, ଶୋଣିତ, ଗୋରା, ଟେକ, ମହିମା, ପୁରୀ । ୨. ଶବ୍ଦପୁଞ୍ଜ-ଶ୍ୟାମଳ ଶୁଷମା, ଗିରିନଦୀ, ଫୁଲ ଫଳେ ଭରା ଜନନୀ କୋଳ, ବଉଦ ସଜାଏ ଗଭା, ଏ ଭୂମି ମହିମା-ପୁରୀ, ଗିରିଖୋଲ, ଚାରୁକୀରତି-କଳା, କୀରତି-କୁସୁମ-ହାର ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	୧. କାର୍ଯ୍ୟ ପଦ୍ଧତି - ପ୍ରଥମେ ଶିକ୍ଷକ କବିତାଟିକୁ ଆବୃତ୍ତି କରିବା ପରେ ପାଞ୍ଚସାତୋଟି ପିଲାଙ୍କୁ ଡାକି ଆବୃତ୍ତି କରାଇବେ । ତାପରେ ପିଲାମାନଙ୍କଠାରୁ ବୁଝିନପାରୁଥିବା ଶବ୍ଦଗୁଡିକ ପଚାରି ସେଗୁଡିକ ଲେଖିବା ସହିତ ନିଜେ ମଧ୍ୟ ପଦ୍ୟରୁ ବାଛି କେତୋଟି କଠିନ ଶବ୍ଦ ତଥା ଶବ୍ଦପୁଞ୍ଜ ଲେଖିବେ । ତାପରେ ଶିକ୍ଷକ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଶବ୍ଦଗୁଡିକର ଅର୍ଥ ପଚାରି କଳାପଟାରେ ଲେଖିବେ । ଆବଶ୍ୟକ ସ୍ଥଳେ ନିଜେ ଅର୍ଥ ଯୋଗାଇଦେବେ । ଶବ୍ଦପୁଞ୍ଜର ଭାବ ବିଶ୍ଳେଷଣ କରିବା

ସମୟରେ ମଧ୍ୟ ଏହି ପଦ୍ଧତି ଅବଲମ୍ବନ କରିବେ । ଶିକ୍ଷକ ଅର୍ଥ ଗୁଡ଼ିକୁ ଉଚ୍ଚାରଣ କରି ଲେଖିବେ ଓ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ସେମାନଙ୍କ ଖାତାରେ ଲେଖିବାକୁ କହିବେ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ପିଲା ଲେଖୁଛନ୍ତି କି ନାହିଁ ତାହାମଧ୍ୟ ବୁଲି ଦେଖିବେ ।

କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

ଜଠର - ପେଟ ଭୋକକୁ ଜଠର ଜ୍ୱାଳା କହନ୍ତି

ଉତ୍କଳ - ଉତ୍କୃଷ୍ଟ କଳାର ଦେଶ, ଓଡ଼ିଶାର ପୂର୍ବନାମ

(ଉତ୍କଳର ଲୋକ - ଉତ୍କଳୀୟ, ବଙ୍ଗର ଲୋକ - ବଙ୍ଗୀୟ, ଓଡ଼ିଶାର ଲୋକ - ଓଡ଼ିଆ, ବଙ୍ଗଳାର ଲୋକ - ବଙ୍ଗାଳୀ)

ଶୋଭା, ସୁଷମା - ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ

ଗଭା - ଜୁଡ଼ା, ଖୋଷା, ସ୍ତ୍ରୀ ଲୋକମାନେ ନିଜର ଲମ୍ବା, ଗହଳ ବାଳକୁ ଏକାଠି କରି ମୁଣ୍ଡ ପଛପଟରେ ବାନ୍ଧିବା

ମହିମା - ଗୌରବ

ପୁରୀ - ଘର, ଗୃହ, ଭବନ

କାରିଗରି - କାରୁକାର୍ଯ୍ୟ, ସୁନ୍ଦର କାମ

ଶିଳା - ପଥର

ଚୂଳ - ଅଗ୍ରଭାଗ

ଭେରୀ - କାହାଳୀ ସଦୃଶ ବାଦ୍ୟଯନ୍ତ୍ର

ଭୀତ - ଭୟ ପାଇବା

ଲଳିତ - ସୁନ୍ଦର

ଗୋରା - ଇଂରେଜମାନେ, ଗୋରା ରଙ୍ଗ

ଶୋଣିତ - ରକ୍ତ, ରୁଧିର, ଲହୁ

ଟେକ - ମର୍ଯ୍ୟାଦା, ବଡ଼ ପଣିଆ

ଶ୍ୟାମଳ ସୁଷମା - ମନଲୋଭା ସବୁଜିମା

ଗିରିନଦୀ - ପାହାଡ, ପର୍ବତରୁ ବହିଆସୁଥିବା ଝରଣା

ଫୁଲେ ଫଳେ ଭରା ଜନନୀ କୋଳ - ଓଡ଼ିଶାର ନଦୀ ଓ ଝରଣା କୂଳରେ ଥିବା ଗଛଲତା ଫୁଲଫଳରେ ହସୁଥାଏ ।

ବଉଦ ସଜାଏ ଗଭା - ମଥାର କେଶ କଳାରଙ୍ଗ, ଏହିପରି ବଉଦ କଳାରଙ୍ଗ ଥିବାରୁ ଆକାଶର କଳାହାଣ୍ଡିଆ ମେଘକୁ ଉତ୍କଳ ଜନନୀର ଗଭା ବୋଲି କୁହାଯାଇଛି ।

ଏଭୂମି ମହିମା ପୁରୀ - ଓଡ଼ିଶାରେ ଅନେକ ଗୌରବମୟ କୀର୍ତ୍ତି ରହିଥିବାରୁ ଏହାକୁ ମହିମାପୁରୀ କୁହାଯାଇଛି ।
ଗିରିଖୋଲ - ପାହାଡ ଗୁମ୍ଫା
ଚାରୁ-କୀରତି-କଳା - ଗର୍ବ କରିବା ପରି ସୁନ୍ଦର କାରୁକାର୍ଯ୍ୟ
କୀରତି-କୁସୁମ-ହାର - ବହୁତ ଫୁଲରେ ମାଳ ଗୁନ୍ଥିବା ପରି ଗୋଟିକ ପରେ ଗୋଟିଏ ଭଲ କାମ କରି ଜନ୍ମଭୂମି ଉତ୍କଳର ସୁନାମ ବୃଦ୍ଧି କରିବା ।

୬. ଅଭ୍ୟାସ

୧. ଶିକ୍ଷକ ଅର୍ଥ ଲେଖୁଥିବା ସମୟରେ ଦୁଇ ଚାରିଜଣ ପିଲାଙ୍କୁ ଡାକି କଳାପଟାରେ ଲିଖିତ ଶବ୍ଦ ତଥା ଅର୍ଥକୁ ପଢାଇବେ ।

୨. ଭକ୍ତକବି, କବିବର, ଉତ୍କଳମଣି, ମହାମହୋପାଧ୍ୟାୟ, ଉତ୍କଳଗୌରବ, କବିସମ୍ରାଟ୍, ଆଖ୍ୟାଗୁଡିକ ଯେଉଁମାନଙ୍କୁ ଦିଆଯାଇଛି, ସେମାନଙ୍କର ନାମ ଶିକ୍ଷକ କଳାପଟାରେ ଲେଖି ପିଲାମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଲେଖାଇବେ ।

୩. ଗୃହକର୍ମରେ କବିତାଗୁଡିକ ମୁଖସ୍ଥ କରିବାକୁ କହିବେ ।

୪. ପଠିତ ପଦ୍ୟରେ ତୁମକୁ ଭଲ ଲାଗୁଥିବା ଧାଡ଼ିଗୁଡ଼ିକ ଆବୃତ୍ତି କର ।

୭. ମୂଲ୍ୟାୟନ

କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଓ ଅଭ୍ୟାସ ଫଳରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କର ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥଜ୍ଞାନ ଓ ଭାବଗତ ଅସ୍ପଷ୍ଟତା ଦୂରୀକରଣ କେତେଦୂର ସଫଳତା ହାସଲ କରିଛି ତାହା ଜାଣିବା ପାଇଁ ଶିକ୍ଷକ ମୌଖିକ ପରୀକ୍ଷା କରିବେ ।

୧. ଏହି ଶବ୍ଦଗୁଡିକର ଅର୍ଥକହ - ଶୋଣିତ, ଗଭା, ସୁଷମା, ଜଠର, ଗିରିଖୋଲ, ଶିଳା, ଲଳିତ, ମହିମା, ଭୀତ, ଟେକ,

୨. ପ୍ରଶ୍ନଗୁଡିକର ଉତ୍ତର କହ ।

କ. ବଉଦ କାହାର ଗଭା ସଜାଇ ଦିଏ ?

ଖ. କବି କାହାକୁ ମହିମା - ପୁରୀ କହିଛନ୍ତି?

ଗ. ଓଡ଼ିଶାର କେଉଁ ମନ୍ଦିରଗୁଡିକରେ ସୁନ୍ଦର କାରୁକାର୍ଯ୍ୟ ଦେଖିବାକୁ ମିଳେ ?

ଘ. ଗୋପବନ୍ଧୁଙ୍କୁ ଆମେ କାହିଁକି ମନେ ରଖିଛୁ ?

ଙ. ଗୋରାମାନେ ଓଡିଶାର କେଉଁ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କୁ ଡ଼ରୁଥିଲେ ?

ଚ. ଧର୍ମପଦ କାହିଁକି ଅମର ହୋଇ ରହିଛନ୍ତି ?

ଛ. ଇଂରେଜ ଫଉଜକୁ ଦେଖି କିଏ ଡ଼ରି ନଥିଲା ?

ପ୍ରସ୍ତାବନା

ପଠିତ କବିତାରେ ନିହିତ ମୂଲ୍ୟବୋଧ ପ୍ରତି ଶିକ୍ଷକ ଦୃଷ୍ଟି ଦେବେ, ଯେପରି ଓଡ଼ିଶାର ଗୌରବାବହ ଅତୀତ ପ୍ରତି ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ସଚେତନ କରିବା, ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ମନରେ ଦେଶପ୍ରେମ ଭାବ ଜାଗ୍ରତ କରିବା, ତ୍ୟାଗ, ବୀରତ୍ୱ, ନିଃସ୍ୱାର୍ଥପରତା ପ୍ରଭୃତି ସଦ୍‌ଗୁଣ ପ୍ରତି ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ମନରେ ଶ୍ରଦ୍ଧାଭାବ ଜାଗ୍ରତ କରିବା ତଥା ସେମାନଙ୍କ ମନରେ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟବୋଧ ସୃଷ୍ଟି କରିବା ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ଭାବ ବିଶ୍ଳେଷଣ ପ୍ରସଙ୍ଗ - ଶପଥ କବିତାର ପଦ୍ୟାଂଶ - ଅଗ୍ନିସମ ଦହିବି ସୁଖେ ସ୍ୱାର୍ଥୀ ଜନ ମିଥ୍ୟା କଥା ନଭର ସମ ସ୍ୱଚ୍ଛ ମୁଖେ ନଥିବ ତିଳେ ହିଂସା ବ୍ୟଥା ।
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀଙ୍କର କାବ୍ୟ ପଠନ ଜନିତ ଭାବ - ଗ୍ରହଣ ଓ ଭାବ - ପ୍ରକାଶ କ୍ଷମତା ବୃଦ୍ଧି କରିବା । ୨.- ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟ ପଦ୍ୟାଂଶର ଭାବ ସମ୍ପ୍ରସାରଣ କରି ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀଙ୍କ ଅବବୋଧରେ ସହାୟତା କରିବା । ୩. ପଠିତ କବିତାର ଆଧାରରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ନିଃସ୍ୱାର୍ଥପରତା, ଉଦାରତା, ସ୍ୱଚ୍ଛତା, ମହାନତା ଆଦି ଉନ୍ନତମାନବିକ ଗୁଣାବଳୀର ସ୍ୱରୂପ ନିର୍ଣ୍ଣୟକରି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ସେଥିରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ କରିବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. ଅଗ୍ନିସମ ଦହିବି ସୁଖେ ସ୍ୱାର୍ଥୀ ଜନ ମିଥ୍ୟା କଥା ନଭର ସମ ସ୍ୱଚ୍ଛ ମୁଖେ ନଥିବ ତିଳେ ହିଂସା ବ୍ୟଥା । ସୂଚିତ ପଦ୍ୟାଂଶର ଭାବ ଗ୍ରହଣରେ ଅସ୍ପଷ୍ଟତା । ୨. ଷଷ୍ଠଶ୍ରେଣୀ ପିଲାମାନଙ୍କ ବୋଧଗମ୍ୟ ସ୍ତର ଅନୁସାରେ ପଦ୍ୟାଂଶଟିର ଭାବକୁ ବ୍ୟକ୍ତ କରିବାରେ ଅସୁବିଧା ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	୧. *କାର୍ଯ୍ୟପଦ୍ଧତି* କ) ପ୍ରଥମେ ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷିକା ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟ ପଦ୍ୟାଂଶଟିକୁ ଉପଯୁକ୍ତ ଭାବ ଓ ଛନ୍ଦରେ ଆବୃତ୍ତି କରିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରିବେ ।

ଖ) ତାପରେ ପିଲାଙ୍କଠାରୁ କଠିନ ଶବ୍ଦଗୁଡିକୁ ଆଦାୟ କରି କଳାପଟାରେ ଲେଖି ତାର ଅର୍ଥ ପ୍ରଦାନ କରିବେ ।

ଗ) ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ପଦ୍ୟାଂଶଟିକୁ ସରଳ ଓ ପ୍ରାଞ୍ଜଳ ଭାବରେ ବ୍ୟାଖ୍ୟା ପୂର୍ବକ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀଙ୍କ ସହଜ ଅବବୋଧରେ ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷିକା ସାହାଯ୍ୟ କରିବେ ।

ଘ) ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ଏହି ପଦ୍ୟାଂଶଟିକୁ ଆବୃତ୍ତି କରିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ କରିବେ । ସେମାନଙ୍କ ଆବୃତ୍ତିରେ ତ୍ରୁଟି ରହିଲେ ଅନ୍ୟ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ସଂଶୋଧନ କରାଇବେ ଏବଂ ଆବଶ୍ୟକ ସ୍ଥଳେ ଶିକ୍ଷିକ ଶିକ୍ଷିକା ନିଜେ ସଂଶୋଧନ କରିବେ ।

୫. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷିକା କେତେକ ଜ୍ଞାନମୂଳକ ଓ ବୋଧପରିମାପକ ପ୍ରଶ୍ନ ସାହାଯ୍ୟରେ ପିଲାଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଭାବ ଆଦାନ - ପ୍ରଦାନର ସୁଯୋଗ ସୃଷ୍ଟି କରିବେ ।

ପ୍ରଶ୍ନ -

୧. ଅଗ୍ନି କଣ କରେ ?

୨. ପିଲାଟି ଅଗ୍ନିପରି କଣ ଦହନ କରିବାକୁ ବା ଜାଳିଦେବାକୁ ଚାହୁଁଛି ?

୩. ପିଲାଟି କାହିଁକି ମିଥ୍ୟା ଓ ସ୍ୱାର୍ଥପରତାକୁ ଜାଳିଦେବାକୁ ଚାହୁଁଛି ?

୪. ପିଲାଟି ଆକାଶଠାରୁ କଣ ଶିଖିବ ?

୫. ବନ୍ଧନୀ ମଧ୍ୟରୁ ଉପଯୁକ୍ତ ଶବ୍ଦ ବାଛି ଶୂନ୍ୟସ୍ଥାନ ପୂରଣ କର ।

କ) ସ୍ୱାର୍ଥପର ଲୋକେ ---- କଥା କହନ୍ତି । (ସତ୍ୟ, ମିଥ୍ୟା, ଭଲ)

ଖ) ଆକାଶ ହେଉଛି ----- । (ଅସୀମ, ସୀମିତ, ସଂକୀର୍ଣ୍ଣ)

ଗ) ------ ଏକ ମହାନ ଗୁଣ । (ସ୍ୱାର୍ଥପରତା, ହିଂସା, ଉଦାରତା)

ଘ) ପିଲାଟି ------ ପରି ମିଥ୍ୟା ଓ ଛଳନାକୁ ଦହନ କରିବ । (ଅଗ୍ନି, ପବନ, ଜଳ)

ଙ) ପିଲାଟି ----- ପରି ସ୍ୱଚ୍ଛ ହେବ । (ନିଆଁ, ଆକାଶ, ପଥର)

୬. ମୂଲ୍ୟାୟନ

ସୂଚିତ ପଦ୍ୟାଂଶର ଭାବ ବିଶ୍ଳେଷଣ ଓ ସ୍ପଷ୍ଟୀକରଣ କାର୍ଯ୍ୟ କେତେଦୂର ସଫଳ ହୋଇଛି ଜାଣିବା ପାଇଁ ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷିକା କେତେକ ସଂକ୍ଷିପ୍ତ ପ୍ରଶ୍ନ ପ୍ରଦାନ କରି ପିଲାଙ୍କଠାରୁ ଉତ୍ତର ଆଦାୟ କରିବେ ।

ପ୍ରଶ୍ନ -

୧. ଅଗ୍ନିସମ ଦହିବି ସୁଖେ
ସ୍ୱାର୍ଥୀଜନ ମିଥ୍ୟା କଥା--- ର ସରଳାର୍ଥ ଲେଖ ।

୨. ନଭର ସମ ସ୍ୱଚ୍ଛ ମୁଖେ
ନଥିବ ତିଳେ ହିଂସା ବ୍ୟଥା - ଉକ୍ତ ପଦ୍ୟାଂଶର ଭାବାର୍ଥ ପ୍ରକାଶ କର ।

୩. ଅଗ୍ନି, ସ୍ୱଚ୍ଛ, ମିଥ୍ୟା, ହିଂସା - ଆଦି ଶବ୍ଦକୁ ବ୍ୟବହାର କରି ବାକ୍ୟଗଠନ କର ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ବିଷୟର ଅନ୍ତର୍ନିହିତ ଭାବ ବିଶ୍ଳେଷଣ ପ୍ରସଙ୍ଗ - ଓଡ଼ିଶାର ସଂସ୍କୃତି
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ପଠିତପ୍ରବନ୍ଧମାଧ୍ୟମରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ଓଡିଶାର ସଂସ୍କୃତି ସହିତ ପରିଚିତ କରାଇବା । ୨. ଓଡ଼ିଶାର ଗୌରବୋଜ୍ଜ୍ୱଳ ଅତୀତ ସହିତ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ପରିଚିତ କରାଇ ସେମାନଙ୍କର ସ୍ୱାଭିମାନ ଜାଗ୍ରତ କରାଇବା । ୩. ଓଡ଼ିଶାବାସୀଙ୍କର ବେଶପୋଷାକ, ଆହାର, ବ୍ୟବହାର, - ଭାଷା, ଧର୍ମ, ଜୀବନଦର୍ଶନ ଓ ଆଦର୍ଶ ସମ୍ପର୍କରେ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ଏକ ସାଧାରଣ ଧାରଣା ଦେଇ ଏ ସବୁର ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ ବିଷୟରେ ସେମାନଙ୍କୁ ଅବହିତ କରାଇବା । ୪. ପ୍ରବନ୍ଧରେ ଥିବା କଠିନ ଶବ୍ଦକୁ ବୁଝିବା ଓ ବ୍ୟବହାର କରିବା ଦ୍ୱାରା ଓଡିଆଭାଷା ସହିତ ପରିଚିତ କରାଇବା ଓ ଭାଷା ବ୍ୟବହାର ଶିଖାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କର ନିଜରାଜ୍ୟର ସଂସ୍କୃତି ବିଷୟରେ ବିଶେଷ ଧାରଣା ନଥିବାରୁ ସେମାନଙ୍କର ସ୍ୱାଭିମାନ ରହୁନାହିଁ । ତେଣୁ ଅନ୍ୟଦ୍ୱାରା ପ୍ରଭାବିତ ହେଉଛନ୍ତି ଏବଂ ପ୍ରାଶ୍ଚାତ୍ୟ ଚାଲିଚଳନ ଆଡ଼କୁ ମୁହାଁଉଛନ୍ତି । ଏହି ସମସ୍ୟା ଦୂର କରିବାପାଇଁ ଓଡ଼ିଶାର ସଂସ୍କୃତି ବିଷୟରେ ସମ୍ୟକ୍ ଧାରଣା ଦେବା ଏକାନ୍ତ ପ୍ରୟୋଜନ ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	ଶିକ୍ଷକ ପ୍ରବନ୍ଧଟି ସରବ ପାଠକରି ପ୍ରଥମେ ପ୍ରବନ୍ଧଆଡ଼କୁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଆକର୍ଷିତ କରିବେ । ଏହାପରେ ସଂସ୍କୃତି କହିଲେ କଣ ତାର ସମ୍ୟକ୍ ଧାରଣା ଦେବେ । ଯେପରି ଗୋଟିଏ ସ୍ଥାନର ଚାଲିଚଳନ, ପରମ୍ପରା, ଆଚାରବ୍ୟବହାର, ପର୍ବପର୍ବାଣିକୁ ସଂସ୍କୃତି କୁହାଯାଏ ।

ବିଷୟରେ ଥିବା ସଂସ୍କୃତିର ସଂଜ୍ଞାକୁ ଶିକ୍ଷକ ବୁଝାଇ କହିବେ ।

୧. ଓଡ଼ିଶା ମହାନ୍ ଭାରତବର୍ଷ ମଧ୍ୟରେ ଏକ ପ୍ରାଚୀନ ସଂସ୍କୃତିସମ୍ପନ୍ନ ରାଜ୍ୟ । ଶିକ୍ଷକ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଏହା ବୁଝାଇବେ । – ଗୋଟିଏ ଜାତି ବା ରାଜ୍ୟ ତାର ସଂସ୍କୃତି ପାଇଁ ପରିଚିତ ହୁଏ ।
୨. ଓଡିଶାର ବୀରତ୍ୱ – ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ଓଡ଼ିଶାର ରଜାମାନଙ୍କର ବୀରତ୍ୱ ବିଷୟରେ ଧାରଣା ଦେବେ । ଧର୍ମପଦର ତ୍ୟାଗ ବିଷୟରେ କହିବେ ।
୩. ବିଶ୍ୱକୁ ଓଡ଼ିଶାର ସାଂସ୍କୃତିକ ଦାନ ଯେପରି ଶାନ୍ତି, ସମତା ଓ ଭ୍ରାତୃତ୍ୱ – ଶିକ୍ଷକ ଏହା ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇବେ ।
୪. ଶିକ୍ଷକ ଓଡ଼ିଶାର ପର୍ବପର୍ବାଣି ବିଷୟରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ କହିବେ । ଓଡ଼ିଆମାନେ ଦେବପୂଜା କରି ବିଶ୍ୱଶାନ୍ତି କାମନା କରନ୍ତି । ଓଡ଼ିଶାର ପର୍ବପର୍ବାଣି କିପରି ଜାତୀୟ ସଂହତିର ସହାୟକ ତାହା ବୁଝାଇବେ ।
୫. ଶିକ୍ଷକ ଓଡ଼ିଶାର ସ୍ଥାପତ୍ୟ ଓ ଭାସ୍କର୍ଯ୍ୟ ବହନ କରିଥିବା ମନ୍ଦିର ବିଷୟରେ କହିବେ । ଆବଶ୍ୟକ ସ୍ଥଳେ ଚିତ୍ରର ସାହାଯ୍ୟ ନେଇ ପାରନ୍ତି ।
୬. ଓଡ଼ିଶାର ସୂକ୍ଷ୍ମଶିଳ୍ପ କଳା ବିଷୟରେ ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ଧାରଣା ଦେବେ ।
୭. ଓଡ଼ିଶାର ବସ୍ତ୍ରଶିଳ୍ପ ବିଷୟରେ ଆଭାଷ ଦିଆଯିବ । ଓଡିଶାର ପ୍ରାଚୀନଯୁଗର ନୌ–ବାଣିଜ୍ୟ ବିଷୟରେ କହି ଶିକ୍ଷକ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରାଚୀନ ଗୌରବ ବିଷୟରେ ଧାରଣା ଦେବେ ।

ପୁସ୍ତକସ୍ଥ ଶବ୍ଦଜ୍ଞାନ

ଭାଷାଶିକ୍ଷକ ହୋଇଥିବାରୁ ଶିକ୍ଷକ ପ୍ରବନ୍ଧରେ ଥିବା କଠିନ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକର ଅର୍ଥ କହିବେ । କଳାପଟାରେ ସେଗୁଡିକୁ ଲେଖି ପିଲାମାନଙ୍କୁ ନିଜନିଜ ଖାତାରେ ଲେଖିବାକୁ କହିବେ ।

୫. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ବିଷୟ ଭିତ୍ତିକ ପ୍ରଶ୍ନ କରି ମୌଖିକ ଓ ତତ୍ ପରେ ଲିଖିତ ଉତ୍ତର ଆଦାୟ କରିବେ ।
ଶବ୍ଦଜ୍ଞାନ ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଥଅବଗତ ହେଲାକି ନାହିଁ ପ୍ରଶ୍ନ କରିବେ । ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକର ସାର୍ଥକ ବାକ୍ୟ ରଚନା କରିବାକୁ ଦେବେ । ଶବ୍ଦ ଓ ତାର ଅର୍ଥ ଦୁଇସ୍ତମ୍ଭରେ ଲେଖି ମିଳାଇବାକୁ କୁହାଯାଇ ପାରେ

ଯେପରି କ ସ୍ତମ୍ଭ ଖ ସ୍ତମ୍ଭ ମିଳାଅ

କ ସ୍ତମ୍ଭ	ଖ ସ୍ତମ୍ଭ
ପ୍ରାଚୀନ	ଉଦାହରଣ
ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ	ପୁରୁଣା
ସୃଜନୀଶକ୍ତି	ସୃଷ୍ଟିକରିବାର ଶକ୍ତି
ଋଦ୍ଧିମନ୍ତ	ଐଶ୍ୱରିକ ଚିନ୍ତାଧାରା
ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତ	ସମୃଦ୍ଧି

ପ୍ରଶ୍ନଉତ୍ତର, ଚିତ୍ରଅଙ୍କା ଇତ୍ୟାଦି ମାଧ୍ୟମରେ ପିଲାଙ୍କ ମନରେ ଓଡ଼ିଶାର ସଂସ୍କୃତି ସମ୍ବନ୍ଧରେ ଧାରଣା ସୃଷ୍ଟି କରାଯିବ । କେହି ଓଡ଼ିଶୀ ଗୀତ ଜାଣିଥିଲେ ବା ନାଚ ଜାଣିଥିଲେ ତାର ନମୁନା ଦେଖାଯାଇ ପାରେ ।

୬. ମୂଲ୍ୟାୟନ

ଅଭ୍ୟାସ ଓ ଆଲୋଚନାଦ୍ୱାରା ପରୀକ୍ଷା ନିରୀକ୍ଷା କଲେ ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ଜ୍ଞାନ ଜାଣିବେ । ଓଡ଼ିଶାର ସଂସ୍କୃତି ସଂପର୍କରେ ସେମାନଙ୍କର ଧାରଣା ଲେଖିବାକୁ କହିବେ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ବ୍ୟାକରଣ ବାଚ୍ୟ
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ବାଚ୍ୟ ସଂପର୍କରେ ଧାରଣା ଦେବା ୨. କାହିଁକି ଓ କିପରି ଗୋଟିଏ କଥାକୁ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ଭଙ୍ଗୀରେ ସଠିକ୍ ଭାବେ କୁହାଯାଇ ପାରେ ଜଣାଇବା । ୩. ଓଡିଆ ଭାଷାର ସଠିକ୍ ଗଠନ ପ୍ରଣାଳୀ ଶିଖାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. ସଂଜ୍ଞା ଅଧିଗତ କରିବାର ସମସ୍ୟା । ୨. କର୍ତ୍ତା, କର୍ମ ଓ କ୍ରିୟା ଜାଣିବା । ୩. କର୍ତ୍ତା, କ୍ରିୟା ଓ କର୍ମ କିପରି ପ୍ରଧାନ ବା ଅପ୍ରଧାନ, ତାହା ଜାଣିବା । ୪. କର୍ତ୍ତାଅନୁଯାୟୀ କିପରି କ୍ରିୟା ହେଲା ବା କର୍ମ ଅନୁଯାୟୀ କ୍ରିୟା ହେଲା, ତାହା ସଠିକ୍ ବାବେ ପିଲାଙ୍କୁ ଅବଗତ କରାଇବା ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	ସଂଜ୍ଞା - କଥା କହିବାର ଢ଼ଙ୍ଗ ବା ଶୈଳୀକୁ ବାଚ୍ୟ କୁହାଯାଏ । ଏହା ତିନିପ୍ରକାରର ୧. କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ ୨. କର୍ମବାଚ୍ୟ ୩. ଭାବବାଚ୍ୟ <u>କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ</u> - ଆମେ ବହି ପଢୁଛୁ । ଏଠାରେ ଆମେ କର୍ତ୍ତା, ବହି କର୍ମ ଓ ପଢୁଛୁ କ୍ରିୟା । ଏହି ବାଚ୍ୟରେ କ୍ରିୟା କର୍ତ୍ତା ଅନୁଯାୟୀ ହୁଏ । କର୍ତ୍ତା ଆମେ ବହୁବଚନରେ ଥିବାରୁ କ୍ରିୟା ବହୁବଚନ ହୋଇ ପଢୁଛୁ ହୋଇଛି । କର୍ତ୍ତା ଯଦି ମୁଁ (ଏକବଚନ) ହୁଏ, କ୍ରିୟା ପଢୁଛି ହେବ । ଏଥିରୁ ଜଣା ଗଲା କ୍ରିୟା, କର୍ତ୍ତା (ଆମେ)

ଅନୁଯାୟୀ ହେଉଛି । ତେଣୁ କର୍ତ୍ତା ପ୍ରଧାନ, କର୍ମ (ବହି) ଅପ୍ରଧାନ ।

<u>କର୍ମବାଚ୍ୟ</u> – କର୍ମବାଚ୍ୟ କର୍ମ ପ୍ରଧାନ । କର୍ତ୍ତା ଅପ୍ରଧାନ (ସ୍ଥଳ ବେଶେଷରେ କର୍ତ୍ତାର ଉଲ୍ଲେଖ ମଧ୍ୟ ରହେନା)
ଉଦାହରଣ – (ଆମର ବା ଆମଦ୍ୱାରା) ବହି ପଢ଼ାହେଉଛି ।
ଏ କ୍ଷେତ୍ରରେ କର୍ତ୍ତାର ପ୍ରାଧାନ୍ୟ ନଥିବାରୁ କେବଳ ବହି ପଢ଼ା ହେଉଛି – କହିଲେ ବି ଚଳିବ ।
କ୍ରିୟା କର୍ମ ଅନୁଯାୟୀ ହୁଏ ।
କର୍ମର ଲିଙ୍ଗ ଓ ବଚନ ଅନୁଯାୟୀ କ୍ରିୟା ହୁଏ ।

କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ	*କର୍ମବାଚ୍ୟ*
ମୁଁ ଭାତ ରାନ୍ଧୁଛି ।	ମୋର (ମୋ ଦ୍ୱାରା) ଭାତ ରନ୍ଧା ଯାଉଛି ।
ସମସ୍ତେ ତା କଥା ଜାଣନ୍ତି	ସମସ୍ତଙ୍କୁ ତା କଥା ଜଣାଅଛି । (ଅଛି କ୍ରିୟାଟି ସମୟେ ସମୟେ ଉହ୍ୟ ରହେ ।)

<u>ଭାବ ବାଚ୍ୟ</u> – ଏଠାରେ ଭାବ ଅର୍ଥ କ୍ରିୟା
ଏହି ବାଚ୍ୟରେ କ୍ରିୟା ପ୍ରଧାନ ।
କର୍ମ ନଥିବା ବାକ୍ୟକୁ କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ ଅଥବା ଭାବବାଚ୍ୟରେ ପ୍ରକାଶ କରାଯାଇ ପାରେ ।
ଉଦାହରଣ – ମୁଁ ଖେଳୁଛି – କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ
ମୋର ଖେଳ ହେଉଛି – ଭାବବାଚ୍ୟ
ତୁମେ ନାଚୁଛ ।
ତୁମର (ତୁମଦ୍ୱାରା) ନାଚ ହେଉଛି ।
ଏକ୍ଷେତ୍ରରେ ଖେଳ, ନାଚ, ପରି ବିଶେଷ୍ୟ ପଦ କ୍ରିୟା ପଦରୁ ଜାତ ବିଶେଷ୍ୟ ପଦ । ଭାବବାଚ୍ୟରେ କ୍ରିୟାଜାତ ବିଶେଷ୍ୟ ପଦ କର୍ତ୍ତା ଭାବେ ବ୍ୟବହୃତ ହୁଏ । ପ୍ରକୃତ କର୍ତ୍ତା (ଯେ କାମଟି କରେ) ସେ ଅପ୍ରଧାନ । କ୍ରିୟା ସର୍ବଦା ତୃତୀୟ

ପୁରୁଷ ଏକ ବଚନ ହୁଏ । କର୍ମବାଚ୍ୟରେ ବା ଭାବବାଚ୍ୟରେ କହିବାର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ କର୍ତ୍ତାକୁ ଗୁରୁତ୍ୱ ନଦେବା ।

୫. **ଅଭ୍ୟାସ**

୧. ଏହି ବିଷୟ ବୁଝିବା ପାଇଁ ବିଭିନ୍ନ ବାକ୍ୟମାଧ୍ୟମରେ ପ୍ରଥମେ କର୍ତ୍ତା, କର୍ମ ଓ କ୍ରିୟା ଜାଣିବାକୁ ଉତ୍ସାହିତ କରିବାକୁ ହେବ ।

୨. ବିଭିନ୍ନ ବାକ୍ୟ ଲେଖି କର୍ମବାଚ୍ୟ, କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ ଓ ଭାବବାଚ୍ୟରେ ଥିବା ବାକ୍ୟକୁ ଚିହ୍ନାଇବାକୁ ହେବ ।

୩. ବିଭିନ୍ନ ବାକ୍ୟ ସାହାଯ୍ୟରେ କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟକୁ କିପରି କର୍ମବାଚ୍ୟ ବା ଭାବବାଚ୍ୟରେ ପରିଣତ କରିବାକୁ ହେବ ଅଭ୍ୟାସ କରିବାକୁ ହେବ । ଏଠାରେ ମନେରଖିବାକୁ ହେବ ଯେ କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ ଥିବା ବାକ୍ୟରେ କର୍ମଥିଲେ ତାହା କର୍ମବାଚ୍ୟରେ ରୂପାନ୍ତରିତ ହୋଇପାରିବ । କର୍ମନଥିଲେ ତାହା ଭାବବାଚ୍ୟରେ ରୂପାନ୍ତରିତ ହୋଇ ପାରିବ ।

ମୁଁ ଭାତ ଖାଉଛି - କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ
ମୋର ଭାତଖିଆ ଯାଉଛି - କର୍ମ ବାଚ୍ୟ
ମୁଁ ଖାଉଛି । - କର୍ତ୍ତୃବାଚ୍ୟ
ମୋର ଖିଆ ହେଉଛି । - ଭାବବାଚ୍ୟ

୬. **ମୂଲ୍ୟାୟନ**

ବାରମ୍ବାର ପରୀକ୍ଷା ଓ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର ମାଧ୍ୟମରେ ପ୍ରଥମେ କର୍ତ୍ତା, କ୍ରିୟା ଓ କର୍ମ ବିଷୟରେ ଧାରଣା କରିବା । ବାକ୍ୟଟି କେଉଁ ବାଚ୍ୟରେ ଅଛି ଚିହ୍ନାଇବାକୁ କହିବା । ବିଭିନ୍ନ ବାକ୍ୟର ବାଚ୍ୟ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବା ।

ବାଚ୍ୟ ଜାଣିବାକୁ ହେଲେ ବାଚ୍ୟର ସଂଜ୍ଞା ଓ ପ୍ରକାରଭେଦ ସଂପର୍କରେ ସମ୍ୟକ୍ ଧାରଣା ନ ରହିଲେ ଜ୍ଞାନ ଅସଂପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ବ୍ୟାକରଣ ସନ୍ଧି - ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧି
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥବୋଧ, ପରିମାର୍ଜନା ଓ ଶବ୍ଦଜ୍ଞାନବୃଦ୍ଧି ୨. କେତେକ ଶବ୍ଦର ଉଚ୍ଚାରଣଗତ ଓ ବନାନଗତ ଅଶୁଦ୍ଧି ଦୂରୀକରଣ । ୩. ବିଶେଷତଃ ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧିରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କର ଅଧିକ ତ୍ରୁଟି ଦୃଷ୍ଟିଗୋଚର ହେଉଥିବାରୁ ସେ ବିଷୟରେ ସ୍ପଷ୍ଟଧାରଣା ପ୍ରଦାନ କରିବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧିର ବିଭିନ୍ନ ନିୟମର ଅବଗତି ଅଭାବରୁ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀଙ୍କର ଉଚ୍ଚାରଣଗତ ଓ ବନାନଗତ ଅଶୁଦ୍ଧି ଦେଖାଇବା । ୨. ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧିର ନିୟମଗୁଡିକ ବୁଝିବାରେ ଅସୁବିଧା । ୩. (ସ + ପ = ସ୍ପ ଓ (ଷ + ପ =) ଷ୍ପର ଯଥା ଯଥ ବ୍ୟବହାରରେ ତ୍ରୁଟି । ୪. କେତେକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରଶ୍ନ - ନିଃ + ଜନ = ନିର୍ଜନ (ନ ରେ ଇ କାର) ନିଃ + ରବ = ନୀରବ (ନରେ ଈ କାର) ଏଭଳି କାହିଁକି ହୁଏ
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	*୧. କାର୍ଯ୍ୟପଦ୍ଧତି* ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧିଗତ ସମସ୍ୟାର ନିରାକରଣ ପାଇଁ ପ୍ରଥମେ ଶିକ୍ଷକ/ ଶିକ୍ଷିକା ସନ୍ଧି ପଢିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ସମ୍ପର୍କରେ ସଂକ୍ଷିପ୍ତ ସୂଚନା ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ତାପରେ ଉଦାହରଣ ଦେଇ ସନ୍ଧିର ସଂଜ୍ଞା, ସ୍ୱରୂପ ଓ ପ୍ରକାରଭେଦ ବୁଝାଇବେ ।

କ୍ରମେ ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧିର ସଂଜ୍ଞା ଓ ସ୍ୱରୂପ ଉଦାହରଣ ସାହାଯ୍ୟରେ ଆଲୋଚନା କରିବେ । ଯଥା –

ନିଶ୍ଚୟ = ନିଃ + ଚୟ
ମନସ୍ତାପ = ମନଃ + ତାପ
ପୁରସ୍କାର = ପୁରଃ + କାର
ନିଷ୍ଫଳ = ନିଃ + ଫଳ
ତପୋବନ = ତପଃ + ବନ
ପୁନର୍ଜନ୍ମ = ପୁନଃ + ଜନ୍ମ
ନିରାଶ = ନିଃ + ଆଶ

ସଂଜ୍ଞା – ଯେଉଁ ସନ୍ଧିରେ ପ୍ରଥମ ଶବ୍ଦର ଶେଷରେ ବିସର୍ଗ(ଃ) ଓ ଦ୍ୱିତୀୟ ଶବ୍ଦର ଆରମ୍ଭରେ ସ୍ୱର ବା ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ ଥାଏ ତାହାକୁ ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧି କୁହାଯାଏ ।

ଏହା ବୁଝାଇବା ବେଳେ ଶିକ୍ଷକ/ ଶିକ୍ଷିକା ଚିହ୍ନଟି ସହିତ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ଅଭ୍ୟସ୍ତ କରାଇବେ ଏବଂ ସ୍ୱରବର୍ଣ୍ଣ ଓ ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣଗୁଡିକୁ କଳାପଟାରେ ଲେଖି ସେସମ୍ପର୍କରେ ପିଲାମାନଙ୍କର ପୂର୍ବଜ୍ଞାନର ପରୀକ୍ଷା କରିନେବେ ।

କ୍ରମଶଃ ଶିକ୍ଷକ/ ଶିକ୍ଷିକା ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧିର ବିଶେଷ ନିୟମଗୁଡ଼ିକ ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତ ସାହାଯ୍ୟରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ସମକ୍ଷରେ ଉପସ୍ଥାପନ କରିବେ । ଅର୍ଥଅବବୋଧ ବିଷୟ ପ୍ରବେଶ ନିମନ୍ତେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କର ସହାୟକ ହେଉଥିବାରୁ ଶିକ୍ଷକ ଏଥିପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି ଦେବେ ।

କ) ନିଃ + ଚୟ = ନିଶ୍ଚୟ
ଦୁଃ + ଚିନ୍ତା = ଦୁଶ୍ଚିନ୍ତା
ବିସର୍ଗ (ଃ) ପରେ 'ଚ' ବା 'ଛ' ଥିଲେ ଉଭୟ ମିଶି 'ଶ୍ଚ' ବା 'ଶ୍ଛ' ହୁଏ ।

ଖ) ମନଃ + ତାପ = ମନସ୍ତାପ
ନିଃ + ତେଜ = ନିସ୍ତେଜ
ବିସର୍ଗ (ଃ) ପରେ ତ ଥିଲେ ଉଭୟ ମିଶି 'ସ୍ତ' ହୁଏ ।

ଗ) ବାଚଃ + ପତି = ବାଚସ୍ପତି
ପୁରଃ + କାର = ପୁରସ୍କାର
ବିସର୍ଗ (ଃ) ପରେ 'ପ' ବା 'କ' ଥିଲେ ଉଭୟ ମିଶି 'ସ୍ପ' ବା 'ସ୍କ' ହୁଏ ।

ଘ) ନିଃ + ପାପ = ନିଷ୍ପାପ
- ନିଃ + କାମ = ନିଷ୍କାମ
ନିଃ + ଫଳ = ନିଷ୍ଫଳ
ଯଦି ବିସର୍ଗ (ଃ) ପୂର୍ବରୁ 'ଇ' ବା 'ଉ' ଥାଏ ତେବେ ତା ସହିତ ପ, ଫ ବା କ ମିଶି ଷ୍ପ, ଷ୍ଫ ବା ଷ୍କ ହୁଏ ।

ଏଠାରେ ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷିକା ପୂର୍ବ ନିୟମ ସହ ଏହି ନିୟମକୁ ତୁଳନା କରି ସ୍ପଷ୍ଟ କରିବେ ।

ଯଥା - ପୁରଃ + କାର = ପୁରସ୍କାର
କିନ୍ତୁ ପରିଃ + କାର = ପରିଷ୍କାର

ଙ) ମନଃ + ରମ = ମନୋରମ
ଅଧଃ + ଗତି = ଅଧୋଗତି
ମନଃ + ହର = ମନୋହର
ତପଃ + ବନ = ତପୋବନ

ବିସର୍ଗ (ଃ) ପୂର୍ବରୁ ଅ ଓ ବିସର୍ଗ (ଃ) ପରେ ବର୍ଗର ତୃତୀୟ, ଚତୁର୍ଥ, ପଞ୍ଚମ ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବା ର, ହ ଥିଲେ ବିସର୍ଗ(ଃ) ଓ ଅ ମିଶି ଓ ହୋଇ ବିସର୍ଗପୂର୍ବ ବ୍ୟଞ୍ଜନ ସହ ଯୁକ୍ତ ହୁଏ ।

ଚ) ପୁନଃ + ଉକ୍ତି = ପୁନରୁକ୍ତି
ସ୍ୱଃ + ଗତ = ସ୍ୱର୍ଗତ
ଅନ୍ତଃ + ଯାମୀ = ଅନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀ
ଦୁଃ + ଅଭିସନ୍ଧି = ଦୁରଭିସନ୍ଧି
ଚତୁଃ + ଦିଗ = ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗ
ଆବିଃ + ଭାବ = ଆବିର୍ଭାବ
ନିଃ + ଅନ୍ତର = ନିରନ୍ତର

ପୁନଃ, ଅନ୍ତଃ, ସ୍ୱଃ, ଚତୁଃ, ଦୁଃ, ଆବିଃ, ନିଃ ପ୍ରଭୃତି କେତେକ ଶବ୍ଦ ପରେ ସ୍ୱରବର୍ଣ୍ଣ ବା ବର୍ଗର ତୃତୀୟ, ଚତୁର୍ଥ, ପଞ୍ଚମ ବ୍ୟଞ୍ଜନ, ବା ଯ, ଲ, ହ, ଥିଲେ ବିସର୍ଗ(ଃ) ର ରେ ପରିଣତ ହୁଏ । ଏହି ର ପରବର୍ତ୍ତୀ ସ୍ୱର ସହିତ ଯୁକ୍ତ ହୁଏ। ପରେ ବ୍ୟଞ୍ଜନ ଥିଲେ ସେହି ବ୍ୟଞ୍ଜନ ଉପରେ ରେଫ୍(ର୍ଁ) ରୂପେ ଲିଖିତ ହୁଏ ।

ଛ) ନିଃ ପରେ ର୍ ଥିଲେ ନିଃ ସ୍ଥାନରେ ନୀ ହୁଏ । କାରଣ ଏ କ୍ଷେତ୍ରରେ ପୂର୍ବ ନିୟମାନୁସାରେ ର ରେ ରେଫ୍ (ର୍ଁ) କରାଯାଇପାରିବ ନାହିଁ ।

ଉ- ନିଃ + ରସ = ନୀରସ
ନିଃ + ରୋଗ = ନୀରୋଗ
ନିଃ + ରବ = ନୀରବ

୫. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

୧. ନିମ୍ନଲିଖିତ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକର ସନ୍ଧି ବିଚ୍ଛେଦ କର ।

ତିରସ୍କାର, ନିଷ୍କାମ, ନିରାଡ଼ମ୍ବର, ନିରଳସ, ଆଶୀର୍ବାଦ, ନମସ୍କାର, ଦୁର୍ନୀତି, ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧାନ, ଦୁର୍ମୂଲ୍ୟ, ଦୁଷ୍ପ୍ରାପ୍ୟ ।

ଉତ୍ତର ତିରଃ + କାର, ନିଃ + କାମ, ନିଃ + ଆଡ଼ମ୍ବର, ନିଃ + ଅଳସ, ଆଶୀଃ + ବାଦ, ନମଃ + କାର, ଦୁଃ+ ନୀତି, ଅନ୍ତଃ + ଧାନ, ଦୁଃ + ମୂଲ୍ୟ, ଦୁଃ + ପ୍ରାପ୍ୟ

୨. ନିମ୍ନ ଲିଖିତ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକୁ ସନ୍ଧି କରି ଶବ୍ଦ ଗଠନ କର ।

ମନଃ + କାମନା	ନମଃ + ତେ
ଦୁଃ + ଅବସ୍ଥା	ଦୁଃ + ଗତି
ଶିରଃ + ଛେଦ	ଇତଃ + ତତଃ
ପରିଃ + କୃର	ଶିରଃ + ମଣି
ନିଃ + ଉକ୍ଷଣ	ନିଃ + ରନ୍ଧ୍ର

୬. ଅଭ୍ୟାସ

ଶ୍ରେଣୀ ପାଠ୍ୟରେ ଥିବା ବିସର୍ଗ ସନ୍ଧିଗତ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକୁ ବାଛି ଲେଖିବା ପାଇଁ ଓ ସେଗୁଡ଼ିକର ସନ୍ଧିବିଚ୍ଛେଦ କରିବାପାଇଁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦିଆଯିବ ଓ ଆବଶ୍ୟକ ସ୍ଥଳେ ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷିକା ସାହାଯ୍ୟ କରିବେ ।

୭. ମୂଲ୍ୟାୟନ

କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଓ ଅଭ୍ୟାସ ଫଳରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କର ସନ୍ଧିଗତ ସମସ୍ୟାର କେତେଦୂର ନିରାକରଣ ସମ୍ଭବ ହୋଇଛି ଜାଣିବା ପାଇଁ, ତାହା ମୌଖିକ ଓ ଲିଖିତ ପରୀକ୍ଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଶିକ୍ଷକ/ ଶିକ୍ଷିକା ଜାଣିବେ ।

ଭ୍ରମ ସଂଶୋଧନ କରି ସନ୍ଧିବିଚ୍ଛେଦ କର -

ଦୁରାବସ୍ଥା, ତପବନ, ପୁରଷ୍କାର, ନିରୋଗ, ବାଚଷ୍ପତି, ଆର୍ଶୀବାଦ, ନୀତେଜ, ନୀରାଶ, ବହିଷ୍କାର, ଅନ୍ତରଗତ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ଭାବ ବିଶ୍ଳେଷଣ ବିଷୟ - ମାଟିର ମଣିଷ ଶ୍ରେଣୀ - ୭ମ
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. କବିତାର ଭାବକୁ ଅବବୋଧ କରେଇବା । ୨. କଠିନ ପଦ୍ୟାଂଶ ଗୁଡ଼ିକର ଭାବକୁ ବିଶ୍ଳେଷଣ କରି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ଅବବୋଧ କରାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. ଶ୍ରେଣୀ ଗୃହରେ ଭାବକୁ ସଂପ୍ରସାରଣ କରିବାରେ ଅସୁବିଧା । ଯଥା - ତାହାରି ଯୋଗେ ବଞ୍ଚିରହେ ସୃଷ୍ଟି କାଳେ କାଳେ ନନ୍ଦନର ଗନ୍ଧ ଛୁଟେ ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣ କ୍ଷେତମାଳେ । ୨. କଠିନ ପଦଗୁଡିକୁ ବିଶ୍ଳେଷଣ କରିବାରେ ସମସ୍ୟା. ଯଥା - ପଉଷ ପ୍ରାତ - ପଦୁଅଁ ପରି ବାଧକା ଶିଶୁ ବକ୍ଷେ ଧରି ଗୃହିଣୀ ତାର ଦେବତା ପଦେ ଆୟୁଷ ଖାଲି ମାଗେ ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	୧. କାର୍ଯ୍ୟ ପଦ୍ଧତି - (କ) ଭାବକୁ ସଂପ୍ରସାରଣ କରି ସରଳ ଭାଷାରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇବା ଯଥା - "କୃଷକ ଦିନରାତି ପରିଶ୍ରମ କରି ଫସଲ ଉପୁଜାଇ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଆହାର ଯୋଗାଇ ଥାଏ । ତେଣୁ କୃଷକ ଯୋଗୁ ସମସ୍ତେ ଖାଦ୍ୟ ପାଇଥାନ୍ତି ଓ ଆନନ୍ଦିତ ହୋଇଥାନ୍ତି । ତେଣୁ କୃଷକ ଯୋଗୁ ଏ ସୃଷ୍ଟି ବା ସଂସାର ଯୁଗ ଯୁଗ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବଞ୍ଚିରହି ଥାଏ । ପରୋକ୍ଷରେ କୃଷକ ହିଁ ସଂସାରକୁ ବଞ୍ଚାଇ

ରଖିଥାଏ । କୃଷକ ହିଁ ପୃଥିବୀ ପୃଷ୍ଠରେ ସ୍ୱର୍ଗର ରାଜ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କରିଥାଏ । ଅର୍ଥାତ୍ କୃଷକ ସୁନାର ଫସଲ ଉପୁଜାଇ ପୃଥିବୀରେ ନନ୍ଦନବନ ବା ସ୍ୱର୍ଗ ରାଜ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କରିଥାଏ ।"

(ଖ) କାବ୍ୟାଂଶ ଗୁଡ଼ିକରେ ଥିବା କଠିନ ଶବ୍ଦ ଗୁଡିକର ଅର୍ଥକୁ ଠିକ୍ ଭାବରେ ବୁଝାଇ କଳାପଟାରେ ଲେଖିବା ଯଥା - ନନ୍ଦନ - ସ୍ୱର୍ଗ, ସୃଷ୍ଟି - ସଂସାର, ପଉଷପ୍ରାତ ପଦ୍ମ - ପଉଷମାସରେ ଫୁଟିଥିବା ପଦ୍ମଫୁଲ, ବାଧକା ଶିଶୁ - ରୋଗୀଣା ପିଲା ଇତ୍ୟାଦି ।

(ଗ) କାବ୍ୟାଂଶରେ ଥିବା ଶବ୍ଦଗୁଡିକ ସହିତ କବିତାର ସାମଗ୍ରିକ ଭାବକୁ ସଂଯୋଜିତ କରି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ସେ ବିଷୟରେ ଅବଗତ କରାଇବା । ଯଥା -

୧. ନନ୍ଦନବନ କହିଲେ ସ୍ୱର୍ଗରାଜ୍ୟ । ପୁରାଣରେ କଥିତ ଅଛିଯେ, ସ୍ୱର୍ଗରାଜ୍ୟରେ ଦେବତାମାନେ ବାସ କରନ୍ତି, ତେଣୁ ସ୍ୱର୍ଗରେ ସର୍ବଦା ଖୁସି ବା ଆନନ୍ଦ ବିରାଜମାନ କରିଥାଏ । ଠିକ୍ ସେହିପରି କୃଷକ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଆହାର ବା ଖାଦ୍ୟ ଯୋଗାଇ ଆନନ୍ଦ ଦେଇଥାଏ । ତେଣୁ କୃଷକ ଯୋଗୁ ହିଁ ଏହି ପୃଥିବୀରେ ସ୍ୱର୍ଗରାଜ୍ୟ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହୋଇଥାଏ । ପରୋକ୍ଷରେ କୃଷକ ହିଁ ମର୍ତ୍ତ୍ୟ ମଣ୍ଡଳରେ ସ୍ୱର୍ଗ ରାଜ୍ୟର ଆନନ୍ଦ ସୃଷ୍ଟି କରିଥାଏ ।

୨. ପଉଷମାସରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୀତ ଓ କାକର ପଡ଼ିଥାଏ, ତେଣୁ ଶୀତ ଋତୁ ହେତୁ ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କ କିରଣ ଠିକ୍ ଭାବରେ ପୃଥିବୀ ପୃଷ୍ଠରେ ପଡ଼େନାହିଁ । ତେଣୁ ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କ କିରଣ ବିନା ପଦ୍ମଫୁଲ ଫୁଟିପାରେ ନାହିଁ । ପଦ୍ମଫୁଲ ଫୁଟିବା ପୂର୍ବରୁ କଢ଼ ଅବସ୍ଥାରେ ନଷ୍ଟହୋଇଯାଇଥାଏ । ଠିକ୍ ସେହିପରି କୃଷକର ଶିଶୁଟି ଅର୍ଥାଭାବ ହେତୁ ଉପଯୁକ୍ତ ଚିକିତ୍ସା ନପାଇ ରୋଗରେ ପଡ଼ିଥାଏ । ତେଣୁ ପଉଷମାସର ମଳିନ ପଦ୍ମପରି କୃଷକର ରୋଗିଣା ଶିଶୁକୁ ତାର ମାଆ (କୃଷକର ସ୍ତ୍ରୀ) କୋଳରେ ଧରି ତାର ଆରୋଗ୍ୟ କାମନା କରି ଦେବତାଙ୍କୁ ମନେମନେ ଡ଼ାକୁଥାଏ ।

୫.	**କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ**	କ) ଭାବ ଅବବୋଧ ଜାଣିବା ନିମନ୍ତେ କେତେକ ପ୍ରଶ୍ନ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ପଚାରିବା ଯଥା - ୧. ପୃଥିବୀରେ ନନ୍ଦନବନ କିଏ ସୃଷ୍ଟି କରିଥାଏ ? ୨. କାହା ଯୋଗୁ ସୃଷ୍ଟି ବଞ୍ଚିରହେ ? ୩. ପଉଷ ପ୍ରାନ୍ତ ପଦୁଅଁ କହିଲେ କଣ ବୁଝ ? ୪. କୃଷକର ଶିଶୁଟି କାହିଁକି ରୋଗୀଣା ହୋଇଥାଏ ? ୫. ପଉଷ ମାସର ପଦ୍ମ ସହିତ କାହାକୁ ତୁଳନା କରାଯାଏ ? ଖ) କେତେକ କଠିନ ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ ଲେଖି ତାହାକୁ ସାର୍ଥକ ବାକ୍ୟରେ ବ୍ୟବହାର କର । ଯଥା - ନନ୍ଦନବନ, କ୍ଷେତମାଳ, ବାଧିକାଶିଶୁ, ଆୟୁଷ ଇତ୍ୟାଦି ଗ) ନିମ୍ନଲିଖିତ ପଦଗୁଡ଼ିକୁ ସରଳ ଭାଷାରେ ବୁଝାଇ ଲେଖ । ଯଥା - ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣକ୍ଷେତମାଳ, ପଉଷପ୍ରାନ୍ତ, ପଦୁଅଁ, ବାଧିକା ଶିଶୁ ବକ୍ଷେଧରି ଇତ୍ୟାଦି ।
୬.	ଅଭ୍ୟାସ	୧. କବିତାର କଠିନ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକୁ ମନେ ରଖିବାପାଇଁ ପଦଗୁଡ଼ିକୁ ବାରମ୍ବାର ଆବୃତ୍ତି କରି ଲେଖିବାକୁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦିଆଯିବ । ୨. ଏହି କବିତାର ଅନ୍ୟ ପଦଗୁଡ଼ିକ ବା ତୁମ ସାହିତ୍ୟବହିର ଅନ୍ୟ କବିତାର ପଦଗୁଡିକ ମଧ୍ୟରେ ଥିବା କଠିନ ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ ଲେଖି ତାହାକୁ ସରଳ ଭାଷାରେ ବ୍ୟାଖ୍ୟା କର ।
୭.	ମୂଲ୍ୟାୟନ	ବିଭିନ୍ନ ମୌଖିକ ଓ ଲିଖିତ ପ୍ରଶ୍ନ ମାଧ୍ୟମରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କର ଅବବୋଧର ସାମର୍ଥ୍ୟକୁ ଶିକ୍ଷକମାନେ ମୂଲ୍ୟାୟନ କରିବେ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ଭାବ କାଠିନ୍ୟ ଦୂରୀକରଣ ବିଷୟ : ଶୋଭା ଭକ୍ତ କବି ମଧୁସୂଦନ ରାଓ କଠିନ ପଦ୍ୟାଂଶର ବିଶ୍ଳେଷଣ ୧. ଆଲୋକର ଧାରା ଧରା ଶରୀରେ ଜ୍ୱାଳୁଥାଏ ସତୀ ପ୍ରେମ ବିଧିରେ । ୨. ଶୋଭାରାଣୀର ସେ ଜ୍ୟୋତି ସଞ୍ଚାରେ ବହଇ ଜୀବନସ୍ରୋତ ସଂସାରେ ୩. ବିଜେ ଶୋଭାରାଣୀ ରୂପ ବିଭବେ ସ୍ଥିର ସୌଦାମିନୀ ପ୍ରାୟେ ଏ ଭବେ । ୪. ଦିବାବିସବରୀ ବନ୍ଦନା ଗାନ ।
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ଶୋଭା କବିତାରେ ବର୍ଣ୍ଣିତ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରାକୃତିକ ଅନୁଷଙ୍ଗ ବିଷୟରେ ପିଲାଙ୍କୁ ବୁଝାଇବା । ୨. ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରାକୃତିକ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ଓ ବିଭାବର ନାମ ବୁଝାଇବା ପାଇଁ କବିତାରେ ପ୍ରଦତ୍ତ ଶବ୍ଦର ବିଭିନ୍ନ ଅର୍ଥ ଓ ତାର ସମାର୍ଥ ବୋଧକ ଶବ୍ଦ ବ୍ୟାଖ୍ୟା କରିବା । ୩. ଉପରୋକ୍ତ ପଂକ୍ତିଗୁଡ଼ିକର ଅର୍ଥ ବୁଝାଇ ତାହା ମାଧ୍ୟମରେ କବିତାର ମାସଗ୍ରିକ ଅର୍ଥବୋଧପାଇଁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ସମର୍ଥ କରିବା ଓ ନିଜଭାଷାରେ କବିତାର ସାରାଂଶ ସେମାନେ କିପରି ପ୍ରକାଶ କରି ପାରିବେ ସେଥିପାଇଁ ସେମାନଙ୍କୁ ସାହାଯ୍ୟ କରିବା ।

୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	କିଛି କିଛି ସ୍ଥାନରେ ଭାବ ବୁଝାଇବା କଷ୍ଟହୁଏ । ଯେପରି *ସତୀପ୍ରେମ ବିଧିରେ* – (ଏଠାରେ ସତୀ ଧାରଣା ସୃଷ୍ଟିହେବା କଠିନ) *ଜୀବନସ୍ରୋତ ସଂସାରେ* – ଜୀବନ ସ୍ରୋତର ବ୍ୟାପକତା ବୁଝାଇବାକୁ ହେବ । ଯେପରି ଜୀବନର ଅଙ୍ଗ (ଆଲୋକ, ପାଣି, ପବନ, ବୃକ୍ଷଲତା, ପଶୁପକ୍ଷୀ ଇତ୍ୟାଦି) । *ସ୍ଥିର ସୌଦାମିନୀ* – କାହିଁକି ଦିବାଲୋକକୁ ସ୍ଥିର ସୌଦାମିନୀ କୁହାଯାଇଛି । *ଦିବା ବିଭାବରୀ ବନ୍ଦନାଗାନ* – ପକ୍ଷୀକାକଳିକୁ ବୁଝାଉଛି ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	ଶବ୍ଦାର୍ଥ ସହିତ ଭାବାର୍ଥ ବୁଝାଇବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରିବେ । (ଆଲୋକର ଧାରା ଧରା ଶରୀରେ ଢ଼ାଳୁଥାଏ ସତୀ ପ୍ରେମ ବିଧିରେ ।) ସତୀ ପ୍ରେମ ବିଧିରେ – ଏଠାରେ ପ୍ରାକୃତିକ ଶୋଭାକୁ ଏକ ସତୀ ନାରୀର ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଛି । ସତୀନାରୀ ସ୍ୱାମୀକୁ ସର୍ବଦା ପ୍ରେମ ଦାନ କରେ । (ସତୀ ଶବ୍ଦ ବ୍ୟାଖ୍ୟା ପିଲାଙ୍କ ପାଇ କଠିନ) (ଶୋଭାରାଣୀର ସେ ଜ୍ୟୋତି ସଞ୍ଚାରେ ବହଇ ଜୀବନ ସ୍ରୋତ ସଂସାରେ ।) – ଏଠାରେ ଦିବାଲୋକ ପୃଥିବୀର ପ୍ରତିଟି କ୍ଷେତ୍ରକୁ ପ୍ରଭାବିତ କରୁଛି ତାହା ବୁଝାଇବାକୁ ହେବ । ଜୀବନ-ସ୍ରୋତର ଭାବ ବୁଝିବା କଠିନ । ଜୀବନ ସ୍ରୋତ କହିଲେ ପାଣି, ପବନ, ମାଟି, ଶସ୍ୟ ଇତ୍ୟାଦିକୁ ବୁଝାଏ । ଦିନରେ ସୂର୍ଯ୍ୟାଲୋକ ଜୀବନର ପ୍ରତିକ୍ଷେତ୍ରକୁ ସ୍ପର୍ଶ କରେ । (ବର୍ଣ୍ଣଶୋଭାରାଣୀ ରୂପବିଭବେ ସ୍ଥିର ସୌଦାମିନୀ ପ୍ରାୟେ ଏଭବେ ।) ମେଘରେ ପ୍ରକାଶିତ ବିଜୁଳୀ ତାର ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ୱାରା ଦର୍ଶକର ମନ ଆକର୍ଷଣ କରେ । କିନ୍ତୁ ଏହା ଅସ୍ଥିର । ଏଠାରେ ଦିବାଲୋକର ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ବିଜୁଳିର ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ପରି ଆକର୍ଷଣୀୟ । କିନ୍ତୁ ତାହା ଅଧିକସ୍ଥାୟୀ ବୋଲି ତାକୁ ସ୍ଥିର ସୌଦାମିନୀ ବୋଲି ବର୍ଣ୍ଣନା କରାଯାଇଛି ।

ଦିବା ବିଭାବରୀ ବନ୍ଦନା ଗାନ - ଅର୍ଥ ସକାଳେ ଓ ସନ୍ଧ୍ୟା ସମୟରେ ଐକ୍ୟତାନରେ ଯେଉଁ ଶବ୍ଦ କରନ୍ତି ତାହାକୁ ବୁଝାଯାଉଛି ।

୫. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

ପ୍ରଶ୍ନ ଉତ୍ତର ମାଧ୍ୟମରେ ଭାବାର୍ଥଗୁଡ଼ିକୁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଲେଖିବାକୁ ଓ କହିବାକୁ ଦିଆଯିବ ।

ଯେପରି ପ୍ରଶ୍ନ

୧. ସତୀପ୍ରେମ କହିଲେ କଣ ବୁଝ ?

୨. କାହାକୁ ସତୀପ୍ରେମ ସହିତ ତୁଳନା କରାଯାଇଛି ?

୩. ଦିବସର ଶୋଭା କାହାଉପରେ ଆଲୋକ ଢାଳେ ?

୪. କାହାକୁ ସ୍ଥିର ସୌଦାମିନୀ କୁହାଯାଇଛି ଓ କାହିଁକି କୁହାଯାଇଛି ?

୫. କ) କିଏ ଦିବା ବିଭାବରୀ ବନ୍ଦନାଗାନ କରେ ?

ଖ) କେତେବେଳେ ସେମାନେ ଗାନ କରନ୍ତି ?

ଉ. କ) ପକ୍ଷୀମାନେ

ଖ) ସକାଳେ ଓ ସଂଧ୍ୟାବେଳେ

୬. କ) କବିତାର ସାରାଂଶ ଲେଖିବାକୁ ଦେବାଉଚିତ ।

ଖ) ପାଠ୍ୟରୁ କଠିନ ଶବ୍ଦ ବାଛି ତାହାର ବ୍ୟବହାର ପାଇଁ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀମାନଙ୍କୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବା ଉଚିତ । ଯେପରି - ଫେଡି, ଭୁବନ, ଶର୍ବରୀ, ପ୍ରାଚୀ, ବେହରଣ ଇତ୍ୟାଦି ।

୭. କବିତାଟିକୁ ମୁଖସ୍ଥ କରିବା ଓ ଆବୃତ୍ତି କରିବା ମାଧ୍ୟମରେ କବିତାଟି ବୁଝିବା ଓ ଉପଭୋଗ କରିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରିବେ ।

୮. ସମଗ୍ର କବିତାରେ ପ୍ରକୃତିର ଯେଉଁ ଉପାଦାନଗୁଡ଼ିକ ଉଲ୍ଲେଖ ରହିଛି ତାହାକୁ ବୁଝି, ପ୍ରକୃତିକୁ ବୁଝିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରିବା ।

୬. ମୂଲ୍ୟାୟନ

ମୌଖିକ ଓ ଲିଖିତ ପରୀକ୍ଷାଦ୍ୱାରା ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ସାମର୍ଥ୍ୟ ମୂଲ୍ୟାୟନ କରିବେ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ପଠନ ସମସ୍ୟାର ନିରାକରଣ 'ଏ ଯୁଗର ବିଶଲ୍ୟକରଣୀ' ବିଷୟକୁ ଆଧାର କରି ଉଚ୍ଚପଠନ ଓ ନିରବପଠନ ଉଭୟରେ ସମସ୍ୟାର ଦୂରୀକରଣ ।
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ଭାଷା ଅଧ୍ୟୟନରେ ପଠନର ପ୍ରୟୋଜନୀୟତା ଓ ଗୁରୁତ୍ୱ ବିଷୟରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇବା । ୨. ଉଚ୍ଚ ପଠନ ବେଳେ ପିଲାମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ସୃଷ୍ଟି ହେଉଥିବା ଉଚ୍ଚାରଣଗତ ତ୍ରୁଟି ଦୂର କରିବା ପାଇଁ ସମାଧାନର ସୂତ୍ର ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କରାଇବା । ୩. ନିରବ ପଠନର ଆବଶ୍ୟକତା ବିଷୟରେ ବୁଝାଇ, ଏହା ବିଷୟଟିକୁ ହୃଦୟଙ୍ଗମ କରିବାରେ କିପରି ସାହାଯ୍ୟ କରିଥାଏ ପ୍ରୟୋଗାତ୍ମକ ଭାବରେ ତାହାକୁ ଦେଖାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. କେତେକ ବିଜ୍ଞାନ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ପାରିଭାଷିକ ଶବ୍ଦର ବ୍ୟବହାର ହେତୁ ଉଚ୍ଚାରଣରେ ସମସ୍ୟା । ଯଥା - ଜୋସେଫ ଲିଷ୍ଟର, ହାଓାର୍ଡଫ୍ଲୋରେ, କାର୍ବୋଲିକ୍ ଏସିଡ୍, ଲିଉକୋସାଇଟ ପେନସିଲିନ୍ ନୋଟେଟମ୍ ଇତ୍ୟାଦି । ୨. ପରିବେଶର ଭାଷା ଭିନ୍ନ ହେତୁ ପଠନ ସମୟରେ ଶବ୍ଦ ଉଚ୍ଚାରଣ ବେଳେ ବଙ୍ଗୀୟ ଭାଷିକ ଶୈଳୀ ଓ ସ୍ୱରାଘାତର ପ୍ରଭାବ । ୩. ବୈଜ୍ଞାନିକ ପ୍ରବନ୍ଧ ହେତୁ ପାଠଦାନ ସମୟରେ ଶ୍ରେଣୀଗୃହରେ ଆଗ୍ରହ ପ୍ରକାଶରେ ବାଧାସୃଷ୍ଟି ।

୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	୧. କାର୍ଯ୍ୟ ପଦ୍ଧତି

କ) ବୈଜ୍ଞାନିକ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକର ଠିକ୍ ଭାବରେ ଉଚ୍ଚାରଣ କରି ଶିକ୍ଷକ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବାରମ୍ବାର ଉଚ୍ଚପଠନ କରାଇବା ଓ ଏହି ବୈଜ୍ଞାନିକ ଶବ୍ଦ ଗୁଡ଼ିକ ସହଜକରି ବୁଝାଇବା। ଯଥା -

ଲିଉକୋସାଇଟ୍ - ଲିଉକୋସାଇଟ୍ କହିଲେ ଆମ ରକ୍ତରେ ଥିବା ଶ୍ୱେତ ରକ୍ତ କଣିକା, ଯେଉଁମାନେ ଆମ ଦେହକୁ ବାହ୍ୟ ରୋଗଆକ୍ରମଣରୁ ରକ୍ଷା କରିଥାନ୍ତି । ତେଣୁ ଏଗୁଡ଼ିକ ହେଉଛି ଆମ ଦେହର ପ୍ରାକୃତିକ ରକ୍ଷାକାରୀ ।

କାର୍ବୋଲିକ୍ ଏସିଡ୍ - ଏହା ଏକ କୃତ୍ରିମ ବିଶୋଧକ ବା ରାସାୟନିକ ବିଶୋଧକ । ଯାହା ରୋଗ ବୀଜାଣୁମାନଙ୍କୁ ଧ୍ୱଂସ କରିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରିଥାଏ ।

ଲାଇସୋଜାଇମ୍ - ଏହା ଏକ ପ୍ରାକୃତିକ ବେଶୋଧକ । ଆଲେକ୍‌ଜାଣ୍ଡାର ଫ୍ଲେମିଙ୍ଗ ଏହାକୁ ଆବିଷ୍କାର କରିଥିଲେ । ଏହି ପ୍ରାକୃତିକ ବିଶୋଧକଟି ମଣିଷ ଶରୀରର ବିଭିନ୍ନ ଅଙ୍ଗରେ ରହିଥାଏ । କନ୍ଦିଲା ବେଳେ ଆଖିର ଲୁହରେ ଓ ସର୍ଦ୍ଦି ସମୟରେ ନାକରୁ ବାହାରୁଥିବା ଶ୍ଲେଷ୍ମାରେ ଯଥେଷ୍ଟ ପରିମାଣରେ ଥାଏ । ଏହା ଏକ ଶକ୍ତିଶାଳୀ ବିଶୋଧକ ନ ହେଲେ ହେଁ ସର୍ବପ୍ରଥମ ପ୍ରାକୃତିକ ବିଶୋଧକ ।

୨. ପଠନରେ ବଙ୍ଗୀୟ ଭାଷାଶୈଳୀ ଓ ସ୍ୱରାଘାତ ଦୂର କରିବା ପାଇଁ ବାରମ୍ବାର ଉଚ୍ଚପଠନ ମାଧ୍ୟମରେ ତାହାକୁ ଶୁଦ୍ଧ କରାଇବା ।

୩. ବୈଜ୍ଞାନିକ ପ୍ରବନ୍ଧଗୁଡ଼ିକୁ ଆକର୍ଷଣୀୟ କରିବାପାଇଁ ବିଭିନ୍ନ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଆବିଷ୍କାରର କାହାଣୀ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଶୁଣାଇବା । ଯଥା - ସାର ରାଇଟ୍ ଭାତୃଦ୍ୱୟଙ୍କର ଉଡ଼ାଜାହାଜ ଆବିଷ୍କାର, ଜନ ବେୟର୍ଡଙ୍କର ଟେଲିଭିଜନ ଆବିଷ୍କାରର କାହାଣୀ, ଗାଲିଲିଓଙ୍କର ଦୂରବୀକ୍ଷଣ ଯନ୍ତ୍ର ଆବଷ୍କାରର କାହାଣୀ ଇତ୍ୟାଦି ।

୫.	କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ	୧. ପଠିତ ବିଷୟର କିଛି ଅଂଶ ଦେଇ ପ୍ରତ୍ୟେକ ପିଲାଙ୍କୁ ଠିଆ କରି ଉଚ୍ଚ ପଠନ କରାଇବା । ନିମ୍ନରେ ପଠିତ ବିଷୟର କିଛି ଅଂଶ ଦିଆଗଲା ଯଥା - ଲାଇସୋଜାଇମ୍ ସାହାଯ୍ୟରେ ରୋଗ ଚିକିତ୍ସା କରିବା ସମ୍ଭବପର ନ ହେଲେହେଁ ଏହି ଆବିଷ୍କାର ଏକ ନୂତନ ଯୁଗର ସୂତ୍ରପାତ କଲା । ଲାଇସୋଜାଇମ୍ ବ୍ୟବହାରିକ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ବିଶେଷ ଉପଯୋଗୀ ନ ହେଲେ ହେଁ ସର୍ବପ୍ରଥମ ପ୍ରାକୃତିକ ବିଶୋଧକ ଭାବରେ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ଅର୍ଜନ କଲା । ଏହା କୃତିମ ବିଶୋଧକ ଭଳି ଶ୍ୱେତ ରକ୍ତକଣିକାକୁ ନଷ୍ଟ ନକରି ରୋଗ ବୀଜାଣୁକୁ କେବଳ ନଷ୍ଟ କରେ । ଚିକିତ୍ସା ରାଜ୍ୟରେ ଏହା ଏକ ଶକ୍ତିଶାଳୀ ବିଶୋଧକ ନ ହେଲେହେଁ ଏହା ଏକ ଆଦର୍ଶ ବିଶୋଧକ, ଏ କଥା କେହି ଅସ୍ୱୀକାର କଲେ ନାହିଁ । ଏହି ଲାଇସୋଜାଇମ୍ ଯେ ଶକ୍ତିଶାଳୀ ପେନିସିଲିନ୍ ର ପଥପ୍ରଦର୍ଶକ ଏହା ପରେ ଜଣାପଡିଲା । ୨. ବୈଜ୍ଞାନିକ ଶବ୍ଦଗୁଡିକର ଅବବୋଧ ଜାଣିବା ପାଇଁ କେତେକ ମୌଖିକ ପ୍ରଶ୍ନ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ପଚାରିବା । ଯଥା - କ) କାର୍ବୋଲିକ ଏସିଡ଼ କଣ ? ଖ) ଆମ ଦେହର ପ୍ରାକୃତିକ ରକ୍ଷାକାରୀ କିଏ ? ଗ) ଦେହର କେଉଁ ଅଂଶରେ ଲାଇସୋଜାଇମ୍ ରହିଥାଏ ? ଇତ୍ୟାଦି ।
୬	ଅଭ୍ୟାସ	କଠିନ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକୁ ଠିକ୍ ଭାବରେ ଉଚ୍ଚାରଣ କରାଇ ଓ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ଉଚ୍ଚପଠନର ଅଭ୍ୟାସ ଶିକ୍ଷକ କରାଇବେ । ପଠିତ ବିଷୟର କେତେକ କଠିନ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଶବ୍ଦକୁ କଳାପଟାରେ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ଡ଼ାକି ଡ଼ାକି ଲେଖିବାକୁ ଦେବେ ।
୭.	ମୂଲ୍ୟାୟନ	କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଓ ଅଭ୍ୟାସ ମାଧ୍ୟମରେ ପଠନ ସମସ୍ୟା କିପରି ଦୂର ହୋଇଛି, ତାହା ଉଚ୍ଚପଠନ ଓ ଆବୃତ୍ତି ମାଧ୍ୟମରେ ଜଣାଯିବ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)		ପ୍ରଚଳିତ ଲୋକଭାଷା ବ୍ୟାଖ୍ୟା, ସ୍ୱର୍ଗତ ଗୋପାଳଚନ୍ଦ୍ର ପ୍ରହରାଜଙ୍କର ମାଡ଼ହାଣ୍ଡି କଥା ଗଳ୍ପରେ ବ୍ୟବହୃତ ହୋଇଥିବା କେତେକ ପୁରାତନ ତଥା ଅପ୍ରଚଳିତ ଲୋକଭାଷାର ଶବ୍ଦ ଓ କଥନିକାର ବିଶ୍ଳେଷଣ
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧.	ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ସ୍ୱରୂପ ଓ ବୈଚିତ୍ର୍ୟ ବିଷୟରେ ପିଲାମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଧାରଣା ସୃଷ୍ଟିକରିବା ।
		୨.	ମାନକ ଭାଷା ଓ ଲୌକିକ ଭାଷାର ପ୍ରଭେଦ ଓ ବ୍ୟବହାର ବିଷୟରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇବା ।
		୩.	ଅପ୍ରଚଳିତ ଅଥଚ ଲୋକଗଳ୍ପରେ ବ୍ୟବହୃତ ଶବ୍ଦ, ବାଣୀ ଓ କଥନଭଙ୍ଗୀ ଯାହା କେବଳ ଗ୍ରାମ ପରିବେଶରେ ସୀମିତ ସେଗୁଡ଼ିକର ମର୍ମ ପ୍ରାଞ୍ଜଳ ଭାବରେ ବୁଝାଇ ସଂଶିତ ବିଷୟରେ କିଭଳିଭାବରେ ସଂଯୋଜିତ ହୋଇଛି ତାହା ଅବଗତ କରାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା		ପୁରାତନ ତଥା ଅପ୍ରଚଳିତ ଶବ୍ଦ ସହିତ ପିଲାମାନେ ଅଭ୍ୟସ୍ତ ନଥିବା ହେତୁ ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ ପିଲାମାନଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ବୁଝିବା କଷ୍ଟକର ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	୧.	କାର୍ଯ୍ୟପଦ୍ଧତି ଉପରୋକ୍ତ ମାଡ଼ହାଣ୍ଡି କଥା ଗଳ୍ପରେ ପୁରାତନ ତଥା ଲୋକଭାଷାରେ ପ୍ରଚଳିତ କେତେକ ଶବ୍ଦକୁ ନିମ୍ନୋକ୍ତ ପ୍ରକାରରେ ବୁଝାଇ ଦିଆଯିବ । ବୋଲୁଅ - ପଥର ବା ଟେକା ଉଦାହରଣ - ଗାଈଜଗା ପିଲାମାନେ ବୋଲୁଅ ଫିଙ୍ଗି ଆମ୍ବ ଝଡ଼ାଉଛନ୍ତି ।

ନିଖଟୁ – କିଛି କାମନକରି ରହିବା ।
ଉଦାହରଣ – ଗ୍ରାମର କେତେକ ନିଖଟୁ ବ୍ୟକ୍ତି ଭୋକ ଉପାସରେ ଦିନ କଟାଉଛନ୍ତି ।

ବେଔଁ – ଚାଖଣ୍ଡେ, ଅର୍ଥାତ୍ ପାପୁଲିକୁ ପୂରା ମେଲାଇ ଦେଲେ ଯେତିକି ଜାଗା ହେବ ତାହା ପିଲାମନଙ୍କୁ ଦେଖାଇବାକୁ ହେବ ।

କତରା – ଛିଣ୍ଡା ମସିଣା – ଦରିଦ୍ର ଲୋକଟି କତରାରେ ଶୋଇଛି ।

ପନ୍ଦାଡ଼ – ପିଣ୍ଡାର ମୁଣ୍ଡ
- ଉଦାହରଣ – ମାଧ୍ୟମରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇ ଦିଆଯିବ । ଅର୍ଥାତ୍ ବିଦ୍ୟାଳୟ ବାରଣ୍ଡାର ଶେଷ ମୁଣ୍ଡକୁ ଦେଖାଇ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇବାକୁ ହେବ ।

ହାପୁ – (ହାପୁଡ଼ିବା) ଏଠାରେ ଡ଼ାଲି ଅର୍ଥରେ ବ୍ୟବହୃତ । କାରଣ ଡ଼ାଲିକୁ ହାପୁଡିକରି ଖିଆଯାଏ । ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଦୈନନ୍ଦିନ ଖାଦ୍ୟ ଅଭ୍ୟାସ ସଂପର୍କରେ କହି ସେମାନେ କିପରି ହାପୁଡ଼ି ଥାଆନ୍ତି, ତାହା ଜଣାଇ ଦିଆଯିବ ।

୨. **କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ**

ପିଲାମାନଙ୍କର ସମଧିକ ଜ୍ଞାନଲାଭ ପାଇଁ କେତେକ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର ସାହାଯ୍ୟରେ ସେମାନଙ୍କୁ ବିଷୟ ସଂପର୍କରେ ଅବହିତ କରାଯିବ ।

୧. ନିମ୍ନଲିଖିତ ଶବ୍ଦ ଗୁଡ଼ିକୁ ବାକ୍ୟରେ ବ୍ୟବହାର କର – ବୋଲୁଅ, ନିଖଟୁ, ବେଔଁ, କତରା, ପନ୍ଦାଡ଼ ।

୨. ନିମ୍ନଲିଖିତ ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକର ସମାର୍ଥବୋଧକ ଶବ୍ଦ ଲେଖ ।
ତେଲୁଣି, ରବୟା, ବାଆଁରେଇବା, ଦୋଓଡ଼ା, ଯାଉଳି ।

୩. ଅଭ୍ୟାସ - ଉପରୋକ୍ତ ଶବ୍ଦକୁ ବାରମ୍ବାର ଲେଖିବା ପାଇଁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦିଆଯିବ । ଏହି ବିଷୟରେ ଥିବା ସେହିପରି କଠିନ ଶବ୍ଦବାଛି ତାକୁ ବାକ୍ୟରେ ବ୍ୟବହାର କରିବା ପାଇଁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦିଆଯିବ ।

୫. ମୂଲ୍ୟାୟନ

କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଓ ଅଭ୍ୟାସ ଫଳରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନେ ଅପ୍ରଚଳିତ ଓ ଲୋକଭାଷାର ଶବ୍ଦ ସଂପର୍କରେ କେତେଦୂର ଅଭ୍ୟସ୍ତ ହୋଇଛନ୍ତି ତାହା ମୌଖିକ ଓ ଲିଖିତ ପରୀକ୍ଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଜାଣିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରାଯିବା ବିଧେୟ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ବ୍ୟାକରଣ କୃଦନ୍ତ
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ମୂଳକ୍ରିୟା ପଦରୁ ଶବ୍ଦ (ବିଶେଷ୍ୟ ବା ବିଶେଷଣ ଶବ୍ଦ) କିପରି ଗଠିତ ହୁଏ ଜାଣିବା ୨. କୃଦନ୍ତ ନିୟମାନୁଯାୟୀ ଶବ୍ଦଗଠନ ସାହାଯ୍ୟରେ ବାକ୍ୟକୁ ଶ୍ରୁତିମଧୁର କରିବା । ୩. ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧିର ସ୍ୱରୂପ ଓ ପ୍ରକାର ବୁଝାଇବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. ସଂଜ୍ଞା ଅଧିଗତ କରିବାର ସମସ୍ୟା ଧାତୁ ଓ ପ୍ରତ୍ୟୟର ଅର୍ଥ ନ ଜାଣିଲେ କୃଦନ୍ତ ଶବ୍ଦ ବୁଝି ହେବ ନାହିଁ । ୨. ପ୍ରତ୍ୟୟ ବିଭାଗରେ ପୂର୍ବପ୍ରତ୍ୟୟ ଓ ପରପ୍ରତ୍ୟୟ ବିଷୟରେ ସଂକ୍ଷିପ୍ତ ଧାରଣା ରହିବ । ୩. କୃତ୍ ପ୍ରତ୍ୟୟ କାହାକୁ କୁହାଯାଇଛି ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	କୃଦନ୍ତ କହିଲେ କୃତ୍ ଅନ୍ତରେ ଥାଏ ଯାହାର । (କୃତ୍ + ଅନ୍ତ = କୃଦନ୍ତ) ଧାତୁ କହିଲେ ମୂଳକ୍ରିୟାପଦକୁ ବୁଝାଏ । ଯେପରି ପଢୁଛି ଶବ୍ଦରେ କ୍ରିୟାର ମୂଳପଦ ପଢ଼୍ ପଢ଼୍ - ଏକ ଧାତୁ ଉଛି - ଏକ ପ୍ରତ୍ୟୟ ଖେଳ ପଦରେ ଖେଳ୍ = ଧାତୁ ଅ = ପ୍ରତ୍ୟୟ

ଅ ବା ଉଛି ଇତ୍ୟାଦି ପ୍ରତ୍ୟୟର କୌଣସି ଅର୍ଥନାହିଁ ସେହିଭଳି ଅ, ଅଣ, ଅଣା, ଅଣି, ଉଆଳ, ତ, ଅନୀୟ, ଯ ଇତ୍ୟାଦି ପ୍ରତ୍ୟୟ ଅଟେ।

ପ୍ରତ୍ୟୟ ଦୁଇପ୍ରକାର - ୧. ପୂର୍ବ ପ୍ରତ୍ୟୟ
୨. ପର ପ୍ରତ୍ୟୟ

ଯେପରି 'ଆଗମନ' - ଶବ୍ଦରେ 'ଆ' ପୂର୍ବ ପ୍ରତ୍ୟୟ, ଏହା ମୂଳ କ୍ରିୟାପଦର ପୂର୍ବରୁ ବ୍ୟବହୃତ ହୁଏ। ସେଗୁଡ଼ିକୁ ଉପସର୍ଗ କୁହାଯାଏ।

ଅନ = ପରପ୍ରତ୍ୟୟ

ଏହ ପ୍ରତ୍ୟୟ ବ୍ୟବହାର ଦ୍ୱାରା ନୂତନ ଶବ୍ଦ ଗଠିତ ହୁଏ।

କୃତ୍ ପ୍ରତ୍ୟୟ କାହାକୁ କୁହାଯାଏ

ଉ - ଯେଉଁ ପ୍ରତ୍ୟୟ ଧାତୁରେ ଯୁକ୍ତହୁଏ ତାହାକୁ କୃତ୍ ପ୍ରତ୍ୟୟ କୁହାଯାଏ।

୫. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରତ୍ୟୟ ଯୋଗରେ ଶବ୍ଦ ତିଆରି କରିବା। ଯେପରି -

ଖେଳି + ଅ = ଖେଳ — ଡର୍ + ଅ = ଡ଼ର
ଗଢ୍ + ଅଣ = ଗଢଣ — ମାଗ୍ + ଅଣା = ମାଗଣା
ଖଟ୍ + ଅଣି = ଖଟଣି — ଦେଖ୍ + ଆ = ଦେଖା
ଫେଡ୍ + ଆଣ = ଫେଡାଣ — ଶୁଣ୍ + ଆଣି = ଶୁଣାଣି
ଢ଼ାଙ୍କ୍ + ଉଣି = ଢାଙ୍କୁଣି — ଲଢ୍ + ଉଆ = ଲଢୁଆ
ଗମ୍ + ଅନ = ଗମନ — ନିନ୍ଦ୍ + ଉକ = ନିନ୍ଦୁକ
ଶିକ୍ଷ୍ + ତ= ଶିକ୍ଷିତ — ସ୍ତୁ + ତି = ସ୍ତୁତି
ନିଃ + ଭୀ + ଇକ = ନିର୍ଭୀକ

ଏହି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଧିକାଂଶ ମୂଳକ୍ରିୟା ହଳନ୍ତ (୍) ଯୁକ୍ତ ହୁଏ। ଏଥିରେ କିଛି ବ୍ୟତିକ୍ରମ ଅଛି। ଯେପରି ପା, ସ୍ତୁ, ଭୀ, ଇତ୍ୟାଦି।

୬.	ଅଭ୍ୟାସ	ବିଭିନ୍ନ କୃଦନ୍ତ ଶବ୍ଦ ମୌଖିକ ଓ ଲିଖିତ ଭାବରେ ଅଭ୍ୟାସ କରିବାକୁ ହେବ । ଶିକ୍ଷକ କଳାପଟାରେ ଲେଖି ଓ ଲେଖାଇ ଅଭ୍ୟାସ କରାଇବେ । ଶ୍ରେଣୀ ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକକୁ ସେହିପରି କୃଦନ୍ତ ପଦ ବାହାର କରି ତାକୁ ଅଭ୍ୟାସ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଯେପରି ନିମ୍ନ ପ୍ରଦତ୍ତ ଶବ୍ଦରେ ପ୍ରତ୍ୟୟ ଓ ଧାତୁ ଚିହ୍ନାଅ । ପଢା ପଢ୍ = ଧାତୁ ଆ = ପ୍ରତ୍ୟୟ ଲଢୁଆ ଲଢ୍ = କ୍ରିୟା ଉଆ = ପ୍ରତ୍ୟୟ ସ୍ତୁତି ସ୍ତୁ = କ୍ରିୟା ତି = ପ୍ରତ୍ୟୟ
୭.	ମୂଲ୍ୟାୟନ	ଲିଖିତ ଓ ମୌଖିକ ପରୀକ୍ଷା ମାଧ୍ୟମରେ ପିଲା କୃଦନ୍ତ କିପରି ଶିଖିଲେ ଜାଣିବେ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ବ୍ୟାକରଣ ବାକ୍ୟରେ ରୂପାନ୍ତର (ସରଳରୁ ଯୌଗିକ ଓ ଜଟିଳ, ଯୌଗିକରୁ ଜଟିଳ ଓ ସରଳ, ଜଟିଳରୁ ଯୌଗିକ ଓ ସରଳ ବାକ୍ୟରେ ପରିବର୍ତ୍ତନ) ।
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ବାକ୍ୟର ସଂଜ୍ଞା ସ୍ୱରୂପ ବିଷୟରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଅବଗତ କରାଇବା । ୨. ବାକ୍ୟର ପ୍ରକାରଭେଦ *ଯଥା* ସରଳ, ଯୌଗିକ ଓ ଜଟିଳ ବାକ୍ୟ ବିଷୟରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇ ସେଗୁଡ଼ିକର ପାରସ୍ପରିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ବିଷୟରେ ଜଣାଇବା । ୩. ଗୋଟିଏ ପ୍ରକାର ବାକ୍ୟକୁ ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ବାକ୍ୟରେ ରୂପାନ୍ତର କରିବାର ପ୍ରୟୋଜନ, ପଦ୍ଧତି ଓ ପ୍ରୟୋଗ ଆଲୋଚନା କରିବା ।
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	ବାକ୍ୟର ରୂପାନ୍ତର - କ୍ରିୟା ସଂପର୍କରେ (ସମାପିକା ଓ ଅସମାପିକା) ସମ୍ୟକ୍ ଧାରଣା ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ସରଳ, ଜଟିଳ ଓ ଯୌଗିକ ବାକ୍ୟର ପାରସ୍ପରିକ ରୂପାନ୍ତର କରିବାରେ ପିଲାମାନେ ଅସମର୍ଥ ହେଉଛନ୍ତି । କାରଣ ବ୍ୟାକରଣ ବହିରେ ଥିବା ଉଦାହରଣ ଗୁଡ଼ିକ କଷ୍ଟ ଓ ବୋଧଗମ୍ୟ ନୁହେଁ । ବ୍ୟାକରଣ ବହିର ୩୮ ପୃଷ୍ଠାରେ ଥିବା *ଜାତିର ଧକ୍କା* ବିଷୟରୁ ଯେଉଁ ଉଦାହରଣ ଦିଆଯାଉଛି ତାହା ପିଲାମାନଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ବୁଝିବା ଓ ସରଳବାକ୍ୟରୁ ଜଟିଳ ବାକ୍ୟକୁ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବା କଷ୍ଟକର ।

୪ ସମାଧାନର ସୂତ୍ର

୧. କାର୍ଯ୍ୟପଦ୍ଧତି

ସରଳ, ଜଟିଳ ଓ ଯୌଗିକବାକ୍ୟର ଉଦାହରଣ ଦେଇ ବିଭିନ୍ନ ବାକ୍ୟର ସ୍ୱରୂପ ବିଷୟରେ ଶିକ୍ଷକ ପିଲାମାନଙ୍କ ମନରେ ସ୍ପଷ୍ଟତା ଆଣିବେ । ସରଳରୁ ଜଟିଳ, ଜଟିଳରୁ ଯୌଗିକ ବାକ୍ୟର ପରିବର୍ତ୍ତନ ଇତ୍ୟାଦି ମୁଖ୍ୟ ହୋଇଥିବାରୁ କଠିନ ବାକ୍ୟ କିମ୍ବା ବାକ୍ୟରେ କଷ୍ଟଶବ୍ଦଗୁଡିକ ରୂପାନ୍ତରରେ ଅନ୍ତରାୟ ସୃଷ୍ଟିକରେ । ଯଦି କେତେକ ସହଜ ଉଦାହରଣ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଷୟଟି ଉପସ୍ଥାପନ କରାଯାଏ ତେବେ ତାହା ପିଲାମାନଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସହଜ ବୋଧଗମ୍ୟ ହେବ ଓ ରୂପାନ୍ତର ପାଇଁ ସୁବିଧା ହେବ । ଯେପରି -

୧. ସେ ଭାତ ଖାଇଲେ ନାହିଁ (ସରଳ ବାକ୍ୟ)
(ସେ) ଫଳମୂଳ ଖାଇଲେ ନାହିଁ (ସରଳ ବାକ୍ୟ)
ସେ ଭାତ ଖାଇଲେ ନାହିଁ କି ଫଳମୂଳ ଖାଇଲେ ନାହିଁ (ଯୌଗିକ ବାକ୍ୟ)

୨. ସେ ଜଣେ କଷ୍ଟ ସହିଷ୍ଣୁ ବାଳକ ହିସାବରେ ଜଣାଶୁଣା । (ସରଳ ବାକ୍ୟ)
ସେ ବାଳକ କଷ୍ଟ ସହନ୍ତି ଓ ଏହା ସବୁଠି ଜଣାଶୁଣା । (ଯୌଗିକ ବାକ୍ୟ)
ସେ ଜଣେ କଷ୍ଟ ସହିଷ୍ଣୁ ଓ ଜଣାଶୁଣା ବାଳକ । (ଯୌଗିକ ବାକ୍ୟ)
ସେ ବାଳକ ଯେ କଷ୍ଟ ସହନ୍ତି ଏହା ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଜଣା । (ଜଟିଳ ବାକ୍ୟ)
ଯେଉଁ ବାଳକଟି କଷ୍ଟ ସହିଷ୍ଣୁ ସେ ଜଣାଶୁଣା । (ଜଟିଳ)

୨. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

ପିଲାମାନଙ୍କର ସମଧିକ ଜ୍ଞାନ ଲାଭ ପାଇଁ କେତେକ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର ସାହାଯ୍ୟରେ ସେମାନଙ୍କୁ ବିଷୟ ସଂପର୍କରେ ଅବହିତ କରାଯିବ ।

ସରଳରୁ ଜଟିଳ

ସରଳ ଅନ୍ଧମାନଙ୍କ ପାଇଁ ବ୍ୟବହୃତ ଲିଖନ ପ୍ରଣାଳୀକୁ ବ୍ରେଲି କୁହାଯାଏ ।

ଜଟିଳ ଅନ୍ଧମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଯେଉଁ ଲିଖନ ପ୍ରଣାଳୀ ବ୍ୟବହୃତ ହେଉଛି ତାହାକୁ ବ୍ରେଲି କୁହାଯାଏ ।

ସରଳ ଦେବ ମନ୍ଦିରରେ ସମସ୍ତଙ୍କର ସମାନ ପ୍ରବେଶାଧିକାର ଅଛି ।

ଜଟିଳ ଦେବ ମନ୍ଦିର ଗୋଟେ ଏପରି ସ୍ଥାନ (ଅଟେ) ଯେଉଁଠାରେ କି ସମସ୍ତଙ୍କର ପ୍ରବେଶାଧିକାର ଅଛି ।

ଯୌଗିକରୁ ସରଳ

ଯୌଗିକ ସନ୍ନ୍ୟାସୀ ରାଜାଙ୍କ ପ୍ରଶ୍ନଗୁଡିକ ମନ ଦେଇ ଶୁଣିଲେ, କିନ୍ତୁ କିଛି କହିଲେ ନାହିଁ ।

ସରଳ ସନ୍ନ୍ୟାସୀ ରାଜାଙ୍କ ପ୍ରଶ୍ନଗୁଡ଼ିକ ମନ ଦେଇ ଶୁଣିମଧ୍ୟ କିଛି କହିଲେ ନାହିଁ ।

ଯୌଗିକ ଅନେକ ବିଜ୍ଞବ୍ୟକ୍ତି ରାଜାଙ୍କ ଦରବାରକୁ ଆସିଲେ ଓ ସେହି ପ୍ରଶ୍ନଗୁଡିକର ଉତ୍ତର ଦେବାକୁ ଚେଷ୍ଟାକଲେ ।

ସରଳ ଅନେକ ବିଜ୍ଞ ବ୍ୟକ୍ତି ରାଜାଙ୍କ ଦରବାରକୁ ଆସି ସେହି ପ୍ରଶ୍ନ ଗୁଡିକର ଉତ୍ତର ଦେବାକୁ ଚେଷ୍ଟାକଲେ ।

୩. **ଅଭ୍ୟାସ**

ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ନିଜମନରୁ ମୌଳିକ ଭାବେ କେତେଗୁଡିଏ ସରଳ, ଯୌଗିକ ଓ ଜଟିଳ ବାକ୍ୟ ଲେଖିବା ପାଇଁ କୁହାଯିବ । ନିଜ ପାଠ୍ୟ ବହିର ବିଭିନ୍ନ ବିଷୟରୁ ଉପରୋକ୍ତ କେତେଗୁଡିଏ ବାକ୍ୟ ଚିହ୍ନିତ କରି ତାର ରୂପାନ୍ତର କରିବାକୁ କୁହାଯିବ ।

୫. ମୂଲ୍ୟାୟନ

ସରଳ ବାକ୍ୟ : ଏ ଯୁଗର ଜଣେ ମହୀୟସୀ ମହିଳା ହେଲେନ୍ କେଲରଙ୍କ ନାମ ବିଶ୍ୱ ବିଶ୍ରୁତ । (ଜଟିଳ ବାକ୍ୟରେ ପରିଣତ କର)

ଜଟିଳ ବାକ୍ୟ : ମଣିଷକୁ ଅସ୍ପୃଶ୍ୟ ବୋଲି ଯିଏ ଭାବେ ସେ ନିଜେ ଅମଣିଷ । (ସରଳ ବାକ୍ୟରେ ପରିଣତ କର)

ଯୌଗିକ ବାକ୍ୟ : ରାମ ଯାଉ କିମ୍ବା ଗୋପାଳ ଯାଉ (ଜଟିଳ ବାକ୍ୟରେ ପରିଣତ କର)

ଉପରୋକ୍ତ ପ୍ରଶ୍ନ ଭଳି ଆଉ କେତେକ ପ୍ରଶ୍ନ ସାହାଯ୍ୟରେ ପିଲାମାନେ ବାକ୍ୟର ସ୍ୱରୂପ ଓ ରୂପାନ୍ତର ସଂପର୍କରେ କେତେଦୂର ଅବହିତ ହେଲେ ତାହା ଜାଣିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରାଯିବ ।

୧	ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବିଷୟବସ୍ତୁ (କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର)	ପ୍ରବନ୍ଧ ଲିଖନ ପ୍ରସଙ୍ଗ - ତୁମ ବିଦ୍ୟାଳୟର ବାର୍ଷିକ କ୍ରୀଡା ପ୍ରତିଯୋଗିତା
୨	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	୧. ଭାଷା ଜ୍ଞାନ ବୃଦ୍ଧି ୨. ଛାତ୍ରମାନଙ୍କର ସୃଜନୀ ଶକ୍ତିର ବିକାଶ ୩. ଚିନ୍ତା ଓ ବିଚାର ଶକ୍ତିର ବିକାଶ ୪. ଚିନ୍ତା ଧାରାର ସଜ୍ଜୀକରଣର କୌଶଳଶିକ୍ଷା ୫. ରଚନା ଲିଖନ ପଦ୍ଧତି ଓ କ୍ରମ ସମ୍ପର୍କରେ ଧାରଣା ଦେବା
୩	ଶିକ୍ଷଣ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମସ୍ୟା	୧. ଛାତ୍ରମାନେ ପ୍ରବନ୍ଧ ପୁସ୍ତକରୁ ନକଲ କରୁଛନ୍ତି ୨. ପରୀକ୍ଷା ପାଇଁ ମୁଖସ୍ଥ କରିନେଉଛନ୍ତି ୩. ପ୍ରବନ୍ଧ ଲିଖନରେ ମୌଳିକ ଉପସ୍ଥାପନାର ଅଭାବ ରହୁଛି ।
୪	ସମାଧାନର ସୂତ୍ର	୧. କାର୍ଯ୍ୟପଦ୍ଧତି ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ରଚନା ଲେଖିବା ପାଇଁ ପ୍ରଭାବିତ କରିବାକୁ ପ୍ରଥମେ ମୌଳିକ ଚିନ୍ତାଧାରାର ଆବଶ୍ୟକତା ସମ୍ବନ୍ଧରେ ବୁଝାଇବେ । ଆମର ଦୈନନ୍ଦିନ ଜୀବନରେ ଆମକୁ ପ୍ରତିଦିନ କିଛି ନା କିଛି ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ନେବାକୁ ପଡ଼େ । ଆମ ସମସ୍ୟାର ସମାଧାନ ଆମକୁ କରିବାକୁ ପଡ଼େ । ତେଣୁ ଜୀବନରେ ମୌଳିକ ଚିନ୍ତାଧାରାର ସ୍ଥାନ ଅପରିହାର୍ଯ୍ୟ । ସେଥିପାଇଁ ଛାତ୍ରମାନେ ପ୍ରବନ୍ଧ ଲେଖିବାର ବ୍ୟବସ୍ଥା ବିଦ୍ୟାଳୟ ଗୁଡିକରେ ରହିଛି ।

ଆଲୋଚ୍ୟ ପ୍ରବନ୍ଧଟି ପାଇଁ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ମାନସିକ ସ୍ତରରେ ପ୍ରସ୍ତୁତକରିବା ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଶିକ୍ଷକ ସେମାନଙ୍କୁ ପ୍ରଥମେ କେତୋଟି ପ୍ରଶ୍ନ ପଚାରିବେ । ଯଥା -

୧. ତୁମେମାନେ ଘରେ କି କି କାମ କର ?
୨. ବିଦ୍ୟାଳୟକୁ କାହିଁକି ଆସ ?
୩. ତୁମମାନଙ୍କୁ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ କଣ କରିବାକୁ ଭଲ ଲାଗେ ?

କେତେକ ଛାତ୍ର ଖେଳିବାକୁ ଉତ୍ତର ଦେଲେ ଶିକ୍ଷକ ଖେଳକୁ ନେଇ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ପାଳିତ ହେଉଥିବା ଉତ୍ସବ ଉପରେ ପ୍ରଶ୍ନ ପଚାରିବେ । ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ନିକଟକୁ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଉତ୍ତର ନ ଆସିଲେ ଶିକ୍ଷକ ତୁମ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ବାର୍ଷିକ କ୍ରୀଡ଼ା ପ୍ରତିଯୋଗିତା କହି କଳାପଟାରେ ପ୍ରସଙ୍ଗଟି ଲେଖିଦେବେ ।

ପ୍ରବନ୍ଧ ରଚନାରେ ମୁଖ୍ୟତଃ ତିନୋଟି ଅଂଶ ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦିଆଯାଏ । ତାହା କହି ସେଗୁଡିକୁ ଶିକ୍ଷକ କଳାପଟାରେ ଲେଖିବେ ।

୧. ଉପକ୍ରମ
୨. ବିଷୟବସ୍ତୁ
୩. ଉପସଂହାର

୨. କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ

ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର ତଥା ଆଲୋଚନା ମାଧ୍ୟମରେ ଶିକ୍ଷକ ପ୍ରସଙ୍ଗଟିକୁ ଆଗେଇନେବେ ଓ ଉତ୍ତର ଗୁଡିକ ଉପର ଲିଖିତ କେଉଁ ବିଭାଗରେ ଲେଖାଯିବ ତାହା ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ସହ ଆଲୋଚନା କରି ଲେଖିବେ । ପ୍ରଶ୍ନଗୁଡିକ ଚିନ୍ତାମୂଳକ ହେବା ଆବଶ୍ୟକ ।

ଉପକ୍ରମ

୧. ଆମ୍ଭେମାନେ କାହିଁକି ଖେଳୁ

୨. ଖେଳରୁ ଆମେ କିକି ଉପକାର ପାଉ

୩. ଖେଳକୁ ମୁଖ୍ୟତଃ କେତେ ଭାଗରେ ବିଭକ୍ତ କରାଯାଇପାରେ

୪. ବିଦ୍ୟାଳୟର ପାଠ୍ୟ ନିର୍ଘଣ୍ଟରେ କାହିଁକି ଖେଳକୁ ରଖାଯାଇଛି

୫. ବିଦ୍ୟାଳୟରେ କାହିଁକି ପ୍ରତିବର୍ଷ କ୍ରୀଡା ପ୍ରତିଯୋଗିତା କରାଯାଏ

ବିଷୟବସ୍ତୁ

୧. ତୁମ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ବାର୍ଷିକ କ୍ରୀଡା ପ୍ରତିଯୋଗିତା କେବେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୁଏ ।

୨. କେତେ ଦିନ ଧରି ଏହାଅନୁଷ୍ଠିତ ହୁଏ ।

୩. ଏହି ପ୍ରତିଯୋଗିତାରେ କି ପ୍ରକାର କ୍ରୀଡା ସ୍ଥାନ ପାଏ, ସେଗୁଡିକର ନାମ କଣ ?

୪. ଏହି ଖେଳଗୁଡ଼ିକୁ କିପରି ବିଭକ୍ତିକରଣ କରାଯାଇ ପାରିବ ?

୫. ପ୍ରତିଯୋଗୀମାନଙ୍କୁ କିପରି ବିଭାଗିକରଣ କରାଯାଏ ?

୬. ପ୍ରତିଯୋଗିତାରେ ଭାଗ ନେବାର ମୁଖ୍ୟ ଆକର୍ଷଣ କଣ ?

୭. କେଉଁ ପ୍ରତିଯୋଗୀଙ୍କୁ ପୁରସ୍କୃତ କରାଯାଏ ?

୮. ପ୍ରତିଯୋଗିତାରୁ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ କି କି ଶିକ୍ଷା ମିଳେ ?

୯. କ୍ରୀଡା ପ୍ରତିଯୋଗିତାରେ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କର କେଉଁ ବିଶେଷ ଗୁଣ ଉପରେ ଅଧିକ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦିବଯାଏ ?

ଉପସଂହାର

କ୍ରୀଡା ପାଇଁ ସରକାରୀ ସ୍ତରରେ ଆଜିକାଲି କି କି ପ୍ରୋତ୍ସାହନ ମିଳୁଛି

୩. **ଅଭ୍ୟାସ**

କେତେକ ଶବ୍ଦ ଦେଇ ଏକ ଅନୁଚ୍ଛେଦ ଘରେ ଲେଖିବାକୁ ଶିକ୍ଷକ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦେବେ ।

ତରୁଣ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ପାଇଁ କ୍ରୀଡ଼ା କିପରି ପ୍ରଭୂତ ଉପକାରୀ ?

୬. ମୂଲ୍ୟାୟନ

ଶିକ୍ଷକ ଶ୍ରେଣୀରେ ଏହି ପ୍ରବନ୍ଧଟିକୁ ଲେଖାଇ ସଂଶୋଧନ ସହିତ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କନ କରିବେ ।

୭. ପ୍ରସ୍ତାବନା

ମୌଳିକ ଚିନ୍ତାଧାରାକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହନ ଦେବା ଦ୍ୱାରା ଉତ୍କୃଷ୍ଟ ରଚନା ଲେଖିଥିବା ପିଲାଟି ଯେପରି ପ୍ରେରଣା ପାଏ, ଅନ୍ୟମାନେ ସେହିପରି ପ୍ରେରଣା ପାଆନ୍ତି ।

କଠିନ ଶିକ୍ଷଣ କ୍ଷେତ୍ର ନିର୍ଦ୍ଧାରଣ ପାଇଁ ଆଦର୍ଶ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର

ନାମ - କେଶବ ସାହୁ

ଠିକଣା ବିଦ୍ୟାଳୟ - ଟିଟାଗଡ଼ ଉପେନ୍ଦ୍ର ଭଞ୍ଜ ବିଦ୍ୟାପୀଠ,
ପୋ. ଅ. - ଟିଟାଗଡ, ଜି- ଉତ୍ତର ୨୪ ପରଗଣା,
ପଶ୍ଚିମ ବଙ୍ଗ

କେଉଁ ଶ୍ରେଣୀରେ ପାଠଦାନ କରୁଛନ୍ତି -
୫ମ/ ୬ଷ୍ଠ/ ୭ମ ଶ୍ରେଣୀରେ କେଉଁ ବହି ପଢାଉଛନ୍ତି ?

୫ମ ଶ୍ରେଣୀ - ଆମ ସାହିତ୍ୟ (ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଓ କାର୍ଯ୍ୟ ପୁସ୍ତକ)
DPEP ଓଡ଼ିଶା (ପରୀକ୍ଷାମୂଳକ ସଂସ୍କରଣ)

୬ଷ୍ଠ ଶ୍ରେଣୀ - ଆମ ସାହିତ୍ୟ, ଓଡ଼ିଶା ସରକାର, ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ

୭ମ ଶ୍ରେଣୀ - ସାହିତ୍ୟ, ଓଡ଼ିଶା ସରକାର, ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ

ପାଠଦାନ ବେଳେ କେଉଁ ପ୍ରକାର ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଉଛନ୍ତି ?

୧. ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ଦିଗରୁ

ପ୍ରସଙ୍ଗ - ଶପଥ (କବିତା)

ଭାବ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସମସ୍ୟା - ଏହି ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ମୂଲ୍ୟବୋଧ ସମ୍ବଳିତ କବିତାରେ ନିହିତ ତ୍ୟାଗ, ପରୋପକାର, ସରଳତା, ଅନ୍ୟାୟର ପ୍ରତିବାଦ, ସ୍ୱଚ୍ଛତା, ଉଦାରତା, ଲାଳିତ୍ୟ, ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟବୋଧ, ଧୈର୍ଯ୍ୟ, କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ପରାୟଣତା, ସହନଶିଳତା, ସେବା, ସୃଜନଶିଳତା, ସହାନୁଭୂତିଶିଳତା, ସର୍ବୋପରି ସାମ୍ୟ, ମୈତ୍ରୀ ଓ ଶାନ୍ତି ଆଦି ଉଚ୍ଚ ମାନବିକ ଗୁଣ ଓ ଭାବ ସମୂହର ଆତ୍ମୀକରଣ ଷଷ୍ଠଶ୍ରେଣୀର ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀଙ୍କ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ଭବ ହେଉନାହିଁ ବୋଲି ମନେ ହେଉଛି ।

ଭାଷା ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସମସ୍ୟା

୧. ଅଗ୍ନି ସମ ଦହିବି ସୁଖେ
ସ୍ୱାର୍ଥୀ ଜନ ମିଥ୍ୟା କଥା

୨. ନୃତ୍ୟ ରଚେ ମୃତ୍ୟୁ ଯହିଁ
ଆଣିବି ତହିଁ ସୃଷ୍ଟି ଧାର ।

ପ୍ରସଙ୍ଗ – ପାଦୁକା ପୂଜା

ଭାଷା ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସମସ୍ୟା – ଏଥିରେ ବହୁ କଠିନ ଶବ୍ଦ ରହିଥିବାରୁ ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କୌଶଳ ଦିଗରୁ କଠିନ ହେଉଛି । ଏଥିରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କର ଅଜସ୍ର ବର୍ଣ୍ଣାଶୁଦ୍ଧି ରହୁଛି ।

ଉଦା – ଶ୍ରୀହୀନ, ବିଷାଦ, ଆବେଗଭରା, ପ୍ରକୃତିସ୍ଥ ଇତ୍ୟାଦି ଏଥିରେ ଲେଖକଙ୍କ ନାମ ଅନୁପସ୍ଥିତ ।

ପ୍ରସଙ୍ଗ – ନବମ ଏସିଆଡ୍, ପ୍ରସଙ୍ଗଟି ୧୯୮୨ ମସିହାର । ବର୍ତ୍ତମାନ ସମୟ ଅନୁସାରେ ବିଶେଷ ଆକର୍ଷଣୀୟ ହେଉନାହିଁ ।

ପ୍ରସଙ୍ଗ – ଓଡ଼ିଶାର ସଂସ୍କୃତି

ଭାବରେ ସମସ୍ୟା – ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଭାବଧାରା

ଭାଷାରେ ସମସ୍ୟା – ଅନେକ କ୍ଲିଷ୍ଟ ଶବ୍ଦ

ନାମ - **ଶ୍ରୀ ପବିତ୍ର ମୋହନ ଜେନା**

ଠିକଣା ବିଦ୍ୟାଳୟ - ଖଡଗପୁର ଉତ୍କଳ ବିଦ୍ୟାପୀଠ

କେଉଁ ଶ୍ରେଣୀରେ ପାଠଦାନ କରୁଛନ୍ତି - ୫ମ, ୮ମ, ୯ମ, ୧୧ଶ, ୧୨ଶ

୫ମ/ ୬ଷ୍ଠ/ ୭ମ ଶ୍ରେଣୀରେ କେଉଁ ବହି ପଢାଉଛନ୍ତି ?

୫ମ ଶ୍ରେଣୀ - ଆମ ସାହିତ୍ୟ (ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଓ କାର୍ଯ୍ୟ ପୁସ୍ତକ)

DPEP ଓଡ଼ିଶା (ପରୀକ୍ଷାମୂଳକ ସଂସ୍କରଣ)

ପାଠଦାନ ବେଳେ କେଉଁ ପ୍ରକାର ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଉଛନ୍ତି ?

୧. ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ଦିଗରୁ (କ) ଭାବରେ - କାଳିଜାଇରେ ସନ୍ଧ୍ୟା

(ଖ) ପ୍ରସଙ୍ଗରେ - ଜାତୀୟ ପକ୍ଷୀ

୨. ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କୌଶଳ ଦିଗରୁ -

୩. ବ୍ୟାକରଣ ବ୍ୟବହାର ଦିଗରୁ - ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଅନୁଯାୟୀ କାହାକୁ କଣ କୁହାଯାଏ ପିଲା ବୁଝନ୍ତି ନାହିଁ । ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି ପାଇଁ କେଉଁ ବିଷୟକୁ ବେଶ୍ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମନେକରୁଛନ୍ତି ?

କ) କଥନ ଭଙ୍ଗୀ - କଠିନ ଭାବକୁ ସଂପ୍ରସାରଣ କରିବା

ଖ) ପଠନ ଶୈଳୀ - କବିତାକୁ ସ୍ୱରଦେଇ ଗାୟନ କରାଯାଏ ।

ଗଦ୍ୟ ପଠନ ଅଭ୍ୟାସ କରାଯାଏ

ଗ) ବନାନ ଓ ଲିଖନ କଳା ପଟାରେ ଲେଖାଯାଏ, ବନାନ ପଚରାଯାଏ । ଶ୍ରୁତଲିଖନ କରାଯାଏ ।

ଅସ୍ତଗାମୀ ରବି କିରଣ
ପଡ଼ିଚିଲକା ଜଳେ
ଦିଶଇ ପ୍ରବାଳ ବରଣ
ଶୋଭାବଢ଼ନ ବଳେ
ଭାଲେରି ....
ପଶ୍ଚିମ ଆକାଶେ ଝଟକେ
ପୀତ ଲୋହିତ ଛବି ।

ନାମ - **ଦୋଳ ଗୋବିନ୍ଦ ପଣ୍ଡା**

ଠିକଣା ବିଦ୍ୟାଳୟ - ଟିଟାଗଡ଼ ଉପେନ୍ଦ୍ର ଭଞ୍ଜ ବିଦ୍ୟାପୀଠ,
ପୋ. ଅ. - ଟିଟାଗଡ଼, ଜି- ଉତ୍ତର ୨୪ ପରଗଣା,
ପଶ୍ଚିମ ବଙ୍ଗ

କେଉଁ ଶ୍ରେଣୀରେ ପାଠଦାନ କରୁଛନ୍ତି - ସପ୍ତମ ଶ୍ରେଣୀ

୫ମ/ ୬ଷ୍ଠ/ ୭ମ ଶ୍ରେଣୀରେ କେଉଁ ବହି ପଢାଉଛନ୍ତି ?

୫ମ ଶ୍ରେଣୀ - ଆମ ସାହିତ୍ୟ (ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଓ କାର୍ଯ୍ୟ ପୁସ୍ତକ)
DPEP ଓଡ଼ିଶା (ପରୀକ୍ଷାମୂଳକ ସଂସ୍କରଣ)

୬ଷ୍ଠ ଶ୍ରେଣୀ - ଆମ ସାହିତ୍ୟ, ଓଡ଼ିଶା ସରକାର, ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ

୭ମ ଶ୍ରେଣୀ - ସାହିତ୍ୟ, ଓଡିଶା ସରକାର, ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ

ପାଠଦାନ ବେଳେ କେଉଁ ପ୍ରକାର ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଉଛନ୍ତି ?

୧. ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ଦିଗରୁ

ଭାବରେ - ଶୋଭା - ଆଲୋକର ଧାରା ଶରୀରେ -------- ବିପୁଳ ଗଭୀର ସୁନ୍ଦର ରୁଦ୍ର

ପ୍ରସଙ୍ଗରେ - ମାଟିର ମଣିଷ - ପଉଷ ପ୍ରାତ ପଦୁଅଁ ପରି ------ ଆୟୁଷଖାଲି ମାଗେ

୨ ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କୌଶଳ ଦିଗରୁ - ମାଡ଼ହାଣ୍ଡିକଥା (ଗଳ୍ପ) - ଏ ଗଳ୍ପରେ ଅନେକ ପୁରାତନ ଶବ୍ଦର ବ୍ୟବହାର କରାଯାଇଛି, ଯଥା - କତରା, ବେଁ, ବଁରେଇବା, ନିଖଟୁ, ବୋଲୁଅ, ଇତ୍ୟାଦି

ଉତ୍କଳମାତାର ଯୋଗ୍ୟତମ ସୁତ - କେତେକ କଷ୍ଟ ଶବ୍ଦର ପ୍ରୟୋଗ
ଯଥା - ଶୁଷ୍କ ବନ୍ଧ୍ୟ ଯଶ ସଂଗେ ଅର୍ଦ୍ଧାଶନ

ରାମାୟଣ କଥା - ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ଶବ୍ଦର ବ୍ୟବହାର - ଯଥା - ଚାରୁହର୍ମ୍ୟ ଶାଳିନୀ, କାଳାନଳପ୍ରାୟ, ମୃଗୟାର୍ଥ, ଅନୁସନ୍ଧାନାର୍ଥ ଇତ୍ୟାଦି ।

୩. ବ୍ୟାକରଣ ବ୍ୟବହାର ଦିଗରୁ - ବ୍ୟାକରଣ ବହିରେ ଥିବା ବାକ୍ୟର ରୂପାନ୍ତର ଓ ପଦାନ୍ୱୟ ଅଧ୍ୟାୟଗୁଡିକ ପିଲାମାନଙ୍କର ବୁଝିବାରେ କଷ୍ଟ ହେଉଛି ।

ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି ପାଇଁ କେଉଁ ବିଷୟକୁ ସବୁଠାରୁ ବେଶୀ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମନେ କରୁଛନ୍ତି ।

୧. ବିଷୟଗୁଡ଼ିକ ଭଲଭାବରେ ବୁଝିବା

୨. ଉଚ୍ଚାରଣ ଓ କଥନ ଭଙ୍ଗୀ

୩. ବନାନ ଓ ଲିଖନ

ନାମ - ଗୋଲକ ଚନ୍ଦ୍ର ସାହୁ

ଠିକଣା ବିଦ୍ୟାଳୟ - ୪୪/୨ଚ୍/ ୨୦/ ୧ ଦେବେନ୍ଦ୍ର ଚନ୍ଦ୍ର ଦେ ରୋଡ୍,
କଲିକତା - ୭୦୦୦୧୫
ପୂର୍ବ କଲିକତା ଓଡ଼ିଆ ବିଦ୍ୟା ନିକେତନ

କେଉଁ ଶ୍ରେଣୀରେ ପାଠଦାନ କରୁଛନ୍ତି - ୫ମ (ଆମ ସାହିତ୍ୟ)

୫ମ/ ୬ଷ୍ଠ/ ୭ମ ଶ୍ରେଣୀରେ କେଉଁ ବହି ପଢାଉଛନ୍ତି ?

୫ମ ଶ୍ରେଣୀ - ଆମ ସାହିତ୍ୟ (ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଓ କାର୍ଯ୍ୟ ପୁସ୍ତକ)
DPEP ଓଡ଼ିଶା (ପରୀକ୍ଷାମୂଳକ ସଂସ୍କରଣ)

ପାଠଦାନ ବେଳେ କେଉଁ ପ୍ରକାର ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଉଛନ୍ତି ?

୧. ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ଦିଗରୁ (କ) ଭାବରେ - କାଳିଜାଇରେ ସନ୍ଧ୍ୟା
(ଖ) ପ୍ରସଙ୍ଗରେ - ଜାତୀୟ ପକ୍ଷୀ

କଥନ ଭଙ୍ଗୀ

ପଠନ ଶୈଳୀ

ବନାନ ଓ ଲିଖନ

୨. ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କୌଶଳ ଦିଗରୁ -

୩. ବ୍ୟାକରଣ ବ୍ୟବହାର ଦିଗରୁ -

ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି ପାଇଁ କେଉଁ ବିଷୟକୁ ବେଶ୍ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମନେକରୁଛନ୍ତି ।

୧. କଠିନ ଭାବକୁ ବିଶ୍ଳେଷଣ କରିବା ।

୨. କଠିନ ଶବ୍ଦ କୁ ସରଳ କରି ବୁଝିବା ଓ ଲେଖିବା ।

ନାମ - ନମୀତା ସେଠୀ

ଠିକଣା ବିଦ୍ୟାଳୟ - ଖଡ଼ଗପୁର ଉତ୍କଳ ବିଦ୍ୟାପୀଠ

କେଉଁ ଶ୍ରେଣୀରେ ପାଠଦାନ କରୁଛନ୍ତି - ୭ମ, ୯ମ ଓ ୧୦ମ

୫ମ/ ୬ଷ୍ଠ/ ୭ମ ଶ୍ରେଣୀରେ କେଉଁ ବହି ପଢାଉଛନ୍ତି : ଓଡିଶା ସରକାରଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଚଳିତ ପୁସ୍ତକ ପାଠଦାନ ବେଳେ କେଉଁ ପ୍ରକାର ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଉଛନ୍ତି ?

୧. ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ଦିଗରୁ

(କ) ଭାବରେ - '*କଳାମାଣିକରେ*' କବିତାର କେତେକାଂଶ ଯଥା - 'ହୃଦତାପ ବିନାଶନେ ତୁ ହରିଚନ୍ଦନ', *ମାଟିର ମଣିଷ* କବିତାରେ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ ଭାବକୁ ବୁଝିବାରେ କଷ୍ଟ ।

(ଖ) ପ୍ରସଙ୍ଗରେ - '*ଶୋଭା*' କବିତାର ପ୍ରାସଙ୍ଗିକ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ପିଲାମାନେ ବୁଝିବାରେ କଷ୍ଟ, 'ଜନସଂଖ୍ୟା ସମସ୍ୟା ଓ ସମାଧାନ' ବିଷୟରେ ପ୍ରସଙ୍ଗ ଛୋଟ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇବାରେ କଷ୍ଟ ।

୨. ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କୌଶଳ ଦିଗରୁ -

ମାଡ଼ହାଣ୍ଡି କଥା ବିଷୟରେ ଲେଖକ ଗୋପାଳ ଚନ୍ଦ୍ର ପ୍ରହରାଜ ତାଙ୍କ ଲେଖାରେ ବହୁ ଗାଉଁଲି ଶବ୍ଦର ବ୍ୟବହାର କରିଛନ୍ତି । ଯଥା - ବେଏଁ, ବୋଲୁଅ, ନିଖଟୁ, କତରା, ହାପୁ ଇତ୍ୟାଦି ଏଗୁଡିକୁ ପିଲାମାନେ ବୁଝିବାରେ କଷ୍ଟ । ଉତ୍କଳ ମାତାର ଯୋଗ୍ୟତମ ସୁତ- କବିତାରେ କଠିନ ଶବ୍ଦ ଯଥା - 'ସଲିଳ ନ ସିଞ୍ଚି ଖାଲି ଦଣ୍ଡବତ', 'ଶୁଷ୍କ ବନ୍ଧ୍ୟ ଯଶ ସଙ୍ଗେ ଅର୍ଦ୍ଧାଶନ' ।

୩. ବ୍ୟାକରଣ ବ୍ୟବହାର ଦିଗରୁ -

କୃଦନ୍ତ, ତଦ୍ଧିତ, ପଦାନ୍ୱୟ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇବାରେ କଷ୍ଟ । ପଦାନ୍ୱୟ ବିଷୟ ପଢାଇବା ପୂର୍ବରୁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ କାରକ, ସକର୍ମକ ଓ ଅକର୍ମକ କ୍ରିୟା, ବିଶେଷ୍ୟର ପ୍ରକାରଭେଦ, କାଳ, ବଚନ ପ୍ରଭୃତି ବିଷୟରେ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ ଜ୍ଞାନ ଦେବା ପରେ ବିଷୟ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହୁଏ, ଯାହାକି ସମୟ ସାପେକ୍ଷ ଓ ବିରକ୍ତି କର ହୁଏ ।

ଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି ପାଇଁ କେଉଁ ବିଷୟକୁ ବେଶ୍ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମନେକରୁଛନ୍ତି ?

୧. ସଠିକ ଉଚ୍ଚାରଣ

୨ କଥନ ଭଙ୍ଗୀ

୩. ପଠନ ଓ ଲିଖନ ପ୍ରକ୍ରିୟା

ଅନ୍ୟ ପରାମର୍ଶ - ବହୁତ ବିଷୟ ଯାହାକି ଅଳ୍ପ ସମୟ ଭିତରେ ଶେଷ କରିବା ସମ୍ଭବ ନୁହେଁ, ପ୍ରବନ୍ଧ, କବିତା, ମହାପୁରୁଷ ଓ ବ୍ୟାକରଣର ବିଷୟ ଯଥାସମ୍ଭବ କମ୍ ହେଲେ ପିଲାମାନେ ଉପକୃତ ହେବେ ।

पश्चिम बंगाल बोर्ड के
प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान हेतु
उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी के लिए शिक्षण - कार्यपद्धति

कार्यक्रम - समन्वयक

प्रो. विजय कुमार सुनवानी
डॉ. अनूप कुमार

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे सामाजिक बनाने में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योग होता है। शिक्षा, व्यक्तित्व को परिपूर्णता प्रदान करती है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो सतत चलती रहती है। व्यक्ति जीवनपर्यंत कुछ न कुछ सीखता रहता है, लेकिन औपचारिक रूप से देखे तो विदित होता है कि उच्च प्राथमिक शिक्षा, जिसे व्यापक अर्थ मे प्राथमिक शिक्षा भी कहा जा सकता है, माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के सापेक्ष अपना अलग वैशिष्ट्य रखती है। कारण यह कि प्राथमिक स्तर या उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी जो कुछ ग्रहण करते या सीखते है और जो सस्कार प्राप्त करते है, उनसे उनके व्यक्तित्व का निर्माण और परिष्कार होता है। इस क्रम में उल्लेख्य है कि यदि प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियो को शिक्षा देने में कोई त्रुटि रह गयी हो तो उसका दूरगामी विपरीत तथा स्थायी प्रभाव पड़ता है। हम जानते है कि अगर किसी भवन की, नींव कमज़ोर रह गयी, तो उस भवन के मज़बूत होने की आशा नहीं की जा सकती बल्कि यह आशंका हर समय बनी रहेगी कि वह भवन कभी भी कमज़ोर पड़कर धराशायी हो सकता है। इस आधार पर प्राथमिक या उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षा देना एक गुरुतर तथा दायित्वपूर्ण कार्य है जिसे सुचिन्तित तथा सुनियोजित होना चाहिए।

पश्चिम बंगाल बोर्ड की आवश्यकतानुसार प्रस्तुत कार्यक्रम के आयोजन के पूर्व दो दिवसीय **कार्यशाला दिनांक १५ - १६ अक्टूबर २००३** को आयोजित की गयी थी जिसमे विशेषज्ञो ने पश्चिम बंगाल में कक्षा पाँच, छह तथा सात में हिदी को प्रभावी ढग से पढ़ाने के लिए कार्यपद्धति निर्मित करते समय भाषिक कठिनाई के क्षेत्रो को ध्यान मे रखने का सुझाव दिया और उन सुझावो को पश्चिम बंगाल से समागत हिदी प्रतिभागियो और स्थानीय हिंदी विशेषज्ञो के समक्ष दिनाक १९ से २३ जनवरी, २००४ तक चली पाँच दिवसीय कार्यशाला के आरंभ में हिदी समूह, में विचार-विमर्श हेतु रखा गया और अंतत निम्नलिखित बिदुओं पर **पश्चिम बंगाल बोर्ड द्वारा भेजी गयी कक्षा पाँच, छह तथा सात की** हिंदी पाठ्यपुस्तकों को ध्यान में रखते हुए हिदी - शिक्षण हेतु कार्यपद्धति निर्मित करने के बारे में सर्व सम्मति हुई -

१. लिपि - शिक्षण की समस्याएँ

२. उच्चारण - शिक्षण की समस्याएँ

३. वर्तनी - शिक्षण की समस्याएँ

४.	लिग - शिक्षण की समस्याएँ

५	वचन - शिक्षण की समस्याएँ

६.	कारक - शिक्षण की समस्याएँ

७.	अर्थबोध संबधी समस्याएँ

८.	काव्य मे क्षेत्रीय प्रयोग की समस्याएँ

९.	संप्रेषणगत समस्याएँ

उल्लेख्य है कि पूर्व मे आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में मॉड्यूल लिखने के लिए जो प्रारूप निर्धारित किया गया था, वह इस प्रकार है -

१.	शिक्षण - समस्या - बिदु

२.	प्रशिक्षण के उद्देश्य

३.	प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं के कारण

४.	अशुद्धियो के निराकरण हेतु सुझाव

५.	मूल्याकन

पाँच दिवसीय कार्यशाला में हिंदी समूह के प्रतिभागियों को तीन उप - समूहो में रखा गया और प्रत्येक उप-समूह को तीन-तीन शिक्षण - बिदुओ पर उपर्युक्त प्रारूप के अनुरूप मॉड्यूल बनाने का दायित्व मिला। इसका विवरण यहाँ प्रस्तुत है -

प्रथम उप - समूह

प्रथम उपसमूह के सदस्यो को, पश्चिम बगाल बोर्ड द्वारा भेजी गयी **कक्षा पॉच की हिंदी पाठ्यपुस्तक बालभारती, भाग - ५** के संदर्भ मे निम्नलिखित भाषा - प्रशिक्षण - बिदुओं पर मॉड्यूल निर्मित करने का दायित्व मिला -

१.	लिपि - शिक्षण की समस्याऍ

२.	उच्चारण - शिक्षण की समस्याएँ

३.	वर्तनी - शिक्षण की समस्याएँ

उप - समूह सदस्य

क) डॉ. अनूप कुमार

ख) श्री रंजीत सिह

ग) सुश्री मधुलता गुप्ता

घ) श्रीमती पद्मजा प्रधान

द्वितीय उप - समूह

द्वितीय उपसमूह के सदस्यो को, पश्चिम बंगाल बोर्ड द्वारा भेजी गयी **कक्षा छह की हिंदी पाठ्यपुस्तक साहित्य - माला भाग - ६** के संदर्भ में निम्नलिखित भाषा - प्रशिक्षण बिंदुओं पर मॉड्यूल लिखने की ज़िम्मेदारी मिली -

१. लिग - शिक्षण की समस्याएँ

२. वचन - शिक्षण की समस्याएँ

३. कारक - शिक्षण की समस्याएँ

उप - समूह सदस्य

क) डॉ. कुना पंडा

ख) श्री राजेन्द्र प्रसाद पांडेय

ग) श्री राजेन्द्र प्रसाद तिवारी

घ) श्री कुलभूषण सिह

तृतीय उप - समूह

तृतीय उपसमूह के सदस्यों को, पश्चिम बगाल बोर्ड द्वारा भेजी गयी **कक्षा सात की हिंदी पाठ्यपुस्तक (साहित्य - माला) भाग - ७** के संदर्भ मे निम्नलिखित भाषा - प्रशिक्षण बिंदुओ पर मॉड्यूल लिखने का दायित्व मिला -

१. अर्थबोध संबंधी समस्याएँ

२. काव्य में क्षेत्रीय प्रयोग की समस्याएँ

३. सप्रेषणगत समस्याएँ

उप - समूह सदस्य

क) डॉ. शंकरलाल पुरोहित

ख) श्रीमती अनिता राय

ग) श्री ओम प्रकाश लाल श्रीवास्तव

घ) श्री यमुना प्रसाद सिह

उल्लेख्य है कि प्रत्येक उपसमूह ने गहन विचार-विमर्श करके पाँच दिनो में अपने - अपने मॉड्यूल तैयार किये और उनको सामान्य सत्र मे प्रस्तुत भी किया। पश्चिम बंगाल में कक्षा पाँच, छह और सात के विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ाने के क्रम मे उन मॉड्यूलों से अवश्य ही सहायता मिलेगी, ऐसा विश्वास है। इस कार्यक्रम में सभी सदस्यो की धारणा थी कि कोई भी शिक्षण-कार्य-पद्धति शिक्षक/ शिक्षिका के लिए सुझाव के तौर पर होती है और होनी भी चाहिए क्योंकि यदि किसी चीज़ को उस पर आरोपित किया जाएगा, तो वह कक्षा में स्वतंत्र-भाव से शिक्षण - कार्य संपन्न करने मे असुविधा का अनुभव करेगा/ करेगी। शिक्षक/ शिक्षिका के लिए शिक्षण - कार्यपद्धति निर्मित करते समय इस बात पर बराबर ध्यान दिया गया है। वे अपने शैक्षिक अनुभवो तथा प्रतिभा से भाषा - शिक्षण, में आनेवाली कठिनाइयो के समाधान के लिए अन्य कार्यपद्धतियों के विषय मे सोच सकते है और शिक्षण - कार्य को उत्तरोत्तर प्रभावी बना सकते है।

इस तरह प्रो. विजय कुमार सुनवानी, मुख्य कार्यक्रम - समन्वयक के सतत प्रयासों और कुशल समन्वयन से इस कार्यशाला के हिंदी समूह ने पश्चिम बंगाल में कक्षा पाँच, छह तथा सात की कक्षाओ में हिंदी पढाने के लिए विभिन्न बिदुओं पर कार्यपद्धतियो को निर्मित करने का कार्य संपन्न किया। उपर्युक्त कक्षाओ मे हिंदी - शिक्षण को प्रभावी बनाने में विभिन्न मॉड्यूलो से निश्चय ही सहायता मिलेगी।

अनूप कुमार

शिक्षण - समस्या - बिंदु : लिपि - शिक्षण संबंधी समस्याएं

हिंदी भाषा - शिक्षण के सदर्भ मे सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना -- इस सभी कौशलो का समग्रता मे विकास होना चाहिए। यहाँ शिक्षण - समस्या बिदु के रूप में लिपि-शिक्षण पर विचार किया जाना अपेक्षित है। भाषा, भाव और विचार के संप्रेषण का माध्यम है। भाषा, ध्वनि, शब्द अर्थ और व्याकरणिक व्यवस्था से निर्मित होती है। भाषा को लेखन के रूप में लिपि द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। अत: लिपि के शुद्ध रूप से परिचित होना आवश्यक है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में इस पक्ष पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। कारण यह कि यदि इस स्तर पर लिपि की अशुद्धियो को ठीक नहीं किया गया, तो कालांतर में वे व्यक्तित्व से इस प्रकार जुड जाती है कि उन्हें सुधारना कठिन हो जाता है।

प्रशिक्षण के उद्देश्य : लिपि - शिक्षण के उद्देश्य

हिंदी लिपि - शिक्षण के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते है -

- लिपि दोष के कारणों को मालूम करना
- उन कारणों को दूर करना।
- शिक्षार्थियों मे लिपि-बोध का निर्माण करना।

प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं के कारण : लिपि - अशुद्धि के कारण

देवनागरी लिपि के प्रयोग मे होनेवाली अशुद्धियो के प्रमुख कारण इस प्रकार है -

- सही ढंग से शिरोरेखा लगाने की जानकारी नहीं होना
- वर्णो के सही लेखन - क्रम की जानकारी नहीं होना
- वर्णों के सही स्वरूप की जानकारी नहीं होना
- मात्राओं के लेखन के सही स्वरूप को नहीं जानना
- अनुस्वार, अनुनासिक तथा नुक्ते (पाद-बिन्दु) के प्रयोग को सही रूप में नहीं जानना
- अर्द्धचंद्र (ॉ), प्रयोग की जानकारी का नहीं होना
- सयुक्ताक्षर लेखन की दोनों स्थितियो की जानकारी नहीं होना

लिपि - अशुद्धि के उदाहरण

- देवनागरी में शिरोरेखा का प्रयोग अनिवार्य होता है। कुछ वर्णो में शिरोरेखा - प्रयोग की सही व्यवस्था होनी चाहिए अन्यथा भ्रम हो सकता है। इससे शिक्षार्थियो को परिचित कराना आवश्यक है, जैसे -

  म / भ,

  घ / ध

  य / थ

- वर्णों के लेखन-क्रम की सही जनकारी के अभाव में वर्णों का स्वरूप सही रूप मे नहीं बन पाता। जैसे - ज को बायें तरफ से लिखने और अ को दाहिने तरफ से लिखने से उनकी आकृति ठीक से नहीं बन पाएगी, इस बात की संभावना बनी रहेगी।

  कुछ वर्णों के सही स्वरूप की जानकारी न होने पर भी वर्ण गलत हो जाते है, जैसे -

  ब / व

  ष / घ

  ख / रव

  त / त

  न / त

- लिपि की स्पष्टता तथा सटीकता के लिए मात्रा-लेखन के सही स्वरूप से परिचित होना अनिवार्य है, जैसे -

  रुचि / रूचि

  रूप / रुप

  खेल / खेल

  कितना / कितना

  वर्तनी / वर्तनी

. लिपि मे अनुस्वार ( ) तथा अनुनासिक (ँ) चिह्न का सही स्थान पर प्रयोग अपेक्षित है, जैसे -

महँगा / मेँहगा (अशुद्ध)

इंग्लैण्ड /इंलैण्ड (अशुद्ध)

कंप्यूटर / कमप्युटर (अशुद्ध)

नुक्ते (क़ ख़ ग़ फ़ ज़) वाली ध्वनियाँ यदि अरबी, फ़ारसी और अँग्रेज़ी के शब्दों मे आयी है, और उनको बिना नुक्ते के लिखा गया है, तो आवश्यकतानुसार नुक्ते का प्रयोग किया जाना अपेक्षित है। जैसे- साफ़, चीज़, जरूरी, क़ीमत, मुक़ाबला, प्रोफ़ेसर, सब्ज़ियाँ, खुद आदि।

अँग्रेज़ी शब्दो में अर्द्धचन्द्र (ॉ) प्रयोग की जानकारी न होने से भी लिपिगत अशुद्धि परिलक्षित होती है जो दोषपूर्ण उच्चारण का कारण बनती हैं। उदाहरण - डाक्टर, कालेज जैसे शब्दों का आदर्श उच्चारण इसलिए नहीं हो पाता क्योंकि अर्द्धचन्द्र के बिना इनको लिखा गया। संयुक्ताक्षर लेखन की दोनो स्थितियो से भी परिचित होना आवश्यक है, अन्यथा भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है, जैसे -

विद्वान / विद्वान

प्रसिद्ध / प्रसिद्ध

चिह्न / चिह्न

लिपि संबंधी अशुद्धियों के निराकरण हेतु सुझाव -

- म / भ, घ / ध, थ / य, इन वर्णों के सही स्वरूप से विद्यार्थियों को अवगत कराना तथा इनका लेखन - अभ्यास कराना।

शिरोरेखा का सही प्रयोग न होने के कारण उत्पन्न भ्रम से विद्यार्थियों को परिचित करवाना आवश्यक है, जैसे -

भामा / मामा

भाभी / मामी

घन / धन

यम / थम

शिक्षक/ शिक्षिका श्यामपट्ट पर वर्णों के सही लेखन - क्रम से विद्यार्थियों को अवगत करायें, जैसे -

इसके अतिरिक्त शिक्षक / शिक्षिका विद्यार्थियो की पुस्तिका मे वर्णों के लेखन - क्रम को संख्याओं से निर्दिष्ट कर दें और विद्यार्थी उन वर्णों का अनुकरण कर वैसा ही लिखे।

- वर्णो के सही स्वरूप को शिक्षक/ शिक्षिका श्यामपट्ट पर लिखकर जानकारी दे। जैसे -ख

खाना / रवाना

खीर / रवीर

विद्यार्थियो से सही वर्णों का अनुकरण करवाते हुए उनका लेखन करवाएँ। फिर ऐसे शब्दों को रेखांकित करवाएँ जिनमें इन ध्वनियो का प्रयोग हुआ हो।

यदि ऐसे वर्णों को ग़लत लिखने से अन्य शब्द या निरर्थक शब्द बनता हो, तो उस ओर भी उनका ध्यान आकर्षित किया जाए। जैसे - **खीर /रवीर, खाना / रवाना**

- मात्राओ को लिखने के सही स्वरूप का ज्ञान सर्वप्रथम शिक्षक/ शिक्षिका के लिए अनिवार्य है। इस आधार पर ही वे विद्यार्थियों का सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकेंगे। जैसे - केला मे ए की मात्रा सीधी (े) न लगाकर तिरछी (े) लगाएं। इकार (ि) और ईकार (ी) को भी सही ढग से लिखना सिखाकर उनका अभ्यास करवाया जाए। जैसे - **निर** न लिखकर **नीर** लिखवाया जाए।

अभ्यास के लिए मात्रारहित कुछ शब्द दे दिये जाएं और उनसे उचित स्थान पर सही ढंग से मात्रा लगाने को कहा जाए। जैसे - **ओ (ो)** की मात्रा के अभ्यास के लिए उन्हे **माहन** शब्द दिया, इसे अगर मोहन लिखेंगे, तो वह ग़लत होगा तथा मोहन लिखेंगे, तब उपयुक्त स्थान पर मात्रा लगी मानी जाएगी। शिक्षक/ शिक्षिका श्यामपट्ट पर मात्राओ को लिखकर उनका अभ्यास कराते समय सावधानी बरतें।

- अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ) चिह्न को सही स्थान पर लगाने के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाए।

कक्षा के विद्यार्थियों को अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ) चिह्न वाले शब्द श्यामपट्ट पर लिखने को कहें और यह देखें कि उन्होंने अनुस्वार और अनुनासिक चिह्न का प्रयोग ठीक स्थान पर किया है या नहीं। यदि नहीं किया हो तो उन चिह्नो को सही स्थान पर लगवाया जाए सुदंर लिखा गया हो, तो उसे सुंदर रूप में लिखने का निर्देश दिया जाए। इसी तरह हँस को हंस या हंस को हँस लिखने की अशुद्धि न हो, इसका ध्यान रखा जाए।

इसी प्रक्रिया को नुक्ते के सही प्रयोग के लिए भी व्यवहार में लाएं। उदाहरणार्थ चीज़, सब्ज़ी, साफ़, अँग्रेज़ आदि। यदि किसी विदेशी शब्द मे नुक्ते की अवश्यकता न हो और विद्यार्थी ने उसे लगा दिया हो, तो कक्षा की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए ऐसे शब्दो को बताया जाए जहाँ नुक्ते की ज़रूरत नहीं है। जैसे यदि **ज़ंज़ीर** जैसा लिख दिया है, तो बताना होगा कि इसे **ज़ंजीर** रूप मे लिखा जाए।

अँग्रेज़ी की कुछ ध्वनियो मे भी नुक्ता लगाने की अपेक्षा होती है। जैसे - ज़िप, ज़ेब्रा, ज़ेवियर, फ़िनाइल, फ्राक आदि। यदि विद्यार्थियों को इन शब्दों मे नुक्ता लगाने की जानकारी न हो तो श्यामपट्ट पर विद्यार्थियो से उसका अभ्यास करवाया जाए।

उनसे नुक्ता सहित और नुक्ता रहित ध्वनियों का उच्चारण करवाकर भी नुक्ता-प्रयोग का विवेक उनमें जगाया जाए।

शब्दों को लिखने मे इस बात का ध्यान रखा जाए कि अपेक्षानुसार विदेशी शब्दों मे नुक्ता-प्रयोग करवाया जाए। यदि नुक्ता हटाकर लिखने का बोध करवाना है, तो इस बात को ध्यान मे रखना होगा कि विद्यार्थी विदेशी शब्दो में कहीं भी नुक्ता न लगाएं। इस प्रकार नुक्ता लगाने या छोडने मे एकरूपता बरती जाए।

विदेशी शब्द (नुक्ता - सहित) - रेजोनेट, चीज़, सब्ज़ी, ग़लत, फर्श।

अँग्रेज़ी के कुछ शब्दो में जहाँ ध्वनि आ और ओ, के बीच की है, वहाँ ऑ, (ॉ), अर्धचन्द्र (ॉ) का प्रयोग किया जाता है, अन्यथा शब्द विशेष का सही उच्चारण नहीं हो पाता। अत : इन शब्दों के लिये विद्यार्थी को शुरू से सही स्थिति से अवगत कराकर उनके सही उच्चारण तथा लेखन की ओर प्रवृत्त किया जाए। जैसे - कॉलेज, डॉक्टर, लॉरी, ऑस्कर। साथ ही, यह बताया जाए कि इस ध्वनि चिह्न को छोडकर अगर उच्चारण किया जाएगा, तो वह विकृत हो जाएगा।

विद्यार्थियों को आरंभिक स्तर पर संयुक्ताक्षर को हलन्त के साथ लिखने का अभ्यास करवाकर उसके सही सयुक्त रूप को बताया जाए, जैसे - द्‌वार। श्यामपट्ट पर इसको लिखा जाए, फिर दूसरे चरण मे इसके सयुक्त रूप द्वार को उल्लिखित किया जाए। विद्यार्थियों को इस बात का बोध कराया जाए कि उच्चारण - क्रम में पहले द्‌ आता है फिर उसी से जुडा हुआ **वार** आता है। संयुक्त रूप में इसे लिखने में ऐसा लगाता है कि द पूरा है और व आधा या हलन्त के साथ। लेकिन विद्यार्थियों को उच्चारण - प्रक्रिया के द्वारा इसे स्पष्ट किया जाए कि वस्तुत: द ध्वनि, स्वर रहित रूप में उच्चरित होती है और **व** ध्वनि व्यजन और स्वर के साथ (व्‌ + अ) उच्चरित होती है। इसलिए **द्वार** का द्‌वार के रूप मे लेखन होता है और तदनुरूप उच्चारण भी।

शिक्षक/ शिक्षिका से अपेक्षित है कि वे अपने लिपि - लेखन को आदर्श बनाएं और उसी का ध्यान रखते हुए लिपि - शिक्षण करें। वे दिये गये निर्देशो के अनुरूप विद्यार्थियों को लिपि-बोध कराएं और लिपि - शिक्षण संबंधी कठिनाइयों का सतत निराकरण करते जाएं। इसके लिए वे सुलेख का अधिक अभ्यास करवाएं।

मूल्यांकन -

विद्यालय द्वारा ली जाने वाली औपचारिक परीक्षाओ के साथ - साथ शिक्षक/ शिक्षिका, विद्यार्थियों का कक्षा में तात्कालिक मूल्याकन करे और यह मूल्यांकन सतत रूप में सत्रपर्यत चलता रहेगा। शिक्षक/ शिक्षिका, मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर विद्यार्थियो के लिपि - ज्ञान का संशोधन करते जाएंगे और उनसे अभ्यास कराते जाएंगे। मूल्यांकन करते समय पूर्वनिर्दिष्ट गतिविधियों का ध्यान रखना वाछनीय है। उसके अतिरिक्त शिक्षक/ शिक्षिका अपने विवेक से अन्य क्रियाकलापों को भी करवाते जाएं। इसी क्रम में उनके द्वारा किये जा रहे लिपि - शिक्षण की प्रगति का आकलन होता जाएगा जिसमें आवश्यकतानुसार सुधार किया जाएगा।

शिक्षण - समस्या - बिंदु : उच्चारण - शिक्षण संबंधी समस्याएँ

हिंदी भाषा - शिक्षण के संदर्भ मे सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना - इस सभी कौशलों का समग्रता में विकास होना चाहिए। यहाँ शिक्षण - समस्या - बिदु के रूप मे उच्चारण - शिक्षण पर विचार किया जाना अपेक्षित है। उच्चारण का संबंध भाषा के वाक् पक्ष से है। वाग्यंत्रो द्वारा निःसृत ध्वनियाँ, जो अर्थ और व्याकरणिक संरचना से जुड़ी होती है, समग्रता में भाषा कहलाती है। भाषा के माध्यम से हम अपने भावों तथा विचारों का संप्रेषण करते है। अत: उच्चारण पक्ष का भाषा के संदर्भ मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। उच्चारण की अशुद्धि से कभी अर्थांतर हो सकता है, तो कभी निरर्थकता आ सकती है। इसी कारण प्राथमिक एव उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओ में इस पक्ष पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। कारण यह है कि यदि इस स्तर पर उच्चारण की अशुद्धियों को ठीक नहीं किया गया, तो कालांतर मे उन्हें सुधारना कठिन हो जाता है।

प्रशिक्षण के उद्देश्य : उच्चारण - शिक्षण के उद्देश्य

हिंदी उच्चारण - शिक्षण के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते है -

- उच्चारण - दोष के कारणों को मालूम करना।
- उन कारणो को दूर करना।
- विद्यार्थियो मे उच्चारण-बोध का निर्माण करना।

प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं के कारण : उच्चारण अशुद्धि के कारण -

हिंदी उच्चारण - अशुद्धि के प्रमुख कारण इस प्रकार है -

- मातृभाषा का प्रभाव
- ध्वनि - उच्चारण-स्थान की सही जानकारी न होना
- विदेशी ध्वनियों के उच्चारण की सही जानकारी न होना
- अतिशीघ्रता (प्रयत्न लाघव) के कारण
- ध्वनियो को ग़लत रूप में उच्चरित करना।

- अतिशुद्धि के कारण
- सादृश्य के आधार पर भ्रमपूर्ण उच्चारण
- मात्राओ का ज्ञान ठीक से न होना
- वाग्यंत्र में विकार के कारण

उच्चारण - अशुद्धि के उदाहरण -

मातृभाषा के उच्चारण - ढंग से कभी - कभी व्यक्ति इतना प्रभावित होता है कि वह अन्य भाषा की ध्वनि के उच्चारण में भी उसी ढंग को अपना लेता है। अवधी भाषी **'पैसा'** का **'पइसा'**, **'औरत'** का **'अउरत'**, **'कैसा'** का **'कइसा'** रूप में उच्चारण करते है। इसी तरह जिन भाषा/ बोलियॉं मे हिंदी **'य'**, को **'ज'** के रूप में उच्चरित किया जाता है, वहाँ **'युवा'** के स्थान पर **'जुवा'** उच्चारण करते है। बंगाल मे **'स'** का उच्चारण **'श'** रूप में मिलता है। जैसे - **रसगुल्ला / राशोगुल्ला**। **स्कूल/ सकुल, स्मरण/ इस्मरण, महेन्द्र / महिन्दर** उच्चारण भी हमे समाज मे उपलब्ध होते है। कभी - कभी शिक्षक / शिक्षिका भी इस प्रभाव से अछूते नहीं रहते। उनके द्वारा ग़लत उच्चारण किये जाने पर विद्यार्थी भी दोषपूर्ण उच्चारण करने लगते हैं।

ध्वनियों के उच्चारण - स्थान की सही जानकारी न होने के कारण उच्चारण दोषपूर्ण हो जाता है। हिंदी का फ, अरबी - फारसी का फ़ बन जाता है, जैसे - **फल / फ़ल**।

इसी तरह विपरीत स्थिति में **फ़** के स्थान पर **फ** का प्रयोग कर दिया जाता है, जैसे **फ़र्श / फर्श, फ़र्क/ फर्क**।

अँग्रेजी की फ़ ध्वनि के साथ यह स्थिति देखी जा सकती है, जैसे - **फ़ादर / फादर**।

इसी तरह अन्य विदेशी ध्वनियों के उच्चारण की सही जानकारी न होने पर भी उच्चारण - दोष हो जाता है, जैसे -

ग़म / गम, ज़रा /जरा, ज़मीन / जमीन

अतिशीघ्रता के कारण भी उच्चारण विचलित होता है। जैसे - **बाबूजी / बाउजी, धैर्य / धैर, मास्टर साहब / मास्साब, डॉक्टर साहब / डाक्साब, जनता / जन्ता, लखनऊ/ नखलऊ** ।

क्लिष्ट ध्वनि का, मुख - सुख के कारण अपनी सुविधानुसार तोड़ - मरोड़कर उच्चारण करने पर भी उच्चारण ग़लत होता है, जैसे - **प्रसाद / परसाद, प्रश्न/ प्रसन, प्रणाम / परनाम,**

अतिशुद्धीकरण के कारण भी उच्चारण में दोष दिखाई पड़ता है। जैसे - नमस्कार / नमश्कार, शाप / श्राप, प्रसाद / प्रशाद, आदि।

कभी - कभी सादृश्य के कारण उच्चारण अशुद्ध हो जाता है जैसे - पाँचवाँ / छठवाँ (अशुद्ध), आदि।

मात्रा के सही रूप की जानकारी न होने के कारण उच्चारण में अशुद्धि दिखाई पडती है, जैसे - खिलौना / खिलोना, और / ओर, दीन / दिन, चौगुना / चोगुना, आहार / अहार, दवात / दावात, अधीन / आधीन

इसी तरह अनुस्वार का लोप करने से भी उच्चारण दोषयुक्त हो जाता है, जैसे -

जोंक / जोक, गंदा / गदा (अर्थ-परिवर्तन)

संबंध/ सन्बन्ध, सिंह/ सिम्ह (अनुस्वार का त्रुटिपूर्ण प्रयोग हुआ है जिससे अर्थ स्पष्ट नहीं होता)

ध्वनियों के सही प्रयोग का विवेक न होने पर उच्चारण त्रुटिपूर्ण बन जाता है, जैसे -

ऋ के उच्चारण का सही ज्ञान न होने पर - **कृपा / क्रपा, कृतघ्न / क्रतघ्न, कृष्ण / किसन, क्रष्ण, कुष्न** - जैसा उच्चारण हो जाता है।

ण के उच्चारण का सही ज्ञान न होने पर -

हिरण / हिरन, किरण / किरन, प्राण / प्रान, गुण / गुन, कारण / कारन

क्ष के उच्चारण का सही ज्ञान न होने के कारण - **क्षमा / छमा, क्षत्रिय / छत्रिय, क्षेत्रीय/ खेत्रीय।**

व तथा **ब** के उच्चारण - भेद को न समझने के कारण - **वनस्पति / बनस्पति, वाणी / बाणी, बरस / वरस, वन / बन, विद्यार्थी / बिद्यार्थी, विपक्षी / बिपक्षी**

च्छ का उच्चारण भी त्रुटिपूर्ण होता है - **इच्छा / इछा, प्रत्यक्ष / प्रत्यच्छ, कक्षा / कच्छा**

ट और ठ के उच्चारण में भी भ्रम के कारण अशुद्ध उच्चारण होता है जैसे - निष्ठा / निष्टा, इकट्ठा/ इकट्टा, अभीष्ट / अभीष्ठ।

र, ड़ के उच्चारण मे भी भ्रमपूर्ण स्थिति देखी जाती है, जैसे - लड़ाई / लडाई, लराई / लढ़ाई, बड़ा/ बरा, मच्छर/ मच्छड़।

वाग्यंत्र मे विकार के कारण भी उच्चारण अशुद्ध हो जाता है। सामने के दाँत बड़े होने पर द्वयोष्ठ्य ध्वनि का उच्चारण करने मे असुविधा होती है। बतख में ब का उच्चारण ग़लत होगा अथवा बोलनेवाला उसे उच्चरित करने मे असमर्थ होगा।

उच्चारण संबंधी अशुद्धियों के निराकरण हेतु सुझाव -

शिक्षक / शिक्षिका ध्वनियों के उच्चारण - स्थान का समुचित ज्ञान अर्जित कर अपने उच्चारण को आदर्श बनाये, तभी वे विद्यार्थियो से सही उच्चारण करवा पाएगे।

शिक्षक / शिक्षिका विद्यार्थियों में इस बात का विवेक जाग्रत करे कि वे मातृभाषा और मानक हिंदी का प्रयोग करते समय विवेक से निर्दिष्ट हो अर्थात् हिदी शब्दों के उच्चारण में मातृभाषा के प्रभाव (क्षेत्रीय भाषा) को न आने दें। यदि प्रभाव आ गया है तो उसको दूर करने की चेष्टा करे। उन ध्वनियों के मानक उच्चारण उदाहरणसहित बताएं जो मातृभाषा और हिंदी के प्रयोग के समय भ्रम उत्पन्न करते हों। जिन विद्यार्थियों ने कक्षा में शुद्ध उच्चारण सीख लिया है, उनके साथ दोषपूर्ण उच्चारण करनेवाले विद्यार्थियो की बातचीत करवायी जाए जिससे वे सही अनुकरण द्वारा अपना उच्चारण ठीक कर ले।

कक्षा में शिक्षक/ शिक्षिका आदर्श उच्चारण और वाचन करें और विद्यार्थी उनका अनुकरण कर अपने उच्चारण को आदर्श बनाए। यह कार्यकलाप कक्षा में सामूहिक उच्चारण -दोषो के निराकरण के लिए काफ़ी उपयोगी होगा।

शिक्षक/ शिक्षिका दोषपूर्ण उच्चारण करने वाले विद्यार्थियों से कक्षा के बाहर बातचीत का अवसर निकाले जिससे उनके आदर्श उच्चारण को सुनकर विद्यार्थियो का उच्चारण आदर्श बन सके।

उल्लेखय है कि शिक्षक/ शिक्षिका अपना भी मूल्यांकन करते जाएं और यदि कहीं उनको उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ मिलती है, तो उनको वे दूर करने का प्रयत्न करें। इसके अतिरिक्त विद्यालय/ संस्थान के द्वारा समय - समय पर शिक्षक/ शिक्षिकाओं के लिए अभिज्ञान कार्यक्रम और पुनश्चर्या कार्यक्रम का आयोजन करवाया जाए।

उच्चारण - स्थान की सही जानकारी विद्यार्थियो को देना और उसे आधार बनाकर उनसे अभ्यास करवाना अपेक्षित है। जैसे **फ** तथा **फ़** की अशुद्धि के लिए उन्हें बताना होगा कि **फ** ध्वनि का उच्चारण दोनों ओष्ठ को मिलाकर होता है जबकि **फ़** ध्वनि ऊपर के सामने के दाँतों और नीचे के ओष्ठ के स्पर्श से निकलती है। इसी तरह **क** वर्ग की ध्वनियाँ कंठ्य से, **च** वर्ग की ध्वनियाँ तालु से, **ट** वर्ग की ध्वनियाँ मूर्द्धा से, **त** वर्ग की ध्वनियाँ दंत से, **प** वर्ग की ध्वनियां द्वयोष्ठ से निकलती है। **य**, **र** तथा **ल**, **व** के उच्चारण में क्रमशः तालु, वर्त्स, और दंत-ओष्ठ स्थान का उपयोग होता है। **श** का उच्चारण तालु से, **स** का वर्त्स से और **ह** का स्वरयंत्र से होता है। उच्चारण - स्थान के बारे में बताकर उनसे अशुद्ध उच्चारणवाली ध्वनियों को शुद्ध रूप मे उच्चरित करवाकर अभ्यास करवाना चाहिए।

नुक्ते सहित विदेशी ध्वनियों का उच्चारण शिक्षक/ शिक्षिका पहले स्वयं सही रूप में करें, फिर विद्यार्थियों को नुक्ते सहित तथा नुक्ते रहित ध्वनि का उच्चारण-भेद बताते हुए करें। वे सामूहिक रूप से विद्यार्थियो से इसका बारंबार अभ्यास कराएं। जैसे - **जमीन / ज़मीन, खराब / ख़राब, कीमत/ क़ीमत, जरूरत / ज़रूरत, जरा / ज़रा।**

अतिशीघ्रता से बोलने पर उच्चारणगत जो त्रुटियाँ होती है, उनके निराकरण के लिए शिक्षक/ शिक्षिका विद्यार्थियो को निर्देश दे कि वे स्पष्टता से और उचित मात्रा का समय लेकर उच्चारण करें , वे उन्हें यह भी समझाएं कि शीघ्रता से उच्चारण करने से शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होगा और वे अपनी बात को सही ढंग से सामने वाले को नहीं समझा पाएंगे। अतः उन्हे प्रत्येक शब्द का सहजता से स्पष्ट उच्चारण करना चाहिए। अतिशीघ्रता से बोलने के कारण विकृत हुए शब्द का ठीक उच्चारण बारंबार उचित और स्पष्ट रूप में करवाया जाए। उदाहरण - **स्टेशन / टेशन, जनता / जन्ता।**

क्लिष्ट ध्वनियों के उच्चारण को तोड़ने - मरोड़ने से शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होता अथवा कभी -कभी वे ध्वनियाँ निरर्थक और हास्यस्पद बन जाती हैं, अतः शिक्षक/ शिक्षिका इस बात से विद्यार्थियों को अवगत कराएं। उच्चारण की क्लिष्टता दूर करने के लिए शब्द को हिस्से - हिस्से में बाँटकर उसका बार-बार उच्चारण करवाकर, फिर समग्रता में उच्चारण करवाएं जिससे विद्यार्थी उसे सही रूप में उच्चरित करने में समर्थ हों। जैसे - **किंकर्त्तव्यविमूढ़** (**किम्** + **कर्त्तव्य** + **विमूढ़**), **जीविकोपार्जन** (**जीविका** + **उपार्जन**), **महत्त्वाकांक्षा** (**महत्त्व** + **आकांक्षा**), **द्वीपसमूह** (**द्वीप** + **समूह**), **आत्मसमर्पण** (**आत्म** + **समर्पण**) **अन्तरराष्ट्रीय** (**अन्तर** + **राष्ट्रीय**), **मध्यावकाश** (**मध्य** + **अवकाश**)।

अतिशुद्धीकरण के कारण सामान्यतः विद्यार्थी ग़लत उच्चारण कर देते है ; उन्हे शिक्षक/ शिक्षिका अति उत्साह से बचने के लिए कहे और बताएं कि उच्चारण हमेशा सहजता से करें। अभ्यास कराते वक्त भी वे इस बात पर विशेष ध्यान दे। इसलिए सामूहिक उच्चारण - अभ्यास के अतिरिक्त व्यक्तिगत उच्चारण पर विशेष रूप से ध्यान दे। **नमस्कार** शब्द शुद्ध है लेकिन इसे अशुद्ध मानकर **नमश्कार** उच्चारण कर दिया जाता है। इसके लिए बताया जा सकता है कि नमः + कार मे सधि होने से **नमस्कार** शब्द निर्मित होता है, न कि नमश्कार।

ऋ और र मे तथा ब और व मे, क्ष और ह मे अंतर स्पष्ट करना चाहिए। इसके लिए इन व्यजनो वाले शब्द जैसे ऋषि, रिश्ता, बतख, वर्षा, क्षमा, छतरी आदि का उच्चारण करवाते हुए इन्हें श्यामपट्ट पर लिखवाना चाहिए। इसी तरह भिन्न मात्राओ वाले शब्दो को सही उच्चारण के साथ कहलवाते हुए श्यामपट्ट पर लिखवाना चाहिए। जैसे, गिरि / गिरी, पिता/ पीता, रुकना/ रूकना, ओर / और शब्दो के उच्चारण मे अन्तर बताते हुए बार-बार अभ्यास करवाने से उसके सही उच्चारण को विद्यार्थी अर्जित कर सकते है।

पाँचवाँ, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ और दसवाँ के सादृश्य पर **छठवाँ** कर दिया जाता है जो अशुद्ध है। वास्तव में इसे छठा, के रूप मे उच्चरित किया जाना चाहिए। यह बताना चाहिए कि संस्कृत में **पञ्चम्, सप्तम्, अष्टम्, नवम्** और **दशम्** शब्द है और **षष्ठम्** न होकर **षष्ठ** है जिससे - **छठ** - **छठा** बनता है। ह्रस्व और दीर्घ वर्णों के उच्चारण के लिए यह बताना आवश्यक है कि इनके उच्चारण में

कितना समय लगता है। दीर्घ मे ह्रस्व के उच्चारण से दुगना समय लगता है जैसे - कुल / कूल, एक/ ऐसा।

श्यामपट्ट पर विभिन्न वर्णों से बने शब्दों को लिखकर विद्यार्थियों से उनका बार - बार उच्चारण करवाएं जैसे - कल, काल, कील, कला, किला, काला, कुल, कूल या

चना, चुना, चूना, चीनी, चीन, चैन या

सुख, सुखी, सखी, सूखी, सखा, साख सीख

वाग्यंत्र - दोष की जानकारी होने पर शिक्षक/ शिक्षिका अभिभावको को परामर्श दे कि वे विशेषज्ञ चिकित्सक के माध्यम से विद्यार्थियो का उपचार कराएं।

विद्यार्थियों के उच्चारण की जाँच करने के लिए उनसे किसी कविता का या गद्य के अनुच्छेदो का वाचन करवाया जाए और उसे कैसेट में रिकार्ड कर लिया जाए। बाद में शिक्षक / शिक्षिका उनके वाचन को ध्यान से सुनें और यदि कहीं उच्चारणगत अशुद्धि रह गयी हो, तो उसका निराकरण करें।

मूल्यांकन -

विद्यालय द्वारा ली जाने वाली औपचारिक परीक्षाओं के साथ - साथ शिक्षक/ शिक्षिका विद्यार्थियो का कक्षा मे तात्कालिक मूल्यांकन करें और मूल्यांकन सतत रूप में सत्र - पर्यंत चलता रहेगा। शिक्षक/ शिक्षिका मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों के उच्चारण - दोषो को ठीक करते जाएंगे और साथ ही, उनसे अभ्यास कराते जाएंगे। मूल्यांकन करते समय पूर्व निर्दिष्ट गतिविधियो का ध्यान रखना वांछनीय है। इसके अतिरिक्त शिक्षक/ शिक्षिका अपने विवेक से अन्य क्रियाकलापो को भी करवाते जाएँ। इसी क्रम मे उनके द्वारा किये जा रहे उच्चारण - शिक्षण की प्रगति का आकलन भी होता जाएगा जिसमे आवश्यकतानुसार सुधार किया जाएगा।

शिक्षण - समस्या - बिंदु : वर्तनी - शिक्षण संबंधी समस्याएँ

हिंदी भाषा-शिक्षण के संदर्भ में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना, इन सभी कौशलों का समग्रता मे विकास होना चाहिए। यहाँ शिक्षण - समस्या - बिदु के रूप मे वर्तनी - शिक्षण पर विचार किया जाना अपेक्षित है। वर्तनी का संबंध भाषा के लेखन-कौशल से है। यो तो सभी स्तरों पर वर्तनी-शिक्षण की आवश्यकता पडती है, परतु प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं मे इस प्रश्न पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। कारण यह है कि यदि इस स्तर पर वर्तनी की अशुद्धियों को ठीक नहीं किया गया तो कालांतर में वे व्यक्तित्व से इस प्रकार जुड जाती हैं कि उन्हे सुधारना कठिन हो जाता है।

प्रशिक्षण के उद्देश्य : वर्तनी - शिक्षण के उद्देश्य

हिंती वर्तनी-शिक्षण के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं -

- वर्तनी - दोष के कारणों को मालूम करना।
- उन कारणो को दूर करना
- विद्यार्थियों में वर्तनी-बोध का निर्माण करना।

प्रशिक्षण सम्बन्धी समस्याओं के कारण : वर्तनी- अशुद्धि के कारण

हिंदी वर्तनी-अशुद्धि के प्रमुख कारण इस प्रकार है -

- मातृभाषा का प्रभाव
- ध्वनियों के प्रयोग का विवेक न होना
- अनुस्वार और अनुनासिक में भेद न कर पाना।
- प्रत्यय जोडने संबंधी नियमों की जानकारी का ठीक से न होना।
- संधि सबंधी नियमों की जानकारी का ठीक से न होना।
- लिग और वचन संबंधी प्रयोगों की समुचित जानकारी का न होना।

वर्तनी-अशुद्धि के उदाहरण -

यदि विद्यार्थी की मातृभाषा मानक हिंदी न होकर, कोई बोली होती है, तो उसके प्रभाव से हिदी - प्रयोग में शब्दों की वर्तनी प्रभावित हो सकती है। जैसे - बांगलाभीषी हिदी के स्वीकार का

शिकार के रूप में उच्चारण करते है, और उसी के अनुरूप लिख भी देते है। इसी तरह **आसमान** को **आशमान** रूप मे लिख दिया जाता है।

ध्वनियो के प्रयोग मे विवेक का प्रयोग न करना भी दोषपूर्ण वर्तनी का उदाहरण बन जाता है। जैसे - **ढ / ढ़** और **ड / ड़** मे भेद न कर पाने के कारण **पढ़ाई** को **पढाई** और **डंडा** को **डंड़ा** लिख दिया जाता है।

मात्राओं को अनावश्यक रूप से लगा देने और कभी उन्हे हटा देने से वर्तनी संबंधी अशुद्धि हो जाती है जिसके कारण अर्थ-परिवर्तन भी हो सकता है। जैसे - **काल- कल, ताल- तल, जाल- जल, मोर- मौर, सिकता - सकता** आदि।

प्रत्यय के जुड़ने से भी वर्तनी या मूल रूप बदल सकता है। जैसे - **नीति + इक** मिलाकर **नैतिक** होना चाहिए लेकिन उसे प्राय: **नीतिक** लिख दिया जाता है। इसी प्रकार **समाज** मे **इक** प्रत्यय जोड़कर **सामाजिक** बनता है लेकिन उसे **समाजिक** रूप में लिखने की ग़लती हो जाती है।

संधि के नियमो की जानकारी न होने के कारण वर्तनीगत अशुद्धि हो जाती है। उदाहरणार्थ, **उज्ज्वल** के स्थान पर **उज्जवल** लिख देना। अनुस्वार और अनुनासिक का भेद भुला देने से भी वर्तनीगत दोष आ जाता है। जैसे - हंस और हँस। उल्लेख्य है कि लिखने में अनुस्वार को छोड़ देने से भी वर्तनी - दोष हो जाता है --

वंश - वश

कहीं - कही

चौक - चौक

लिग और वचन-संबंधी प्रयोग की जानकारी ठीक से न होने के कारण भी वर्तनी की समस्या आ सकती है। उदाहरणार्थ - **महोदय** से **महोदया, शिक्षक** से **शिक्षिका** के सादृश्य पर **गुणवान** से **गुणवती** के स्थान पर **गुणवाना** जैसा अशुद्ध रूप लिखना। इसी तरह **विद्यार्थी** का बहुवचन बनाने में **विद्यार्थीयो** जैसा अशुद्ध प्रयोग करना।

वर्तनी दोष के कारणों के निराकरण हेतु सुझाव-

दोषपूर्ण वर्तनी यदि मातृभाषा के प्रभाव से हो रही है, तो विद्यार्थी मे मातृभाषा और हिंदी की प्रकृति का विवेक उत्पन्न करना होगा। यदि विद्यार्थी दंत्य **स** के स्थान पर तालव्य **श** का व्यवहार करता है, तो उसे बताना होगा कि शब्द विशेष के लिए हिंदी मे कब **स** का व्यवहार करे और कब **श** का। जैसे - हिंदी में **साड़ी** उच्चारण करना चाहिए न कि **शाड़ी**।

यदि विद्यार्थी **ड / ड़** और **ढ / ढ़** मे अन्तर नहीं कर पा रहा है तो उसे इन ध्वनियों की उच्चारण - प्रक्रिया बतानी होगी। साथ ही, ऐसे शब्दो को बार-बार लिखवाना चाहिए जिनमे इन ध्वनियों का व्यवहार हुआ हो। उदाहरणार्थ - **डंडा / कड़ा, ढक्कन / पढ़ाई, शेष / सीढ़ी** आदि।

विद्यार्थियो के निजी भाषा - संस्कार के कारण ह्रस्व तथा दीर्घ मात्राओं के प्रयोग मे कठिनाई होती है। जैसे **काल** और **कल, मिठाई** और **मीठाई, सुना** और **सूना, चुना** और **चूना**।

इसके अतिरिक्त कभी - कभी मात्रा का प्रयोग छोड़ दिया जाता है, जैसे - **मिठाई** का **मठाई** हो जाना।

मात्रा-दोष दूर करने के लिए विद्यार्थियो के अशुद्ध उच्चारण को सुधारना होगा क्योंकि यदि वे गलत बोलेंगे तो दोषपूर्ण लिखेंगे भी। यदि मातृभाषा के प्रभाव से मात्रा की अशुद्धि हो रही है, तो उस प्रभाव से उन्हे बचाना होगा। इसके लिए अध्यापक/ अध्यापिका को उनमे ऐसा विवेक जगाना होगा जिससे वे हिंदी भाषा को मातृभाषा के प्रभाव के बिना बोल तथा लिख सके।

अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) मे विभेद करने के लिए आवश्यक है कि दोनों के भेद को स्पष्ट करते हुए विभिन्न प्रयोगों के द्वारा दोनो की सही जानकारी करवाई जाए। जैसे - **हंस** एक पक्षी का नाम है पर यदि इसके स्थान पर **हँस** कर दिया जाए, तो वह हँसना क्रिया का वाची बन जाएगा।

प्रत्यय लगाने से शब्द की स्थिति कैसी हो जाएगी, यदि इस सबंध में उन्हे सही नियम की जानकारी हो जाएगी, तब वे **उत् + ज्वल = उज्ज्वल** लिखेंगे।

यदि वर्तनी की ग़लती लिंग और वचन की समुचित जानकारी न होने के कारण हो रही है, तो तत्संबधी नियमो को बताकर उसका निराकरण किया जाए।

- वर्तनीगत त्रुटियो को दूर करने के लिए ऐसे शब्दो का अभ्यास करवाया जाए जिसमे श, स, ष, ण, न, भ, व, क्ष, छ ध्वनि हो।

सर्वप्रथम इन वर्णों के सही उच्चारण करवाए जाएं ; फिर उन्हे ठीक वर्तनी के साथ लिखने को दिया जाए। तदुपरात उनसे उपर्युक्त वर्णों पर चिह्न लगाने को कहा जाए। यह क्रियाकलाप श्यामपट्ट पर भी करवाया जा सकता है, जैसे -

श - शरीर, आवश्यक, शुद्ध, शांत, आशा,
ष - षडयन्त्र, वर्षा, निष्ठा, धनुष, आविष्कार
स - सफाई, समय, उल्लास, पसीना, सब
ब - बुद्धिमान, बाहर, बालक, बल
व - वन, विशेष, विज्ञान, वर्षा
ण - प्राणी, रामायण, प्राण, साधारण
न - साधन, प्रधान, मानव, पानी, पसीना
क्ष - क्षत्रिय, क्षमा, कक्ष, कक्षा, सुरक्षित
छ - छाता, छाया, छवि, परछाई

- कक्षा के विद्यार्थियों को दो समूहों मे विभाजित कर लिया जाए। फिर पूछे गए शब्द की वर्तनी बारी-बारी से दोनों समूहों से श्यामपट्ट पर लिखवाएं।

- श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिख दिये जाएं, फिर कुछ देर तक विद्यार्थियों को दिखाकर उन्हें मिटा दिया जाए। इसके बाद विद्यार्थियो से श्यामपट्ट पर उन शब्दों की वर्तनी लिखवायी जाए।

उल्लेख्य है कि वर्तनीविषयक त्रुटियो अथवा भूलों के निराकरण के लिए विद्यार्थियों से व्यक्तिगत या सामूहिक कार्य करवाया जाए। इस तरह के कार्यकलापों को नियमित रूप से करवाया जाना अपेक्षित है।

मूल्यांकन -

विद्यालय द्वारी ली जाने वाली औपचारिक परीक्षाओं के साथ-साथ शिक्षक/ शिक्षिका, विद्यार्थियो का कक्षा में तात्कालिक मूल्यांकन करे और यह मूल्यांकन सतत रूप मे सत्रपर्यंत चलता रहेगा। शिक्षक/ शिक्षिका मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियो के वर्तनी - दोषों में सशोधन करते जाएंगे और उनसे अभ्यास करवाते जाएंगे। मूल्यांकन करते समय पूर्व निर्दिष्ट गतिविधियो का ध्यान रखना वांछनीय है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक/ शिक्षिका अपने विवेक से अन्य क्रियाकलाप भी करवाते जाएं। इसी क्रम में उनके द्वारा किये जा रहे वर्तनी - शिक्षण की प्रगति का आकलन होता जाएगा जिसमे आवश्यकतानुसार सुधार किया जाएगा।

शिक्षण - समस्या - बिंदु : लिंग- शिक्षण संबंधी समस्याएँ

लिग - निर्णय का सबंध हिंदी भाषा के बोलने और लिखने, दोनो कौशलो से है। लिग की जानकारी के बिना शुद्ध हिंदी का प्रयोग कर पाना कठिन है। सभी स्तरों पर (प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च कक्षाओं तक) लिग-शिक्षण की आवश्यकता बनी रहती है। इसीलिए प्राथमिक स्तर से ही, विद्यार्थियो की लिंगविषयक अशुद्धियो को ठीक करना अत्यत आवश्यक है।

प्रशिक्षण के उद्देश्य : लिंग - शिक्षण के उद्देश्य

लिग - शिक्षण के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते है -

- लिग - निर्णय संबंधी दोषों के कारणों को मालूम करना और उन्हे दूर करना।
- विद्यार्थियों मे लिग - निर्णय - बोध का निर्माण कराना।

प्रशिक्षण संबंधी समस्यायों के कारण : लिंग - निर्णय संबंधी अशुद्धियों के कारण

- मातृभाषा/ क्षेत्रीय भाषा का प्रभाव। यदि विद्यार्थियो की मातृभाषा मे लिग-निर्णय संबंधी प्रयोग की व्यवस्था भिन्न है, तो विद्यार्थियों से हिदी मे लिंग - निर्णय सवधी भूले होंगी ।
- पुलिग से स्त्रीलिग बनाने के नियमों का जानकारी का ठीक से न होना।
- शिक्षक/ शिक्षिका का स्वयं का लिग-बोध न होना।
- हिदी में केवल दो लिगों (स्त्री., पु.) का होना, जबकि परिवेश मे उपलब्ध भाषाओं (सस्कृत, ओडिया, बाँगला और अँग्रेज़ी) मे स्त्रीलिग, पुलिग के साथ-साथ नपुसक लिंग भी हैं।
- हिदी मे लिग -विधान संबंधी सुनिश्चित नियमो का अभाव।

कभी - कभी एक उपादान के पर्याय (समानार्थी) शब्द एक ही लिग मे प्रयोग कर दिये जाते है जबकि उनके पर्यायो मे लिग - भेद हुआ करता है, जैसे --

ग्रंथ, पुस्तक [ग्रंथ (पु.) - पुस्तक (स्त्री.)]

वायु, पवन [वायु (स्त्री.) - पवन (पु.)]

/

लिंग संबंधी अशुद्धियों के उदाहरण

परिवेश का प्रभाव लिग - निर्णय पर पड सकता है। बाँगलाभाषी शब्द के लिंग को जाने बिना शुद्ध बाँगला वाक्य लिख सकते है, जबकि इस सदर्भ में हिंदी की स्थिति अलग होती है। अपनी भाषा के अनुरूप बाँगलाभाषी ऐंसा बोल सकते है - **लड़की जाएगा या लड़का जाएगी।**

लिग की आवश्यकता के कारण हिदी में वाक्य - स्तर पर परिवर्तन दिखाई देते हैं। जैसे - **राम की बड़ी लड़की स्कूल जाएगी।** इस प्रकार के परिवर्तन पर ध्यान न देने के कारण शुद्ध वाक्य नही बन पाता। जैसे - **राम का बड़ी लड़की स्कूल जाएगा।**

यदि शिक्षक/ शिक्षिका को लिग -प्रयोग -विवेक नहीं है, तो वे विद्यार्थियों को लिंग-शिक्षा की जानकारी देने मे समर्थ नहीं हो पाएंगे। उदाहरणार्थ यदि शिक्षक/ शिक्षिका **दही** का पुलिंग के स्थान पर स्त्रीलिग मे व्यवहार करते हैं, तो वे विद्यार्थियो को दही शब्द का लिंग, स्त्रीलिग बताएंगे, यदि वे दही का पुलिग प्रयोग कर रहे होंगे, तो वे उसे पुलिग में प्रयोग करने का निर्देश देंगे। पुलिग से स्त्रीलिंग शब्द बनाने के नियमो की जानकारी न होने के कारण भी लिग - शिक्षण मे कठिनाई होती है। उदाहरणार्थ **सम्राट** शब्द का स्त्रीलिग बनाने की जानकारी नहीं है, तो इसके स्थान पर मनमाने ढंग से कुछ भी प्रयोग कर दिया जाएगा, जबकि इसके लिए **सम्राज्ञी** शब्द प्रयुक्त होना चाहिए। ऐसी स्थिति में इन भाषाओं के प्रयोक्ताओं को नपुंसक लिग के शब्दों को लेकर भ्रम होता है कि उन्हें किस लिग में रखा जाए। जैसे हिंदी मे **मेज़**, स्त्रीलिग में प्रयुक्त होता हे लेकिन जिन लोगों की मातृभाषा में नपुंसक लिग का विधान है, उनके सामने कठिनाई आती है कि वे इस तरह के शब्द/ शब्दों को पुलिंग मे प्रयुक्त करे, या स्त्रीलिंग के सदर्भ में।

लिंग - निर्णय - दोष के कारणों के निराकरण हेतु सुझाव

दोषपूर्ण लिग-निर्णय यदि मातृभाषा या परिवेश के प्रभाव से हो रहा है तो विद्यार्थियो को भाषा के लिग - विधान से अवगत कराना होगा। मातृभाषा और हिदी की प्रकृति से परिचित कराना होगा तथा परिवेश की भाषा और हिदी बोलते समय विद्यार्थी लिंग का ग़लत प्रयोग करता है, तो उसे सही जानकारी करवाई जाए। जैसे - **पुत्र के लिए, आप का बेटा**, जबकि पुत्री के लिए शुद्ध प्रयोग होगा **आप की बेटी।**

पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय वाक्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए वाक्य -विश्लेषण करते हुए विद्यार्थियों को लिग की सही जानकारी देनी होगी। लिग के कारण वाक्य -स्तर पर पड़े प्रभाव को दर्शाना होगा -

श्यामा का घर बहुत बड़ा है जिसमें कई छोटी खिड़कियाँ है। यहाँ **श्यामा** के स्त्रीलिग होने के बावजूद विभिन्न शब्द-प्रयोग के कारण **बड़ा (पु.)** और **छोटी (स्त्री.)** का व्यवहार हुआ है। इस स्थिति से विद्यार्थियों को अवगत कराना होगा।

यदि कोई **मेरी नाम सीता है** जैसा प्रयोग करता है, तो उसे बताना होगा कि यदि नाम स्त्रीलिंग भी हो, तो इसके पूर्व लगनेवाला सर्वनाम प्रयोग पुलिग **(मेरा)** होगा।

पुलिंग से स्त्रीलिग प्रयोग बनाने के लिए कुछ सामान्य नियमों की जानकारी भी देनी होगी -

- विद्यार्थियों को सर्वप्रथम स्पष्ट कर देना होगा कि हिंदी मे केवल **पुलिंग - स्त्रीलिंग** का विधान है, **नपुंसक लिंग** के शब्द या तो स्त्रीलिग मे होगे या पुलिग में।
- उन्हे उन शब्दों की अलग से जानकारी देनी होगी जो पर्यायवाची होते हुए भी लिग-भेद रखते हो। जैसे - **पवन (पु.) और वायु (स्त्री.), ग्रंथ (पु.) और पुस्तक (स्त्री.)।**
- विद्यार्थियों को बताना होगा कि हिंदी मे वचन बदलने से लिग नहीं बदलता। जैसे

  लकड़ी सूखी है। (एकवचन)

  लकड़ियाँ सूखी हैं। (बहुवचन)
- विद्यार्थियो को यह बताना होगा कि हिंदी का लिग-विधान प्रयोगाश्रित है और वे पढ़ने - सुनने मे इस बात का ध्यान रखे, तो उनके अंदर शुद्ध लिंग- प्रयोग का विवेक पैदा होगा।
- लिग संबंधी सामान्य नियमों को भी बताना होगा और साथ ही, उनके अपवादो का भी उल्लेख करना होगा। उदाहरण -

क) नर प्राणियों के नाम प्रायः पुलिंग में होते हैं। जैसे, सोहन, राम, रहीम।

ख) मादा (स्त्री.) प्राणियों के नाम स्त्रीलिंग में आएंगे - मीता, प्रबोधनी, शकीला।

ग) **द्रव पदार्थो के नाम प्रायः पुलिंग में होते हैं। जैसे, घी, तेल, दूध, पानी - (अपवाद, स्याही)**

घ) **रत्नों के नाम प्रायः पुलिंग में होते है - हीरा, पन्ना, मूँगा।**

ड) **भाषा, बोली के नाम स्त्रीलिंग मे व्यवहृत होते हैं - हिंदी, बॉगला, उड़िया, अवधी आदि।**

च) **कठोर वस्तुओं अथवा अपेक्षाकृत रूप - आकार में बड़ी चीज़ों के नाम प्राय : पुलिंग में प्रयुक्त होते है। जैसे - पहाड़, पत्थर, लोहा, सोफा आदि।**

लिगविषयक त्रुटियों के निराकरण के लिए विद्यार्थियों से व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्य करवाया जाए। गलतियो को ठीक करने का अभ्यास नियमित रूप से करवाया जाए। समय - समय पर शिक्षक/ शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था आवश्यक है।

मूल्यांकन

विद्यार्थियो में लिग - निर्णय में हुई प्रगति के आकलन के लिए उनका सतत मूल्याकन व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर किया जाना आवश्यक है। विद्यार्थियों को पुलिग और - स्त्रीलिंग शब्द देकर लिग के आधार पर शब्द छाँटने का कार्य करवाया जाए। लिग प्रयोगवाले अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करवाने के कार्य दिये जाएं जिससे लिग की जानकारी बढ़ सके। बीच - बीच में उनकी मौखिक अभिव्यक्ति की जाँच की जाए ताकि पता चले कि वे बोलचाल में लिग का सही प्रयोग किस स्तर तक कर पाते है।

मूल्यांकन से विद्यार्थियो के लिग-निर्णय तथा उसके प्रयोग मे हुई प्रगति का पता तो चलेगा ही, उसके साथ - साथ ग़लतियो को दूर करने की दिशा मे शिक्षक/ शिक्षिका द्वारा किये जा रहे उपायों की सफलता का स्तर भी आँका जा सकता है।

शिक्षण - समस्या - बिंदु : वचन- शिक्षण संबंधी समस्याएँ

भाषा-शिक्षण के संदर्भ मे सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशलों का विकास आवश्यक है। यहाँ शिक्षण-समस्या-बिंदु के रूप मे वचन - शिक्षण पर विचार किया जाना अपेक्षित है। वचन-शिक्षण, व्याकरणसम्मत भाषा -शिक्षण से संबद्ध है। वचन-प्रयोग संबधी अशुद्धियाँ प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक की कक्षाओं तक होती रहती है। इसीलिए प्राथमिक स्तर से ही वचन संबधी अशुद्धियो से बचने का प्रयत्न आवश्यक है।

प्रशिक्षण के उद्देश्य : वचन - शिक्षण के उद्देश्य-

- वचन संबंधी दोषों को दूर करना।
- वचन के नियमो एवं उनके उपयोग की जानकारी।
- शिक्षण - क्रम में पाठ्यपुस्तक मे आए एकवचन और बहुवचन शब्दो को चिह्नित कर वचन संबंधी नियमों का शिक्षक/ शिक्षिका द्वारा उल्लेख करना।

वचन संबंधी दोषों के कारण -

- वचन संबंधी नियमों का ज्ञान न होना।
- क्षेत्रीय भाषा या मातृभाषा के प्रभाव के कारण एकवचन से बहुवचन बनाते समय ग़लतियाँ हो जाना।
- विदेशी भाषा की प्रकृति के प्रभाव से वचन - प्रयोग करने से भी तत्संबंधी अशुद्धि हो जाती है।
- वाक्य मे व्याकरणिक इकाइयों की परस्पर अन्विति न रख पाने पर वचन - प्रयोग दोषपूर्ण हो सकता है।

हिंदी भाषा में व्यवहृत होने वाले विदेशी शब्दों के वचन को हिदी की प्रकृति में न ढालकर उसे विदेशी भाषा की प्रकृति के अनुरूप प्रयुक्त करना वांछनीय नहीं है -

फुट - फ़ीट

काग़ज़ - काग़ज़ात

स्कूल - स्कूल्स

अन्विति भंग हो जाने के कारण वचन संबंधी त्रुटि हो जाती है। जैसे - लड़की, जो मेले में घूमने गयी थी, वहाँ खो गयीं।

वचन सम्बन्धी अशुद्धियों के उदाहरण -

भाषा सीखने के क्रम में एकवचन वाले शब्दो के बहुवचन रूप के ज्ञान के अभाव के कारण एकवचन वाले शब्दो का ही विद्यार्थी समय - समय पर बहुवचन मे प्रयोग कर देते है। जैसे -

- **दो लड़का जा रहे हैं।**
- **चार किताब मै खरीद रहा हूँ।**
- **लड़का लोग जा रहा है।**

आदर एवं सम्मान प्रकट करने के लिए एकवचन का प्रयोग बहुवचन के रूप मे होता है लेकिन जानकारी के अभाव के कारण इसका गलत प्रयोग होता है। जैसे -

- **प्रधानमंत्री भाषण देता है।**
- **भाईसाहब जा रहा है।**

यहाँ **प्रधानमंत्री** और **भाईसाहब** दोनो एकवचन में होते हुए भी आदरसूचकता के कारण बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होने चाहिए।

कुछ शब्दों का सदैव एकवचन मे व्यवहार किया जाता है, जबकि कुछ शब्दो का प्रयोग हमेशा बहुवचन में किया जाता है, लेकिन ऐसे शब्दों का विद्यार्थी अशुद्ध प्रयोग कर बैठते हैं। जैसे -

जनता जा रही है।

ऑख से आँसू बह रहा है।

डर के कारण मेरा होश उड़ गया।

लोग आ रहा है।

दो लड़का जा रहे हैं।

प्रेम और हरि तुम्हारा मामा हैं।

व्याकरणिक इकाइयो की परस्पर अन्विति भंग हो जाने के कारण वचन संबंधी त्रुटि हो जाती है। जैसे - लड़की जो मेले में घूमने गयी थी, वहाँ खो गयीं।

वचन संबंधी अशुद्धियों के कारणों के निराकरण हेतु सुझाव-

१. मातृभाषा के प्रभाव से वचन संबंधी अशुद्धि होने की स्थिति से बचाने के लिए विद्यार्थियों को उनका सही रूप बताया जाए -

अशुद्ध	*शुद्ध* -
भाई लोग	भाई
बच्च्या लोग	बच्चे
लड़का लोग	लड़के

विद्यार्थियो को वचन के शुद्ध रूप की जानकारी हो सके, इसके लिए उनसे शुद्ध वाक्य बनवाये जाएं।

२. वचन संबंधी विभिन्न नियमों का ज्ञान कराया जाए। उदाहरणार्थ - ईकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओ के अन्त्य ई को हस्व इ कर अंत में याँ जोड़कर बहुवचन रूप बन जाता है। इसका बोध कराना होगा। जैसे -

बेटी	बेटियॉ
स्त्री	स्त्रियॉ
नारी	नारियाँ
लड़की	लड़कियाँ

आकारांत पुलिंग संज्ञाओं के अत का आ बहुवचन मे ए हो जाता है। जैसे -

मेला - मेले

कक्षा में एकवचन से बहुवचन और बहुवचन से एकवचन मे बदलने का अभ्यास नियमित रूप से करवाया जाय। एकवचन से बनने वाले बहुवचन में शुद्ध - अशुद्ध रूप रखे जाएं। विद्यार्थी सही रूप को रेखाकित करें, ऐसा उन्हें निर्देश दिया जाए। यह प्रयास रहे कि अन्य शब्दों के साथ - साथ उन शब्दो के भी एकवचन या बहुवचन बनवाये जाएं जो उनकी पाठ्यपुस्तक में व्यवहृत हुए है।

मूल्यांकन

वचन संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु किये गए कार्यों द्वारा विद्यार्थियों के सामर्थ्य में कहाँ तक वृद्धि हुई तथा शिक्षक/ शिक्षिका अपनी विभिन्न विधियों द्वारा विद्यार्थियों की क्षमता को बढ़ाने के लिए किस सीमा तक सफलता मिली, इसका मूल्यांकन आवश्यक है। इसके लिए विद्यार्थियों को एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए शब्द दिये जाएं। साथ ही, बहुवचन शब्द देकर उनके एकवचन रूप भी बनवाये जाएं। शुद्ध - अशुद्ध रूपों को देकर भी उनके वचन संबंधी बोध का आकलन किया जा सकता है।

शिक्षण - समस्या - बिंदु : कारक - शिक्षण संबंधी समस्याएँ

हिंदी भाषा - शिक्षण के संदर्भ में विभिन्न कौशलों का समग्रता में विकास करने के क्रम में शिक्षण - समस्या बिंदु के रूप में कारक-शिक्षण पर विचार करना अपेक्षित है। भाषा की कई समस्याओं में से शुद्ध लेखन भी एक समस्या है। शुद्ध लेखन के लिए कई बातो पर ध्यान देने के साथ - साथ कारक - प्रयोग की सही जानकारी भी होनी चाहिए। कारको के प्रयोग मे हुई अशुद्धियों के कारण वाक्य - संरचना भी दोषपूर्ण हो सकती है। प्राथमिक स्तर पर यदि कारकों के प्रयोग की समुचित दृष्टि नहीं बनी तो, कालांतर में समग्र भाषा का विकास बाधित होगा।

प्रशिक्षण के उद्देश्य : कारक - शिक्षण के उद्देश्य

- कारक - प्रयोग में होने वाली त्रुटियों और उनके कारणों को दूर करना।
- उन कठिनाइयों को दूर करने के उपाय सुझाना।

प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं के कारण : कारक संबंधी अशुद्धियों के कारण

१. विद्यार्थियों को कारको के प्रयोग की जानकारी न होना।

२. शिक्षक/ शिक्षिका द्वारा केवल सैद्धांतिक या पारिभाषिक ज्ञान पर बल देना। व्यावहारिक ज्ञान या अभ्यास की उपेक्षा कर देना।

३. शिक्षक/ शिक्षिका की स्वयं की कारक संबंधी जानकारी ठीक से न होना।

४. विद्यार्थियों के कारक - प्रयोग के दोषो को अनदेखा कर देना।

कारक - प्रयोग में होनेवाली अशुद्धियों के उदाहरण -

बाँगला में हिंदी के **ने** का व्यवहार नहीं होता है। इसलिए बाँगला या अन्य ऐसी भाषा/ बोली जिसमें ने का प्रयोग नहीं होता, उसको प्रयोग करनेवाले लोग हिंदी बोलते या लिखते समय **ने** के प्रयोग में प्राय: अशुद्धि कर देते है। पहली स्थिति में **ने** के प्रयोग को छोड़ दिया जाता है। जैसे - **शेर कई आदमियों को खाया (अशुद्ध प्रयोग)** ।

दूसरी स्थिति में जहाँ ने का व्यवहार नहीं होना चाहिए, वहाँ अतिरिक्त रूप से ने जोड़ दिया जाता है। उदाहरणार्थ - **मैने गाँव गया था। (अशुद्ध प्रयोग)**

बाँगला में कर्मकारक **को** चिह्न **ने** स्थान पर **के** का व्यवहार होता है। जैसे -

राम ने रावण को मारा। (हिंदी) **राम रावण के मारलो। (बाँगला)**

इस कारणवश हिंदी बोलते - लिखते समय बाँगलाभाषियो से यदि ऐसा प्रयोग हो जाए, तो उसका काण मालूम हो जाना चाहिए -

राम रावण के मारा। (अशुद्ध प्रयोग)

इस तरह अन्य कारक - चिह्नो के प्रयोग मे अशुद्धियाँ हो सकती है।

अशुद्धियों के निराकरण हेतु सुझाव -

जहाँ तक **ने** के प्रयोग मे होने वाली अशुद्धियों की समस्या है, इसके विषय में विद्यार्थियों को बताना होगा कि हिंदी वाक्य-विन्यास में **ने** का प्रयोग कर्त्ता के साथ तभी होता है, जबकि क्रिया सकर्मक और भूतकाल की हो और साथ ही, कर्तृवाच्य की हो, जैसे -

मुख्य अतिथि ने विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये।

यहाँ ऊपर बतायी गयी सभी स्थितियाँ अनुकूल है, इसलिए **ने** का प्रयोग होना अनिवार्य है।

हिंदी सीखने और व्यवहार में लानेवाले विद्यार्थियों से **को** प्रयोग को लेकर अशुद्धि हो सकती है, क्योंकि **को** चिह्न, कर्म और संप्रदान दोनों कारको में होता है लेकिन दोनों के बीच का अतर स्पष्ट हे। जहाँ क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है, वहाँ **को** चिह्न **कर्मकारक** का माना जाएगा।

गीता ने मीता **को** छड़ी से मारा। (कर्मकारक)

इसके विपरीत जहाँ किसी के लिए कोई कार्य करने या किसी चीज़ को देने की बात होती है, वहाँ **संप्रदान कारक** का **को** चिह्न व्यवहृत होता है -

दुकानदार **को** पैसे दे दो। (संप्रदान कारक, देने के संदर्भ में)

कारक - चिह्नो के प्रयोग मे कभी - कभी से के प्रयोग को लेकर भ्रम उत्पन्न हो जाता है क्योकि **करण** और **अपादान**, दोनो कारकों के लिए **से** चिह्न का व्यवहार होता है। करण कारक मे से, साधन के लिए आता है जबकि अपादान मे यही चिह्न अलग होने के संदर्भ मे आता है। उदाहरणार्थ -

माँ ने बच्चे को चम्मच से खीर खिलायी।

(से चिह्न करण कारक का है क्योंकि चम्मच साधन का कार्य कर रहा है।)

पेड़ से पत्ते झड़ रहे है।

(से चिह्न अपादान कारक का है, क्योंकि झड़ने की प्रक्रिया में पत्ते, पेड़ से अलग हो रहे हैं।)

कारक - प्रयोग के क्रम में **पर** और **में** के स्थान पर **पे** तथा **मे** जैसा ग़लत प्रयोग कर दिया जाता है। जैसे -

संदूक मे कपड़े रखे हैं। (अशुद्ध प्रयोग)

संदूक में, कपड़े रखे हैं। (शुद्ध प्रयोग)

छत पे मत जाओ। (अशुद्ध प्रयोग)

छत पर मत जाओ। (शुद्ध प्रयोग)

इस ओर भी विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट करना होगा। साथ ही, **वचन संबंधी नियमों** की जानकारी देना उपयोगी होगा क्योकि वचन के कारण कारक चिह्न विशेष में परिवर्तन आ सकता है। जैसे -

रमेश का बेटा। (एकवचन) **रमेश के बेटे। (बहुवचन और सम्मान देने के अर्थ में)**

विद्यार्थियो से कारकों का अधिकाधिक अभ्यास करवाया जाए। शिक्षक/ शिक्षिका पाठ्यपुस्तकों के साथ - साथ, समाचार पत्र, पत्रिकाओं से कारकों के प्रयोग को देखने-समझने का सुझाव विद्यार्थियो को दे सकते है। विभिन्न कारक - चिह्नों से मौलिक वाक्य-निर्मित करने के लिए भी उन्हें प्रेरित किया जा सकता है। इसी क्रम में रिक्त-स्थानों की पूर्ति कारक चिह्नो के सही प्रयोग द्वारा करवायी जा सकती है।

मूल्यांकन -

कारक - चिह्नो के प्रयोग मे हुई प्रगति के आकलन हेतु विद्यार्थियों का मूल्यांकन करना अपेक्षित है। कक्षा में पाठ्यपुस्तक के आधार पर अभ्यास हेतु मौखिक, लिखित प्रश्न दिये जाने चाहिए। पाठ्यपुस्तक के अशों से कारक-चिह्नों को रेखांकित करने तथा उनका नाम निर्दिष्ट करने के लिए अभ्यास करवाना उपयोगी होगा। कारकों की सूची देकर विद्यार्थियो से वाक्य-निर्मिति करवायी जाए। जिन विद्यार्थियों को कारक-चिह्न के प्रयोग का विवेक हो चुका है, वे दूसरे विद्यार्थियो के कारक - प्रयोगो की जाँच कर सकते हैं।

मूल्याकन के द्वारा विद्यार्थियो की कारक संबधी ज्ञान मे हुई प्रगति का आकलन तो होगा ही, साथ ही, शिक्षक/ शिक्षिका को अपने द्वारा किये गए कारक-शिक्षण मे मिली सफलता/ असफलता का भी अनुभव होगा।

शिक्षण - समस्या - बिंदु : अर्थबोध की समस्याएँ

हिंदी भाषा-शिक्षण के संदर्भ मे सुनना, बोलना, पढ़ना, और लिखना, इन सभी मौलिक कौशलों का आनुषंगिक कौशलो के साथ समग्रता मे विकास होना चाहिए। यहाँ शिक्षण -समस्या -बिदु के रूप में अर्थबोध संबंधी शिक्षण पर विचार किया जाना अपेक्षित है। अर्थबोध का संबंध भाषा के भाव-सौंदर्य से है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओ में इस पक्ष पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। भाषा-शिक्षण के क्रम में कई स्थलो पर दुरूह भाषा के प्रयोग मिलते है। विशेष रूप से जब रचनाकार गूढ भावो को व्यक्त करते हैं, तो विद्यार्थियों को अर्थबोध की गभीर समस्या से सामना करना पड़ता है।

प्रशिक्षण के उद्देश्य : अर्थबोध संबंधी उद्देश्य

१. भाषा में अर्थबोध - शिक्षण के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते है -
   - समान अर्थ वाले शब्दों को मालूम करना
   - कहावतों और मुहावरों में विशेष अर्थ निहित होता है जिसे समझने में कक्षा छह के विद्यार्थियो को कठिनाई होती है। उनके अर्थों को स्पष्ट करना जिससे वे आवश्यकता पडने पर उनका विवेकपूर्वक प्रयोग कर सकें।
   - समान उच्चरित किंतु भिन्न अर्थवाले शब्दों के कारण विद्यार्थियो में उत्पन्न अर्थबोध की समस्या को दूर करना।
   - एक शब्द के कई अर्थ प्रचलित होने के कारण संदर्भानुसार विद्यार्थियों मे सही अर्थ - क्षमता विकसित करना।
   - भिन्न - भिन्न अर्थ वाले शब्द अपनी रूपगत भिन्नता के कारण अर्थबोध की कठिनाई का अनुभव करते है। विद्यार्थियो में अर्थबोध की इस समस्या को दूर करना।

२. पाठ में वर्णित तथ्यो, विचारों और भावों को समझाना।

३. पाठ के कठिन अंशो को सहजता के साथ स्पष्ट करना।

४. अर्थ को स्पष्ट करने के लिए साहित्यिक विधाओं (कविता, निबंध, कहानी, जीवनी, अत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-वृतांत, पत्र आदि) और उनकी शैली में अंतर करना।

प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं के कारण : अर्थबोध संबंधी अशुद्धियों के कारण

आज विद्यार्थी जिन परिस्थितियो में रह रहे हैं, वे आज से कुछ वर्षों पूर्व या शताब्दी पूर्व की परिस्थितियों से भिन्न है। इसलिए पाठ्यक्रम की रचनाओं को पढ़ाने के संदर्भ मे प्रायः अर्थबोध संबंधी कठिनाई यह आ जाती है कि आज विद्यार्थियों की मानसिकता नए युग के सापेक्ष बदल गई है और वे आज के परिवेश में कई रचनाओं के मर्म से अवगत नहीं हो पाते। अपने परिवेश से उनकी मानसिक स्थिति ऐसी बन गयी है कि वे मूल्य-बोधों के प्रति असमंजस में पड़ जाने से तत्कालीन भावबोध हृदयगम करने मे असहजता का अनुभव करते है। जैसे -

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोइ तु फूल।
तोहि फूल के फूल है बाको है तिरसूल।।

आज विद्यार्थियो की मानसिक स्थिति **जैसे को तैसा** प्रवृत्ति की ओर बढ़ रही है। ऐसी स्थिति मे यह दोहा उनमे मूल्य - बोध की टकराहट उत्पन्न कर सकता है।

आज विद्यार्थी जिस वातावरण मे रहते है, वह पूरी तरह भौतिक है। मध्यकाल की अधिकांश रचनाएं भिन्न-भिन्न प्रकृति की है। अतः भाव-ग्रहण के स्तर पर विद्यार्थियो के लिए समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है, जैसे कि बहुत-सी कविताओं मे **परलोक और इहलोक** की तुलना की गई है परंतु आज वैज्ञानिक दृष्टि के कारण परलोक जैसी बात पर अधिकांश विद्यार्थियों में विश्वास नहीं रह जाता।

उदाहरणार्थ - **या दुनिया मे आयके, छाँड़ि देय तु ऐंठ**
लेना होय सो लेइ ले, उठी जात है पैठ।

या दुनिया का प्रयोग यहाँ इस बात की ओर संकेत करता है कि इस दुनिया के अतिरिक्त कोई दूसरी दुनिया भी है। इस नीति संबधी सहित्य का आदर्श इतना फीका पड़ गया है कि अब तो कुछ लोग कहने लगे है कि नीति के अतर्गत आनेवाली रचनाएं साहित्य की कोटि में नहीं आनी चाहिए। भाषा संबंधी अर्थ-ग्रहण करने के स्तर पर भी विद्यार्थियों के लिए समस्याएँ उत्पन्न होती है, जैसे -

मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरख हरख जस गायो।

उपर्युक्त पंक्ति में प्रयुक्त **जस** शब्द को लेकर प्रायः विद्यार्थियो में अर्थ-बोध की कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। इसका कारण है कि **जस** शब्द का प्रयोग **जैसा के लिए** भी होता है (**जस का तस - जैसा का तैसा**), जबकि उपर्युक्त पंक्ति मे **जस** का अभिप्राय **यश** से है।

इसी तरह रहीम के निम्नलिखित दोहे में अर्थबोध विषयक कठिनाई उपस्थित हो सकती है -

जो ग़रीब पर हित करै, तै रहीम बड़ लोग।
कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई योग।।

इस दोहे में **पर हित** प्रयोग मे अर्थबोध संबंधी कठिनाई आ सकती है। कारण यह कि कवि का आशय यहाँ इस प्रकार है कि जो **गरीब की भलाई करता है**, लेकिन इसका दूसरा अर्थ इस रूप मे भी निकल सकता है कि **जो गरीब, दूसरे का भला करता है**। स्पष्ट है कि **पर** प्रयोग के सदर्भ मे अर्थ -बोध संबंधी भ्रम उत्पन्न होता है।

गद्य में भी विद्यार्थियो को अर्थबोध की समस्याएँ आती है जैसे - **उसने देखा, एक स्वर्गीय ज्योति उसे बुला रही है**। इस पंक्ति मे **स्वर्गीय ज्योति** का अर्थ **स्वर्ग का दिव्य प्रकाश है** तथा दूसरा अर्थ **मृत्यु से संबंधित है**। वाक्य मे शब्दो के प्रयोग द्वारा उत्पन्न अर्थबोध की समस्याए भी दिखाई देती हैं। जैसे - **दूसरे ही दिन सुना कि बुढ़िया चली गयी**। **चली गई** का सामान्य अर्थ चले जाना है और यहाँ **चली गयी** का अर्थ **मृत्यु - प्राप्त करने से है**।

मुहावरो के प्रयोग मे भी यदि उसका अर्थ स्पष्ट न हो, तो अर्थबोध - भ्रम उत्पन्न हो सकता है। जैसे - आँखे लालपीली करना, आँख चुराना आदि। इन मुहावरों में आँखें लाल और पीली कैसे की जाती है, इसको लेकर भ्रम उत्पन्न हो सकता है कि ऐसा कैसे संभव है, जबकि इसका अर्थ है - क्रोध प्रकट करना। इसी प्रकार आँख चुराना, से लगता है कि जैसे आँख चुरायी जा रही है, जबकि इसका अभिप्राय है किसी से बचने का प्रयत्न करना।

अर्थबोध की समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव -

भाव बोध का क्षेत्र, भाषा से होकर गुज़रता है। विद्यार्थी भाषा के बाहरी रूप मे परिचित होता है, परंतु उसके आंतरिक अभिप्राय तक पहुँचने के लिए शिक्षक/ शिक्षिका की आवश्यकता होती है। जैसे - **गुरु** शब्द की वर्तनी पढ़ा देने से अथवा **गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े** वाले दोहे का अर्थ मात्र स्पष्ट कर देने से कबीरदास द्वारा व्यक्त गुरु की संकल्पना का बोध संभव नहीं है। यहाँ शिक्षक/ शिक्षिका को

अपनी भूमिका का निर्वाह करना होगा और कबीर अथवा मध्यकालीन अन्य रचनाकारों के द्वारा निरूपित गुरु की महिमा और उनकी भूमिका को स्पष्ट करना होगा। इसके अतिरिक्त अतिथि - सेवा, दान, परोपकार आदि मूल्यो को विभिन्न दृष्टांतों के माध्यम से अनुभूत कराना होगा।

शिक्षक/ शिक्षिका इस बात से विद्यार्थियो को अवगत कराएं कि उस समय की परिस्थितियाँ क्या थी और आज की परिस्थितियाँ उनसे कितना अंतर रखती है। इसके बाद प्रयास यही होना चाहिए कि विद्यार्थियों को यही शिक्षा दी जाए कि परिस्थिति के सापेक्ष हमे यथासभव **सत् या अच्छी बातों का अनुसरण करना चाहिए।** वे रचना के समय की परिस्थितियों का विद्यार्थियो को बोध कराते हुए उन्हे उस काल में ले जाएं। जैसे -

घोर अंधकार हो चल रही बयार हो,
आज द्वार-द्वार पर यह दीया बुझे नहीं।
यह निशीथ का दीया ला रहा विहान है !

उक्त पंक्तियों में कवि मे आज़ादी पाने की ललक दिखाई दे रही है, और आज वास्तविकता यह है कि देश आजाद हो चुका है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को देश की परतंत्रता काल की स्थितियां से अवगत कराना होगा और साथ ही, कठिन शब्द **निशीथ** का अर्थ, **अर्धरात्रि** बताते हुए, आज़ादी की सुबह आने वाली है, भावना को भी स्पष्ट करना होगा।

शिक्षक/ शिक्षिका को शब्द की वास्तविक आत्मा से जुडकर ठीक - ठीक अर्थ स्पष्ट करना होगा। जैसे - **या दुनिया मे आयके .... उठी जात है पैठ।** इस दोहे मे **या दुनिया** भ्रम पैदा कर सकता है, अतः विद्यार्थियों को यह बात बतानी होगी कि मनुष्य इस दुनिया मे जन्म लेकर अपने अंदर के मिथ्याभिमानको छोड़ दे। यहॉ कवि मनुष्यता का बोध कराने के लिए नकारात्मक पक्ष को दूर करने के लिए कह रहा है। कवि जिस बिन्दु को केन्द्र मे रख रहा है, वही अर्थ विद्यार्थियो को स्पष्ट करना होगा।

रचना मे शब्दों और पदों के आधार पर अर्थबोध मे जो कठिनाई आती है, उसके लिए भाषा-विश्लेषण-पद्धति अपनानी होगी। शिक्षण - क्रम में विद्यार्थियो को आवश्यकतानुसार उदाहरण देकर विषय को स्पष्ट करना होगा। जैसे -

अस्त्र - फेंक कर चलाए जा सकने वाले हथियार।
शस्त्र - हाथ में पकड़कर चलाए जा सकने वाले हथियार।

हिंदी में एक शब्द के अनेक अर्थ हो सकते है, इसे स्पष्ट करना होगा जैसे - अंक शब्द के कई अर्थ है - **चिह्न, गोद, संख्या, नाटक के अंक।** इसी प्रकार **कर** के कई अर्थ है - **हाथ, किरण, टैक्स, सूँड़।**

वाक्य-प्रयोग के माध्यम से अथवा अन्य दूसरे मिलते - जुलते शब्द लाकर विषय को स्पष्ट करना होगा। जैले - **जलज** के लिए पंकज, तथा नीरज, जैसे पर्यायवाची शब्दो के अर्थ - भेद को बताना होगा। **पंकज** कीचड़ में निकला कमल, और **नीरज** - स्वच्छ जल में निकला कमल। प्रचलित मुहावरों और कहावतो मे प्राचीनता का बोध तो रहता है, परंतु सभी मुहावरे पुराने नहीं पडते। कुछ किंवर्दतियाँ आज के वैज्ञानिक दृष्टि वाले मनुष्य के लिए अग्राह्य हो जाती है। जैसे - हंसा मोती चुने कि भूखा मर जाए। ऐसी स्थिति मे शिक्षक/ शिक्षिका को उस मुहावरे या किंवदंती के अर्थ के साथ - साथ उसकी गहरी सरचना मे उपलब्ध भाव को स्पष्ट करना होगा। जैसे - यहाँ **मोती** का अर्थ निर्मल पानी या उच्चस्तरीय वस्तु और **हंसा** को उच्चस्तरीय मनुष्य कहा गया है, विद्यार्थियो को यह समझाना होगा।

मूल्यांकन -

भाषा-शिक्षण में भावबोध की समस्या भाषा सोच से जुड़ी है। इसमें शब्दकोश, शिक्षक/ शिक्षिका भी एक सीमा तक ही सहायता कर सकते हैं। सच कहा जाए तो उनका व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव ही विद्यार्थियो को वाछित स्तर पर ले जा सकते है। इसके मूल्याकन के लिए अगली कक्षा मे दोहराने के साथ - साथ विभिन्न अवसरो पर छोटे - छोटे प्रसंगो के ज़रिए उनकी ग्रहणशीलता की जाँच की जा सकती है। शिक्षक/ शिक्षिका को पाठ के विशेष क़ठिन अंशो के आधार पर छोटे - छोटे प्रश्न बनाकर विद्यार्थियों से पूछना होगा और उन अंशों के भावो से जुडे बिन्दुओ को पुनर्रचित कर पूछने लायक बनाना होगा, तभी सही जाँच संभव होगी एवं शिक्षण - प्रक्रिया रोचक तथा फलप्रद हो सकती है।

शिक्षण - समस्या बिंदु : काव्य में क्षेत्रीय प्रयोग की समस्याएँ

हिंदी पाठ्यपुस्तक में कविता के विभिन्न रूप देखने को मिलते है और उनमे क्षेत्रीय शब्दों के प्रयोग भी दिखाई पड़ते है। यदि विद्यार्थी की अपनी भाषा मे ऐसे प्रयोग नहीं मिलते, तो उन्हे क्षेत्रीय शब्दो के अर्थ-ग्रहण मे कठिनाई होती है। इसलिए यहाँ शिक्षण - समस्या बिदु के रूप में काव्य में क्षेत्रीय प्रयोग की समस्याओ पर विचार किया जाना अपेक्षित है। पाठ्यक्रम में प्राय: जो कविताएं निर्धारित होती है, उनमे मध्यकाल की कविताएं अवश्य होती हैं जिनमें क्षेत्रीय भाषा के शब्द काफ़ी संख्या में मिलते हैं। विद्यार्थियों को उन शब्दों का अर्थ-ग्रहण करना कठिन हो जाता है। पाठ्यपुस्तको में निर्धारित मध्यकालीन कवियों की कविताओं मे प्रयुक्त क्षेत्रीय भाषा के शब्दों के प्रचुर प्रयोग और आधुनिक कवियो की कविताओ में प्रयुक्त खड़ी बोली हिंदी के शब्दों के मध्य कई स्थानों पर अंतर दृष्टिगत होने से, विद्यार्थियो को उनके अर्थ समझने मे कठिनाई होने से उनमे विषय के प्रति अरुचि बढ़ती है। अत: प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं मे भाषा मे क्षेत्रीय प्रयोग की समस्या पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रशिक्षण के उद्देश्य : काव्य में क्षेत्रीय प्रयोग की स्थिति

- पाठ्यपुस्तक मे आगत ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि के शब्द - प्रयोगो को समझाना।
- मानक हिंदी भाषा और क्षेत्रीय प्रयोगों मे परस्पर कहीं भ्रम हो, तो उसे दूर करना।

प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं के कारण -

भाषा का क्षेत्र व्यापक है। कई कारणों से भाषा परिवर्तित होती रहती है। विभिन्न कालो में कविताए लिखी गयीं होने के कारण उनका स्वरूप बदलता रहा है और कविता मे स्वत: क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग होता गया। अलग - अलग क्षेत्रों और भिन्न-भिन्न कालों में शब्दों के प्रयोग कविता में आने के कारण विद्यार्थियो को उनके अर्थ की समुचित जानकारी नहीं होती। कारण है कि प्रायः विद्यार्थी घर में किसी बोली का व्यवहार करते है और विद्यालय मे पाठ्यपुस्तकों मे हिंदी रचनाओं को पढ़ते समय ब्रज, अवधी आदि में रचित कविताओं को भी पढ़ते हैं। ऐसी स्थिति में यदि भोजपुरी को गृहभाषा के रूप में प्रयोग करने वाला विद्यार्थी ब्रजभाषा, अवधी में रचित रचनाओं को पढ़ता है, तो उसके समक्ष अनेक

शब्द - प्रयोगों को लेकर अर्थ - ग्रहण संबंधी कठिनाई आ जाती है। अर्थबोध के अभाव में कविता का रसास्वादन नहीं हो पाता और ऐसी स्थिति मे कविता-शिक्षण का उद्देश्य ही पूरा नहीं हो पाता।

हिंदी शिक्षण में क्षेत्रीय प्रयोगों के उदाहरण

पश्चिम बगाल मे कक्षा ७ के लिए सस्तुत हिंदी पाठ्यपुस्तक (साहित्य - माला, भाग - ७) मे हिंदी की कई बोलियों (ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि) के शब्दों को उदाहरणार्थ देखा जा सकता है जिनके अर्थ - ग्रहण मे विद्यार्थियों को कठिनाई आ सकती है -

भो (२/४), **माहिं**(४/४), **बापुरो** (११/५), **लौ** (१४/५), **काके** (१/१०), **काहै** (१/१०), **तोको** (७/१०), **नियरे** (१०/११), **काल्ह** (१२/११), **जस** (२/१३), **बछल** (३/१४), **कानि** (४/१४), **मोई** (४/१४), **धावै** (२/३५), **ताको** (५/३६)।

काव्य में क्षेत्रीय प्रयोग से उत्पन्न समस्या के निराकरण हेतु सुझाव -

काव्य मे क्षेत्रीय प्रयोग से उत्पन्न समस्या के निराकरण हेतु अपेक्षित है कि ऐसे प्रयोगो के हिंदी अर्थ विद्यार्थियो को बताए जाएं। जैसे -

भो - हुआ | **काहै - किस लिए** | **बछल - वत्सल, प्रेम करनेवाले**
माहिं - में | **तोको - तुमको** | **कानि - मर्यादा**
बापुरो - बेचारा | **नियरे - निकट** | **मोई - मुझे**
लौं - तक | **काल्ह - कल** | **धावै - दौड़ता है**
काके - किसके | **जस - यश** | **ताको - उसको**

विद्यार्थी, क्षेत्रीय भाषा के शब्दार्थ से परिचित हो जाएं, तो उनको उन अर्थों का और अधिक बोध कराने के लिए उनसे (उन अर्थों का) वाक्य-प्रयोग भी करवाया जाए। इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक में आए सभी क्षेत्रीय प्रयोगों के हिदी अर्थ बताते हुए यदि एक संक्षिप्त शब्दकोश तैयार करके विद्यार्थियों को दे दिया जाए, तो उपयोगी होगा। जहाँ - कहीं विद्यार्थी की गृहभाषा और क्षेत्रीय प्रयोगो मे शब्द आदि को लेकर समानता मिले, उसे भी निर्दिष्ट करना होगा क्योंकि एसी समानता देखकर विद्यार्थी क्षेत्रीय भाषा के प्रति आत्मीयता का अनुभव करता है। बहुधा मध्यकालीन कवियो ने अपनी काव्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप कविताओं में **ष** का प्रयोग **ख** के लिए किया है। इसी प्रकार **व** के स्थान पर **ब** का प्रयोग किया है। **इकार** (ि) और **ईकार** (ी) अथवा उकार (ु)

और ऊकार (ू) के बीच का फ़र्क रखा गया है। श के स्थान पर स का वहुतायत से प्रयोग मिलता है। य का ज होना अवधी कविताओ की प्रमुख विशेषता रही है। र का ड़ या ड़ का र हो जाना भी कुछ वोलियो में मिलता है। कहीं - कहीं छ का प्रयोग क्ष के लिए किया गया है।

इस तरह कवियो की वर्ण तथा वर्तनीगत प्रवृत्ति से विद्यार्थियो को परिचित करवाना आवश्यक है।

मूल्यांकन -

विद्यालय द्वारा ली जाने वाली औपचारिक परीक्षाओं के साथ-साथ शिक्षक/ शिक्षिका द्वारा विद्यार्थियों का कक्षा मे तात्कालिक मूल्यांकन किया जाए और इस मूल्याकन का सतत रूप में सत्र - पर्यन्त चलते रहना विद्यार्थियो के लिए उपयोगी होगा। विद्यार्थियो का मूल्याकन करने के लिए, उन्हे क्षेत्रीय भाषा के शब्द एक वर्ग में दिये जाएं और दूसरे वर्ग में उनके हिदी अर्थ विना क्रम के रखे जाएं। उन्हे निर्देश दिया जाए कि वे शब्दों के साथ उपयुक्त अर्थों का मिलान करते चले। यह कार्य श्यामपट्ट पर करवाने के साथ-साथ कक्षा - कार्य - पुस्तिका मे भी करवाया जाए। इसके अतिरिक्त शिक्षक/ शिक्षिका अपने विवेक से अन्य क्रियाकलाप भी करवाते जाएं। उदाहरणस्वरूप कक्षा में विविध शब्दो को श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियो से उनके अर्थ पूछे जाए। इसके अतिरिक्त कोष्ठक मे वैकल्पिक अशुद्ध अर्थ रखकर विद्यार्थियो से सही अर्थ बताने को कहा जाए। इस प्रकार क्षेत्रीय प्रयोगो के अर्थ-ग्रहण मे विद्यार्थियो की प्रगति का आकलन कर उनमें आवश्यकतानुसार सुधार किया जाना आवश्यक होगा।

शिक्षण - समस्या - बिंदु : संप्रेषण की समस्याएँ

संप्रेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वक्ता-श्रोता अर्थबोध के द्वारा संवाद करते हैं और स्वाभाविक रूप से यह कार्य भाषा के द्वारा संभव होता है। संप्रेषण की दृष्टि से हिदी भाषा - शिक्षण पर विचार करने पर विदित होता है कि इसमे पाठ्येतर गतिविधियो का भी महत्त्व होता है। संप्रेषण के संदर्भ मे विद्यार्थी की कक्षा, विद्यालय का परिवेश, उसके परिवार की स्थिति तथा सामाजिक वातावरण का विशिष्ट योग होता है। हिदी भाषा का अध्ययन करते समय इन परिस्थितियों में विद्यार्थी अनुकूल वातावरण पाता है, तो सोने में सुहागा हो जाता है, परंतु यदि ऐसा संभव नहीं हो पाता, तो किसी न किसी स्तर पर उसे कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है। तब उसके हिदी भाषा - शिक्षण मे अतराल पैदा हो जाता है और मूल अर्थ पर केंद्रित होने में उसे बाधा होती है।

प्रशिक्षण का उद्देश्य : संप्रेषण - शिक्षण के उद्देश्य

- कक्षा में विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के शुद्ध प्रयोग (बोलना और लिखना) से अवगत कराना जिससे वे सप्रेषण करने मे दक्ष हो सकें।
- कक्षा मे पाठ्य-सामग्री के अलावा उपलब्ध अन्य उपकरणों का उपयोग करना जिससे विद्यार्थियो की हिदी संप्रेषण - क्षमता का विकास हो सके।

संप्रेषण - शिक्षण संबंधी समस्याओं के कारण -

विद्यालय (कक्षा) मे शिक्षण के अलावा वादविवाद, आशुभाषण, अभिनय, अन्त्याक्षरी, प्रश्नमच आदि क्रियाकलापो के आयोजनो का कम होना या बिल्कुल न होना। इन आयोजनो में सभी विद्यार्थियों को समान रूप से प्रतिभागिता का अवसर न मिलना।

कक्षा - अध्यापन मे शिक्षण - प्रक्रिया का एकतरफ़ा हो जाना क्योंकि प्राय : शिक्षक/ शिक्षिका ही विद्यार्थियों को सबोधित करते रहते है। विद्यार्थियों के मन मे बहुत कुछ बोलने की इच्छा होती है, लेकिन वह प्राय: दमित रह जाती है। अभिभावक समयाभाव के कारण बच्चों पर यथोचित ध्यान नहीं देते। परिवेश में अन्य भाषा/ बोली के व्यवहार के कारण विद्यार्थियों को हिदी बोलने का पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाता। यह स्थिति उनमे हिंदी भाषिक संप्रेषण की दक्षता उत्पन्न नहीं कर पाती।

संप्रेषण संबंधी कठिनाइयों के उदाहरण -

पश्चिम बंगाल मे विद्यालयों में कक्षा के बाहर विद्यार्थी प्रायः खेलकूद, समाजसेवा तथा अन्य गतिविधियों के दौरान या तो बाँगला का वातावरण पाते है या अँग्रेज़ी का। विद्यालय जिस क्षेत्र में स्थित है, वहाँ के वातावरण का प्रभाव भी उनके प्रांगण पर पड़ता है। ऐसे समय मे हिंदी शिक्षक/ शिक्षिका सिर्फ हिंदी - शिक्षण के लिए विद्यार्थियो के पास जाते है। ऐसी प्रतिकूल भाषिक भिन्न परिस्थितियों मे वह अपने विद्यार्थियों से हिंदी मे संवाद करते है, लेकिन उनका स्वयं का प्रयास उनके संप्रेषण - कौशल के विकास के लिए पर्याप्त नहीं होता। उदाहरणस्वरूप विद्यार्थियो द्वारा कक्षा के बाहर आपस में **का कहिस है , आप क्या बोलता है ; तुम्हारा बात मेरे को समझ में नहीं आता है। एक ठो कलम देना, एक ठो रुपया दो** आदि वाक्य-प्रयोगो के द्वारा वहाँ की हिंदी अनौपचारिक स्तर पर किस स्थिति मे है, इसका अनुमान किया जा सकता है। इस तरह के प्रयोग निश्चित रूप से सप्रेषण - प्रक्रिया में बाधा पहुँचा सकते है।

संप्रषेण संबंधी कठिनाइयों के निराकरण हेतु सुझाव

हिदी संप्रेषण - क्षमता के विकास के लिए अपेक्षित है कि विद्यार्थियों को अधिकाधिक हिदी मे बातचीत करने के लिए प्रेरित किया जाए। हिदी शिक्षक/ शिक्षिका इस संबंध मे बराबर सचेष्ट रहे, तो वांछित सफलता पाई जा सकती है।

विद्यालयो मे विशिष्ट रचनाकारो के चित्र लगाए जाएं। उनको केद्र में रखकर विद्यार्थियों से बातचीत की जाए। उनके महत्त्वपूर्ण उद्धरण एवं महापुरुषो के सूत्र वाक्यों को चार्ट पर विद्यार्थियो को लिखने के लए प्रेरित किया जाए। अगर सुविधा हो, तो एक श्यामपट्ट सही जगह पर लगाकर प्रतिदिन एक महत्त्वपूर्ण वाक्य बारी-बारी से विद्यार्थियो से लिखवाया जाए। इन सभी चित्रो, वाक्यों की विद्यार्थियो से चर्चा की जाए और उन्हे आपस मे विचार - विमर्श के लिए प्रेरित किया जाए। विद्यार्थी, वातावरण से प्रभावित होकर जब अशुद्ध उच्चारण करता है एवं वाक्यों का दोषपूर्ण व्यवहार करता है, तो वातावरण के अनुरूप स्थिति बनाकर शिक्षक/ शिक्षिका को सहज भाव से उसका मित्र बनकर हस्तक्षेप करना होगा। यहाँ पर शिक्षक/ शिक्षिका का व्यवहार आत्मीय होना आवश्यक है।

विद्यार्थी अपने चौबीस घंटे में से एक चौथाई को विद्यालय में बिताता है। सोने और खेलने का समय छोड़ दे, तो उसका बाकी समय परिवार मे व्यतीत होता है। शिक्षक/ शिक्षिका को चाहिए, वे

विद्यार्थी को संप्रेषण - शिक्षण करने के लिए, उसके घर में बिताए जाने वाले समय का सदुपयोग करें और परोक्ष रूप में समय का नियंत्रण - निर्देशन के लिए योजना बनाएं। इसके लिए विद्यार्थियों को घर में करने के लिए कुछ गृहकार्य दे। अत्यधिक विकसित विद्यालयों में विद्यार्थियो को कोलाज बनाना, अख़बारों की कटिंग एकत्र करना, आस-पास के छोटे-छोटे स्थानों का परिचय देना सिखाना होगा और परिवारवालों की सहायता से विषय से जुडे अन्य ज्ञान का अर्जन करने के लिए प्रेरित करना होगा।

अगर विद्यार्थी परिवेश की भाषा के दबाव मे आकर घर में ही बैठा रहता है, तो उसका व्यक्तित्व निखर नहीं पाएगा। अत: विद्यार्थी मे आत्मविश्वास, स्वाभिमान और भाषाप्रेम जगाने का कार्य शिक्षक/ शिक्षिका को करना होगा। विद्यार्थी को बताया जाए कि जब वह सड़क पर चलता है, तो उसे अनेक साइनबोर्ड, पोस्टर दिखाई पड़ते है। वह लाउडस्पीकर की ध्वनि, और अगल- बगल मे लोगों की बातो को भी सुनता है। यानी समाज मे रहते हुए विभिन्न क्षेत्रो से अनेक प्रकार की ध्वनियो (जैसे टी.वी., रेडियो, माइक आदि की आवाजे) उसके कानो में पड़ती है। शिक्षक/ शिक्षिका, विद्यार्थी को इस बात से अवगत कराएं कि हिंदी भाषा का बहुत बड़ा क्षेत्र जीवंत रूप मे उसके आस-पास के वातावरण में फैला हुआ है। विद्यार्थी सजग होकर उस वातावरण में अपनी भाषा का विकास कर सकते है।

इस क्रम मे उनकी संप्रेषण - क्षमता मे वृद्धि हो सकेगी क्योकि वे जितने तरह के हिंदी भाषा - रूपो को सुनें, उनके अर्थ-संदर्भों से भी परिचित होने की चेष्टा करें और इस तरह विभिन्न अवसरो पर आवश्यकता पडने पर वे संवाद कर सकेंगे। सवाद को प्रभावी ढंग से सिखाने के लिए अपेक्षित है कि विद्यार्थियो को औपचारिक - अनौपचारिक, दोनो तरह के संप्रेषण मे प्रशिक्षित किया जाए। इसके लिए विभिन्न परिस्थितियाँ देकर विद्यार्थियों से सवाद बोलवाया जाए। उदाहरणार्थ, **औपचारिक संवाद** का एक नमूना देखा जा सकता है -

औपचारिक संप्रेषण - शिक्षण के लिए संवाद

विषय - **विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के आयोजन की तैयारी के संदर्भ में।**

शिक्षक - आप लोग स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में जो सांस्कृतिक कार्यक्रम देना चाहते हैं, उनकी सूची मुझे दे दीजिए।

विद्यार्थी - श्रीमान, कृपया बताइए कि एक विद्यार्थी कितने कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकता है।

शिक्षक - प्रत्येक विद्यार्थी अधिक से अधिक दो कार्यक्रमो में भाग ले सकता है।

विद्यार्थी - श्रीमान, एक कार्यक्रम के लिए कितना समय निर्धारित है।

शिक्षक - अधिकतम सात मिनट।

अनौपचारिक संप्रेषण के लिए संवाद

विषय - बाज़ार में दो मित्रों का मिलना।

मोहन - अरे जॉन। तुम यहाँ ?

जॉन - अरे वाह ! मोहन .... मैं किताबे खरीदने आया था। और तुम ?

मोहन - मुझे एक क़लम लेनी थी। ठीक है, चलता हूँ, फिर मिलूँगा।

इस क्रम मे विद्यार्थियों के स्तर पर समूह-चर्चा तथा वादविवाद - प्रतियोगिता का आयोजन उपयोगी होगा। साथ ही, विद्यार्थियो को भाषा की शव्द-शक्तियों (अभिधा, लक्षणा और व्यंजना) से अवगत कराना होगा।

मूल्यांकन -

यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक/ शिक्षिका यह जानकारी लें कि विद्यार्थी उनके बताये निर्देशो से अच्छी तरह परिचित हुए या नहीं और उसे संप्रपण कौशल का उचित ज्ञान हुआ या नहीं। शिक्षक/ शिक्षिका के लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि वे विद्यार्थियों से नियमित डायरी लिखवाएं। प्रत्येक विद्यार्थी को डायरी लिखने के लिए प्रेरित करे। यह नियम रहे कि उनकी डायरी को शिक्षक/ शिक्षिका के अतिरिक्त कोई न पढे। इसमे वे परिवार, विद्यालय, समाज सवधी सारी अनुभूतियों का ईमानदारी से अंकन करे। शिक्षक/ शिक्षिका को भी प्रत्येक महीने गहराई से उनकी डायरी पढ़कर विश्लेषण कर उनकी दुर्बलताओ को भी नोट कर बताना होगा और आवश्यक मार्गदर्शन के लिए समय निकलना होगा। शिक्षक/ शिक्षिका इस बात का भी मूल्यांकन करें कि भाषा की विभिन्न भंगिमाओ से विद्यार्थी किस स्तर तक अवगत हुए हैं। इसकी जानकारी के लिए अपेक्षित है कि विद्यार्थियों को विभिन्न भगिमाओ वाले वाक्य दिये जाएं और उन्हे निर्देश दिया जाए कि वे प्रसंग को ध्यान मे रखते हुए उन वाक्यो के निहितार्थ बताएं। मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्षों का विश्लेषण करने के बाद शिक्षक/ शिक्षिका आवश्यकतानुसार अपनी शिक्षणनीति निर्धारित करें।

পশ্চিমবঙ্গ উচ্চ প্রাথমিক স্তরে প্রশিক্ষকদের জন্য শিক্ষণ সামগ্রী প্রস্তুতী কর্মশালার বিবরণ

কর্মশালা সংযোজক

প্রো. বিজয় কুমার সুনওয়ানী

শম্পা দাস

ভারতীয় শিক্ষা সংস্কৃতি রক্ষার ব্যাপারে মাতৃভাষার ভূমিকা

ভারতীয় শিক্ষা সংস্কৃতি রক্ষার ব্যাপারে মাতৃভাষার ভূমিকা অপবিসীম। সভ্যতা ও সংস্কৃতির যে ইতিহাস রচিত হয়েছে মাতৃভাষাই তাকে নিয়ে যায় কালান্তরের পথে। তাই মাতৃভাষাকে মানবসংস্কৃতির শ্রেষ্ঠ উপাদান বলা হয়। মাতৃভাষাই আত্মপ্রকাশের সর্বশ্রেষ্ঠ মাধ্যম। নিজেকে সম্পূর্ন রূপে প্রকাশ করবার এমন্ সর্বশ্রেষ্ঠ মাধ্যম আর নেই। মায়ের সাহায্য ছাড়া শিশু যেমন ঠিক্ মতো বাঁচতে পারেনা, তেমনি মাতৃভাষার সাহায্য ছাড়া মানুষের চিন্তা ভাবনা ঠিক মতো বিকশিত হতে পারেনা।

শিশুর শিক্ষাসূচীতে তাই ভাষার স্থান বিশেষ গুরুত্বপূর্ণ। কারণ ভাষা ভাবচিন্তাব ধারক এবং ভাষাকে অবলম্বন করেই অনুভূতি, মনোভাব, রূপ- কল্পনা, মৌখিক, লিখিত বা ভাষার অন্য প্রকার প্রকাশের মধ্য দিয়ে যথার্থ রূপ পরিগ্রহ কবে। ভাষার ওপর সাবলীল অধিকার ছাড়া চিন্তার যথাযথ প্রকাশ বা মনের ভাবের স্বচ্ছতা কখনোই সম্ভব নয়। তা ছাড়া ভাষার মাধ্যমে শিশুকে তার দেশবাসীর আশা আকাঙ্ক্ষা, চিন্তা ভাবনার সাথে পবিচিত করানো হয়। এর মধ্যে সে খুঁজে পায় সুরুচি, সৌন্দর্য্য প্রকাশের পথ, আনন্দের উৎস এবং সৃজনাত্মক উপাদান। যথাযোগ্য ভাবে মাতৃভাষা শিক্ষাদানের সব শিক্ষার ভিত্তি, কারণ মানুষের বুদ্ধিবৃত্তি ও মনোহর ব্যক্তিত্বের পরিপূর্ণ বিকাশ বহুলাংশে এরই ওপর নির্ভর করে। এখানে মাতৃভাষা শিক্ষার ক্ষেত্রে শিক্ষকের ভূমিকা অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ। ছাত্রদের কোনো বিষয় বুঝতে সাহায্য করা, প্রযোজনীয় তথ্য সংগ্রহ করার পদ্ধতি দেখিযে দেওযা, রসোপলব্ধিতে সাহায্য কবা এবং সর্বোপরি ছাত্রদের আত্ম সক্রিয়তাকে খর্ব না করে তাদের নিজ নিজ সামর্থ্য অনুযাযী মাতৃভাষা শিক্ষার ব্যাপারে সঠিক্ পথে পরিচালিত করা এইসব্ বিষয় গুলি মাতৃভাষা শিক্ষককে অত্যন্ত সহানুভূতিব্ সঙ্গে কবতে হবে। কেননা সব কিছুই নির্ভর করে শিক্ষকের সঠিক্ পরিচালনা কিম্বা পথ প্রদর্শন করার ওপর।

পশ্চিম বঙ্গেব চাহিদা অনুসাবে এই কর্মশালার আয়োজন করা হয়েছিল এবং পূর্ব নির্ধারিত যোজনা অনুসাবে পঞ্চম, ষষ্ঠ এবং সপ্তম শ্রেণীর পাঠ্য, বাংলা ভাষা শিক্ষাকে মনেরেখে উচ্চ প্রাথমিক স্তবে ভাষাশিক্ষা দানেব কার্য্য পদ্ধতি নির্মান করা হয়েছে।

এর আগে দুদিনের কর্মশালা অনুষ্ঠিত হয় যথাক্রমে ১৫.১০২০০৩ এবং ১৬.১০২০০৩ এই কলেজ প্রাঙ্গনে। কর্মশালায় যে লক্ষ্য স্থিরীকৃত হয়েছিল তা নিম্নে প্রদত্ত হোলো -

শিক্ষণ সম্বন্ধীয় নির্দেশাবলীর রূপরেখা :

১ শিক্ষণ সংক্রান্ত বিবিধ সমস্যা

২ উদ্দেশ্য

৩. শিক্ষণ সংক্রান্ত প্রধান প্রধান কঠিন বিষয়

৪ সমাধান সূত্র - কার্যপদ্ধতি, কার্যকলাপ, অভ্যাস

৫ মূল্যায়ন

মুখ্য এলাকা (Core area)

ক) উচ্চারণ ও বানান সংক্রান্ত ত্রুটি

খ) দুর্বোধ্য শব্দের অর্থ বিশ্লেষন

গ) পঠন পদ্ধতি ও অভ্যাস

ঘ) বিষয বোধ

ঙ) চিন্তনগত দিক

চ) মূল্যায়ন

এই কর্মশালায় নির্দেশিত পন্থা পদ্ধতিতে উদ্বুদ্ধ হয়ে গতানুগতিক শিক্ষাদান প্রণালীব উন্নতি সাধনের প্রয়াসে মাতৃভাষা বাঙ্গলা শিক্ষা সম্বন্ধীয় কর্মকাণ্ডে যে সমস্ত ত্রুটি, দুর্বলতা বা অসম্পূর্ণতা থেকেযায় এবং যেগুলির ফলে শিক্ষাদান কার্য যথোপযুক্ত ভাবে সফল হয়না, সেগুলির সমাধান সূত্র নির্ধারণের জন্য নিম্নরূপ কার্যক্রমের রূপ রেখা নির্ধারন করা হযেছে।

সকল শিক্ষক - শিক্ষিকার প্রতি অনুবোধ তাঁরা তাদেব অভিজ্ঞতা ও যথাযথ সৃজনশীল কর্মপ্রচেষ্টার দ্বারা এর সুসম্পূর্ণ রূপদান করবেন। যেহেতু মাতৃভাষাই সারাজীবনেব শিক্ষা দীক্ষা ও সংস্কৃতির একমাত্র পাথেয় এবং অন্য সকল বিষয়ের শিক্ষার মাধ্যম, তাই মাতৃভাষা কে সম্যক ভাবে জানা এবং যথার্থ গুরুত্ব ও অনুরাগ সহকারে এর নিরবচ্ছিন্ন অনুশীলন কবা একান্তই অপরিহার্য। কেননা শিক্ষার্থীর মাতৃভাষাব জ্ঞান যত সমৃদ্ধ হবে অন্য যে কোন বিষযে সামর্থ্য অর্জনে ততই সক্ষম হবে।

উদ্দেশ্য সমূহ -

১ বিশেষ বিশেষ প্রাসঙ্গিক দুরূহ (Hard spot) ক্ষেত্রগুলি নির্ধারণ কবে সেগুলিব ত্রুটির কারণ অনুযাযী পাঠ্যংশটি আরও অধিক আনন্দদায়ক ও কর্মভিত্তিক কবে পাঠদানে সক্রিয়ভাবে চেষ্টা করা এবং মাতৃভাষা জ্ঞানের উত্তরোত্তর উৎকর্ষবৃদ্ধি ও সাহিত্য রসবোধ সৃষ্টি করা।

২. ভাষা শিক্ষার চারটি কাম্য সামর্থ্য - শোনা, বলা, পড়া ও লেখা এই গুলিব ক্ষেত্রে একক্ ভিত্তিক্ অসুবিধা অনুসন্ধান ও তার সমাধান করা। বার বার সঠিক্ ভাবে পাঠ শোনানো, কাজ করানো, পড়ানো, লেখানো ইত্যাদি পদক্ষেপ নেওয়া।

৩. শিক্ষার্থীব যুক্তিশীল মানসিকতা ও রুচিশীল দৃষ্টিভঙ্গী গড়েতোলার ক্ষেত্রে পরিবেশ সচেতনতা ও ব্যক্তিজীবন কেন্দ্রীক অভিজ্ঞতার সাথে কর্মভিত্তিক সমন্বয় সাধন।

৪. দৈনন্দিন জীবন যাপনে বিভিন্ন মানবিক মূল্যবোধ কাজে লাগাতে উৎসাহ দেওয়া। পুস্তক লব্ধ ধারনা ও জ্ঞানের বাস্তবের সঙ্গে সামঞ্জস্য বিধানের উপায় বুঝিয়ে দেওয়া।

৫ মাতৃভাষার শব্দ ভাণ্ডাব নিরন্তর বাড়িয়ে তোলার জন্য নিয়মিত অনুশীলন ক্ষেত্র তৈবীকবা। বলা, পড়া ও লেখার যথেষ্ট অনুপ্রেরণা জাগানো।

খ) শিক্ষা সম্পর্কিত সমস্যাবলী-

১. বাঙ্গলাভাষার বর্ণমালাতে বর্ণের সংখ্যাধিক্য ও একই ধ্বনির জন্য ২/ ৩ বা তার ও অধিক বর্ণেরপ্রচলন - যেমন - ন,ণ, জ, য, শ, ষ, স, ঙ, ং

২ মাত্রাহীন, অর্ধমাত্রা ও পূর্ণমাত্রা যুক্ত বর্ণ বিদ্যমান। যেমন . এ, ত্র ; ও, ত্ত ; ন ণ

একই, একশ / ত্রকাই, ত্রকশ

৩ মাতৃভাষা শিক্ষার ক্ষেত্রে উচ্চাবণেব সমস্যা -

উচ্চারণ যদি পারিপার্শ্বিক পরিবেশ ও আঞ্চলিকতাব দ্বাবা প্রভাবিত হয তখন্ বানান ভুল হওয়ার সম্ভাবনা দেখাযায়। যেমন : বেগুন - বাইগণ

- উচ্চারণের ক্রটিব জন্য অনেক সময বানান ভুল হয়।

কাচ্ - কাঁচ, ইট্ - ইঁট্

পরা - পড়া পড়া - পরা

হাসপাতাল হাঁসপাতাল

- উচ্চারণ এক কিন্তু বানান ও অর্থ আলাদা ফলে উচ্চারণ শুনে সঠিক্ শব্দ লেখা সম্ভব হয় না। যেমন - দিন দীন

- অনেক সময যুক্ত বর্ণের উচ্চারণগত অসুবিধা বানান সমস্যার সৃষ্টিকবে। যেমন্ : শ্মশান - শশান, আত্মা - আত্তা

বিদেশী শব্দের প্রতিবর্নী করণে বিভিন্নতার ফলে উচ্চারণ ও বানানেব সমস্যা দেখাদেয। যেমন : স্টেশন - ষ্টেশন ; স্টেশান - ষ্টেশান

৪. বানান সমস্যা - বানান সমস্যা ভাষাকে অনেক সময় জটিল কবে দেয়। যেমন - বানান এক অর্থ আলাদা - ডাল - ডাল, উচ্চাবণেব সমতা সত্ত্বে ও বানান আলাদা। যেমন নদী - যদি।

৫ প্রতিটি এককে উপকরণ ব্যবহাবেব সুযোগ কম্। (বিশেষত - দৃশ্য - শ্রাব্য)

৬ শ্রেণী কক্ষে প্রধানত তিন্ মানের শিক্ষার্থী থাকায় পঠন্ পাঠন্ তথা পিছিয়ে পডাদের প্রগতি মন্থর হয়ে পড়ে। পরবর্ত্তী সময়ে তাবা আর ও পিছিয়ে পড়ে।

৭ সব এককে আনন্দদাযক পাঠদানের ক্ষেত্রে সক্রিয়তা ভিত্তিক কর্ম পদ্ধতি প্রয়োগের অসুবিধা। যেমন্ সমুদ্র পথে, জালানা বাগেব মুক্তি যুদ্ধ।

৮. ব্যাকরনের তত্ত্বগতদিক ও কিছু কিছু অংশ দুরূহবোধ হওয়ায় শিক্ষার্থীরা যেগুলি এড়িয়ে চলতে চায় বলে অনেক সময় দুর্বলতা বেড়ে চলে ও বিষয় ভীতি জন্মায়।

৯. পাঠ্যপুস্তক তালিকার সংখ্যাধিক্য হেতু সহায়ক পাঠ ও গ্রন্থাগার ব্যবহারের সুযোগ কম।

গ) শিখন সংক্রান্ত প্রধান - প্রধান অন্তরায় :

১. শিক্ষার্থী আঞ্চলিক প্রভাবেবজন্য বই এর মার্জিত ভাষা সঠিকভাবে অনুধাবন করতে বাধা পায়।

২. জন্মাবধি মাতৃভাষায় কথাবার্ত্তা বলে ব'লে এই ভাষার প্রতি একধরণের উদাসীনতা দেখাযায়।

৩ অনেক ক্ষেত্রে পবিবারেব লোকজন লেখাপড়ায় সাহায্য করতে পারেন না বা পরিবেশ ও অনেকক্ষেত্রে অনুকূল নয়।

৪. বিদ্যালয় পরিবেশ শিক্ষার্থীর কাছে আকর্ষণীয় না হওয়ায় বিদ্যালয়ের প্রতি টানের অভাব।

৫. অনেক সময় কোনো কোনো শিক্ষক/ শিক্ষিকার প্রতি ভয় শিক্ষা গ্রহণের ক্ষেত্রে বাধার কারণ হয়।

ঘ) সমাধান সূত্র

১ প্রতিটি বর্ণের সঠিক্ উচ্চারণ ও ব্যবহার সম্বন্ধে সম্যক ধারনা থাকা দরকার। যে সব,বর্ণের উচ্চারণ একই সেইসব বর্ণ দিয়ে নতূন নতূন শব্দ তৈরীর কাজ্ করানো ও যথা যোগ্য অনুশীলন করানো দবকাব। ন, ণ, শ ষ স, ড় ঢ় র, ঢ ড, প্রভৃতি বর্ণযুক্ত শব্দেব সঠিক উচ্চারণ সহ অনুশীলন।

২ শিক্ষককে আঞ্চলিকতা দোষ থেকে মুক্ত থাকার জন্য সচেতন থাকতে হবে।

৩ সঠিক্ উচ্চাবণেব জন্য শিক্ষককে সরব পাঠে সক্রিয় আংশ গ্রহণ কবতে হবে। ।

৪ শব্দেব উৎপত্তি, অর্থ ও ব্যবহার অনুযায়ী শব্দের বানানের অনুশীলন কবে নির্ভুলতা আনতে হবে।

৫ পিছিয়ে পড়া শিশুদেব চিহ্নিত করে তাদের পিছিযে পড়ার কারণ নির্ধাবণ কবতে হবে এবং তার কারণ অনুযাযী ব্যবস্থা গ্রহণ করতে হবে। পঠন পাঠনে পিছিযে পড়াদের আলাদাভাবে সংশোধনী পাঠেব মাধ্যমে সম মানে উন্নীত করতে হবে। এ ক্ষেত্রে শিক্ষকের সহৃদয়তা বেশী কার্যকরী।

৬ পাঠ্য বিষয়ের প্রতিটি এককের উপকরণ উদ্ভাবন ও শিক্ষকদের্ উপকরণ তৈরীর কর্মশালা করা প্রয়োজন। বিদ্যালয়ে ছাত্রদেব্ সাহায্যে প্রয়োজনীয় শিক্ষণ শিখন সামগ্রী (T.L.M.) তৈবী, করতে হবে। সেই সঙ্গে সামর্থ্য ভিত্তিক কর্মপত্র (Work Sheet.) তৈরিকরে একক, যুগ্ম ও দলগত কার্যে শিক্ষার্থীদের যুক্ত করতে হবে। যাতে তারা স্বতঃস্ফূর্তভাবে বিদ্যালযে আসতে আগ্রহী হয়।

৭ ব্যাকরণ পড়ানোব ক্ষেত্রে বাক্যের উদাহরণ থেকে সূত্রে যাওয়া দরকার অর্থাৎ প্রতিক্ষেত্রে আবোহ রীতি অনুসরণ কবা প্রযোজন। পাঠ্য বিষয়ের সঙ্গে সঙ্গতি বেখে ব্যাকরণেব জটিল বিষযগুলি ধীবে ধীবে উপস্থাপিত কবতে হবে। পরবর্ত্তী কালে অবরোহ পদ্ধতি ও প্রযোজ্য।

৮. সবব পাঠেব সময় ও শব্দার্থ বলাব ক্ষেত্রে প্রযোজন বোধে আঞ্চলিক ভাষার সঙ্গে সম্পর্কিত কবে কাম্য সামর্থ্য অর্জনে সহায়তা কবা প্রযোজন। সেই সঙ্গে ভাষার দক্ষতা বাড়াবাব জন্য প্রয়োজন ভিত্তিক অনুশীলন করাতে হবে।

৯. চিন্তা ও মনন সামর্থ্যকে সমৃদ্ধ করার জন্য বিদ্যালয়ে বিভিন্ন প্রকাব কাজ, যেমন - সাহিত্যসভা, তাৎক্ষণিক বক্তৃতা, আলোচনা সভা, বিতর্ক সভার, প্রবন্ধ - প্রতিযোগিতাব আয়োজন করা দরকার।

১০. বিদ্যালয়ে দেওয়াল পত্রিকা প্রকাশের ব্যবস্থা করতে হবে। মাতৃভাষা চর্চাব ক্ষেত্রে দেওয়াল পত্রিকা এক উত্তম ক্ষেত্র। সব শিশুকেই লিখতে অনুপ্রাণিত করতে হবে। যাব মাধ্যমে তাদের আত্মবিশ্বাস বাডবে, আনন্দমুখর সৃজনশক্তি গড়ে উঠবে ও ব্যক্তিত্বের বিকাশ ঘটবে। প্রযোজনে প্রতিটি লেখাকে সংশোধন করে পর্যায়ক্রমে পত্রিকায় স্থান দেওয়া হবে। পত্রিকা লেখার ক্ষেত্রে সুন্দর হাতের লেখার প্রতিযোগিতা মূলক মনোভাব গড়ে উঠবে।

ঙ) মূল্যায়নের রূপরেখা :

গুনগত মান উন্নয়নের ক্ষেত্রে শিক্ষার্থীরা কতটা সামর্থ্য অর্জন করেছে তা যাচাই করার জন্য মূল্যাযন করা প্রযোজন। এই মূল্যায়ন তাৎক্ষনিক, সাময়িক ও পার্বিক ভাবে করা প্রযোজন লিখিত ও মৌখিক ভাবে।

প্রতিটি উপ একক এককের শেষে শ্রেণী কক্ষেই ঐ উপএকক/ এককের সামর্থ্যের উপর ভিত্তি করে তাৎক্ষণিক মূল্যায়ন করা প্রয়োজন। এই মূল্যায়ন লিখিত, মৌখিক ভাবে হবে এবং প্রয়োজনে সংশোধনী পাঠ দিতে হবে।

আবার দুই, তিনটি এককের সাহায্য নিয়ে ঐ এককের সামর্থ্য ভিত্তিক সামযিক মূল্যায়ন করতে হবে। এই মূল্যাযন লিখিত ও মৌখিক ভাবে হবে। মূল্যায়নের ফলে প্রগতিপত্রে প্রকাশিত করে ছাত্র তথা অভিভাবকের নিকট পাঠাতে হবে। প্রয়োজনে সংশোধনী পাঠ দিতে হবে।

অনুরূপ ভাবে একটি পর্বের শেষে (৪ মাস) যতগুলি পাঠ একক হয়েছে তার উপর ভিত্তি কবে সামর্থ্য ভিত্তিক প্রশ্নের মাধ্যমে মূল্যায়ন করতে হবে লিখিত ও মৌখিক। মূল্যায়নের ভিত্তিতে সংশোধনী পাঠের ব্যবস্থা করতে হবে অর্থাৎ সারা বছর ধরে নিরবছিন্ন মূল্যায়ন করতে হবে।

এই কর্মশালায় - নির্দেশিত কর্মকুশলতার রূপরেখা (Strategies) এবং বিশেষ বিশেষ দুরূহ পাঠ্যাংশ (Hard spot & core area) অবলম্বনে পঞ্চম, ষষ্ঠ ও সপ্তম শ্রেণীর পাঠ্য পুস্তক ও পাঠ্যসূচী নিয়ে বিস্তৃত কাজের ক্ষেত্রে নিম্নরূপ গদ্যাংশ ও পদ্যাংশ অবলম্বিত হয়েছে।

পঞ্চম শ্রেণী - কিশলয়

১ সত্য ও অসত্য - (গদ্য) আচার্য প্রফুল্ল চন্দ্র রায়।

২ অমল সুধা ও ছেলেরদল - (নাট্যাংশ) শ্রী রবীন্দ্র নাথ ঠাকুর

৩ হিন্দু মুসলমান - (কবিতা) কাজী নজরুল ইসলাম

৪ জালালা বাদের মুক্তিযুদ্ধ - (গদ্য) গনেশ ঘোষ

৫ সকল দেশে সেরা - (কবিতা) দ্বিজেন্দ্র লাল রায়

ষষ্ঠ শ্রেণী - সাহিত্য বীথি, সাহিত্য মঞ্জুষা, নূতন সাহিত্য

১ সৎ পাত্র (কবিতা) - সুকুমার রায় (সাহিত্য বীথি)

২ উদ্ভিদের কথা (গদ্য প্রবন্ধ) - জগদীশ চন্দ্র বসু (সাহিত্য বীথি)

৩ শ্রীকান্ত ও ইন্দ্রনাথ (উপন্যাসাংশ) শরৎ চন্দ্র চট্টোপাধ্যায় (সাহিত্য মঞ্জুষা)

৪ দেখব এবার জগৎ টাকে (কবিতা) - কাজী নজরুল ইসলাম (সাহিত্য মঞ্জুষা)

৫ সতীদাহপ্রথা বিলোপে রামমোহনের ভূমিকা (গদ্য প্রবন্ধ) - ঋষি দাস (নূতন সাহিত্য)

সপ্তম শ্রেণী - সাহিত্য চয়ন (নিখিল বঙ্গ শিক্ষক সমিতি)

১ ফ্যান (কবিতা) - প্রেমেন্দ্র মিত্র (সাহিত্য চয়ন)

২ মানী (কবিতা) - রবীন্দ্র নাথ ঠাকুর (সাহিত্য চয়ন)

৩ বিদ্যাসাগর চরিত্র (গদ্য) - রবীন্দ্র নাথ ঠাকুর (সাহিত্য চয়ন)

৪ গ্যালিলিও (গদ্য) - সত্যেন্দ্র নাথ বসু (সাহিত্য চয়ন)

৫ বই (গদ্য) - সৈয়দ মুজতবা আলী (সাহিত্য চয়ন)

মাতৃভাষা - বাংলা কর্মশালাযে অংশগ্রহণ কারীগন - (এক্স্টারনাল)

১ শ্রী পদ্ম লোচন মিশ্র

২. শ্রী কাদের আলী

৩. শ্রীমতী অনিমা বাড়ৈ

৪. শ্রী শ্যামল ভট্টাচার্য

৫. মহম্মদ সাহাবুদ্দিন মণ্ডল

ইন্টারনাল

১ শ্রী দীপাশ্য কুণ্ডু (শৈলবালা উওম্যানস কলেজ)

২. ডঃ বামদাস রায় (ডি়এম্ স্কুল, আর, আই, ই ক্যাম্পস)

৩ শম্পা দাস (আর, আই, ই, ভুবনেশ্বর)

পঞ্চম শ্রেণী

গদ্যাংশ - সত্য ও অসত্য আচার্য্য প্রফুল চন্দ্র রায়

সামর্থ্য

ক) গদ্যাংশটি সঠিক ভাবে উচ্চাবণ করে ছাত্রছাত্রীদেব সরব পাঠে অংশগ্রহণ কবানো যেতে পাবে।

খ) বানান সংক্রান্ত ত্রুটিব সমাধানে সরব পাঠ কবানো যেতে পাবে।

গ) অপেক্ষাকৃত কঠিন শব্দের অর্থ বিশ্লেষণ করানো যেতে পারে।

ঘ) গদ্যাংশের বিষয় বস্তুব মধ্যদিয়ে বিজ্ঞান চেতনার মানসিকতা জাগ্রত করানো যেতেপাবে।

মূল্যায়ন -

লিখিত এবং মৌখিক দুই ভাবেই কবা যেতেপারে। লেখক তার রচনার মধ্যদিয়ে প্রাচীন কাল্পনিক চিন্তাধারা থেকে বর্ত্তমান ছাত্রছাত্রীদের কাছে এক যুক্তিবাদী তথ্যের উপস্থাপনা করেছেন।

গদ্যাংশটির অপেক্ষাকৃত কঠিন জাযগা হিসাবে - "মনেব গোপনে সত্যের নিকট লজ্জায় মস্তক অবনত করিতেছে, অথচ বাহিরে জনসমাজে এবং সভার মাঝারে তাহাকে স্বীকার করিবার সাহস নাই।"

অশৌচান্ত, রাক্ষসাধিপতি, জলাঞ্জলি এই শব্দগুলি উচ্চারণে ত্রুটি দেখা দিতেপাবে।	সমাধান সঠিক ভাবে যাতে উচ্চাবণ করতে পাবে তার সাহায্য করতে হবে। যতি চিহ্ন লক্ষ্যবেখে সঠিক্ ভাবে পাঠাভ্যাস কবানো যেতেপারে। বাংলায় বিজ্ঞান সাধনায় আচার্য্য প্রফুল্ল চন্দ্র বায সম্বন্ধে ছাত্রছাত্রীদের কাছে তার অবদানেব কথা উল্লেখ করাযেতে পারে। বিজ্ঞান যে সত্য উপলব্ধি এই ধাবনা ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে সঞ্চার কবানো যেতে পারে।

একটি প্রাচীন বিশ্বাসকে আঁকড়ে ধরেথাকা সমাজেব কাছে যে একটা মস্তবড় কুফল।	এই বিষয়ে বিজ্ঞান ভিত্তিক যুক্তি দিয়ে তা ছাত্রছাত্রীদের বোঝাতে হবে। গদ্যাংশটি থেকে ছাত্রছাত্রীদের নিম্নোক্ত প্রশ্ন করা যেতে পারে: অতি সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন হিসাবে কল্পনা প্রসূত, জনসমাজ ও সম্প্রদায় এই সব শব্দের অর্থ চাওয়া যেতে পারে।

সংক্ষিপ্তবোধ মূলক প্রশ্নে -

অর্ধশতাব্দী, জনশ্রুতি, কক্ষপথ, বলতেকিবোঝ তা জানতে চাওযাযেতে পারে।

অবনত, স্বীকার, নিবক্ষব, এইশব্দেব বিপরীত অর্থ জানতে চাওয়া যেতে পাবে।

বিষয় মূলক প্রশ্নহিসাবে :

ক) প্রাচীন জনশ্রুতিটি কি ?

খ) সূর্য্য ও চন্দ্র গ্রহণের বৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যাটি কি ?

মূল্যবোধ :

এই গদ্যাংশটি পাঠ করে বিজ্ঞান যেএকটি সত্য ধারণা এই জ্ঞান অর্জন করাযায় ।

কুসংস্কাব মুক্ত কবানোর চেষ্টা করাযেতে পারে।

সত্যকে যে জাতি স্বীকার করেনা সেজাতি কখনো বড হতে পারে না।

কার্য্যকলাপ :

ছাত্রছাত্রীদেব কাছে একটি কার্ডবোর্ড কেটে এনে আলোব সহযোগীতায় সূর্য্যগ্রহণ ও চন্দ্রগ্রহণেব দৃশ্যটি বোঝানো যেতে পারে।

নিকটবর্ত্তী যদি কোন সাইন্সপার্ক থাকে সেখানে গিয়েও এ বিষয়ে বোঝানো যেতে পারে।

মন্তব্য :

সমাজে সত্য ও মিথ্যাব যে কুফল তার সম্বন্ধে ছাত্রছাত্রীদের আরও ধারনাদিলে ভালহয়। বিজ্ঞান সম্মতভাবে কুসংস্কার গুলি বোঝানোব চেষ্টা করা দরকার। দুইএক জন বিজ্ঞানীর নাম উল্লেখ করলে ভাল হয়।

পঞ্চম শ্রেণী

অমল, সুধা ও ছেলের দল - রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

সামর্থ্য -

ক) মূলনাটক "ড়াকঘর" থেকে যে এই অংশটি নেওয়া হয়েছে তার পবিচয় দেওযা।

খ) নাটকের চরিত্রগুলির স্বকীযতা বজায রেখে নাটকটি সরব পাঠ করানো যেতে পারে।

গ) অমল চরিত্রটির মধ্যদিযে মুক্তির আকুতি এবং মানবিক সখ্যতাব যে ভাবনা প্রকাশ পেযেছে তা জানতে পাবাযায়।

অপেক্ষাকৃত কঠিন স্থান : অমলসুধাকে বলছে :

"জানি" আমি খুব জানি। আমি সাত ভাই চম্পার খবব জানি। আমার মনেহয়, আমাকে যদি সবাইছেড়ে দেয তা হলে আমি চলেযেতে পাবি খুব ঘন বনের মধ্যে যেখানে বাস্তাখুঁজে পাওযা যায়না। সরু ডালের সব আগায যেখানে মনুয়া পাখি বসে বসে দোলাখায় সেইখানে আমি চাঁপা হয়ে ফুটতে পারি।"

কঠিন শব্দ গুলি উল্লেখ করে তার অর্থ বিশ্লেষণ করাযেতে পারে।

দুরন্তপনা, শরকাঠি, ঝম্ ঝম্, ঢং, ঢং, এইশব্দ ধ্বনাত্মক শব্দ।	সমাধান এইসব শব্দগুলিব অর্থ ছাত্রছাত্রীরা না জানলে তা জানার সাহায্য কবা যেতে পারে। এই জাতীয আরও কিছু শব্দের সঙ্গে ছাত্রছাত্রীদের পরিচিতি লাভকরানো যেতেপাবে। চিকিৎসক, সেপাই, দুবন্তপনা এই সব সমার্থক শব্দের সঙ্গে ছাত্রছাত্রীদের পরিচিতি করানো যেতে পারে।

বিষয় বোধ

এই নাটকে অমল বর্হিজগতের সঙ্গে একাত্ম হতে চেয়েছে। এর মধ্যদিয়ে ফুটেউঠেছে তাঁব মনের আকুতি। এই বিষয়টিকে সহজকরে বোঝানো যেতে পারে।

সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন / মূল্যায়ন -

ক) সুধা কে ?

খ) অমলের কাছে খেলনা নিয়ে কারা এসেছিল ?

গ) ঝরনা কোথায় ?

বোধমূলক প্রশ্ন :

"আমাকে ভুলে যাবেনা" - এই কথাটি কে কাকে বলেছে ? এই উক্তির মাধ্যমে বক্তা কি বলতে চেয়েছেন ?

কার্য্য কলাপ / কার্য্য পদ্ধতি :

শ্রেণী কক্ষের মধ্যে এই নাটকটি অভিনয় করে ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে নাট্যাংশটি আরও জীবন্ত করে তুলে ধরাযেতে পারে।

পঞ্চম শ্রেণী

কবিতার নাম - হিন্দু মুসলমান - কাজী নজরুল ইসলাম্

সামর্থ্য -

ক) যতি, ছন্দসহ স্পষ্ট ভাবে কবিতাটি আবৃত্তি আজও পড়তে পারা ও বলতে পারা।

খ) বানান কঠিন শব্দের অর্থ জানতে পারা

গ) কবিতাটির অন্তর্নিহিত ভাব উপলব্ধি কবতে পাবা।

ঘ) কবিতাটির মধ্য দিয়ে ধর্মীযঐক্য ও জাতীয়তা বোধের চেতনাকে উপলব্ধি করতে পাবা।

উচ্চারণ -	সমাধান
শশী, মনি ও শ্মশান এই শব্দগুলি বানান ও উচ্চাবণে বিশেষ দৃষ্টি দেওয়া যেতে পাবে।	সঠিক ভাবে উচ্চাবণ কবতে শেখানো এবং কযেক বার কবিতাটি সরবে পড়ানো যেতে পারে।
যতি চিহ্ন লক্ষ্য বেখে সঠিক্ ছন্দে কবিতাটি পড়ানো।	পঠন পদ্ধতি ও অভ্যাসের ক্ষেত্রে কবিতাটিকে আবৃত্তি করানো যেতে পারে।
২. কবিতাটির যে জায়গা গুলি আরও সহজকরে বোঝানো প্রয়োজন : "এক বক্ত বুকের তলে, এক সে নাডীব টান।" অথবা "এক সে আকাশ মাযেব কোলে যেন রবি শশী দোলে।"	এই বিষয়ে শিক্ষক, শিক্ষিকা কবিতাটিব অন্তর্নিহিত ভাব সহজ ভাবে ছাত্রছাত্রীদের কাছে উপস্থাপিত করতে পারে।
৩ কবিতাটিতে কবি কি বলতে চেয়েছেন তা ছাত্রছাত্রীবা না ও উপলব্ধি কবতে পাবে।	কঠিন শব্দার্থ এবং বিপরীত শব্দ দেখানো যেতে পারে এই সব শব্দ কবিতাটির মধ্য থেকে খুঁজেবের করতে সাহায্য কবা যেতে পারে। উপযোগী শব্দ বের করে তা দিয়ে বাক্যগঠন করা যেতে পারে। যেমন -

	নৈর্ব্যক্তিক প্রশ্নে - 'নযনমণি" ও 'প্রাণ', শব্দ দুটির অর্থ জানতে চাওযা যেতে পারে। বোধ মূলক প্রশ্নে একইবৃন্ত কথাটিব অন্তর্নিহিত অর্থ সঠিক ভাবে বুঝতে পেরেছে কিনা জানা যেতে পারে। সর্বশেষে কবিতাটির বিষয়বস্তু কি তা ছাত্রছাত্রীদের কাছ থেকে জানা যেতে পারে।

মূল্যায়ন :

লিখিত এবং মৌখিক দুই ভাবেই করাযেতে পাবে। চার ধবনের প্রশ্ন করাযেতে পারে।

কাজী নজরুল সম্বন্ধে ছাত্রছাত্রীদের কাছে তার পরিচিতি দিতে হবে।

মন্তব্য :

আরও কিছু সমার্থক শব্দ এবং ব্যাকরণগত প্রশ্নের অবতারনা করাযেতে পারে।

মূল্যবোধ :

এই কবিতায় বহু ধর্ম এবং ভাষাভাষীদেশে সাম্প্রদায়িক সমপ্রীতি যাতে সুরক্ষিত থাকে সেদিকে সজাগ থাকা দরকার। এটা আমাদের ভারতবর্ষের চিরাচরিত ঐতিহ্য। স্বভাবতই ঐতিহ্য রক্ষার জন্যে ছাত্রছাত্রীদেব বিশেষ ভাবে যত্নবান হওয়া কর্তব্য।

পঞ্চম শ্রেণী

জালালাবাদের মুক্তিযুদ্ধ - গনেশ ঘোষ

সামর্থ্য -

ক) এই রচনার মাধ্যমে পরাধীন ভারতবাসী কিভাবে স্বাধীনতা অর্জনের জন্য সংগ্রাম কবেছিলেন তা জানা যায়।

খ) বিপ্লবী বাহিনী, মাষ্টারদা এদের সম্বন্ধে জ্ঞান অর্জন করা যায়।

গ) কোনস্থানের বীরত্ব পূর্ণ ঘটনার কথা জানতে পেবে ছাত্রছাত্রীরা দেশপ্রেমে উদ্বুদ্ধ হবে।

- রুদ্ধনিশ্বাস, তীব্রস্বর, হতভম্ব, রণধ্বনি, এইসমস্ত শব্দের বানান উচ্চারণ করে অর্থবোধের দিকে বিশেষ গুরুত্ব দেওয়া হবে।
- যুক্তাক্ষরের উপর শিক্ষক, শিক্ষিকা বিশেষ ভাবে গুরুত্ব দেবেন, এই গদ্যাংশটি পড়ানোর সময়।
- মাষ্টারদা সূর্যসেন ও লেখক গনেশ ঘোষ এই বিপ্লবী দুইজনের মধ্যে যোগাযোগ ছিল তা ছাত্রছাত্রীদের জানানো যেতেপাবে।

গদ্যাংশটির যে জায়গাটি আরও ভালকবে পড়ানোর প্রয়োজন -	সমাধান
	সঠিক্ ভাবে উচ্চাবণ করতে এবং কয়েকবাব গদ্যাংশটি সরবে পড়ানো যেতে পারে।
বিপ্লবীদের এই মৃত্যুর কর্মসূচীর উদ্দেশ্য ছিল দেশের জনগনের কাছে একটি আদর্শ স্থাপন। একটি স্থানের বীরত্বপূর্ন ঘটনা দেশের যুব শক্তিকে অনুপ্রাণিত কববে - এই ছিল বিপ্লবীদেব আশা।	যেহেতু গদ্যাংশটি বাংলার বিপ্লবী আন্দোলনের একটি বিশেষ অধ্যায় সে হিসাবে, অংশটি নাট্যরূপ দিযে শ্রেণী কক্ষের মধ্যে নাটকের অভিনয় কবে বিষয়টিকে আরও আকর্ষণীয করাযায়। এই বিষযে শিক্ষক, শিক্ষিকা ভারতেব স্বাধীনতা আন্দোলন ও বিপ্লবীদের আত্মবলিদানের কথা সহজ ভাবে বুঝিয়ে দেবেন। কঠিন শব্দার্থ ও বিপরীত শব্দ খুঁজে বের করে তা সহজ ভাবে ছাত্রছাত্রীদের বোঝাতে হবে। সেই সঙ্গে বিভিন্ন প্রতি শব্দেব কথা ও মনেরাখতে হবে।

গদ্যাংশটির মধ্যথেকে যথোপযুক্ত অতিসংক্ষিপ্ত এবং সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন দেওয়া যেতে পাবে।

ক) মাষ্টারদাব আসল নাম কি ?

খ) 'হল্ট'' ও 'ফায়ার' কথা দুটির অর্থ কি ?

গ) কলকাতাব কোথায় মাষ্টারদার মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত আছে ?

বোধ মূলক প্রশ্নের ক্ষেত্রে -

- "সূর্য্যসেন ভারতের স্বাধীনতা সংগ্রামে এক জন বরেণ্য অগ্রদূত"।
- সূর্য্যসেনকে ভারতের স্বাধীনতা সংগ্রামের একজন অগ্রদূত বলাহয়েছে কেন ?

রচনাধর্মী প্রশ্নের ক্ষেত্রে এই প্রশ্নটি কবাযেতে পাবে -

- প্রকাশ্য বিদ্রোহের পর বিপ্লবীদের জীবন কি ভাবে কেটেছিল ?
- ১৯৩০ সালের ২২ শে এপ্রিল কি ঘটনা ঘটেছিল ?

মূল্যায়ন :

গদ্যাংশটি ভালোভাবে পাঠ কবে লিখিত এবং মৌখিক এই দুই ধরনেব মূল্যাযনের বিশেষ গুরুত্ব দিতে হবে।

মূল্যবোধ :

এই গদ্যাংশটির মধ্যদিয়ে পরাধীনতার বিরুদ্ধে বিপ্লবী সংগ্রাম ও বিপ্লবীদের জীবনের আত্মত্যাগেব তাৎপর্য ব্যাখ্যা করতে হবে।

পাঠ্যাংশটির মধ্যে বিপ্লবী জীবনের যে আত্ম বলিদানের কথা বলাহযেছে সেকথা স্মরণকবিযে দিয়ে ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে দেশাত্মবোধ জাগিয়ে তোলা যেতে পারে।

কার্য্যকলাপ :

বিভিন্ন জাতীয় দিবসে বিপ্লবীদের সংগ্রামের কাহিনীর চিত্র প্রদর্শনী করাযেতে পারে।

পঞ্চম শ্রেণী

সকল দেশের সেরা - দ্বিজেন্দ্র লাল রায়

সামর্থ্য -

ক) যতি, ছন্দসহ স্পষ্ট ভাবে কবিতাটির আবৃত্তি, পড়তে ও বলতে পাবা।

খ) কঠিন শব্দেব বানান ও অর্থ জানতে পারা।

গ) কবিতাটিব অন্তর্নিহিত ভাব উপলব্ধি করতে পাবা।

ঘ) কবিতাটির মধ্যে দিয়ে মাতৃভূমির প্রতি মমত্ববোধ জাগিয়ে তোলা।

- বসুন্ধরা, জন্মভূমি, পুষ্পস্মৃতি, ধূম্র,হরিৎ ক্ষেত্র, কুঞ্জ, পুঞ্জ, গুঞ্জরিযা ইত্যাদি শব্দগুলির বানান উচ্চাবণ ও অর্থ বোধের দিকে বিশেষ গুরুত্ব দেওয়া হবে। যুক্তাক্ষবের উপব শিক্ষক শিক্ষিকা বিশেষভাবে গুরুত্ব দেবেন - এই কবিতাটি পড়ানোব সময। - কবিতাটির যে জায়গাগুলি আরও সহজ কবে বোঝানো প্রয়োজন - ক) "চন্দ্র সূর্য্যগ্রহতারা -------- --------- এমনকালো মেঘে" খ) এত স্নিগ্ধ নদী কাহাব ------- ------ আকাশ তলে মেশে গ) পুষ্পে পুষ্পে -------- ------- পুঞ্জে পুঞ্জে ধেযে	সমাধান সঠিকভাবে উচ্চারণ কবতে শেখানো এবং কয়েকবার কবিতাটি সরবে পড়ানো যেতে পারে। যেহেতু কবিতাটি একটি জনপ্রিয় গীতি হিসাবে পবিচিত সেই হিসাবে কবিতাটিকে গান গেয়ে আকর্ষণীয কবে তোলা যেতে পাবে। এই বিষযে শিক্ষক শিক্ষিকা কবিতাটির অন্তর্নিহিত ভাবপ্রকাশে সহায়তা করবেন। কঠিন শব্দার্থ, বিপরীত শব্দ খুঁজে বের করতে হবেএবং সেগুলি সহজ ও সুন্দব ভাবে বোঝানোর দিকে লক্ষ্য বাখতে হবে। কঠিন শব্দের অর্থ বোঝানোব সময় শিক্ষক, শিক্ষিকাব প্রতি শব্দের কথাও মনে রাখতে হবে এবং তা শেখানোর ক্ষেত্রে মনোযোগ দেবেন। ধূম্র, হরিৎ ক্ষেত্র, কুঞ্জ, অলি, এই জাতীয় শব্দের সঠিক অর্থ খুঁজে বার করতে বলা হবে প্রদত্ত সমজাতীয় শব্দথেকে।

	কবিতাটির মধ্য থেকে যথোপযুক্ত অতিসংক্ষিপ্ত এবং সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন দেওয়া যেতে পাবে। বোধমূলক প্রশ্নের ক্ষেত্রে . সকল দেশেব রানী সে যে - - সকলদেশের রানী বলতে কবি কি বোঝাতে চেযেছেন ? - জন্মভূমিকে কেন বানীব সঙ্গে তুলনা কবা হয়েছে ? বচনা ধর্মী প্রশ্নের ক্ষেত্রে নিম্নলিখিত প্রশ্ন করাযেতেপারে - এই কবিতাটিব মধ্যে কবি নিজেব জন্মভূমিকে সকল দেশের বলেছেন কেন ?

মূল্যায়ন :

কবিতাটি পাঠ আবৃত্তি ক্ষেত্রে বিশেষ নজর দিযে লিখিত এবং মৌখিক এই দুইধরনের মূল্যাযনের ওপর বিশেষ গুরুত্ব দেওযা হবে।

মূল্যবোধ :

দেশ ও জন্মভূমিকে মাযের সম্মানে বিভূষিত করাব প্রয়াস এবং তার তাৎপর্য বাখ্যা করা হবে। কবিতাটিব মধ্যে মাতৃভূমির প্রকৃতি ও সৌন্দর্য্য যেমন প্রতিভাত হয়েছে এব সঙ্গে সঙ্গে এই বোধ ও তৈবী হয যাতে মাতৃভূমির এই অপরূপ সৌন্দর্য্য যেন চিরকাল অটুট থাকে।

কার্য্যকলাপ :

মাতৃভূমিব সৌন্দর্য্যময় ছবি মিশে আছে তাব প্রকৃতির মধ্যে। কোথাও পাহাড়, অবণ্য, আবার কোথাও সবুজ ধানক্ষেত্র, নদী সমুদ্র। ছাত্রছাত্রীদের দিযে এই অপরূপ প্রকৃতির রূপকে রং তুলি দিয়ে আঁকানো যেতে পারে।

ষষ্ঠ শ্রেণী

(কবিতা) - সৎপাত্র - সুকুমার রায়

মুখ্যএলাকা	দূরূহ অঞ্চল	সমাধান সূত্র	কর্মভিত্তিক কার্য্য
পঠন ও উচ্চাবণ সম্বন্ধীয়	বিদ্যাবুদ্ধি ------- একটা গোঁয়ার	স্পষ্ট উচ্চাবণ ছন্দভাব সহ সাবলীল ভাবে পড়তে সাহায্য করা। কঠিন শব্দ - যথা - ধ্বনি, অধ্যবসায়, মাট্রিক, কষ্টে সৃষ্টে	একে একে শিক্ষার্থিদের পড়তে বলা, ভুল হলে সংশোধন করে দেওয়া, প্রযোজনে কঠিন শব্দ গুলো ভেঙ্গে উচ্চাবণ অভ্যাস কবানো।
বানান- অপেক্ষাকৃত কঠিন শব্দের অর্থ	কনিষ্ঠ, পিলে, বংশধর, অধ্যবসায়	শব্দগুলি বর্ণে বিভক্ত কবে বানান বুঝতে সাহায্য করা। ক ন ই ষ ঠ কনিষ্ঠ - সবচেযেছোট	বানান গুলি মনেরাখার জন্য ঐ বর্ণ গুলি দিয়ে নতুন নতুন শব্দ তৈরীব কাজ শেখানো।
বিষয় বোধ	কিন্তু-তাবা উচ্চঘর -------- মন্দছেলে	সমস্ত কবিতাটির বিষয়বস্তু বোঝাব সময় শেষের এই অংশে এসে শিশুরা একটু বিভ্রান্ত হয়। আর তখনই সৎপাত্র কবিতাটিব মজার দিকটি উপভোগ্য হয়ে ওঠে। ঘুবিয়ে তামাসার ছলে বলা হযে যায় পাত্রটি কেমন।	পাত্র ও তার ভাইদের চবিত্রে বৈশিষ্ট্য গুলির তালিকা তৈরী করতে দেওয়া।
চিন্তন দিক	সৎপাত্র - কবিতার বিষয় বস্তু	মূল বিষয়টি - সরল করে মনে রাখার জন্য নিজের ভাষায় সংক্ষেপে লেখার চেষ্টা করবে।	সৎ পাত্র হিসাবে গঙ্গারামের পরিচয় বিষযে একটি অনুচ্ছেদ রচনা করতে শেখানো।
মূল্যায়ন	জ্ঞান, বোধ, প্রয়োগ ও দক্ষতা - কতটা অর্জিত হয়েছে তা জানা।	মৌখিক ও লিখিত ভাবে মূল্যায়ন করার জন্য চার ধরনের প্রশ্ন, সম্বলিত প্রশ্ন কবা হবে।	মূল্যায়নেব পর প্রয়োজনীয় সংশোধনী পাঠ দিতে হবে।

১. সঠিক উত্তব টি বেছে নিযে লেখ :

সৎ পাত্র কবিতাটি - সত্যজিৎ বায/ সুকুমাব রায/ উপেন্দ্র কিশোব বায চৌধুরীর লেখা।

২. দু - একটি বাক্যে উত্তর দাও :

পাত্র গঙ্গারাম কাব বংশধর ? সে কি উচ্চঘরের পাত্র ?

৩ চার - পাঁচটি বাক্যে লেখ .

গঙ্গারামের শাবীরিক অবস্থা কিরূপ ছিল ?

তা দেব বংশর পবিচয় কি ?

৪. কবি সুকুমাব বায় পাত্রের গুণ ও ভাইদের যে পবিচয় দিয়েছেন তা কি ভাল পাত্রের পরিচয় ?

কবি কি ব্যঙ্গকরে এসব কথা বলেছেন ?

৫ নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির উত্তর দাও

ক) শব্দার্থ লেখ :

মন্দ, গোঁযাব, বংশধর, কনিষ্ঠ, বেজায়।

খ) বিপরীত শব্দ লেখ :

পাত্র, উচ্চ, কালো, গরীব, থামল ।

গ) পদ পরিবর্ত্তন কব

ছেলে, গঠন, গরীব, মানুষ, ভোগে।

ষষ্ঠ শ্রেণী

উদ্ভিদের কথা (সাহিত্য বীথি) - জগদীশ চন্দ্র বসু

	দূরূহ অঞ্চল	সমাধান সূত্র	কর্মভিত্তিক কার্য্য
বিষযবোধ ও পবিবেশগত দিক।	এখন বুঝিতে পারিতোছি আলো জীবনে মূল ------------- ----- বাঁচিয়া আছি।	এই অংশে শিক্ষার্থীরা উদ্ ভিদের কথা সঠিক ভাবে বুঝতে না পাবলে সহজ উদাহবণ দিযে ব্যাখ্যা করে বুঝিয়ে দিতে হবে।	গাছ কীভাবে বাঁচে, গাছ থেকে কীভাবে জীবজন্তু, মানুষ - খাদ্য সংগ্রহ করে বেঁচেথাকে - - এই সব তথ্য তার নিজের পরিবেশ পর্য্যবেক্ষণ করে জানবে।
চিন্তনগত দিক্	বিজ্ঞান বিষয়ক যে সব তথ্য এই প্রবন্ধে আলোচিত হযেছে সেগুলি নিজের মতকরে বোঝা।	জল,বায়ু ও আলো - এই তিনটি উপাদানের সাহায্যে উদ্ভিদ নিজে বেঁচে থাকে এবং জীবজন্তু ও মানুষের বেঁচে থাকাব উপায় কবেদেয় কী ভাবে ---- - এই বিজ্ঞান বিষযক সত্য - শিক্ষার্থী তাব আসপাশের দেখা উদাহবণ ও উপকরণ দেখে মিলিয়ে নেবে ও সত্যতা যাচাই কবে নেব।	সহজ বোধ্য উদাহরণ হিসাবে টবে রাখা গাছ নিয়ে পবীক্ষা কববে। তাতে জলদিলে বাঁচে না দিলে মরে যায়। কীটপতঙ্গ, পাতা খায় - ফুলে ফুলে প্রজাপতি, মৌমাছি মধুখায - আমবা যা খাই সে সবই কোন্ কোন্ উদ্ভিদ থেকে পাওযা যায় তার তালিকা করবে।
মূল্যবোধ	প্রানীজগৎ কে বাঁচিযে রাখতে উদ্ভিদের ভূমিকা	শিক্ষার্থীরা বুঝবে উদ্ভিদ যেন প্রানী জগতের সেবা করার জন্য নিজেদের জীবন বিলিযে দেয়। এবং পারস্পরিক সহযোগিতার মাধ্যমেই জীব জগৎ টিকে যাকে।	"অন্যেব সেবা করাই মহৎ কাজ।" এই বোধে উদ্বুদ্ধ হয়ে উদার মানসিকতা গড়ে তুলবে ও জীবনে স্বার্থপরতাব পরিবর্তে সহযোগীতাব হাত বাড়িয়ে দেবে। শিক্ষার্থীবা এই বোধ লিখে প্রকাশ করবে।

ষষ্ঠ শ্রেণী

শ্রীকান্ত ও ইন্দ্রনাথ - শরৎ চন্দ্র চট্টোপাধ্যায়

সামর্থ্য -

ক) গদ্যাংশটি সঠিকভাবে উচ্চারণ কবে ছাত্রছাত্রীদের সববপাঠে অংশগ্রহণ করানো যেতে পারে।

খ) বানান্ সংক্রান্ত ক্রুটির সমাধানে কঠিন শব্দগুলি বারবার উচ্চাবণ করে পড়া দবকাব।

গ) অপেক্ষাকৃত কঠিন শব্দের অর্থ বিশ্লেষণ ও পরিষ্ফুট করানো দরকার।

ঘ) গদ্যাংশেব বিষয়বস্তুর মধ্যে দিযে ইন্দ্রনাথ ও শ্রীকান্তের মধ্যে যে বন্ধুত্ব ও মানবিক সম্পর্ক রয়েছে।- তা ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে সহজকরে বুঝিযে দেওযা যেতে পারে।

ঙ) গদ্যাংশটিব সাবমর্ম সবল ও সরসতার সঙ্গে প্রত্যেক ছাত্রছাত্রীদের বুঝিযে দেওয়া দবকার যা তাদের স্বতঃস্ফূর্তভাবে বুঝতে ও মনেরাখতে সহায়তা কববে।

মূল্যায়ন :

শ্রীকান্তের ভবঘুবে জীবনেব পটভূমিতে যে স্মৃতি ও ঘটনা তারমনে গভীরভাবে দাগ কেটেছে, তাবই পরিচয এখানে ফুটে উঠেছে। এখানে ইন্দ্রনাথের সাহসিকতা, মনোবল, বন্ধুপ্রিয়তা ও কর্ত্তব্যবোধ সুন্দব ভাবে ফুটে উঠেছে।

লিখিত ও মৌখিক এই দুভাবেই গদ্যাংশটি মূল্যায়ন করা যেতে পাবে।

অপরাহ্ন, প্রতিদ্বন্দ্বী, সুদুর্লভ, সুস্পষ্ট, বংশীস্বব, শংকা ইত্যাদি শব্দগুলিব বানান্ উচ্চারণ ও অর্থবোধেব দিকে বিশেষ দৃষ্টি দেওয়া দবকার।	সমাধান সঠিক্ ভাবে স্পষ্টউচ্চাবণ কবতে শেখানো এবং বাববাব গদ্যাংশটি পডানো যেতে পারে।
গদ্যাংশটিব যে জায়গাগুলি আবও সহজ করে বোঝানো প্রয়োজন - ছেলেটির বুকের ভিতর সাহস ও করুণা যাহাছিল, তাহা সুদুর্লভ হইলেও অসাধারন হযত নয়।	যেহেতু গদ্যাংশটি একটি জনপ্রিয় উপন্যাসেব অন্তর্গত সেহেতু মূল উপন্যাস ও ঔপন্যাসিক এবং ইন্দ্রনাথ চরিত্রটি সম্পর্কে সহজকরে সংক্ষেপে জানানো উচিত।
অথবা	গদ্যাংশটির অন্তর্গত বিশেষ বিশেষ শব্দবেছে নিয়ে - শব্দার্থ, বাক্যবচনা, পদ পরিবর্ত্তন,

"হঠাৎ কি মধুর বংশীস্বর কানে আসিয়া লাগিল।"	বিপরীতার্থক শব্দ, সন্ধিবিচ্ছেদ করানো যেতে পারে। অতিসংক্ষিপ্ত, সংক্ষিপ্ত ও বচনাধর্মী প্রশ্ন হিসেবে নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির অভ্যাস ও অনুশীলন করানো যেতে পাবে। ক) ইন্দ্রনাথের সঙ্গে শ্রীকান্তের আলাপ প্রথম কোথায় হয়েছিল ? খ) বাগানটির নাম কি ছিল ? গ) জীবনের কোন সময় শ্রীকান্তেব সঙ্গে ইন্দ্রনাথের পবিচয হয়েছিল ? অতিসংক্ষিপ্ত প্রশ্ন হিসাবে এই প্রশ্নগুলি কবা যেতে পারে। ক) "এই কাজ্‌টি বরাবরই খুব্‌ পারি" - কাজ্‌টা কি ? খ) ইন্দ্রনাথ কোন্‌ সুবে বাঁশী বাজাচ্ছিল ? সংক্ষিপ্ত উত্তর ক) ইন্দ্রনাথের চেহাবা বর্ণনা কর। খ) কি একরকম যেন বিহবল হইযা গেলাম। বিহবল হওয়াব কারণ কি ? বচনাধর্মী প্রশ্ন : শ্রীকান্ত ও ইন্দ্রনাথ - গদ্যাংশটি গল্প অবলম্বনে ইন্দ্রনাথের চরিত্র বর্ণনাকর।

মূল্যবোধ :

গদ্যাংশটি পাঠকরে লিখিত ও মৌখিক এইদুই ধরনের প্রশ্নকরা যেতে পাবে। ইন্দ্রনাথের সাহসিকতা, মানুষেব প্রতি করুণা ও দায়বদ্ধতার মধ্যে দিয়ে মানবিক সম্পর্কের যে প্রকাশ দেখানো হয়েছে, তাকে কেন্দ্রকরে প্রশ্ন করা যেতেপাবে।

প্রশ্ন

ক) শ্রীকান্তের মনে ইন্দ্রনাথের প্রভাব বর্ণনা কর।

খ) এইগল্প থেকে তুমি কি শিক্ষা লাভ করলে ?

কার্য্য কলাপ ও সক্রিয়তা পদ্ধতি

শ্রীকান্ত ও ইন্দ্রনাথ গল্পেব মধ্যে ইন্দ্রনাথেব সাহসিকতা, বন্ধুপ্রীতি মন, কথা, ছাত্রছাত্রীদের স্মরণ কবিযে দেওযা যেতে পাবে। ইন্দ্রনাথের জীবনের সাহসিকতার ঘটনা নিয়ে ছোট করে নাট্যরূপ দেওযা যেতে পারে।

ষষ্ঠ শ্রেণী

দেখব এবার জগৎ টাকে - রচনা : কাজী নজরুল ইসলাম
(লক্ষ্মীনারায়ণ রায় সম্পাদিত সাহিত্য মঞ্জুষা থেকে নেওয়া)

সামর্থ্য -

ক) যতি, ছন্দসহ স্পষ্টভাবে আবৃত্তি ও সরবে পাঠ করানো যেতে পারে।

খ) বানান, কঠিন শব্দের অর্থ বিশেষভাবে জানানো যেতে পারে।

গ) কবিতাটির অন্তর্নিহিত ভাব উপলব্ধি করানো যেতে পারে।

ঘ) কবিতাটির মধ্যে যৌবনের গতি ও জযগান গাওয়া হয়েছে। মানুষের জানার ইচ্ছা এবং দুঃসাহসী মানুষের অভিযান ও সঙ্কল্প বিষয়ে যে ভাবনা কবিতায় প্রকাশ পেয়েছে তাকে সুন্দর ভাবে বোঝাতে হবে।

যন্ত্রনা, বিশ্বজগত, ঘূর্ণিপাক, ইত্যাদি শব্দগুলির বানান ও উচ্চারণে বিশেষ দৃষ্টি দিতে হবে। গদ্যাংশটির যে জায়গাগুলি আরও সহজ করে বোঝানো যেতে পারে। "যুগান্তরের ঘূর্ণিপাকে' / 'বরণ মরন যন্ত্রনাকে' / 'লক্ষ্মী ওঠেন পাতলে ফুঁড়ে' / 'বিশ্ব জগৎ দেখব আমি আপন হাতের মুঠোয় পুরে"	সমাধান : সঠিক ভাবে উচ্চারণ করতে শেখানো এবং কবিতাটি সরবে পড়ানো যেতে পারে। কার্যকলাপ : পঠন পদ্ধতি ও অভ্যাসের ক্ষেত্রে কবিতাটিকে আবৃত্তি করানো যেতে পারে। উপযোগী শব্দ বার করে তা দিয়ে বাক্য গঠন করানো যেতে পারে। নৈর্বক্তিক্ প্রশ্ন হিসেবে করানো যেতে পারে। ক) বীর ডুবুরীরা কি করে ? খ) সিন্ধু যান কি ? গ) মঙ্গল হতে আসছে উড়ে - মঙ্গল কি ? বোধমূলক প্রশ্ন : ক) "যুগান্তরের ঘূর্ণিপাক" কথাটির অর্থ বিশ্লেষণ কর। খ) "আপন হাতের মুঠোয়" - কথাটির তাৎপর্য কি ?

	সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন : ক) "মবছে যে বীব লাখে লাখে" - এই বীরবা কেন মবছে ? খ) আমার সীমাব বাঁধন টুটে দশ দিকেতে পড়বো লুটে - কথাটির তাৎ পর্য বুঝিযে দাও। রচনা ধর্মী প্রশ্ন ক) "রইব নাকো বদ্ধ খাঁচায় দেখব এসব ভুবন ঘুরে"। - কবি ভুবন ঘুবে - কী কী দেখার ইচ্ছা প্রকাশ করেছেন তা লেখ। নতুন কে আবিষ্কার করাব জন্য মানুষের সাহসী অভিযান তার অদম্য উৎসাহের কথা কবিতাটির বোঝানোব ক্ষেত্রে সহজে বোঝানো যেতে পাবে।

মূল্যায়ন :

লিখিত এবং মৌখিক দুইভাবেই করা যেতে পারে। বীবত্ব কথাটির তাৎপর্য গভীব ভাবে বোঝানো যেতে পারে। তেমনি বদ্ধখাঁচা কথাটিকেও ব্যাখ্যা কবা যেতে পারে। কাজী নজরুল বিদ্রোহী ভূমিকা ওব কবিতার সংক্ষিপ্ত পবিচয় দেওয়া যেতে পারে।

মূল্যবোধ :

মানুষ এগিযে চলে সময়েব গতিতে। নতুনকে আবিষ্কাব করে সমাজ সচল হয়। এর মধ্যেই সমাজের প্রগতি। এর জন্য মানুষ প্রাণ দিতেও পারে - সমাজের ইতিহাসে মানুষের এই মহান ভূমিকার কথা সহজ করে বোঝানো যেতে পারে।

কার্য্যকলাপ :

মানুষের দুঃসাহসিক কার্য্য কলাপকে কেন্দ্র কবে যেসব অভিযান ও সংগ্রাম আছে সেগুলি নিয়ে ছাত্রছাত্রীদের চিত্র অঙ্কন কবানো যেতে পাবে। কবিতাটি আবৃত্তি করানো যেতে পাবে। কবিতাটির পড়ানোর সময় মানুষের আরও দুঃসাহসিক অভিযান আবিষ্কারেব কথা বলা যেতে পারে।

ষষ্ঠ শ্রেণী

প্রবন্ধ "সতীদাহ প্রথা বিলোপে রাজা রামমোহনের ভূমিকা"

ঋষি দাস

কৃত কৌশল	দুরূহ অংশ	সমাধান সূত্র	কর্মভিত্তিক কার্য্য
উচ্চারণ, বানান, ও শব্দার্থ	তাঁর যুক্তিগুলি থেকেই কর্তৃপক্ষ সতীদাহপ্রথা নিরোধ ___ সুনিশ্চিত প্রাপ্য। (অংশ) স্বতন্ত্র, আশঙ্কা, চিরাচরিত, সঙ্কল্প, ঐচ্ছিক, সুনিশ্চিত।	যতিচিহ্ন, ভাব, অর্থ, ইত্যাদি সঠিক্ ভাবে উচ্চাবণ করে শিক্ষার্থীদের পাঠ করানো যেতেপাবে। বানানের ত্রুটি সংশোধনেব ও ব্যবস্থা করতে হবে। অপেক্ষাকৃত কঠিন শব্দের অর্থ বিশ্লেষণ করে দিতে হবে।	নতুন জানা শব্দ, বানানেব একটি তালিকা করতে বলা হবে শিক্ষার্থীকে।
বিষয়বোধ/ চিন্তন	সতীদাহ প্রথা বিষযের সনাতনী হিন্দু ও বামমোহনের মধ্যে সংঘাত যে চিরাচরিত সংস্কারের সঙ্গে বিজ্ঞান সম্মত মানবতা বাদেরই সংঘাত তাবোঝা ।	সতীদাহ প্রথার সমর্থনে একদল, আর তা বিলোপের পক্ষে বাজা বামমোহন সহ অন্যদল কি ভাবে সংঘবদ্ধ হয়েছিল এবং লর্ডবেণ্টিঙ্ক মূলত রামমোহনকে সমর্থন করার ফলেই যে এই প্রথাবিলোপের আইন পাশহয তা সবল ভাবে বুঝিয়ে দিতে হবে।	শিক্ষার্থীবা তৎকালীন সমাজের অবস্থা বর্ননা করে রামমোহনেব ভূমিকা সহ একটিকরে অনুচ্ছেদ লিখবে।
মূল্যবোধ/ মূল্যায়ন এবং পবিবেশগত চেতনাবোধ	শিক্ষার্থীবা এই পাঠের ফলে সংস্কাবমুক্ত জীবন বোধে উদ্বুদ্ধ হোতে শিখবে।	ঘটনাক্রমে কারো স্বামী মাবা যেতেই পারে, তার জন্য তার জ্বলন্ত চিতায় মৃতের স্ত্রীকে পুড়িয়ে মারা কেবল মাত্র অন্ধ সংস্কারেব ফলেই হয়। তা নিতান্তই মানবিকতা বিহীন।	

সপ্তম শ্রেণী

ফ্যান - প্রেমেন্দ্র মিত্র

	দূরূহ অঞ্চল	সমাধান সূত্র	কর্মভিত্তিক কার্য্য
উচ্চাবণ ও বানান	অন্ন ছেঁকে . আবো কি কঠিন	সঠিকভাবে উচ্চারণ ও বানান শেখানোর জন্য শিক্ষক ছন্দ, যতি, ভাব অর্থ ও শ্বাসাঘাত বজায় রেখে কয়েকবার পড়ে ও আবৃত্তি করে শোনাবেন। তারপর শিক্ষার্থীদের একে একে পড়তে বলবেন। ভুল হলে সংশোধন কবে দেবেন। কঠিন কঠিন শব্দগুলি বর্ণে বিশ্লেষণ করে সঠিক উচ্চারণ শেখাবেন।	শিক্ষার্থীরা আলোচিত শব্দগুলির মধ্যে যে বর্ণগুলি পাবে সেগুলি নিয়ে নতুন শব্দ তৈরি কবার অনুশীলন কববে। বর্ণ কার্ড, এ ব্যাপাবে ব্যবহার কবাযেতে পাবে।
শব্দার্থ	বিদ্রুপ, জঞ্জাল, আস্তাকুড়ে, কল্যাণ, কঙ্কাল, অগ্নিজ্বালা, পৈশাচিক্, ক্ষুধাশীর্ণ।	কবিতার পংক্তিতে শব্দ গুলি যে অর্থে ব্যবহার হয়েছে সেটি এবং ব্যাকরণ গত অন্যঅর্থ থাকলে সেটি সহ অর্থ শিক্ষার্থীদেব বুঝিয়ে দিতে হবে। যথা বিদ্রুপ - ঠাট্টা, জঞ্জাল - ময়লা।	জোড মেলানো পদ্ধতিতে একদিকে শব্দগুলি লিখে অন্যপাশে অর্থগুলি এলোমেলো ভাবে লিখে তৈবী চার্ট দেখিয়ে শিক্ষার্থীদের প্রতি শব্দেব সঠিক্ অর্থ খুঁজে বের করতে বলা হবে।
বিষয বোধ ও চিন্তন গত দিক্	রাজপথে কচে কচি -- ----- আরো কি কঠিন।	কবিতাটিব অন্তর্নিহিত অর্থ সহজকবে বুঝিয়ে দেবেন। ১৯৪৩ সালে মন্বন্তবে দেশেব অসংখ্য ক্ষুধার্থ মানুষ খাদ্যের অন্বেষণে গ্রামছেড়ে শহরের রাস্তায় ঘুরে ঘুরে অপমৃত্যুর শিকার হয়ে। এই মর্মন্তুদ	শিক্ষার্থীরা ১৯৪৩ মন্বন্তরের দেশেব দূরবস্থার কথা নিয়ে একটিকরে অনুচ্ছেদ রচনা করবে।

		ঘটনায় কবিরমনে গভীর শোকের সৃষ্টিকবে। যাদের শ্রমে দেশেব মানুষ অন্ন পায়, তারা নিবন্ন মাবা গেলে ও মানবিকতার চরম দূর্দশাই প্রকট হয়।	
ব্যাকরণ গত দিক	কবিতার ব্যবহৃত উল্লেখযোগ্য শব্দগুলিব পদ পরিবর্ত্তন, বিপবীত শব্দ, সমার্থক শব্দ, কাবক, সন্ধি ইত্যাদি আলোচনা।	পদ পরিবর্ত্তন : চিত্র - চিত্রিত, বিক্রিত - বিকার, বিপবীত শব্দ · শীর্ণ - স্থূল কঠিন - সহজ সমার্থক শব্দ : অন্ন - ভাত সমুদ্র - সাগর কাবক বিভক্তি : নগরের পথে পথে - অধি, এ বিভক্তি সন্ধি উচ্ছিষ্ট - উৎ + সিষ্ট সকলেব মধ্যে মমত্ববোধ জাগিযে তোলা।	নতুন জানা শব্দ তালিকা তৈরী কববে এবং ব্যাকবণগত চার্টের দ্বারা অনুশীলন কববে। কবিতায় অঙ্কিত চিত্র গুলিকে শিক্ষার্থীদেব দিয়ে অভিনয করাবেন।

সপ্তম শ্রেণী

একক : মানী (কবিতা) - রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

১. উচ্চারণ ও বানান - ক্ষত্রকূল, সিংহশিশু, রক্তআঁখি, বজ্রনাথ	প্রতিটি শব্দ ভেঙে সঠিক উচ্চারণ সহ সাবলীল ভাবে অনুশীলন করতে হবে। বর্ণ কার্ড ও শব্দ কার্ডের সাহায্যে ছাত্রদেব দিয়ে অনুশীলন করতে হবে। যেমন - ক্ষত্রকূল - ক্ষ + ত + র + ক + উ + ল বজ্রনাথ ব + জ + র + ন + আ + থ
শব্দার্থ মরুভূমিব মরীচি, সিংহশিশু, বজ্রনাথ	শব্দগুলির অর্থ শিক্ষার্থীদের বুঝিযে দেব। "সিংহশিশু" বলতে এখানে নির্ভীক শিশুর কথা বলা হয়েছে। মরুভূমিব মবীচি বলতে - মরূভূমিতে সূর্যের আলো পড়ে বালুকাবাশি চিক্ চিক্ করে। দূর থেকে জল বলে ভ্রম হয়। পিপাসার্ত পথিক সেই জলের আশায় ছুটে যায কিন্তু জল পায় না। তাই তাকে মবীচিকা বলা হয়। এখানে সুরতান ও যেন মরীচিকার মত - ধরাযায়না। তাই সুরতানকে মরুভুমির মরীচি বলা হয়।
বিপবীত শব্দ ও ব্যাকরণগত দিক্ - বন্দী, মুক্তি, প্রবীন, নবীন, গোপন, প্রকাশ, অচল, সচল, নীরব, সরব।	এই শব্দগুলি কার্ডে লিখে শিক্ষার্থীদের সামনে বেখে বলা হবে শব্দ গুলি সাজাও।
সমার্থক - ভিন্ন শব্দ / বাক্য গঠন	শির - মাথা / ভয - ডব শব্দগুলি বাক্যে প্রয়োগ করার কাজ করতে দেওয়া হবে।
বিষয় বোধ / মূল্যবোধ মানীর মান করিব হানি মানীরে শোভে হেন কাজ	কবিতাংশটির মূলভাব উপলব্ধি কবতে শিক্ষার্থীদের সাহায্য করব এবং নামকরণেব সার্থকতা বুঝিয়ে দেব। আত্ম মর্যাদাবোধে উদ্বুদ্ধ হবে। এতে তারা সকলকে সম্মান প্রর্দশনে অভ্যস্ত হবে।

সপ্তম শ্রেণী

একক : বিদ্যাসাগর চরিত্র (গদ্য) রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

আলোচ্য অংশ উচ্চারণ ও বানান - শৈথিল্য, অপভ্রংশ, বন্ধন, সচ্ছলতা, মহৈশ্বর্যশালী	প্রতিটি শব্দ ভেঙ্গে সঠিক্ উচ্চারণসহ সাবলীলভাবে অনুশীলন করতে হবে। বর্ণ কার্ড ও শব্দ কার্ডের সাহায্যে ছাত্রদের দিয়ে অনুশীলন কবতে হবে। যেমন-শৈথিল্য - শ্ + ঐ + থ্ + ই + ল + য বন্ধন - ব + ন্ + ধ + অ + ন
শব্দার্থ যশুরে কৈ, কসুবে জৈ, প্রত্যুষে, উচ্ছিষ্ট, প্রহার।	শব্দগুলির অর্থ শিক্ষার্থীদের বুঝিযে দেব। যশুরে কৈ, কসুবে জৈ বলতে এখানে বিদ্যাসাগর বেঁটে রোগা ছিলেন, তাঁর মাথা ছিল বড়, পূর্ববঙ্গের যশোব জেলাব কৈ মাছের আকৃতি ও এরূপ থাকায় তাঁকে ঐ কৈ মাছের সঙ্গে তুলনা করা হয়। সেইজন্য বিকৃত ভাবে কসুরে জৈ বলা হযেছে। প্রত্যুষে বলতে সকাল বেলার কথা বলা হযেছে।
বিপরীত শব্দ : ---- সাদৃশ্য, বিকৃত, বিখ্যাত, নতুন, প্রবৃত্ত, মযলা	কার্ডে বিপরীত শব্দগুলি এবং আবও কিছু শব্দ লিখে শিক্ষার্থীদেব সঠিক শব্দ বেছে লেখার জন্য বলবো।
বিষযবোধ - "সেই দুর্দম জিদেব সহিত তিনি পড়িতে যাইতেন।"	শিক্ষক আর্দশ পাঠ দেবেন এবং বাস্তব উদাহবণ দিযে সহজ ভাষায় বিষযবস্তু বুঝিযে দেবেন যেন শিক্ষার্থী দৃঢ়তার সঙ্গে পরিবেশ পরিস্থিতির প্রতিকূলতাকে জয় করে লক্ষ্যস্থলে পৌঁছতে পারে।
মূল্যবোধ দবিদ্র সন্তান *দয়াব সাগর* নামে .... হইয়া রহিলেন	শিক্ষক প্রবন্ধটির মূলভাব শিক্ষার্থীর বোঝার মত করে বুঝিয়ে যাতে শিক্ষার্থী নিজেকে বাস্তব জীবনোপযোগী করে গড়ে তুলতে পারে তেমন অনু প্রেবণা দেবেন।

শব্দ গঠন - বিকৃত, প্রতিকূল, দুষ্কব	বর্ণের সঙ্গে বর্ণ যুক্ত হয়ে শব্দ গঠন করে তা শিক্ষক বর্ণেব কার্ড ব্যবহাব করে এবং শিক্ষার্থীদের দিয়ে অনুশীলন করবেন, বর্ণকার্ডগুলি এলোমেলো করে দেবেন। শিক্ষার্থী তা সাজিয়ে শব্দ তৈরীকববে। বিকৃত - ব + ই + ক্ + ঋ + ত + অ
বাক্য গঠন : পাক করিতে করিতে পাঠ্যানুশীলন করিতেন। সবল বাক্য - পাক কবিবাব সময পাঠ্যানুশীলন কবিতেন। জটিল বাক্য - তিনিযখন পাক করিতেন তখন পাঠ্যানুশীলন করিতেন। যৌগিক - তিনি পাক করিতেন ও পাঠ্যানুশীলন কবিতেন।	এই বাক্যটিকে সরলবাক্যে, জটিল বাক্যে এবং যৌগিক বাক্যে পবিণত করতে শেখাবেন। সরলবাক্য গঠন কবাব সময শিক্ষক ছাত্রকে সমাপিকা ও ক্রিয়া বুঝিয়ে একটি কর্তা ও একটি সমাপিকা ক্রিয়া থাকলে সরল বাক্য হবে, বোলে দেবেন। প্রযোজনে শিক্ষক ক্রিয়া পদের (প্রকার ভেদ) কার্ড ব্যবহাব এবং উদাহরণের মাধ্যমে শিক্ষার্থীকে অনুশীলন করাবেন। অনুরূপভাবে জটিল বাক্যে দুটি সমপিকা ক্রিয়া ও দুটি কর্তা কে যখনতখন দিযে যুক্ত করতে হবে তা বুঝিয়ে দেবেন এবং ছাত্রদের অনুশীলন করাবেন। যৌগিক বাক্য গঠনে দুটি বাক্য কে সংযোজক অব্যয় দিযে যুক্ত কবতে হবে। তা বুঝিয়ে ছাত্রদের অনুশীলন কবাবেন।
সৃজন ধর্মী - বিদ্যাসাগব শিরোনামে প্রবন্ধ লেখা।	শিক্ষক ছাত্রকে বিদ্যাসাগবের জন্ম, বাল্যজীবন, শিক্ষা, কর্ম, সমাজে তিনি কতখানি স্থান দখল করে আছেন প্রভৃতি বিষয গুলি সহজভাবে বুঝিয়ে দেবেন এবং শিক্ষার্থীকে প্রবন্ধ বা অনুচ্ছেদ লেখার মধ্যদিয়ে প্রকাশ ক্ষমতা তথা সৃজনশীলতার অভ্যাস করাবেন।

শিক্ষাসহায়ক উপকরণ -	শিক্ষাসহায়ক উপকরণ হিসাবে শিক্ষক বিদ্যাসাগরের ছবি এবং রাত জেগে পড়াশুনার করার ছবি, গৃহঘরের কাজ করা বা স্কুলে যাওয়ার ফাঁকে পড়াশুনা করতেন কিংবা অসহায় নিঃস্ব রিক্ত মানুষকে দুহাতে দান করতেন বা পাশে গিয়ে দাঁড়াতেন তার ছবি উপযুক্ত স্থানে ব্যবহার করে প্রবন্ধটি পড়াবেন। প্রয়োজনে উপরোক্ত ছবি গুলি শিক্ষার্থীদের দিয়ে তৈরী করাবেন। ব্যাকরণগত চার্ট ও শিক্ষার্থীদের দিয়ে তৈরী করাতে পারেন। ছবি গুলি এলোমেলো করা থাকবে, শিক্ষার্থীরা ঘটনাক্রমিক সাজাবেন। শিক্ষার্থীদের দিয়ে তাঁর কর্মপঞ্জী, ঘটনাপঞ্জী তৈরী করতে সাহায্য করবেন।

সপ্তম শ্রেণী

গ্যালিলিও - সত্যেন্দ্র নাথ বসু (সাহিত্য চয়ন)

কৃৎ কৌশল	দুরূহ অঞ্চল	সমাধান সূত্র	কর্মভিত্তিক কার্য্য
উচ্চারণ ও বানান	বিশ্বসমীক্ষা, স্কুদি বিজ্ঞান, কলঙ্কবিন্দু, বৈশিষ্ঠ্য, ঔজ্জ্বল্য, ঈর্ষান্বিত	বার বার উচ্চারণ করতে হবে, বানান লিখতে হবে এবং মুখে বলতে হবে। যুক্ত বর্ণ গুলিকে স্পষ্ট উচ্চারণ করা আবশ্যক।	প্রত্যেক শিক্ষার্থীকে বোর্ডে লেখাতে হবে এবং প্রযোজনে বর্ণ কার্ড ব্যবহার কবে অনুশীলন করবে।
শব্দার্থ	কথোপকথন, দূতাবাস, অজ্ঞতা, অসর্তকতা, নিদর্শন	শব্দগুলির অর্থ পরিস্কার করে বুঝিয়ে দেওয়া।	খাতা কলমে ছাত্রদের লেখানো অভ্যাস করানো।
পঠন পদ্ধতি ও অভ্যাস		গদ্যটি ভাব রস, যতি শ্বাসাঘাত সহ স্পষ্ট উচ্চারণ করে পাঠ করতে হবে।	শিক্ষার্থীরা প্রত্যেকে সঠিক উচ্চারণ করে পড়বে এবং অনুশীলন করবে।
বিষয় বোধ	আমাদের পৃথিবী ___ ___চাইলেননা	গ্রহ ও উপগ্রহের পরিচয় প্রদান করা, বিজ্ঞান ও বিশ্বাসের সঙ্গে দ্বন্দ্বের কারণ বিশ্লেষন করা।	বৈজ্ঞানিক উপাদানের মাধ্যমে বুঝিয়ে দেওয়া। শিক্ষার্থীদের দিয়ে চাঁদ, সূর্য ও গ্রহ বানিয়ে আনন্দের মাধ্যমে বোঝানো যায়।
চিন্তনদিক	ধর্মবিশ্বাস, কুসংস্কার বিজ্ঞানের নতুন আবিষ্কারের দ্বন্দ্ব	এই বিষয়ক শিক্ষার্থীদের সম্যকভাবে বুঝিযে দেওয়া	শিক্ষার্থীদের দিয়ে লেখানোর অভ্যাস করা ও সংশোধন করা
ব্যাকরণ গত দিক	সন্ধি, পদপরিবর্তন, কারক ও বিভক্তি, বিপরীত শব্দ	এ গুলি সঠিকভাবে শিক্ষার্থীকে বুঝিয়ে দেওয়া।	শিক্ষার্থী বারবার অনুশীলন করবে।

মূল্যবোধ		আদর্শের জন্য সর্বস্ব ত্যাগ করাযায় কিন্তু কোন কিছুর জন্য আদর্শকে ত্যাগ করা উচিত নয় - এই বোধের উন্মেষ ঘটানো।	চিত্রাঙ্কনের মাধ্যমে শিক্ষার্থীদের মধ্যে মূল্য-বোধের আনন্দ বিতরণ করা।

মূল্যায়ন :

সামর্থ্যভিত্তিক প্রশ্ন শিক্ষার্থীকে লিখতে দিয়ে এককটিব অর্জিত জ্ঞানেব গুনগত মান নির্ধারণ কবতে হবে। অর্থাৎ জ্ঞানমূলক, বোধমূলক, প্রযোগমূলক ও দক্ষতামূলক প্রশ্ন দিতে হবে।

১. সঠিক উত্তর টি বেছে নিয়ে লেখ -

গ্যালিলিও প্রবন্ধটি বিজ্ঞানমূলক / ধর্মমূলক / জীবনীমূলক

২ সমগ্র প্রবন্ধটি পড়ে তুমি কি বুঝলে - তা লেখ ।

৩ একটি মাত্র বাক্যে উত্তর দাও :

গ্যালিলিও কি আবিষ্কার করেছিলেন ?

৪ তিনটি - চারটি বাক্যে উত্তর দাও -

“বাড়ী হয়ে উঠলো ফ্যাক্ট্রি কারুশালা।”

কিভাবে বাড়ীটি কারুশালা হয়ে উঠলো ?

৫ গ্যালিলিও র দুঃখময় জীবনের পরিণতি সংক্ষেপে লেখ।

৬ কারক ও বিভক্তি নির্ণয় কব -

পাডুয়া ছেড়ে ফ্লোরেন্সে গেলেন গ্যালিলিও।

সপ্তম শ্রেণী

বই- সৈয়দ মুজতবা আলী

সামর্থ্য -

ক) ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে পুস্তক প্রীতি - জাগিয়ে তোলা।

২. বই কেনাব মানসিকতা তৈরী করা।

৩ বিশেষ বিশেষ কিছু বই সম্পর্কে ছাত্রছাত্রীদের কৌতূহল জাগিযে তোলা। (বাইবেল, কোবান, গীতা, রামাযণ, মহাভারত)

১ উচ্চারণ ও সরব পাঠ	স্পষ্ট উচ্চারণ ও বিরাম চিহ্ন সহ সাবলীল ভাবে ভাব সহ পড়তে সাহায্য করতে হবে। একে একে শিক্ষার্থীরা পড়বে। ভুল হলে সংশোধন কবে দিতে হবে।
২ বানান, অর্থবোধ ও বিপরীত শব্দ	ক) পর্যবেক্ষণ, সৌন্দর্য, আচক্রবালবিস্তৃত, ভুবন এই জাতীয় শব্দগুলির বানান বিশ্লেষণ করে স্পষ্ট উচ্চারণের মাধ্যমে বানান গুলি অনুশীলন করবে। শিক্ষক বোর্ডে লিখবেন শিক্ষার্থীরা খাতায় লিখবে। সেই সঙ্গে শব্দগুলির অর্থ প্রতিশব্দ ও বিপরীতশব্দ বিষয়ে আলোচনা করবেন। এই কাজটি আনন্দদায়ক করাব জন্য শব্দ, অর্থ, বিপরীত শব্দ কার্ডে লেখা থাকবে। শিক্ষার্থীরা সাজাবে ও খাতায় লিখবে।
বাক্য গঠন - নাভিশ্বাস, একঝটকায়, এক্সপেরিমেন্ট, দেউলে, বাজেট	এই শব্দ বা এই জাতীয় বিশেষ বিশেষ শব্দ বাক্যে প্রযোগ করার দক্ষতা অর্জন করাতে হবে। প্রযোজনে সঠিক বাক্য গঠনে শিক্ষক সাহায্য করবেন। বাক্যের শব্দগুলো এলোমেলো ভাবে থাকবে। শিক্ষার্থীরা সাজিয়ে লিখবে।

চিন্তনগত দিক - (অনুচ্ছেদ রচনা)	ক) বইমেলা, খ) তোমার প্রিয় পুস্তক এই জাতীয় বিষয় নিয়ে শিক্ষক শিক্ষার্থীদের সংগে আলোচনা করবেন, পবে শিক্ষার্থীদের এই বিষযে একটি অনুচ্ছেদ লিখতে বলবেন।

মূল্যবোধ :

ক) বই সম্পর্কে সামগ্রিক ভাবে জনসমাজকে সচেতন করে তোলা।

খ) গ্রন্থাগারের দিকে মানুষকে আকৃষ্টকরে তোলা।

গ) সাধারণ মানুষের মধ্যে পড়ার অভ্যাস গড়ে তোলা।

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION, BHUBANESWAR

DEVELOPMENT OF INSTRUCTIONAL STRATEGIES (IN ENGLISH, BENGALI, HINDI, ORIYA) OF WEST BENGAL BOARD FOR USE IN PTTIS.

Expert Group Meeting : **15 – 16th October, 2003**

15th October, 2003

9.30 a.m.	Registration
10.00 a.m.	Inauguration
	About the programme – Purpose- Objectives of this 2 day meeting – Prof. V.K. Sunwani
	Self introduction
	Remarks by staff members
	A word from the Principal – Prof. M.P. Sinha
11.00 a.m.	Tea
11.15 a.m.	Discussion on Language Learning Discussion on Language Teaching Minimum levels in Language. Instruction Strategies – Format ; summing up
1.00 p.m.	Lunch
2.00 p.m. to 5.00 p.m.	Working in groups English, Hindi, Oriya, Bengali (Classes V, VI, VII) Finding out the hardspots Listing out core areas.

16th October, 2003

9.30 – 10.00 a.m.	Review of work done
10.00 – 11.00 a m	Group work continues.
11.00 a.m.	Tea
11.15 – 1.00 p.m.	Preparing the proper format for Instructional Strategies.
1.00 – 2.00 p.m.	Lunch
2.00 – 4.00 p.m.	Brief presentations in each language.
4.00 p.m.	Concluding session.
4.30 – 5.30 p m.	Payment of TA, DA and Honorarium.

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION, BHUBANESWAR

DEVELOPMENT OF INSTRUCTIONAL STRATEGIES (IN ENGLISH, BENGALI, HINDI, ORIYA) OF WEST BENGAL BOARD FOR USE IN PTTIS.

Inauguration : **19th January, 2004**

1 Welcome - Prof. V K. Sunwani

2. Self introduction : Participants and Resource Persons

3 Dr S.K Jana - Academic and Administrative Consultant, West Bengal Board of Primary Education - Needs of Teachers of West Bengal

4. Prof. V.K. Sunwani – About the Programme
   Its objectives

5. Approach Papers
   English – Smt. S. Palit
   Bengali – Ms. Shampa Das
   Hindi - Dr. Anoop Kumar
   Oriya - Dr. B.K. Panda

6. The importance of language fluency and competency for teachers -
   Prof. M.A Khader
   Principal, RIE, Bhubaneswar

7. Participants' observations

8 Vote of Thanks - Ms. Shampa Das

9. Tea

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION, BHUBANESWAR

DEVELOPMENT OF INSTRUCTIONAL STRATEGIES (IN ENGLISH, BENGALI, HINDI, ORIYA) OF WEST BENGAL BOARD FOR USE IN PTTIS.

Valedictory Function : 23.01.2004 at 3.00 p.m.

Agenda

1. Brief Report of the Programme :

   Prof. V.K. Sunwani

   Professor of English
   Programme Coordinator

2. Resource Persons' Views and Suggestions .

   1. Bengali
   2. Hindi
   3. Oriya
   4. English

3. Consultant, West Bengal Board of Primary Education

   Dr. S.K. Jana

4. Dr. Shankarlal Purohit

5. Prof. M.P. Sinha, Prof. & Head, DESM and Dean of Instruction

6. Looking Ahead - Prof. M.A. Khader, Principal, RIE, Bhubaneswar

7. Vote of thanks Dr. B.K. Panda,
   Lecturer in Oriya, RIE, Bhubaneswar

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION, BHUBANESWAR

INTERNAL RESOURCE PERSONS (INSTITUTE)

Prof. V.K Sunwani,	Professor of English RIE, Bhubaneswar Programme Coordinator
Dr. Anoop Kumar	Reader in Hindi RIE, Bhubaneswar
Mrs S. Palit	Lecturer (SG) in English RIE, Bhubaneswar
Dr. B.K. Panda	Lecturer in Oriya RIE, Bhubaneswar
Ms. S. Das	Lecturer (SG) in Bengali RIE, Bhubaneswar

D. M. SCHOOL

Mrs. Padmaja Pradhan	PGT in Hindi D.M. School, RIE, Bhubaneswar
Dr R D. Roy	PGT in Bengali D.M. School, RIE, Bhubaneswar
Ms Jyoti Jena	PRT D.M. School, RIE, Bhubaneswar
Ms Basanti Khuntia	TGT in Oriya D.M. School, RIE, Bhubaneswar

EXTERNAL RESOURCE PERSONS

Dr. Pramathesh Das	Reader in English RNIASE, Cuttack
Shri B N. Rout	Expert in English Board of Secondary Education, Cuttack
Dr H K. Das	Retd. Prof of Oriya
Dr. (Mrs.) Minakshi Das	Expert in Oriya Board of Secondary Education, Cuttack
Dr Kuna Panda	Lecturer in Hindi R.D. Women's College, Bhubaneswar
Dr. D. Kundu	Reader in Bengali Sailabala Women's College, Cuttack

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION, BHUBANESWAR

LIST OF PARTICIPANTS AND RESOURCE PERSONS FROM WEST BENGAL

No.	Name	Address
1.	Dr. Samarendra Kumar Jana,	Academic – cum – Administrative Consultant, West Bengal Board of Primary Education, 84, Sarat Bose Road, Kolkata – 700026
2.	Sri Ranjit Singh	Head Teacher, Arya Vidyalaya – 1, H.M.G. Road, Kolkata – 24
3.	Sri Padmalochana Mishra	Head Teacher, Rani Rashmani High School (Primary Section)
4.	Sri Dolagobinda Panda	Asst. Teacher, Titagarh Upendra Bhanja Vidyapitha, Titagarh, 24 Praganas (W.B.)
5.	Smt. Kalyani Sarangi	Asst. Teacher, Kidderpore Oriya High School, No.1, Satya Dr. Road, Kolkata – 23
6.	Sri Golak Chandra Sahoo	Asst. Teacher, Purba Kalikata Oriya Vidya Niketan, D.C. Road, Kolkata – 15.
7.	Smt. Namita Sethi	Asst Teacher, Kharagpur Utkal Vidyapitha, Kharagpur, Dist : Midnapur (W.B)
8.	Sri Keshab Sahu	Asst. Teacher, Titagarh Upendra Bhanja Vidyapitha, Titagarh, 24 Parganas (W.B.)
9.	Md. Sahabuddin Mandal	Asst. Teacher, Khidderpur Milani High School, 8/1, Braunfeld Road, Kolkata – 27
10.	Sri Shyamal Kumar Bhattacharya	Head Teacher, 11/3 Christopher Road, Kolkata – 700046
11.	Smt. Anima Barai,	Principal, Govt. Sponsored PTTI, 98 Beltola Road, Kolkata – 26
12.	Sri Kader Ali	Principal, Shikshaniketan, Govt. PTTI, Kalanabagram, Dist. Burdwan.

13.	Sri Arindam Sengupta	Asst. Master, Bankura Zilla School, PO/ Dist . Bankura
14.	Sri Binode Kumar Biswas	Lecturer, Krishnagar Govt. PTTI, PO : Krishnagar, Dist : Nadia
15.	Smt. Bandana Das	Principal, Gokhale Memorial Teacher Training College, 1/1, Harish Mukherjee Road, Kolkata – 20
16.	Smt Bichitra Sur Roy	Principal, Vidyasagar Bani Bhandar PTTI, 294/3 A.P.C. Road, Kolkata – 9
17.	Smt Nandita Datta	Lecturer, Banipur Govt. PTTI, Banipur, Dist : North 24 Parganas (W.B.)
18.	Smt. Anita Rai,	Asst Teacher, Adarsh Hindi High School, 2, Manipore Road, Kolkata – 23
19	Smt Madhulata Gupta	Lecturer (SG), S.S. Jalan Girls' College, 8/9, Bankim Chatterjee Street, Kolkata – 73
20.	Sri Rajendra Prasad Pandey	Lecturer – in – Charge, Salki Govt. PTTI, 37/1 B.D. Lane, Salki, Dist : Howrah (W.B)
21.	Sri Rajendra Prasad Tiwari	Asst Teacher, Sanghamitra Vidyalaya, S.E. Rly, Colony, Kolkata – 43
22.	Dr. Om Prakash Lal Srivastava,	H.M. , Arya Parishad Vidyalaya, 1, Nanak Mahal Road, Kolkata – 43
23	Sri Yamuna Prasad Singh,	Asst. Teacher, Sanghamitra Vidyalaya, S E. Rly, Colony, Kolkata – 43
24.	Sri Brij Bhusan Singh	Asst. Teacher, Lajpat Hindi High School, 124/1/1, Masatala Lane, Kolkata – 2
25	Sri Pabitra Mohan Jena	Asst. Teacher, Utkal Vidyapitha, Kharagpur, Midnapur (W.B.)

V. K. Sunwani
Prof & Head, DESSH)
Programme Coordinator

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION BHUBANESWAR

DEVELOPMENT OF INSTRUCTIONAL STRATEGIES (IN ENGLISH, ORIYA, HINDI, BENGALI) OF WEST BENGAL FOR USE IN PTTIs

19 – 23rd January, 2004

Date	9.30 – 10.30	10.30 – 11.30	11.30 – 1 00	1.30 – 2.30	2.30 – 3.30	3.30 – 4.30	4.30 – 5.00
19.1.2004	Registration	Inauguration	Discussion with participants	L	Listing Hardspots and Areas of Difficulties		Review
20.1.2004	Group work – Bengali, English, Hindi, Oriya			U	Group Work		Review
21.1 2004	Group work – Bengali, English, Hindi, Oriya			N	Group work	Presentation of some strategies in Hindi, Oriya, Bengali, English	
22.1.2004	Group work – Bengali, English, Hindi, Oriya			C	Group Work		
23.1.2004	Finalisation of draft strategies in English, Oriya, Hindi, Bengali			H	Valedictory	Payment of TA/ DA	

English – Smt. S. Palit

Bengali – Ms Shampa Das

Hindi - Dr. Anoop Kumar

Oriya - Dr. B.K. Panda

(V.K. Sunwani)
Prof. & Head, DESSH